अमृतवाणी

सत्गुरु रविदास महाराज जी

(सटीक)

टीकाकार : संत सुरिंदर दास बावा जी

प्रकाशक : रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

अमृतवाणी

सत्गुरु रविदास महाराज जी

(सटीक)

निशान साहिब

रविदासीया धर्म

प्रकाशक :

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर, जालन्धर

अमृतवाणी

सत्गुरु रविदास महाराज जी

(सटीक)

पहले कई एडीशन
20 फरवरी 2027 : 5000 कापी

मूल्य : 150/-

टीकाकार :
संत सुरिन्दर दास बावा

पुस्तक टाईप सैटिंग और छापक :
विजय ग्राफिक्स, माई हीरां गेट, जालन्धर

© सभी अधिकार प्रकाशाधीन हैं।

रविदासीया धर्म के नियम

1) हमारा रहबर	:	सत्गुरु रविदास महाराज जी
2) हमारा धर्म	:	रविदासीया
3) हमारी धार्मिक पुस्तक	:	अमृतवाणी सत्गुरु रविदास महाराज जी
4) हमारा कौमी निशान साहिब	:	
5) हमारा सम्बोधन	:	जय गुरुदेव
6) हमारा महान् तीर्थ स्थान	:	श्री गुरु रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू. पी.)
7) हमारा उद्देश्य	:	सत्गुरु रविदास जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार। इसके साथ-साथ महाऋषि भगवान वाल्मीक जी, सत्गुरु नामदेव जी, सत्गुरु कबीर जी, सत्गुरु त्रिलोचन जी, सत्गुरु सैन जी तथा सत्गुरु सधना जी की मानवतावादी विचारधारा का प्रचार करना। सभी धर्मों का सम्मान करना, मानवता के साथ प्रेम करना तथा सदाचारी जीवन व्यतीत करना।

निशान साहिब
रविदासीया धर्म

सत्गुरु रविदास महाराज जी के जीवन के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य

प्रकाश दिवस	:	माघ सुदी पंद्रास 1433 विक्रमी सम्वत् सन् 1377 ई0
जन्म स्थान	:	ग्रामः सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (यू0 पी0)
माता-पिता जी का नाम	:	पिता जी- पूजनीय संतोख दास जी, माता जी- पूजनीय कलसी देवी जी
दादा-दादी जी का नाम	:	दादा जी- पूजनीय कालू राम जी, दादी जी- पूजनीय लखपती जी।
सुपत्नी एवं सपुत्र का नाम	:	सुपत्नी पूजनीय लोना देवी जी, सपुत्र पूजनीय विजय दास जी।
ब्रह्मलीन	:	आषाढ़ की संक्रांति 1584 विक्रमी सम्वत् (1528 ई0) वाराणसी में।

दो शब्द

प्रेम पंथ की पालकी रविदास बैठियो आय।
सांचे सामी मिलन कू आनंद कह्यो न जाय।।

धन्य-धन्य जगत्गुरू रविदास जी महाराज जिन्होंने इस संसार में सभी प्राणियों को एकता, ममता, भाईचारे, मानव-प्रेम, संतो की संगति करने तथा हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश प्रदान किया। जहाँ जगत्गुरु रविदास जी महाराज ने सदियों से पीड़ित समाज में आकर इसे सभी बंधनों से मुक्त किया, वहीं मानव विरोधियों को भी सत्य उपदेश प्रदान किया।

''सतसंगति मिलि रहीए माधउ जैसे मधुप मखीरा''।

इस तरह सतसंगति के उपदेश के द्वारा उन्होंने विश्व भाईचारे का पावन उपदेश दिया और पूरे विश्व को बेगमपुरा वतन बनाने का संकल्प दिया ऐसे महान् क्रांतिकारी, जगत्गुरू रविदास जी महाराज का आगमन माघ सुदी पंद्रास 1377 ई (1433 वि० संवत्) में सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी में पिता श्री संतोख दास जी तथा माता श्रीमती कलसी देवी जी के घर में हुआ। आप जी ने सब जीवों को अज्ञानता, प्राधीनता, गुलामी, भेदभाव, कर्म-कांड, वहमों-भरमों और आडंबरों से मुक्ति होने का आदेश दिया और केवल सर्वव्यापक हरि प्रभु की सच्ची पूजा, सच्चे मन से करने का सारी मानवता को उपदेश देते थे। जगतगुरु रविदास जी महाराज इस संसार में विद्यक, समाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्रांति ले के आए। समाज में समानता स्थापित करने के लिए गुरू जी ने मकर सक्रांति पर अपना कंधा चीर कर चार युगों के प्रतीक चार जनेऊ दिखाए और सूत के जनेऊ को उतार दिया। बैसाखी के ऐतिहासिक पर्व के अवसर पर आप जी ने गंगा घाट पर शिला को पानी में तैराया तथा राणा संग्राम सिंह (राजा सांगा) एवं रानी झाली के दरबार मे अनेकों रूप धारण कर संगत-पंगत की प्रथा प्रारम्भ की। जगतगुरू रविदास महाराज जी ने सती प्रथा, बाल विवाह प्रथा और परदा प्रथा का विरोध किया। आप जी ने अपने जीवन का अधिकांश समय देश-विदेश में उदासियां करते हुए, सभी जीवों को सत्य मार्ग पर चलने का उपदेश देते हुए व्यतीत किया। असंख्य राजा, महाराजा और सभी वर्गों के लोग आपके पावन चरणों में आकर नतमस्तक हुए। इस प्रकार मानवता का उद्धार करते हुए आषाढ़ की संक्रांति (1528)(1584 विक्रमी) को आप सणदेही बनारस में ज्योति जोत समाए। जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी को भक्ति का सिरमौर (शिरोमणि) समझते हुए सतगुरू कबीर जी फरमाते हैं।

साधन में रविदास संत है, सुपच ऋषि सो मानिया।
हिंदू तुरक दुई दीन बने है, कछु नहीं पहिचानिया।।

अर्थात् संतजनों में महान् संत सत्गुरू रविदास जी हैं, ''जिन्हें दुनिया एक महान् संत ऋषि मानती है। तत्कालीन समय के हिन्दु व मुस्लिम दोनों ही उनके समक्ष नतमस्तक हुए और उन्होंने सत्गुरु रविदास जी महाराज को प्रभु समझ कर जाना।

जगत्गुरू रविदास जी के मानवता के प्रति उपकार को, अपनी वाणी द्वारा संत पीपा जी इस प्रकार उच्चारण करते हैं।

जे कलि रैदास कबीर ना होते,
लोक वेद अरू कलिजुग मिलि कर भगति रसातल देते।

आर्थात् यदि सत्गुरु रविदास जी और सत्गुरु कबीर जी यथा समय अवतरित न होते, तो तत्कालीन उच्च वर्ग, वेद और कल्युगी विचारधारा ने, भक्ति को पाताल में दफन कर देना था।

रविदास चमारू उसतति करे हरि कीरति निमख इक गायि।।
पतित जाति उतमु भइया चारि वरन पए पगि आयि।।

सत्गुरू राम दास जी फरमाते हैं कि,''सत्गुरू रविदास जी ने एक ओंकार प्रभु की ऐसी भक्ति, आराधना एवं उपमा की, कि वह प्रभु का ही रूप हो गए। नीच समझे जाने वाली जाति में जन्म लेने के बावजूद भी, उनकी भक्ति और आध्यात्मिकता के कारण, चारों वर्गों के लोग उनके चरणों में नतमस्तक हुए।'' सत्गुरू अर्जुन देव महाराज जी, आप जी की उपमा करते हुए फरमाते हैं:-

ऊच ते ऊच नामदेउ समदरसी रविदास ठाकुर बणि आई।।

अर्थात् ऊँच से ऊँच समदृष्टि वाले सत्गुरू नामदेव जी हुए हैं और सत्गुरू रविदास जी आप इस संसार में प्रभु बनकर आए। जगत्गुरू रविदास महाराज जी अपनी अमृतवाणी में उच्चारण करते हैं :-

मेरी जाति कुट बांडला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आस पासा।।
अब बिप्र परधानु तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणायि रविदासु दासा।।

अर्थात्:- मेरा जन्म उन लोगों में हुआ,जो बनारस के आस-पास, प्रतिदिन, मृत पशुओं को ढोते हैं। परन्तु मैंने प्रभु के नाम की शरण ली और आज बिपरो के प्रधान लोग, मुझे दंडवत् नमस्कार करते हैं। जगत्गुरू रविदास जी महाराज जी के कल्याणकारी, समाजवादी, क्रांतिकारी और आध्यात्मक उपदेशों को सुनकर सतगुरु रविदास महाराज जी के समय के अनेक राजा-रानियों ने आदर सम्मान दिया और अनेकों ने इनका शिष्यत्व ग्रहण किया था। संत सदना जी, संत परमानंद जी, संत कमाली जी, संत गोरखनाथ जी, राजा पीपा जी, राजा हरदेव सिंह नागरमल, राजा वीर सिंह बघेल (काशी नरेश), राजा बाबर (उसके सपुत्र हमायूँ, असकरी, हिंदाल, कामरान) राजा कुभा, राजा रतन सिंह कंवल। महाराना संग्राम सिंह (राणा

सांगा), रानी झाली बाई (उनके सपुत्र राजा भोज राज, राजा रतन सिंह, राजा विक्रमजीत, राणा उदय सिंह), मीरा बाई, ऊदा बाई, राजा राणा (मीरा का भाई), (गाजीपुर का राजा) राजा चंद्रप्रताप, रानी अतरा गरास मेवाड़ की रानी कौशलिया रानी सवित्री, राजा सूर्ज मल्ल, राजा चंगदेव, राजा अलावदी बादशाह, राजा बिजली खान, शेख अबलोन दाना ईरान, राजा बैन सिंह, राजा विजयपाल सिंह, राजा वहलोल लोधी, राजा सिंकदर लोधी, राजा चंद्र हंस, राजा भगवत (गोडला, गुजरात), हजरत नवरंग शाह अवं हजरत अवरंग शाह (सिकंदर लोधी के मौलवी, गुजरात), नागर संत नरसिंह महता (गुजरात), राजा कणक चावड़ा (कणकई नगरी, गुजरात), राजा मोकल, महारानी कर्णावती, राजा कृष्णादेवराय, रानी भोपाली (दरावड़ राज्य), अहमद शाह प्रथम, गयासुद्दीन मुहम्मद शाह, खिज्र खां, महमूद बेगड़ा, शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम, अलाउद्दीन, अहमद द्वितीय, महमूद गवाँ, युसूफ आदिल खां, सुल्तान जैनुल आबिदीन, अलाउद्दीन हुसैन शाह, महमूद खलजी प्रथम, राज मालदेव, बीबी भानमती (सुल्तान शहर), बीबी करमा बाई, दक्षिण का राजा, रानी योगवती, रानी चंपक मालिनी, मोचन बाई, राजा बिट्ठल दास, राजा भूप सिंह, सूफी संत अली मुहम्मद जी, संत मुरमन, हजरत ख्वाजा बंदा नवाज, संत शांती बाई नेपाल आदि अनेकों राजा-रानियों ने सतगुरु रविदास महाराज जी को अपना गुरु माना। मानवता के मसीहा डॉ. भीम राव अम्बेडकर साहिब जी ने भारतीय संविधान की रचना, गुरू जी के पावन शब्द 'बेगमपुरा सहर को नाउँ' के आधार पर की।

रविदास सोइ साधु भलो,जऊ रहइ सदा निरवैर।
सुखदायी समता गहहि सभनह मांगहि खैर।।

ऐसे ही महान् परोपकारी तपस्वी ब्रह्मज्ञानी सत्गुरू स्वामी सरवण दास जी ने गांव बल्लां की पावन धरती पर श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन किया तथा संसारिक जीवों को प्रभु का सिमरन करवाया। आप सदैव संगत को विद्या ग्रहण करने, माता पिता की सेवा करने, बड़ों का सम्मान करने, छोटों के साथ प्रेम करने, संतों की संगत करने तथा हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश दिया करते थे। गांव बल्लां की ही पावन धरती पर उन्होंने डेरा का निर्माण करवाया तथा दिनांक 2 फरवरी 1964 को इस अस्थान का नामकरण 'डेरा रविदासियाँ दा' का नाम देकर रविदासियों की पहचान को आगे बढ़ाया। एक बार श्रद्धालुजनों ने सत्गुरू सरवण दास महाराज जी के चरणों में प्रार्थना की कि,"महाराज जी रविदासिया कौम की गुलामी की जंजीरें कब टूटेंगी?" तब सत्गुरू सरवण दास जी ने फरमाया कि, "जब जगत्गुरु रविदास महाराज जी की अमृतवाणी एकत्रित होगी।" सतिगुरू सरवण दास जी महाराज ने अपनी दिव्य दृष्टि द्वारा जगत्गुरु रविदास महाराज के पावन जन्म अस्थान की खोज की तथा आषाढ़ की सक्रांति 14 जून सन् 1965 ई.

में संत हरी दास जी महाराज के कर कमलों से उसका शिलान्यास रखवाया। संत गरीब दास जी महाराज की निगरानी में इस स्थान पर निर्माण कार्य करवा कर समाज को एक महान् तीर्थ स्थान प्रदान किया तथा उच्चारण किया कि इस पावन तीर्थ स्थान पर समस्त विश्व से संगत आया करेगी। संत गरीब दास जी द्वारा 7 अप्रैल 1994 को इस मंदिर पर 7 फुट स्वर्ण कलश सुशोभित किया गया, जिसका उदघाटन बसपा सुप्रीमो बाबू कांशी राम साहिब जी ने किया। संत रामानंद जी ने इस स्थान पर स्वर्ण कलश सुशोभित किए तथा स्वर्ण मंडन का कार्य आरम्भ किया।

24 मई 2009 को मानव विरोधियों ने श्री गुरू रविदास टैम्पल वियाना में हमला किया। इस हमले में संत निरंजन दास जी महाराज जख्मी हुए। 25 मई को प्रभात समय रविदासिया कौम के लिए संत रामानंद जी शहादत का जाम पीते हुए ब्रह्मलीन हो गए। इस के विरोध में रविदासियाँ कौम ने पूरे विश्व मे अपनी एकता एवं शक्ति को प्रदशित करते हुए रोष प्रकट किया। शहीद विजै कुमार, शहीद रजिंदर कुमार, शहीद बलकार सिंह, शहीद तेलू राम जी ने शहादत दी। इसके पश्चात् जगत्गुरू रविदास महाराज जी के 633 वें प्रकाश उत्सव के अवसर पर, श्री गुरू रविदास जन्म अस्थान मन्दिर सीरगोवर्धनपुर, वाराणसी से जगत्गुरू रविदास महाराज जी, सत्गुरू सरवण दास जी महाराज जी और संत समाज की कृपा से हजारों की संख्या में विश्व भर में संत समाज तथा लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में रविदासिया धर्म ऐलान किया गया। रविदासिया कौम के 20 करोड़ से भी अधिक लोग इस नई पहचान को पाकर हर्षित हुए। उस रात सदी के सबसे बड़े चन्द्रमा में जगत्गुरू रविदास महाराज जी ने दर्शन देकर आशीर्वाद दिया। विश्व भर में अमृतवाणी ग्रन्थ के प्रकाश लाखों की तादाद में हो चुके हैं। अमृतवाणी ग्रन्थ की व्याख्या का अनुवाद पंजाबी, हिन्दी, मराठी, नेपाली, अंग्रेजी, गुजराती, बंगाली, आसामी, इटालियन, डच, स्पेनिश, फ्रेंच, ग्रीक, और अनेक भाषाओं मे प्रकाशित हो चुका है एवं सुखसागर गुटके अनेक भाषाओं में लाखों की संख्या में विश्वभर में पहुंच चुके हैं। इस पुस्तक को तैयार करने के लिए श्री साधू राम हीर, परवान, डा. रीना बिरदी, डा. सीमा बिरदी, प्रो. रमन कुमारी, मिस अंजना, श्रीमती सुमन बाला एम.ए., रिटा. प्रिंसीपल श्री जोगी राम, सुखविंदर कुमार एम.ए., पूनम एम.ए. के विशेष सहयोग के लिए आभारी हूँ। अमृतवाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी (सटीक) जगतगुरू रविदास महाराज जी और सत्गुरू सरवण दास जी महाराज की कृपा से संगत की भेंट करता हुआ प्रसन्ता अनुभव कर रहा हूँ।

– गुरू चरणों का दास

संत सुरिन्दर दास बावा

* * *

'रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान' काहनपुर का संक्षिप्त इतिहास

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर गाँव काहनपुर जिला जालन्धर में जालन्धर से पठानकोट जाने वाले राष्ट्रीय राज मार्ग पर स्थित है। इस अस्थान की स्थापना यहाँ के सरप्रस्त एवं रविदासिया धर्म के अनमोल हीरे संत सुरिन्दर दास बावा जी ने करवाई। जिसका शिला न्यास संत समाज और संगत की उपस्थिति में आदरणीय संत सुरिन्दर दास बावा जी, संत बीबी कृष्ना देवी जी(गद्दी नशीन) डेरा संत हरिदास महाराज जी बोपाराय कलां वालो ने अपने कर कमलों से 27 मार्च 2014 को रखा, जिसके लिए एक प्लॉट स्व. श्री मोहन लाल जी की पत्नी श्रीमति बीबी शकुंतला जी काहनपुर के परिवार की ओर से दिया गया। इस ओर इलाके की संगत में भारी उत्साह पाया जा रहा था। यही कारण है कि जगत्गरू रविदास नामलेवा संगत की कारसेवा से वर्षों में होने वाला निर्माण कार्य महीनों में कर लिया। आज इस स्थान पर दूर-दूर से संत महापुरुष, समाजिक और धार्मिक सभायें एवं सत्गुरु रविदास जी महाराज नामलेवा संगत पहुँचती है। एक छोटे से गाँव में निर्मित बुलंदियों को छूता यह अस्थान पूरे विश्व में अपनी किरणें बिखेर रहा है। संगत में अधिक प्रचार और प्रसार की ज़रूरतों को देखते हुए यूरोप की संगत की ओर से इस अस्थान के संस्थापक संत सुरिन्दर दास बावा जी को एक सफारी गाड़ी 01-01-15 को भेंट की गई। दो मंज़िला बड़े हॉल में जगत्गुरू रविदास महाराज जी के नाम से एक संगीत अकैडमी खोली गई है, जिसमें संगीत के धनी अध्यापक हरमोनियम और तबले के साथ संगीत के ज्ञान के बारे में विशेष शिक्षा दे रहे हैं। जिसमें करीब 50 लड़के-लड़कियां इस अकैडमी के लाभ ले रहे हैं जिसका सारा खर्च संत सुरिन्दर दास बावा जी और संगत के सहयोग से किया जा रहा है। प्रचार अस्थान पर दुखी और रोगी व्यक्तियों की मदद देसी दवाईयों के साथ की जाती है। बेरोजगार बच्चों को अलग-अलग कोर्स और कार्य व्यवसायिक सम्बन्धित कोर्सों से जोड़ा जाता है।

गाँव काहनपुर में बाबा पिप्पल दास जी महाराज बालक संत सरवण दास जी को पाँच वर्ष की आयु में साथ लेकर सबसे पहले आए। जब कुटिया बनाने के लिए नींव खोदनी आरम्भ की वहा से ड़मोही और उसके बच्चे निकले, महाराज जी ने कहा किसी का घर उजाड़कर हम अपना घर कैसे बना सकते हैं। यह बोल कर अगले गाँव चल पड़े और वचन किए फिर आएँगे और अपना अस्थान बनाएंगे। संत सुरिन्दर दास बावा जी के पिता श्री गुरदास राम जी बीबी गुरबचन कौर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के श्रद्धालु थे। इन के गृह पर सत्गुरू जी कई रातें रूके। एक समय 1972 ई. में बीबी गुरवचन कौर बिमार हो गई। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। सत्गुरू सरवण दास महाराज जी ने स्वयं संगत सहित सिविल अस्पताल जालन्धर जाकर बीबी गुरबचन कौर की जान बचाई और वर दिया कि,''इस पुत्र को नहीं रोना।

तुम्हारे दो पुत्र और होंगे।'' बीबी जी ने उस समय ही बड़े पुत्र को सत्गुरू सरवण दास जी के चरणों में भेंट किया।

सेवा भावना की गुड़ती आप जी को अपने माता पिता जी से ही प्राप्त हुई थी। आप जी के आदर योग्य माता पिता सत्गुरू सरवण दास जी महाराज जी के श्रद्धालु थे और सत्गुरू सरवण दास जी का पूरा आर्शीवाद आप जी के पिता श्री गुरदास राम जी को प्राप्त था, जिसकी मिसाल आप जहाँ दी गई है कि जिस समय स्वामी सरवण दास जी 11 जून 1972 को ब्रह्मलीन हो गए, अंतिम संस्कार करने की तैयारी पूरी थी। चिता में देसी घी, चंदन की लकड़ी, धूप सामग्री आदि पाया जा रहा था। अग्नि-भेंट करने के लिए अरदास हो चुकी थी। वहाँ पर मौजूद व्यक्तियों के मुताबिक ब्रह्मलीन स्वामी सरवण दास जी महाराज के पाँच तत्व शरीर में से खून की धारायें निकलीं जो कुछ बूंदे श्री गुरदास राम जी के शरीर पर गिरी। यह एक विचार योग्य बात है कि यह बूंदें श्री गुरदास राम जी के ऊपर ही क्यों गिरी और फिर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज के ब्रह्मलीन होने के पूरे 9 माह बाद 14 मार्च, 1973 ई. संत सुरिन्दर दास बावा जी का जन्म एक आध्यात्मक सवाल खड़ा कर देता है। पाँच वर्ष की आयु में संत हरीदास जी ने महाराज बावा जी को भगवां भेष पहना कर सुच्ची गाँव से डेरा बल्लां ले आए और श्री 108 संत गरीब दास जी महाराज जी ने उच्च शिक्षा दिलवाई।

संत सुरिन्दर दास बावा जी के द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज और सत्गुरू सरवण दास जी महाराज की और संत समाज की कृपा से संत निरंजन दास जी महाराज के नेतृत्व में 30 जनवरी 2010 ई. को 'रविदासिया कौम' को 'रविदासिया धर्म' का ऐलान लाखों की संगत के बीच में कर अलग पहचान प्रदान की।

रविदासिया धर्म प्रचार अस्थान पर एक पुस्तकालय 'सत्गुरू सरवण दास जी महाराज' की याद में बनायी गई है, जिस में हज़ारों की गिनती में पुस्तकें हैं, जिस में 'दलित इतिहास' और दलित सम्बन्धी लेखकों की पुस्तकें रखी गई हैं। महान् गुरू, देशभक्तों, योद्धाओं एवं साहित्यकारों से सम्बन्धित साहित्य इस पुस्तकालय में मौजूद हैं यहा ही बस नहीं बाबा साहिब डॉ. अंबेडकर और अलग-अलग पुस्तकालयों द्वारा लिखारियों को मुफ्त किताबें बांटी जाती हैं। जगत्गुरू रविदास जी महाराज और सतगुरू सरवण दास जी महाराज जी के मिशन का निरंतर प्रचार होता है।

बावा जी ने 2010, 2011, 2012, 2013 में कई बार यूरोप, आस्ट्रीया, ग्रीस, ईटली, फ्रांस, जर्मन, होलैंड, स्पेन, नार्वे, अर्मोरिका, कैनेडा, यू.ए.ई और यू.के में, 2014 में इटली और आस्ट्रीया, 2015 में ग्रीस, ईटली पुर्तगाल आस्ट्रीया, 2016 में अमरीका, कैनेडा, ग्रीस, ईटली, आस्ट्रीया और यू.के 2017 में आस्ट्रीया, यू.के, ग्रीस, ईटली, अमेरीका, कैनेडा और यू.ए.ई में, 2018 इंग्लैंड, यूरोप, आस्ट्रीया, ग्रीस, ईटली, फ्रांस, नार्वे, अमेरिका, कनेडा और यू.ए.ई, 2019 में आस्ट्रीया, ग्रीस, ईटली,

फ्रांस, अमेरीका, कनेडा, 2021 में इंग्लैंड, 2022 में ग्रीस, इटली, यू.के., आस्ट्रीया, कैनेडा, 2023 ग्रीस, इटली, आस्ट्रीया, स्पेन, पुरतगाल, जर्मनी, अमेरीका यू.के., कैनेडा, 2024 ग्रीस, आसट्रीया, इटली, स्पेन, पुर्तगाल, यू.के., अमेरिका, कैनेडा, 2025 आस्ट्रेलिया, आसट्रीया, इटली, ग्रीस, पुरतगाल, अमरीका, कैनेडा, 2026 में असट्रीया, स्पेन, ग्रीस, इटली, यू.के., अमोरिका, कैनेडा में रविदासियां धर्म का प्रचार किया।

संत सुरिन्दर दास बावा जी को 2010 में श्री गुरू रविदास सभा बैरगामो इटली, 2011 में श्री गुरू रविदास सभा करोपी ऐथन ग्रीस में, 2012 श्री गुरू रविदास सभा वियाना आस्ट्रीया, 2012 श्री गुरू रविदास सभा बलैन्सीया, स्पेन, 2012 श्री गुरू रविदास सभा रोम, 2014 गाँव मदारां, जिला जालन्धर(पंजाब), 11 सितंबर 2015 श्री गुरु रविदास सुखसागर दरबार मनीदी ग्रीस, 30 दिसंबर 2015 गाँव अलावलपुर, 11 सितंबर 2016 साउथ हाल लंदन में, 21 मई 2017 श्री गुरू रविदास भवन वारी इटली में, 28 मई 2017 श्री गुरू रविदास दरबार करोपी, ऐथनस, गरीस और 20 अगस्त 2017 ई. टोरोंटो कैनेडा में, 30 दिसंबर 2017 सुच्ची गाँव में 2 सितम्बर 2018 टिंपटन, यू.के., 2 नवंबर 2019 को शिकागो अमरीका, 5 नवंबर 2021 बिलसटन यू.के., 26 जून 2022 श्री गुरू रविदास टेंपल कक्रमोता इटली, 3 जुलाई 2022 श्री गुरू रविदास टैंपल सबोदिया, रोम, 21 मई 2023 श्री गुरू रविदास दरबार करोपी एथनस, ग्रीस, 17 जून 2023 श्री गुरू रविदास टैंपल पारमा-पिचिंसा ईटली में रविदासिया कौम की ओर से गोल्ड मैडलों से सम्मानित किया गया।

भारतीय दलित साहित्य अकैडमी दिल्ली की ओर से 2006 में संत सुरिन्दर दास बावा जी को श्री गुरू रविदास नैशनल अवार्ड के साथ सम्मानित किया गया। बढ़ती हुई संगत और प्रचार प्रसार हितों को ध्यान में रखते हुए देश-विदेश की संगत की ओर से पास में कई प्लॉट इस स्थान को खरीद कर दे दिये। आज यह प्रचार अस्थान एक प्रकाश की किरण बनकर संगतों में उभर रहा है। इस पावन स्थान पर संत सुरिन्दर दास बावा जी ने स्थाई तौर पर निवास स्थान बनाया हुआ है। यहाँ आप स्वयं नाम जपते, अमृतबाणी पढ़ते सुनते और संगत को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। इस पावन स्थान पर रविदासीया धर्म के नियम मुताबिक ही अपने आपको ढालकर चलना पड़ता है। इस प्रचार अस्थान पर अमृतवाणी भवन उसारा गया है, जिसमें ''अमृतवाणी सत्गुरू रविदास महाराज जी'' सुशोभित है जिस के सुबह शाम जाप और सत्संग होते हैं। हर रविवार और संक्रांति पर विशेष दीवान सजाए जाते हैं। यहाँ पर लोगों की मनोकामनाएं पूरी होती हैं। **इस स्थान में जगतगुरु रविदास एजुकेशन सेंटर का निर्माण हो चुका है। यहाँ विद्यार्थीयों को परीक्षा की तैयारी करवाई जा रही है और माहिर विद्वानों द्वारा मुफ़्त कोचिंग दी जा रही है।** इस पावन अस्थान पर लोगों की अपार श्रद्धा है। प्रतिदिन सुबह से शाम संगत दर्शनों के लिए आती है। इस स्थान से जगत्गुरु रविदास महाराज और सतगुरु सरवन दास

महाराज जी के मिशन का प्रचार प्रसार होता है। इस दरबार में लोगों को नाम बाणी के साथ-साथ समाजिक कुरीतियों जैसे नशे, दहेज, समागमों में अधिक खर्च, भ्रूणहत्या, निंदा-चुगली से मुक्त होने के लिए, बच्चों को उच्च शिक्षा, बुर्जुगों का सत्कार करने के लिए विशेष प्रचार किया जाता है। यह प्रचार अस्थान सभी के लिए खुला है। प्रत्येक धनी एवं गरीब के लिए समान है और सभी के सत्कार हित बनाया गया है। जहाँ पर कोई भी ऊँच-नीच नहीं है। इस प्रचार अस्थान पर मानवता की भलाई, जगत्गुरू रविदास महाराज जी के बेगमपुरा का संकल्प और बाबा साहिब डा. भीम राव अंबेडकर जी के पढ़ो, जुड़ो, संघर्ष करो के विचार का प्रचार होता है।

इस अस्थान पर 24 जुलाई 2016 दिन रविवार को संत सुरिंदर दास बावा जी, संत सत्यपाल जी चंढीगड़, संत बीबी कृष्ना देवी जी बोपाराय कलां, संत हरविंदर दास आदमपुर और संत समाज की उपस्थिति में जगत्गुरू रविदास महाराज जी की प्रतिमा 'अमृतवाणी भवन में स्थापित की गई। इस अवसर पर श्री साधु राम हीर जी (रिटायर चीफ इंजीनियर, नार्थ ज़ोन दूरदर्शन दिल्ली) की रविदासिया कौम की बहुमूल्य सेवाओं के लिए गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। तिथि 10 जुलाई, 2019 को सचखंड वासी मिशनरी लेखक श्री कांशी राम कलेर की अमूल्य सेवाओं के लिए उनकी पत्नी श्रीमति किरण बाला को संत सुरिन्दर दास बावा जी और संत समाज की हाजरी में गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। तिथि 14 जनवरी 2020 को संत सत्यपाल दास जी, बरवाला, हरियाणा जिन्होंने भारत के कोने-कोने में रविदासीया धर्म का प्रचार प्रसार किया उनको संत सुरिंदर दास बावा जी ने संत महापुरषों और संगत की हाज़री में गोल्ड मैडल से सम्मानित किया गया। इस प्रचार अस्थान की प्रसिद्धी आज पूरे विश्व भर में तेज़ी से हो रही है। इस अस्थान पर रहने और लंगर आदि की सुविधा भी है।

इस अस्थान से अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी (सटीक)(English) और जगतगुरू रविदास महाराज जी की पावन जीवन कथाएँ (English) को विश्व की अनेक यूनिवर्सिटी में भेजा गया है। अमृतवाणी सतगुरु रविदास महाराज जी सटीक, जगतगुरु रविदास महाराज पावन जीवन कथाएँ, सुखसागर, अन्य भाषाओं में किताबें, कलैंडर, आरतीयां, सी.डी., वी.सी.डी., बाबा साहब डॉ० भीम रॉय अंबेडकर जी, संत-महापुरषों और दलित साहित को विश्व के कोने-कोने में भेजा जाता है।

इस प्रचार स्थान पर सत्गुरू सरवण दास जी महाराज का संकल्प साकार होता नजर आ रहा है, जिसके बारे में महाराज जी सोचा करते थे कि जगत्गुरू रविदास जी महाराज का घर-घर प्रचार हो। इस महान् कार्य के लिए संत सुरिन्दर दास बावा जी दिन रात एक करते हुए प्रयत्नशील है। सत्गुरू इन पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें जो कि कौम के कार्यो के लिए डटे रहे। इस प्रचार अस्थान की प्रसिद्धी पूरे विशव में तेज़ी से हो रही है। जिसको सफल बनाने के लिए सभी संगत का सहयोग है।

* * *

विषय सूची

सिरी रागु

1. तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा॥ 21

रागु गउड़ी

2. मेरी संगति पोच सोच दिनु राती॥ 23
3. बेगमपुरा सहर को नाउ॥ 24
4. साधौ! का साश्त्रण सुनि कीनौ। 27
5. तेरा जन काहे को बोलै। 28
6. ऐसी भगति न होयि रे भाई। 29
7. है सब आतम सुख परकास साँचो। 32
8. कोउ सुमरन देखौं ये सब उपली चोभा॥ 33
9. पहिले पहरे रैणि दे बणिजारिया 33
10. या रामा एक तूं दाना तेरा आदि भेख ना 38

गउड़ी बैरागणि

11. घट अवघट डूगर घणा 39
12. सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार 41

गउड़ी पूरबी

13. कूपु भरिओ जैसे दादिरा 44

राग आसा

14. म्रिग मीन भिंग पतंग कुंचर 46
15. संत तुझी तनु संगति प्रान. 48
16. तुम चंदन हम इरंड बापुरे 50
17. कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु । 51
18. हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे॥ 53
19. माटी को पुतरा कैसे नचतु है। 56

राग गूजरी

20. दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥ 57

राग सोरठि

21. जब हम होते तब तू नाही 59
22. जउ हम बांधे मोह फास 61

23. दुलभ जनमु पंन फल पाइओ 63
24. सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जाके 64
25. जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा 67
26. जल की भीति पवन का थंभा 69
27. चमरटा गांठि न जनई। 71
28. रे मन! चेत मीचु दिन आया 72

राग धनासरी

29. हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि 73
30. चित सिमरन करउ नैन अविलोकनो 74
31. नामु तेरो आरती मजनु मुरारे॥ 76
32. मेरी प्रीति गोपाल सों जन घटै हो। 77
33. त्राहि त्राहि त्रिभुवनपति पावन। 79
34. दरशन दीजै राम दरशन दीजै। 80
35. जन को तारि तारि नाथ रमईया। 81
36. जो तुम गोपालहिं नहिं गैहौ। 82
37. प्रभु जी संगति सरन तिहारी। 83
38. पांडे कैसी पूजि रची रे। 84

राग जैतसरी

39. नाथ कछूअ न जानउ॥ 86

राग सूही

40. सह की सार सुहागनि जानै । 88
41. जो दिन आवहि सो दिन जाही॥ 90
42. ऊचे मंदर साल रसोई॥ 92
43. दुखियारी दुखियारा जग महि 94

राग बिलावलु

44. दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी॥ 95
45. जिह कुल साधु बैसनो होइ ।। 96
46. का तूं सोवै जागि दिवाना। 98
47. खालिक सिकस्ता मै तेरा। 100
48. जो मोहि बेदनि कासनि आखू 101

49. ता थें पतित नही कौ पावन 103
50. ऐसा ही हरि क्यूं पइवो 104
51. का गाऊं कछु गायि न होयि 106
52. अब का कहि कौन बताऊं। 107
53. खोजत कियूं फिरै तेरे घट महि सिरजनहार ॥ 108
54. संतो कुल पखी भगति द्वैसी कलियुग मे ॥ 110
55. पांडे! हरि विच अंतर डाढा ।। 111
56. मन मेरो थिरु न रहाई 113
57. हम घर आयहु राम भतार 113
58. कालहु नायि ताहि पद सीस 114

रागु गोंड

59. मुकंद मुकंद जपहु संसार ॥ 116
60. जे ओह अठिसठि तीरथ न्हावै॥ 118
61. आज दिवस लेऊँ बलिहारा ॥ 120
62. ऐसे जानि जपो रे जीव। 121

राग रामकली

63. पड़ीऐ गुनीऐ नाम सभु सुनीऐ 123
64. परचै राम रमै जो कोई। 124
65. अब मैं हारयो रे भाई।..127
66. गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ। 129
67. राम जन होऊँ न भगत कहा 131
68. अब मेरी बूडी रे भाई तातै चडी लोक बड़ाई ।। 132
69. भाई रे! भ्रम भगति सुजानि। 135
70. ज्यो तुम कारनि केसवे अंतर लिव लागी।.................................136
71. आयौं हो आयौं देव तुम सरना। 137
72. भाई रे राम कहां है मोहि बतावो॥ 138
73. ऐसो कुछु अनुभौ कहत न आवै॥..140
74. पंडत! अखिल खिलै नही का कहि गांऊ 141
75. नरहरि चंचल है मति मोरी 143
76. तब राम नाम कहि गावैगा 144

77. संतो अनिन भगति यह नाहीं॥ 145
78. भक्ति ऐसी सुनहु रे भाई । 146
79. अब कछु मरम बिचारा हो हरि। 147
80. नरहरि प्रगटसि ना हो प्रगटसि ना हो 149
81. ज्यो तुम कारन केसवे लालच जिव लागा। 151
82. गोबिंदे भौजल बियाधि अपारा। 152
83. आगै मंदा हवै रहया परकिरति न जाई ।। 153

राग रामकली चउपदा

84. ध्रिग ध्रिग जीवणु राजे राम बिना।। 154

रागु मारु

85. ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै। 155
86. सुख सागर सुरितरु चिंतामनि 157

रागु मारु (चौपदे)

87. पीआ राम रसु पीआ रे॥. 158
88. मन मोरा माया महि लपटानो।। 159
89. बीति आयु भजनु नहीं कीन्हा ।। 160
90. प्रभु जी तुम औगुन बख्शणहार। 161

राग केदारा

91. खटु करम कुल संजुगतु है 162
92. रे मन राम नाम संभारि। 163
93. हो बनिजारौ राम को 164
94. प्रीति सुधामनि आव। 166

राग भैरउ

95. बिनु देखे उपजै नही आसा॥ 168
96. ऐसा ध्यान धरौं बनवारी। 170
97. अबिगति नाथ निरंजन देवा। 172
98. भेष लियो पै भेद न जान्यो। 173
99. गुरु सभु रहसि अगमहि जानैं। 174

राग बसंतु

100. तुझहि सुझंता कछू नाहि ॥ 175

राग मलार

101. नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं ।।.................................177
102. हरि जपत तेऊ जना पदम कवलासपति 179
103. मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते॥.................................181

राग आसावरी

104. केसवे विकट माया तोर ताते 183
105. रामहि पूजा कहा चढ़ाऊँ॥...184
106. बरजि हो बरजि बीठुले माया जग खाया॥..................................185
107. तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु।...187
108. बंदे जानि साहिब गनी। 188
109. सु कछु बिचारियो ताथे मेरो मन 190
110. भाई रे सहज बन्दो सोई 191
111. देहु कलाली एक पियाला। 192
112. ऐसी मेरी जाति विखियात चमारं ।।...193
113. पार गया चाहै सभ कोई 195
114. सतगुर हमहु लखाई बाट। 196
115. बापुरो सत रविदास कहै रे। 197
116. ऐ अंदेस सोच यिह मेरे । 199
117. बौरी करिलै राम सनेहा।..200
118. रे मन मांछला संसार समुंदे 201
119. रथ को चतुर चलावनहारो। 203
120. जो तुम तोरो राम मै नहिं तोरौं। 204
121. केहि बिधि अब सुमिरौ रे 205
122. अब कैसे छूटै नाम रट लागी॥ 206
123. माधो भ्रम कैसे न बिलाई। 208
124. मन मेरो सत सरूप बिचारं ॥...209
125. थोथो जनि सोई पछोरो रे कोई।...211
126. माधौ ! मोहि एक सहारौ तोरा ।। 212

राग टोडी

127. पावन जस माधो तोरा। 213

राग सारंग
128. जग में वेद बैद मनीजै।..214
129. तुम करहु कृपा मोहि सांई ।। 215
130. चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ॥..216
131. हरि सिमरै सोई संत बिचारौ। 217
राग जैश्री
132. सब कुछ करत न कहौं कुछ कैसे। 218
राग कानडा (दोपाद)
133. जा कै राम जी धनीता के काहि की कमी है।........................... 220
134. भगति न होय रे न होई 221
135. रे पायो रे राम आमी रस ॥ 222
136. देखि मूरखता यहु मन की। 223
आरती
137. आरती कहाँ लैं कर जोवै। 224
138. संत उतारै आरती देव सिरोमनीये॥ 225
139. गगन मंडल में आरती कीजै 226
140. आरती करत हरषै मन मेरो 227
141. पदे 229
142. पैंतीस अक्षरी 255
143. बाणी हफतावार 261
144. बाणी पन्दरां तिथी 263
145. बारह मास उपदेश 272
146. सांद बाणी 288
147. शादी उपदेश 291
148. मंगलाचार 295
149. श्लोक 301
150. अरदास 348

* * *

धन-धन जगतगुरू रविदास महाराज जी

सतिगुरू सरवण दास महाराज जी
हरि
श्री गुरू रविदास जन्म स्थान मंदिर सीर गोवरधनपुर, वाराणसी (यू.पी.)

समर्पण

जगतगुरू रविदास महाराज जी के 650वें आगमन पर्व एवं रविदासीया धर्म के 18वें स्थापना दिवस को समर्पित

***

जनगणना में अपना रविदासीया धर्म जरूर लिखवाओ जी।

***

अपने सभी सामाजिक और धार्मिक कार्य रविदासीया धर्म और श्री अमृतबाणी के अनुसार करो जी।

***

सिरी रागु

शब्द 1

तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा॥ 1॥
जउपै हम न पाप करंता अहे अनंता॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता॥ 1॥ रहाउ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी॥ 2॥
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू॥
रविदास समदल समझावै कोऊ॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज इस शब्द द्वारा प्रभु में अपनी अभिन्नता का वर्णन करते हैं कि, ''प्रभु जी! मैं आप का नाम सिमरन कर आप का ही रूप हो गया हूँ। जो जीव इस संसार में सभी तरह के बंधनों से मुक्त होकर प्रभु का नाम सिमरन करता है, वह प्रभु का ही रूप हो जाता है।''

(जैसे सत्गुरु नामदेव जी महाराज और सत्गुरु कबीर जी महाराज फरमाते हैं:- 'नामे नाराइन नाही भेदु॥ राम कबीरा एक भए है कोइ न सकै पछानी॥')

तोही मोही मोही तोही अंतरू कैसा॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा॥ 1॥

''हे प्रभु जी! तेरे मेरे और मेरे तेरे में कैसा अंतर है भाव कोई अंतर नहीं है। मैं आप जी का नाम सिमरन कर आप जी का ही रूप हो गया हूँ यदि अंतर है तो केवल इतना ही है, जैसे स्वर्ण से अनेकों प्रकार के आभूषण बनते है लेकिन वास्तव में वह स्वर्ण ही होते हैं। जब स्वर्ण के आभूषणों को कुठाली में डालकर पिघलाया जाता है तो वह स्वर्ण ही बन जाते हैं। इसी तरह ही पानी और पानी से पैदा हुई तरंगों में कोई अंतर नहीं है। तरंग पानी में से ही पैदा होती है और पानी में ही समा जाती है। ऐसे ही यह जीव आप में से ही पैदा हुआ है और आप में ही समा जाता है।'' (इस सम्बन्ध में सतगुरु नामदेव जी ने भी उच्चारण किया है:-

जल ते तरंग तरंग ते है जलु कहन सुनन कर दूजा॥ 1॥

जैसे तरंग पानी से पैदा होती है और पानी में ही समा जाती है केवल बाह्य

भेद के कारण जल और तरंग कहने और सुनने को दो हैं वास्तव में यह एक ही हैं। ऐसे ही जीव और प्रभु में कोई भेद नहीं है।)

जउपै हम न पाप करंता अहे अनंता॥

पतित पावन नामु कैसे हुंता॥ 1॥ रहाउ॥

''हे अनंत स्वरुप प्रभु जी! यदि हम सांसारिक जीव पाप न करते तो आप जी का नाम पापियों को पापों से मुक्त करने वाला कैसे होता?

(सत्‌गुरु नामदेव जी फरमाते 'पतित पवित भये राम कहत ही।। रहाउ॥' प्रभु का नाम उच्चारण करने से अनेकों पापी पवित्र हो गए हैं।'' सत्‌गुरु नानक देव जी फरमाते हैं:-'भरीऐ मति पापा कै संगि॥ ओह धोपै नावै कै रंगि॥'

जब जीव की मति पापों से भर जाती है तो वह प्रभु के नाम से रंग हो कर पापों से मुक्त हो जाती है।)

तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी॥

प्रभ ते जन जानीजै जन ते सुआमी॥ 2॥

''प्रभु जी, आप सारे संसार के जीवों और कण-कण को जानने वाले श्रेष्ठ मालिक हो। मैं आप जी का दास हूँ। जैसे मालिक के कारण दास और दास के कारण मालिक जाना जाता है ऐसे ही प्रभु जी आप अपने सेवकों के कारण और सेवक आप जी (प्रभु) के कारण ही जाने जाते हैं।'' (सत्‌गुरु नामदेव जी महाराज फरमाते हैं:-

ठाकुर ते जनु जन ते ठाकुरु खेलु परिओ है तो सिउ॥ 1॥

''हे प्रभु जी स्वामी के कारण सेवक और सेवक के कारण स्वामी जाना जाता है। मेरा आप जी से बराबर का खेल पड़ गया है। मैं आप जी का ही स्वरुप हूँ।'')

सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहु॥

रविदास समदल समझावै कोऊ॥ 3॥

सत्‌गुरू रविदास जी महाराज फरमान करते हैं कि,''प्रभु जी, मुझे ऐसे विचारों की बख्शीश करो कि जब तक मेरे शरीर में प्राण हैं मैं आपका ही सिमरन करता रहूं। मुझे सम-दृष्टि वाले संत महापुरुषों की संगत प्रदान करो, जो अज्ञानता में भटके हुए जीवों को यह समझाए कि सभी जीवों में प्रभु का ही वास है।''

रागु गउड़ी
शब्द – 2

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती॥ 1॥
राम गुसईया जीअ के जीवना॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा॥ 1॥ रहाउ॥
मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई॥
चरण न छाडउ सरीर कल जाई॥ 2॥
कहु रविदास परउ तेरी सांभा॥
बेगि मिलहु जन करि न बिलांबा॥ 3॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज समस्त प्राणियों को पावन उपदेश देते हैं कि,''प्रभु को भूले हुए जीव की संगत नीच है। जब यह जीव दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त कर भेद भाव और विषय–विकारों के बंधन से मुक्त हो जाता है और प्रभु के नाम की शरण ले लेता है तो जीव का लोक–परलोक संवर जाता है।''

मेरी संगति पोच सोच दिनु राती॥
मेरा करमु कुटिलता जनमु कुभांती॥ 1॥

''हे प्रभु जी! मेरा भाव सांसारिक जीव की संगत् विषय–विकारों के कारण नीच है। यह सोच मुझे दिन रात लगी रहती है। प्रभु को भूले हुए जीव का कर्म भी नीच है और जन्म भी नीच है। जब तक यह जीव प्रभु का सिमरन नहीं करता, इस जीव का दुर्लभ मनुष्य जन्म निष्फल है।''

राम गुसईया जीअ के जीवना॥
मोहि न बिसारहु मै जनु तेरा॥ 1॥ रहाउ॥

''हे सर्वव्यापक अकाल पुरख जी! जीवों को जीवन देने वाले प्रभु जी मुझे न भुलाइए। मैं आप जी का ही दास हूँ।''

मेरी हरहु बिपति जन करहु सुभाई॥
चरण न छाडउ सरीर कल जाई॥ 2॥

''प्रभु जी मेरी जन्म–मरण, रूप विपदा दूर करें। मुझ दास को यह स्वभाव प्रदान करें कि चाहे मेरा शरीर चला जाए, मैं आप जी के चरण न छोड़ूं।''

कहु रविदास परउ तेरी सांभा॥

बेगि मिलहु जन करिन बिलांबा ॥ 3 ॥1 ॥

सत्‌गुरू रविदास जी महाराज प्रभु के आगे निवेदन करते हैं कि,"हे प्रभु जी! मैं आप जी की शरण में आया हूँ, आप जी मुझे जल्दी आकर दर्शन दें और (विलम्ब) देरी न करें जी।"

शब्द – 3

बेगमपुरा सहर को नाउ॥ दूखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥
नां तसवीस खिराजु न मालु।। खउफु न खता न तरसु जवालु॥ 1 ॥
अब मोहि खूब वतन गह पाई॥ ऊहां खैरि सदा मेरे भाई ॥1 ॥ रहाउ॥
काइमु दाइमु सदा पातिसाही॥ दोम न सेम एक सो आही॥
आबादानु सदा मसहूर॥ ऊहां गनी बसहि मामूर॥ 2 ॥
तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै॥ महरम महल न को अटकावै॥
कहि रविदास खलास चमारा॥ जो हम सहरी सु मीतु हमारा॥ 3 ॥ 2 ॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज मानवता को उपदेश देते हैं कि, "यह जीव प्रभु का सिमरन कर सब तरह के बंधनों से मुक्त होकर प्रभु के निज घर बेगमपुरा शहर का वासी बन जाता है। इस तरह ही समस्त मानवता के लिए एकता, समानता, भाईचारा स्थापित करने के लिए विश्व में बेगमपुरा वतन की स्थापना पर बल दिया है। यहाँ हर जीव रंग-भेद, ऊँच-नीच, पराधीनता, गुलाम प्रथा और सभी तरह के सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर एकता का आनंद उठा सकता है। बेग़मपुरा वतन में हर प्राणी को सामाजिक समानता, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मानवीय अधिकार प्राप्त हों।" सत्‌गुरू रविदास महाराज जी ने समस्त मानवता के लिए कल्याणकारी लोकतान्त्रिक समाजवाद की नींव रखी। ऐसी व्यवस्था संसार में होने से सब समस्याओं का समाधान हो सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की टोरांटो में हुए सम्मेलन में ऐलान किया गया कि विश्व सरकार के संविधान का आधार श्री गुरु ग्रंथ साहिब होगा और उसकी प्रस्तावना (Preamble) सत्‌गुरु रविदास जी महाराज के शब्द 'बेग़मपुरा' पर आधारित होगी। इसी तरह मानवता के मसीहा डा० भीम राव अम्बेडकर जी ने भारत के संविधान की नींव, प्रस्तावना और संविधान की रूप-रेखा का सृजन भी सत्‌गुरु रविदास महाराज जी के 'बेग़मपुरा' शब्द के आधार पर किया है।

बेगमपुरा सहर को नाउ॥
दुखु अंदोहु नही तिहि ठाउ॥

सत्‌गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"जिस शहर में मैं रहता हूँ उस शहर का नाम बेग़मपुरा शहर है जो सब तरह के ग़म से मुक्त है। उस शहर में दु:ख, और चिन्ता के लिए कोई स्थान नहीं है।"

दूसरा अर्थ:-इस संसार में 'बेगमपुरा वतन' जैसी व्यवस्था होनी चाहिए, जिसमें सब मनुष्यों को समान नागरिकता प्राप्त हो और जहां स्वतन्त्रता, समानता, न्याय और भाईचारा हो। जिस में सब प्राणियों की प्राथमिक आवश्यकताएं पूरी हों और सब प्राणियों के अधिकार समान हों। सभी प्राणी बेगमपुरा वतन में सभी तरह के गम से मुक्त हो। किसी भी प्राणी को जाति-पाति का, ऊँच-नीच का, छुआ-छूत का, गरीब अमीर का, गोरे-काले का और रंग-भेद का कोई दु:ख और चिन्ता न हो।

नां तसवीस खिराजु न मालु।।
खउफु न खता न तरसु जवालु॥ 1॥

बेग़मपुरा शहर में न कोई चिंता है और न कोई घबराहट। न प्रभु के नाम का व्यापार करने के बदले कोई टैक्स देना पड़ता है। उस बेग़मपुरा के वासी डर, द्वेष, गुनाह, इच्छा, दया और कमी से मुक्त है और प्रभु में अभेद हैं।

दूसरा अर्थ:-बेग़मपुरा विश्व में हर प्राणी चिंता, घबराहट से मुक्त होता है, किसी को भी व्यापार करने पर विशेषतया: टैक्स नहीं देना पड़ता। जीव जुल्म के डर, खौफ, गुनाह, द्वेष और कमी से मुक्त होकर मानवीय अधिकारों और कर्तव्यों का आनंद लेता है।

अब मोहि खूब बतन गह पाई॥
ऊहां खैरि सदा मेरे भाई॥ 1॥ रहाउ॥

"हे भाई मैंने प्रभु के बेग़मपुरा शहर में उत्तम और अटल स्थान प्राप्त कर लिया है। इस शहर में सदैव सुख प्राप्त है।"

दूसरा अर्थ:-विश्व मानववादी वतन में हर एक जीव को वही स्थान प्राप्त होना चाहिए जहां उसको जीवन भर सुख प्राप्त हो।

काइमु दाइमु सदा पातिसाही॥
दोम न सेम एक सो आही॥

उस शहर में प्रभु की सत्ता सदैव स्थिर रहने वाली है। वहाँ प्रभु के

अतिरिक्त कोई दूसरा या तीसरा नहीं। वहाँ केवल अकाल पुरख बादशाह की सत्ता सदैव अटल रहने वाली है।''

दूसरा अर्थः–इस बेग़मपुरा वतन में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जो सदैव स्थिर रहने वाली हो। यहां हर जीव को समानता, स्वतन्त्रता, न्याय और नागरिकता प्राप्त हो। कोई दूसरे, तीसरी श्रेणी का नागरिक न हो।

आबादानु सदा मसहूर॥

ऊहां गनी बसहि मामूर॥ 2॥

''उस प्रभु का बेग़मपुरा शहर आध्यात्मिक जनसंख्या वाली रूहों से सदा आबाद है और प्रसिद्ध है। वहां प्रभु का नाम सिमरन करने वाली अमीर, सब्र-संतोष और इच्छायों से मुक्त जीव रहते हैं।''

दूसरा अर्थः–बेग़मपुरा वतन सूझ-बूझ वाले इन्सानों से सदा के लिए प्रसिद्ध हो। वहां जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएं प्राप्त कर मानव/प्राणी अपना जीवन आनंदमयी गुज़ार रहें हों।

(अबादान ईरान का प्रसिद्ध शहर है जहां पर जगत्गुरु रविदास जी महाराज अपनी अर्ब देशों की यात्रा के समय पहुंचे जो उस समय बहुत ही खुशहाल शहर था)

तिउ तिउ सैल करहि जिउ भावै॥

महरम महल न को अटकावै॥

''बेग़मपुरा शहर के निवासी उस शहर में अपनी इच्छानुसार गमन करते हैं। उस बेगमपुरा के महलों को जानने वाले जीव को घूमने-फिरने में कोई रूकावट नहीं है।''

दूसरा अर्थः–बेग़मपुरा वतन में मानवीय अधिकार प्राप्त नागरिकों को घूमने-फिरने की कोई रुकावट नहीं है। वह जैसे चाहें बेगमपुरा में किसी स्थान पर घूम सकते हैं।

कहि रविदास खलास चमारा॥

जो हम सहरी सु मीतु हमारा॥ 3॥ 2॥

सत्गुरू रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''मैं चमार प्रभु का नाम स्मरण कर सभी तरह के बंधनों से मुक्त हो गया हूँ। जो भी जीव इन बंधनों से मुक्त है, वह शुद्ध है। वही मेरा मित्र है और मेरा हमशहरी है।''

दूसरा अर्थः–सत्गुरू रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि बेगमपुरा

वतन में हर मनुष्य जाति-पाति, छुआ-छूत, गुलाम प्रथा, दास प्रथा, पराधीनता से मुक्त हो कर विश्व वतन के राज्य का नागरिक हो और सभी नागरिक मित्रतापूर्ण रहें।

इस पावन शब्द में सत्गुरु रविदास जी महाराज ने समस्त विश्व के लिए ऐसी विश्वव्यापी व्यवस्था की नींव रखी जिस में अटल सुख हों।

शब्द - 4

साधौ! का साश्त्रण सुनि कीनौ।
अनपावनी भगति नहीं साधी, भूखै अन्न न दीनौ।। टेक।।
काम न विसरयौ डियंभ न त्यागयो, लौभ न बिसारयो देवा।
पर निंदा मुख तै नहिं छाडि, निफल भयि सभु सेवा।। 1।।
बाट पाड़ि घर मुसि परायो, उदरि भरयो अपराधी।
होवै अपराधी केसो न सिमरियो, अहु अविद्या साधी।। 2।।
हरि अरपन करि भोजन न कीनो, कथा कीरत नहीं जानीं।
राम भगति बिन मुक्ति न पावै, अमर जीव गराबै प्रानी।। 3।।
चरन कंवल अनुराग न उपज्यो, भूत दया नहीं पाली।
रविदास पलु साध संगति मिलि, पूरन ब्रह्म सदा प्रतिपाली ।। 4।।

जगत्गुरू रविदास जी महाराज सभी जीवों को आडम्बरों से मुक्त होकर संत जनों की संगत कर प्रभु के साथ मिलने का पावन उपदेश देते हैं।

साधौ! का साश्त्रण सुनि कीनौ।
अनपावनी भगति नहीं साधी, भूखै अन्न न दीनौ।। टेक।।

''हे संतों! आपने शास्त्रों को सुनकर क्या लेना है? प्रभु की प्रेमा-भक्ति नहीं की और भूखे को अन्न दान नहीं किया।''

काम न विसरयौ डियंभ न त्यागयो, लौभ न बिसारयो देवा।
पर निंदा मुख तै नहिं छाडि, निफल भयि सभु सेवा।। 1।।

कामनाओं का त्याग नहीं किया, आडम्बर नहीं छोड़े और लोभ का त्याग नहीं किया। पराई निन्दा मुख से त्यागी नहीं। इसी लिए तुम्हारी सारी सेवा निष्फल चली गई।

बाट पाडि घर मुसि परायो, उदरि भरयो अपराधी।
होवै अपराधी केसो न सिमरियो, अहु अविद्या साधी।। 2।।

"प्रभु को मिलने का मार्ग छोड़ कर, संसार रूपी पराए घर में आकर तू व्यस्त हो गया और केवल पेट भरने के लिए अपराधी बन गया। हे भाई! अपराधी होकर तुमने प्रभु का सिमरन नहीं किया और अज्ञानता को धारण कर लिया।"

हरि अरपन करि भोजन न कीनो, कथा कीरत नहीं जानी।
राम भगति बिन मुक्ति न पावै, अमर जीव गराबै प्रानी।। 3।।

"प्रभु को अपना जीवन अर्पण नहीं किया, भूखों को भोजन नहीं दिया और प्रभु की उपमा को नहीं जाना। प्रभु की प्रेमा-भक्ति के बिना मुक्ति प्राप्त नहीं होगी। इसी लिए यह अमर जीव, प्रभु के नाम के बिना, योनियों में, भटक रहा है।"

चरन कंवल अनराग न उपज्यो, भूत दया नहीं पाली।
रविदास पलु साध संगति मिलि, पूरन ब्रह्म सदा प्रतिपाली।। 4।।

"जीव के हृदय में प्रभु के चरण कंवलों का वैराग्य उत्पन्न नहीं हुआ और दया धारण नहीं की। सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि यदि यह जीव पलभर के लिए सच्चे मन से संतों की संगत करता है तो इसे सदैव जीवों के पालनहार प्रभु की प्राप्ति हो जाती है।"

शब्द -5

तेरा जन काहे को बोलै। बोलि बोलि अपनी भगति किऊ खोलै।। टेक।।
बोलत बोलत बडै बियाधी बोल अबोलै जाई।
बोलै बोल अबोल को पकरै बोल बोल को खाई।। 1।।
बोलै गियान ओर बोल धियान, बोलै बेद बड़ाई।
उर में धरि धरि जब ही बोलै, तब ही मूल गंवाई ।। 2।।
बोलि बोलि औरहि समझावै तब लगि समझ नहीं रे भाई।
बोलि बोलि समझ जब बूझी तब काल सहित सब खाई।। 3।।
बोलै गुरु अर बोलै चेला बोल बोल परतिति जाई।
कहै रविदास थकति भयो जब ही तबहि परमनिधि पाई।। 4।।

इस शब्द द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि,"जो जीव प्रभु भक्ति करता है वह विवादों, कर्मकाण्डों और वहम-भ्रमों में नहीं पड़ता। इस लिए आडम्बरों में फंसे हुए जीवों के पीछे न लगते हुए प्रभु की सच्ची भक्ति में मग्न होकर परम तत्व को जानना चाहिए।"

तेरा जन काहे को बोलै ।

बोलि बोलि अपनी भगति किऊ खोलै टेक॥

''हे प्रभु! आप का सेवक बोल बोल कर भक्ति क्यों प्रकट करे? आप का सेवक सम्मान न करने वाले लोगों के आगे, जो जीव को गलत राह पर लगाते हैं, बोल बोल कर अपनी प्रेम-भक्ति को प्रकट नहीं करता।''

बोलत बोलत बडै बियाधी बोल अबोलै जाई।

बोलै बोल अबोल को पकरै बोल बोल को खाई॥ 1॥

''व्यर्थ बोलने से झगड़ा बढ़ जाता है, इस प्रकार बोलने से जीव व्यर्थ बोल जाता है। व्यर्थ बोलने वाला जीव, अधिक न बोलने वाले, प्रभु के दास पर क्रोधित होता हैं। प्रभु भक्त, भक्ति में लीन केवल आवश्यकतानुसार ही बोलता है। व्यर्थ बोलने वालों के शब्द दूसरों को कष्ट देते हैं, वाद-विवाद पैदा करते हैं।''

बोलै गियान ओर बोल धियान बोलै बेद बड़ाई।

उर में धरि धरि जब ही बोलै तब ही मूल गंवाई ॥ 2॥

''जब जीव झूठे अहंकार में ज्ञान और ध्यान की बातें करता है, बोल बोल कर वेदों और, शास्त्रों की उपमा करता है और सच्चाई को हृदय में छुपाकर जब बोलता है, तो तब मूल तत्व को गंवा लेता है। मूल से बहुत दूर चला जाता है।''

बोलि बोलि औरहि समझावै तब लगि समझ नहीं रे भाई।

बोलि बोलि समझ जब बूझी तब काल सहित सब खाई॥ 3॥

''जब तक जीव विवाद कर, बोल बोल कर दूसरों को समझाता है, तब तक हे भाई! समझ नहीं आती, परन्तु जब प्रेम भाव से बोल कर उसे समझ कर सार तत्व को ग्रहण करता है तो जीव मृत्यु के साथ-साथ, सब को अपने अधीन कर लेता है।''

बोलै गुरु अर बोलै चेला बोल बोल परतिति जाई।

कहै रविदास थकति भयो जब ही तबहि परमनिधि पाई॥ 4॥

''जब गुरु और शिष्य ब्रह्म विचार करते हैं, तब शिष्य को गुरु के वचनों पर पूरा भरोसा हो जाता है। सत्‌गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि जब जीव व्यर्थ के विवादों को छोड़ कर, गुरु के वचनों पर भरोसा कर, प्रभु की भक्ति में लीन होता है, तब परम तत्व (मुक्ति) को प्राप्त कर लेता है।''

शब्द - 6

ऐसी भगति न होयि रे भाई।
राम नाम बिन जो कछु करीये
सो सब भरम कहायी।। टेक।।
भगति न रस दान भगति न कथै गियान।
भगति न बन में गुफा खुदाई।। 1।।
भगति न ऐसी हांसी भगति न आसा पासी।
भगति न कुल कान गवाई ।। 2।।
भगति न इन्द्री बांधै भगति न जोग साधै।
भगति न अहार घटायी ये सब करम कहायी।। 3।।
भगति न निद्रा साधै भगति न बैराग बांधै।
भगति न ये सब बेद बडाई।। 4।।
भगति न मूड मुडाये भगति न माला दिखाये।
भगति न चरन धुआये ये सब गुनी जन गायी।। 5।।
भगति न तौलौं जानी जौं लौं आप को आप बखानी।
जोई जोई करै सो सो करम बडाई।। 6।।
आपा गयो तब भगति पायी ऐसी है भगति भाई।
राम मिलियो अपने गुन खोइयो रिधि सिधि सभै जो गंवाई।। 7।।
कहि रविदास छूटी सब आस तब हरि ताही के पास।
आतमा थिर भयी तबही निधि पायी।। 8।।

''जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को प्रभु की सच्ची प्रेम-भक्ति करने का उपदेश देते हैं। प्रभु के नाम सिमरन के बिना जो कुछ किया जाता है, उस सब को भ्रम कहा जाता है।''

ऐसी भगति न होयि रे भाई।
राम नाम बिन जो कछु करीये
सो सब भरम कहायी।। टेक।।

''हे भाई! आडम्बरों से प्रभु की भक्ति नहीं होती। प्रभु के नाम के बिना जो कुछ भी जीव द्वारा किया जाता है, उसे भ्रम कहा जाता है।''

भगति न रस दान भगति न कथै गियान।
भगति न बन में गुफा खुदाई।। 1।।

''प्रभु की सच्ची भक्ति के बिना रस दान और कथा ज्ञान करना भक्ति नहीं है। न ही जंगल और पहाड़ों की गुफाओं में रहना भक्ति है।''

भगति न ऐसी हांसी भगति न आसा पासी।
भगति न कुल कान गवाई॥ 2॥

''भक्ति कोई मज़ाक नहीं है और न ही जूए का पासा है जिसको जैसे चाहा डाल दिया। अपनी कुल मर्यादा को भूलना भी भक्ति नहीं है।''

भगति न इन्द्री बांधै भगति न जोग साधै।
भगति न अहार घटायी ये सब करम कहायी॥ 3॥

''केवल अपनी इन्द्रियों पर काबू करना भक्ति नहीं है। योग साधना भी भक्ति नहीं है और आहार कम करना, व्रत रखना भी भक्ति नहीं है। इस सब को आडम्बर (कर्मकाण्ड) ही कहा जाता है।''

भगति न निद्रा साधै भगति न बैराग बांधै।
भगति न ये सब बेद बडाई॥ 4॥

''निद्रा को अपने वश में करना भक्ति नहीं है। सच्चे प्रेम के बिना वैरागी होना भी भक्ति नहीं है। वेदों की उपमा करना भी भक्ति नहीं है।''

भगति न मूड मुडाये भगति न माला दिखाये।
भगति न चरन धुआये ये सब गुनी जन गायी॥ 5॥

''सिर मुण्डवाना और माला पहन कर दिखाना भी भक्ति नहीं है। चरणों को धुलाना भी भक्ति नहीं है, सारे गुणवान् पुरुषों का यही विचार है।''

भगति न तौलौं जानी जौं लौं आप को आप बखानी।
जोई जोई करै सो सो करम बडाई॥ 6॥

''जीव को उस समय तक भक्ति की समझ नहीं आती, जब तक अपने आप को दिखाता है भाव वह अहंकार में बोलता है। प्रभु की सच्ची प्रीति के बिना, जीव जो कुछ भी करता है, केवल अपने कर्मो की प्रशंसा करता है।''

आपा गयो तब भगति पायी ऐसी है भगति भाई।
राम मिलियो अपने गन खोइयो रिधि सिधि सभै जो गंवाई॥ 7॥

''हे भाई! जब जीव आपा-भाव अहंकार मिटा देता है तब प्रभु की भक्ति की प्राप्ति होती है। जीव को प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। सभी गुणों और रिद्धियों-सिद्धियों की इच्छा समाप्त हो जाती है।''

कहि रविदास छूटी सब आस तब हरि ताही के पास।

आतमा थिर भयी तबही निधि पायी॥ 8॥

सत्गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''जब जीव की सभी इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं, तब हरि को अपने भीतर अनुभव करता है। जीव प्रभु के नाम में स्थिर हो जाता है। उस समय सर्वोच्च निधि रूपी प्रभु की प्राप्ति हो जाती है।''

शब्द – 7

है सब आतम सुख परकास साँचो।
निरंतर निराहार कलपित ऐ पाँचौ ॥ टेक॥
आदि मधय औसान एक रस तार तूंब न तायी।
थावर जंगम कीट पतंगा पूरि रहयो हरि रायी॥ 1॥
सर्बेस्वर सर्बगी सर्ब गति करता हरता सोयी।
सिव न असिव न साध अरु सेवक उनै भाव नहि होयी॥ 2॥
धरम अधरम मोच्छ नहिं बंधन जरा मरन भव नासा।
दृिसटि अदृिसटि गेय अरु गियाना एक मेक रविदासा॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु का प्रकाश ही परम सुख है और वह प्रभु कण-कण में विद्यमान है और उसके गुणों को व्यक्त नहीं किया जा सकता।''

है सब आतम सुख परकास साँचो।
निरंतर निराहार कलपित ऐ पाँचौ।। टेक॥

''सभी प्राणियों में उस प्रभु का अंश है। प्रभु जी आप ही प्रकाशमान् सत्य स्वरूप, परम सुख देने वाले, स्वयंसिद्ध, निरंतर और निराहारी हो। पाँच तत्वों से बने प्राणियों के शरीर कल्पित हैं।''

आदि मधय औसान एक रस तार तूंब न तायी।
थावर जंगम कीट पतंगा पूरि रहयो हरि रायी॥ 1॥

''वह प्रभु सृष्टि का आदि, मध्य और अंत है। वह प्रभु सारे संसार में एक समान समाया हुआ है। उस को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। हे भाई! उस प्रभु की कोई सीमा नहीं है। प्रभु जंगलों, पहाड़ों, कीड़ों, पतंगों सब जीवों में और हर जगह विद्यमान है।''

सर्बेस्वर सर्बगी सर्ब गति करता हरता सोयी।
सिव न असिव न साध अरु सेवक उनै भाव नहि होयी॥ 2॥

''वह प्रभु सब का श्रेष्ठ स्वामी है। संपूर्ण और सर्वव्यापक है। सब कुछ करने वाला कर्तापुरख है। सब जीवों को जीवन देने वाला और लेने वाला है। प्रभु न शुभ है और न अशुभ है। वह न तो साध और न ही सेवक लगता है क्योंकि उसमें कोई द्वैत भावना नहीं होती।''

धरम अधरम मोच्छ नहिं बंधन जरा मरन भव नासा।
द्रिसटि अद्रिसटि गेय अरु गियाना एक मेक रविदासा॥ 3॥

''उस प्रभु के निज-घर में न किसी का कोई धर्म है, न अधर्म, न मुक्ति है, न बंधन है, न बुढ़ापा है और न ही मृत्यु।'' सत्गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''वह प्रभु सभी दृश्य और अदृश्य-पदार्थों में भी है। प्रभु स्वयं ही ज्ञान है और स्वयं ही ज्ञानी, पर ऐसा जीव को उस समय अनुभव होता है जब जीव प्रभु का भजन कर प्रभु से एकरूप हो जाता है।''

शब्द - 8

कोउ सुमरन देखौं ये सब उपली चोभा॥
जा कै जेसी सुमिरन ता कौ तैसी सोभा॥ टेक॥
हमरी ही सीख सुनै सौं ही मांडे रे॥
थोरे ही इतरायी चालै पतिशाहि छाडे रे॥ 1॥
अतिही आतुर है कांचा ही तोले रे॥
ऊडे जल पैसे नहीं पांड राखो रे॥ 2॥
थोरे ही थोरे मुसीयत पराइयो धना।
कहै रविदास सुनो सन्त जना॥ 3॥

इस शब्द द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज बाहरी आडम्बरों का निषेध करते हुए फरमाते हैं कि,''प्रभु अर्थात् सच्चे पातिशाह की प्राप्ति सच्चे सिमरन से होती है।''

कोउ सुमरन देखौं ये सब उपली चोभा॥
जा कै जेसी समिरन ता कौ तैसी सोभा। टेक॥

''प्रभु के सच्चे सिमरन से जीव को आनंद प्राप्त होता है। सच्चे नाम के बिना, आडम्बरों द्वारा किया गया सिमरन, केवल दिखावा मात्र ही लगता है। परन्तु जिस जीव के अंदर, जितना सिमरन होता है, उसकी शोभा भी उतनी ही होती

है। जो जीव एकाग्र होकर, प्रभु का सिमरन करता है, उसकी हमेशा शोभा होती है।''

हमरी ही सीख सुनै सौं ही मांडे रे॥
थोरे ही इतरायी चालै पतिशाहि छाडे रे॥ 1॥

''पाखंडी लोग मेरे पास सच्ची शिक्षा लेने आते हैं परन्तु वे सच्ची शिक्षा को ग्रहण नहीं करते और वे झूठा अहंकार कर विवाद में पड़ जाते हैं। अपने थोड़े-थोड़े हित के कारण, संसार में प्रभु के पातशाही सुख को छोड़कर बाह्य आडम्बरों में लगे हुए हैं।''

अतिही आतुर है कांचा ही तोले रे॥
ऊडे जल पैसे नहीं पांड राखो रे॥ 2॥

''पाखंडी लोग संसार के झूठे धंधों में व्याकुल होकर झूठा व्यापार करते हैं। परन्तु जैसे जल हमेशा नीचे की ओर बहता है, ऐसे ही जो जीव विनम्र भाव से, प्रभु का सिमरन करता है, उस पर प्रभु की कृपा होती है।''

थोरे ही थोरे मुसीयत पराइयो धना।
कहै रविदास सुनो सन्त जना ॥ 3॥

''हे जीव! धीरे-धीरे तेरा श्वासों रूपी पराया धन प्रभु के सिमरन बिना व्यर्थ घटता जा रहा है। भाव प्रभु की ओर से हटकर संसार के झूठे आडम्बरों में लग रहा है।'' सत्गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे संत जनों! मेरी बात सुनिए, हमें प्रभु की सच्ची भक्ति करनी चाहिए।''

शब्द - 9

पहिले पहरे रैणि दे बणिजारिया तैं जनम लिया संसार वे।
सेवा चूको राम की बणिजारिया तेरी बालक बुद्धि गंवार वे॥ 1॥
बालक बुद्धि गंबार न चेतियो भूला माया जाल वे।
कहा होय पाछे पछिताये जल पहिले न बांधी पाल वे॥ 2॥
बीस बरस का भया अयाना थामि न सका भाव वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया जनम लिया संसार वे॥ 3॥
दूजे पहरै रैण दे बणिजारिया तूँ निरखत चालियो छांह वे।
हरि न दमोदर ध्याइया बणिजारिया लेयी न सका नांव वे॥ 4॥

नांव न लीया औगुन कीया इस जोबन कै तान वे।
अपनी परायी गिनी न कायी मंद करम कमान वे॥ 5॥
साहिब लेखा लेसी तूँ भरि देसी भीर परै तुझ तांह वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया तूँ निरखत चाला छांह वे॥ 6॥
तीजै पहरे रैण दे बणिजारिया तेरे ढिलड़े पड़े प्रान वे।
काया रवानी ना करै बणिजारिया, घट भीतर बसे कुजान वे॥ 7॥
एक बसै कुजान कायागढ़ भीतर पहिला जनम गंवायि वे।
अब की बेर न सुकिरित कीयो बहुरि न यहि गडि पायि वे॥ 8॥
कंपी देह कायागढ़ छीना फिर लागा पछितान वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया तेरे ढिलड़े पड़े परान वे॥ 9॥
चौथे पहरे रैन दे बणिजारिया तेरी कंपन लागी देह वे।
साहिब लेखा मांगिया बणिजारिया तू छाड़ि पुरानी थेह वे॥ 10॥
छाडि पुरानी जिंद अयाना बालदि लदि सबेरिया वे।
जम के आये बांधि चलाये बारी पूगी तेरिया वे॥ 11॥
पंथ चले अकेला होय दुहेला किस को देह सनेह वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया तेरी कंपन लागी देह वे॥ 12॥

जगतगुरू रविदास जी महाराज मनुष्य जन्म की जीवन रूपी रात्रि के चार भागों बाल अवस्था, युवा अवस्था, ढलती आयु रूपी अवस्था (बुढ़ापा) और मृत्यु अवस्था का वर्णन करते हुए, जीव रूपी बनज़ारे को, प्रभु के सच्चे नाम का व्यापार कर जीवन सफल बनाने का पावन उपदेश देते हैं।

पहिले पहरे रैणि दे बणिजारिया तैं जनम लिया संसार वे।
सेवा चूको राम की बणिजारिया तेरी बालक बुद्धि गंवार वे॥ 1॥

''हे बनजारे जीव! संसार की जीवन रूपी रात्रि के पहले पहर भाव बचपन में, जब तुमने इस संसार में जन्म लिया, उससे पहले तेरी लगन माता के गर्भ में, प्रभु से जुड़ी हुई थी। पर संसार में आने के बाद, तेरी लगन प्रभु से टूट गई। इस लिए बालपन में तेरी बुद्धि अनजान होने के कारण, तुमने प्रभु का नाम सिमरन नहीं किया।''

बालक बुद्धि गंबार न चेतियो भूला माया जाल वे।
कहा होय पाछे पछिताये जल पहिले न बांधी पाल वे॥ 2॥

''हे जीव! बालक बुद्धि अनजान होने के कारण, तुमने प्रभु को याद नहीं

किया। तुम प्रभु को भूल कर संसार के झूठे माया जाल में फंसे रहे। अब भाई, अंत समय पछताने का क्या लाभ? हे जीव! तुमने जल की तरह बह रहे जीवन को रोक कर, प्रभु की तरफ नहीं बाँधा, भाव प्रभु से नहीं जोड़ा।''

बीस बरस का भया अयाना थामि न सका भाव वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया जनम लिया संसार वे॥ 3॥

''हे भाई! तुम बीस वर्ष के होकर भी प्रभु के नाम से अनभिज्ञ रहे। भाई, तुमने अपनी गलत भावनाओं को बाँध कर, अपने मन को प्रभु की ओर नहीं लगाया।'' सत्गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे जीव रूपी बनजारे! तुम्हें यह जन्म प्रभु का भजन करने के लिए मिला है, इस लिए प्रभु का सिमरन कर।''

दूजे पहरै रैण दे बणिजारिया तूँ निरखत चालियो छांह वे।
हरि न दमोदर ध्याइया बणिजारिया तैं लेयी न सका नांव वे॥ 4॥

''हे बनजारे जीव! तुम रात्रि रूपी जीवन के दूसरे पहर अर्थात् जवानी की अवस्था में संसार के झूठे जीवन को देखते हुए भी, प्रभु को भुलाकर, अज्ञानतावश अंधेरे में जा रहे हो। हे बनजारिया, तुम ने सारे ब्रह्माण्डों के मालिक 'हरि' का सिमरन नहीं किया, तू हरि का नाम सिमरन नहीं कर सका।''

नांव न लीया औगुन कीया इस जोबन कै तान वे।
अपनी परायी गिनी न कायी मंद करम कमान वे॥ 5॥

''हे भाई! तुमने जवानी के अंहकार और झूठे मान में प्रभु का नाम सिमरन नहीं किया औगुणी करता रहा। तुमने अपने जीवन साथी और पराई स्त्री में कोई भेद नहीं जाना, बल्कि बुरे कर्म करने में व्यस्त रहे।''

साहिब लेखा लेसी तूं भरि देसी भीर परै तुझ तांह वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया तूँ निरखत चाला छांह वे॥ 6॥

''हे जीव! जब प्रभु तुमसे कर्मों का हिसाब मांगेगा, तो तुझे अपने किये हुए कर्मों का हिसाब देना पड़ेगा। उस समय तुम पर मुसीबतें आ गिरेंगी। सतिगुरू रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि हे बनजारिया! तू जीवन के दूसरे पहर में, अज्ञानता के कारण, बुरे कर्मों में पड़ कर, अंधकार की ओर जा रहा है।''

तीजै पहरे रैण दे बणिजारिया तेरे ढिलड़े पड़े प्रान वे।
काया रवानी ना करै बणिजारिया, घट भीतर बसे कुजान वे॥ 7॥

''हे बनजारे जीव! जब तुम्हारी जीवन रूपी रात्रि का तीसरा पहर अर्थात्

ढलती आयु आई, तो तुम्हारे प्यारे प्राण ढीले पड़ने लगे हैं। हे जीव! तेरा शरीर कमज़ोर हो रहा है, हे बनजारिया! तुम्हारे भीतर खोटे विचार बसे हुए हैं अब तुम क्या करोगे? तुझ में अभी भी नासमझी है।''

एक बसै कुजान कायागढ़ भीतर पहिला जनम गंवायि वे।
अब की बेर न सुकिरित कीयो बहुरि न यहि गडि पायि वे॥ 8॥

''हे जीव! तेरे शरीर रूपी किले में खोटे विचारो का निवास है। जीवन का अब तक का समय, तुमने प्रभु को भूल कर व्यर्थ गँवा दिया है। हे भाई! तुमने दुर्लभ जन्म प्राप्त करके, प्रभु का नाम सिमरन रूपी श्रेष्ठ कर्म नहीं किया, यह शरीर रूपी किला तुम्हें पुनः नहीं मिलेगा। भाव तुम्हे पुनः मनुष्य जन्म प्राप्त नहीं होगा।''

कंपी देह कायागड़ छीना फिर लागा पछितान वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया तेरे ढिलड़े पड़े परान वे॥ 9॥

''हे बनजारिया! तेरा शरीर रूपी किला कांपने लगा है भाव तुम्हारा शरीर कमज़ोर होने के कारण कांपने लग पड़ा है। प्रभु का सिमरन न करके अब तुम पछता रहे हो।'' सत्गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे बनजारिया! जिंदगी के तीसरे पहर के आने से तेरे प्राण ढीले पड़ रहे हैं, तुम्हारा अन्त समय आ रहा है, इस लिए तू प्रभु को याद कर।''

चौथे पहरे रैन दे बणिजारिया तेरी कंपन लागी देह वे।
साहिब लेखा मांगिया बणिजारिया तू छाड़ि पुरानी थेह वे॥ 10॥

''हे बनजारे जीव! रात्रि रूपी जीवन के चौथे पहर, बुढ़ापे के आने से, तुम्हारा शरीर कांपने लगा है। अब प्रभु ने कर्मों का हिसाब मांगा है और तुम्हें यह संदेश भेजा है कि पुराने स्थान को छोड़ दो तुम्हारे जीवन का अन्त समय आ गया है।''

छाडि पुरानी जिंद अयाना बालदि लदि सबेरिया वे।
जम के आये बांधि चलाये बारी पूगी तेरिया वे॥ 11॥

''हे अनजान जीव! अन्त समय आने पर तुझे अपना पुराना शरीर छोड़ कर जाना पड़ेगा। शुभ समय का कुछ लाभ उठा ले। जैसे किसान सवेरा होते ही, अपने बैलों को हांक कर, खेतों की ओर ले जाता है, इस प्रकार ही जीवन रूपी रात्रि के चौथे पहर के बीत जाने के बाद, तुझे यमदूतों ने बांध कर ले जाना है। तेरा संसार में आने का समय खत्म हो गया है।''

पंथ चले अकेला होय दुहेला किस को देह सनेह वे।
जन रविदास कहै बणिजारिया तेरी कंपन लागी देह वे॥ 12॥

''अंत समय जीव को परलोक का कठिन रास्ता अकेले ही तय करना पड़ेगा। प्रभु के नाम के बिना इस कठिन रास्ते में और कोई सहाई नहीं होगा। उस समय तू अपने किस प्यारे को पुकारेगा?'' सत्‌गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे बनजारिया! जीवन के चौथे पहर के आने के कारण तेरा शरीर कांपने लग पड़ा है भाव अब तेरा अन्त समय आ गया है। इस लिए तू प्रभु को याद कर।''

शब्द - 10

या रामा एक तूँ दाना तेरा आदि भेख ना।
तूँ सुलतान सुलताना बंदा सकिसता अजाना॥ टेक॥
मैं बेदियानत बदनज़र दरमंद बरखुरदार।
बेअदब बदबखत बीरा बेअकल बदकार॥ 1॥
मैं गुनहगार गुमराह गाफिल कमदिला करतार।
तूँ दरकदर दरियान दिल मैं हिरसिया हुसियार॥ 2॥
यह तन हसत खसत खराब खातिर अंदेसा बिसियार।
रविदास दासहि बोलि साहिब देहु अब दीदार॥ 3॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज उपदेश करते हैं कि,''प्रभु पातशाहों का पातशाह और सर्वगुण सम्पन्न है। परन्तु यह जीव प्रभु को भूल कर दुखी होता है। यह शरीर शीघ्र नाश होने वाला है, इस लिए जीव को प्रभु का सिमरन करना चाहिए।''

या रामा एक दाना तेरा आदि भेख ना।
तूँ सुलतान सुलताना बंदा सकिसता अजाना। टेक॥

''हे सर्वव्यापक प्रभु जी, केवल आप ही संसार में सबसे बुद्धिमान हो। आप ही सृष्टि के आरम्भकर्ता हो और आपका कोई स्वरूप नहीं है। आप बादशाहों के बादशाह हो। यह सांसारिक जीव, आपकी महिमा से अनभिज्ञ होने के कारण, आप से बिछुड़ा हुआ है।''

मैं बेदियानत बदनज़र दरमंद बरखुरदार।
बेअदब बदबखत बीरा बेअकल बदकार॥1॥

''प्रभु जी! अज्ञानता के कारण आपकी महिमा से अनभिज्ञ जीव निमाणा

बेईमान, अज्ञानी, बेगैरत, दुखी, बावरा, बेसमझ और दुराचारी है। मैं आप जी दी शरण में आया सेवक हूं, आप मुझ पर कृपा करो जी''

मैं गुनहगार गुमराह गाफिल कमदिला करतार।
तूँ दरकदर दरियान दिल मैं हिरसिया हुसियार॥ 2॥

''हे करतार! आप के नाम से वंचित जीव गुनाहगार, गुमराह, बेसमझ और कमज़ोर दिल वाला लापरवाह है। प्रभु जी आप सृष्टि के मालिक, दर पर आए की कदर करने वाले दरिया दिल और दयावान् हो, जीव आप को भूलकर, संसार के झूठे कार्यों में लोभी और चालाक बना रहता है।''

यह तन हसत खसत खराब खातिर अंदेसा बिसियार।
रविदास दासहि बोलि साहिब देहु अब दीदार॥ 3॥

''यह जो शरीर है, शीघ्र नाश होने वाला और बिखरा हुआ है, इस लिए मुझे आप के दर्शन की अधिक चिंता लगी रहती है।'' सत्गुरू रविदास जी महाराज प्रभु के सम्मुख प्रार्थना करते हैं कि,''हे साहिब जी! आप बोलिए और दर्शन दीजिए।''

गउड़ी बैरागणि

शब्द - 11

घट अवघट डूगर घणा इक निरगुणु बैलु हमार॥
रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि॥ 1॥
को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे॥ 1॥ रहाउ॥
हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु॥
मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि॥ 2॥
उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु॥
मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल॥ 3॥
जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु॥
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार॥ 4॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज समस्त मानवता को उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु की प्राप्ति का रास्ता अज्ञानता और सांसारिक झूठे बंधनों के कारण बिखरा और कठिन है। जीव का मन रूपी बैल उस अकाल पुरख की कृपा से यह कठिन

मंजिल तय करने से प्रभु के मजीठी रंग में रंग होकर अपना जीवन सफल कर सकता है।''

घट अवघट डूगर घणा इक निरगुणु बैलु हमार॥
रमईए सिउ एक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि॥ 1॥

''जैसे एक गुणहीन बैल के लिए पहाड़ी का बिगड़ा और घना रास्ता तय कर अपनी मंजिल की प्राप्ति करना कठिन है। ऐसे ही इस सांसारिक जीव के लिए दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त कर प्रभु की प्राप्ति का रास्ता अज्ञानता और सांसारिक झूठे बंधनों के कारण बहुत खतरनाक, पहाड़ी की भांति कठिन और जंगल की भांति घना है। इस रास्ते पर जाने वाले जीव का मन रूपी बैल बहुत कमज़ोर है। हे सर्व व्यापक प्रभु! मेरी आप से निवेदन है कि सांसारिक जीव की श्वासों रूपी पूँजी की रक्षा करो जी।''

को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे॥ 1॥ रहाउ॥

''यदि प्रभु नाम का व्यापार करने वाला कोई व्यापारी है तो मेरे पास आकर प्रभु के राम नाम का व्यापार कर ले। मेरा टांडा प्रभु के नाम से भरा हुआ है।''

हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥
मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि॥ 2॥

''मैं संसार में प्रभु के नाम का व्यापारी हूँ और सहज अवस्था का व्यापार करता हूँ जो कि संसार में भेद-भाव से ऊपर उठ कर नौं द्वारों से ऊपर दसवें द्वार में पहुँच कर प्राप्त होती है।'' सत्गुरु रविदास महाराज जी कहते हैं कि,''मन रूपी बैल पर प्रभु के राम-नाम के सच्चे धन को लादा है पर संसार के लोगों ने विकारों रूपी विष को लादा है।''

उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु॥
मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल॥ 3॥

''मैंने इस संसार में प्रभु के सच्चे नाम का व्यापार किया है। इस लिए लोक परलोक और मनुष्य जन्म के भाग्य का हिसाब रखने वाले चित्रगुप्त तुम मेरे भाग्य में जो मर्जी अल-पल लिख लो, मुझे यमदूतों का दंड नहीं लग सकता क्योंकि मैंने संसार के सभी जंजालों को छोड़ दिया है। जो जीव इस संसार में प्रभु का नाम सिमरन करता है वह जीवन मुक्त हो जाता है। यमदूतों का दंड उन लोगों को लगता है जो संसार में प्रभु को भूलाकर झूठे बंधनों में फंस जाते हैं।''

जैसा रंगु कसुंभ का तैसा इहु संसारु॥
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार॥ 4॥ 1॥

''जिस तरह कसुंभ का रंग कच्चा और अस्थिर है उसी तरह यह संसार भी अस्थिर और नाशवान् है। सत्गुरू रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं मैं चमार यह कहता हूँ कि मेरे प्रभु का रंग मजीठ की भांति पक्का, स्थिर और स्थाई है।''

शब्द – 12

सतजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार।
तीनौ जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार॥ 1॥
पारु कैसे पाइबो रे॥ मो सउ कोऊ न कहै समझाइ॥
जा ते आवागवनु बिलाइ॥ 1॥ रहाउ॥
बहु बिधि धरम निरूपीऔ करता दीसै सभ लोइ॥
कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ॥ 2॥
करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान॥
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु॥ 3॥
बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार।
सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार ॥ 4॥
रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार॥
पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार॥ 5॥
परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट।
उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट॥ 6॥
भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार॥
सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार॥ 7॥
अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास॥
प्रेम भगति नही ऊपजै ताते रविदास उदास॥ 8॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को पावन उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु के नाम सिमरन के बिना जीव का जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा नहीं हो सकता। परम पारस गुरु का मिलाप होने से जहाँ जीव वहम-भ्रम और कर्म-काण्डों से मुक्त हो जाता है वहीं इसके मन में सर्गुण और निर्गुण का एक ही विचार रह जाता है।''

सतिजुगि सतु तेता जगी दुआपरि पूजाचार।
तीनों जुग तीनौ दिड़े कलि केवल नाम अधार॥ 1॥

पहला अर्थः–सतयुग में सच बोलने की प्रधानता थी, त्रेता युग में यज्ञ करने की और द्वापर युग में पूजा एव श्रेष्ठ कर्म करने की प्रधानता थी। तीनों युगों में यह तीनों कर्म दृढ़ थे, नियत थे पर कलयुग में केवल प्रभु के नाम का ही सहारा है।

दूसरा अर्थः–सतयुग में सच बोलने की प्रधानता थी, त्रेता युग में यज्ञ करने की और द्वापर युग में पूजा की। तीनों युगों में तीनों कर्म वेदों शास्त्रों में नियत किये गए थे। कलयुग में देवी–देवताओं का आधार माना जाता है। सत्गुरू रविदास जी महाराज ने इन चारों युगों प्रधानता को न मानते हुए मानवता को उपदेश दिया है कि उपरोक्त चारों युगों के कर्म करने से जीव भव सागर से पार नहीं हो सकता। यह बात समझाकर भी कोई कह नहीं सकता कि इन कर्मों के करने से मुक्ति मिलती है। मुक्ति तो केवल प्रभु प्रेम से मिलती है।

पारु कैसे पाइबो रे॥ मो सउ कोऊ न कहै समझाइ॥
जा ते आवागवनु बिलाइ॥ 1॥ रहाउ॥

''एक प्रभु के नाम के बिना इस भव सागर और जन्म मरण के चक्र से किस तरह मुक्त होना है? इस बात की सच्चाई मुझे कोई भी कहकर समझा नहीं रहा।''

बहु बिधि धरम निरुपीए करता दीसै सभ लोइ॥
कवन करम ते छूटीऐ जिह साधे सभ सिधि होइ॥ 2॥

''वेदों और पुराणों में अनेकों प्रकार के धर्म–कर्म नियत किये गए हैं। सारे संसार के लोग इन कर्मों को करते भी नज़र आ रहे हैं '' पर गुरु जी कहते हैं कि,''यह नहीं बताया गया कि इन अनेकों कर्मों में से कौन सा कर्म किया जाए, जिसके करने से सभी सिद्धियां में श्रेष्ठ सिद्धि मुक्ति प्राप्त हो।''

करम अकरम बीचारीऐ संका सुनि बेद पुरान॥
संसा सद हिरदै बसै कउनु हिरै अभिमानु॥ 3॥

''वेदों और पुराणों को पढ़ कर मन में शंका पैदा होती है कि कौन सा कर्म किया जाए और कौन सा कर्म न किया जाए। इन कर्मों के करने से जीव के मन में भ्रम पैदा होता है। जब तक जीव के मन में भ्रम है तो अहंकार का नाश कौन करेगा? भ्रम ही तो अहंकार को जन्म देता है।''

बाहरु उदकि पखारीऐ घट भीतरि बिबिधि बिकार।
सुध कवन पर होइबो सुच कुंचर बिधि बिउहार॥ 4॥

''यदि तीर्थों को ही पापों से मुक्ति का साधन मान लिया जाए तो तीर्थों पर स्नान करने से जीव के शरीर की मैल तो उतर जाती है पर जीव के मन में जो अनेकों प्रकार के विकार बने रहते हैं वो प्रभु का नाम सिमरन किए बिना नहीं धोए जा सकते। फिर जीव कौन से कर्म करने से शुद्ध होगा? जीव का व्यवहार तो हाथी की भांति है। हाथी को चाहे कितना भी नहा-धुला दो पर वह स्वयं पर कीचड़ डाल कर अपना शरीर पुन: मैला कर लेता है।''

रवि प्रगास रजनी जथा गति जानत सभ संसार॥
पारस मानो ताबो छुए कनक होत नही बार॥ 5॥

''यह एक महान् सच्चाई है कि सूर्य के प्रकाश से रात का अंधकार दूर होता है और इस बात को संसार के सभी लोग बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। ऐसे ही जब तक जीव के मन में गुरु के ज्ञान का प्रकाश नहीं होता तब तक अज्ञानता रूपी अंधकार का नाश नहीं होता। जब पारस तांबे के साथ स्पर्श करता है तो उसे स्वर्ण बनने में देर नहीं लगती।'' (सत्गुरु नामदेव जी महाराज फरमाते हैं कि :

तुम्ह चे पारसु हम चे लोहा संगे कंचनु भैइला॥

भाव:-''प्रभु जी आप संसार में पारस की भांति हो। हम तो सांसारिक जीव लोहे की तरह निकम्मे हैं, पर आप जी से मिलने के कारण हम स्वर्ण बन गये हैं।'')

परम परस गुरु भेटीऐ पूरब लिखत लिलाट।
उनमन मन मन ही मिले छुटकत बजर कपाट॥ 6॥

''जीव को परम पारस गुरु उस समय मिलते हैं जब उसके मस्तिष्क पर पूर्व कर्मों के लेख होते हैं। परम पारस गुरु के मिलने से जीव की अज्ञानता के कठोर द्वार खुल जाते है, और जीव का मन तुरिया अवस्था में पहुंच जाता है।''

भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काटि बिकार॥
सोई बसि रसि मन मिले गुन निरगुन एक बिचार॥ 7॥

''जिन जीवों ने अपने हृदय में भक्ति की युक्ति को सत्य कर जान लिया है, उन के सभी भ्रम और विकारों के बंधन काटे जाते है और उन के मन को इस तरह का आनंद मिलता है कि प्रभु के निर्गुण-सगुण दोनों गुणों का एक ही विचार रह जाता है।''

अनिक जतन निग्रह कीए टारी न टरै भ्रम फास॥
प्रेम भगति नही ऊपजै ताते रविदास उदास॥ 8॥ 1॥

सत्गुरू रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''जीव प्रभु के नाम के बिना अपनी इन्द्रियों को विषय-विकारों से रोकने के लिए अनेकों प्रयत्न कर ले, पर फिर भी भ्रम दूर नहीं होता और जीव के मन में प्रेमा-भक्ति पैदा नहीं होती। जिस कारण जीव कर्म-काण्ड करता हुआ भी उदास रहता है।''

गउड़ी पूरबी
शब्द - 13

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ॥
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ॥ 1॥
सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी॥ 1॥ रहाउ॥
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ॥
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ॥ 2॥
जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार॥
प्रेम भगति कै कारण कहु रविदास चमार॥ 3॥ 1॥

इस शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को उपदेश देते हैं कि,''जीव ने दुर्लभ जन्म प्राप्त कर अपनी दशा कुँए के मेंढक की तरह बना ली है। जिस तरह कुँए के मेंढक को अज्ञानता के कारण कुँए के बाहर की दुनिया का कोई ज्ञान नहीं होता इसी तरह ही यह जीव अपने संसार में आने के वास्तविक मंतव्य के भेद को पहचानने की बजाए अज्ञानता वश होकर भेद-भाव और विकारों रूपी कुँए में फंसा हुआ है। इस को अपना लोक परलोक संवारने की कोई समझ नहीं।''

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ॥
ऐसे मेरा मन बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ॥ 1॥

''हे प्रभु जी, जैसे कुँए में मेंढक पड़ा होता है और उस को कुँए के बाहर की दुनिया की कोई खबर नहीं होती क्योंकि मेंढक का मन अज्ञानता वश विषय विकारों में लिप्त होने के कारण कुएँ के बाहर की दुनिया के प्रति अनभिज्ञ होता है। इसी तरह की हालत इस जीव की है, जिसका मन अज्ञानता वश भ्रम रूपी कुएँ में

फंसा हुआ है और उसको अपने लोक-परलोक को संवारने की कोई समझ नहीं है। एक बार एक कुएँ में एक मेंढक था। उसकी दयनीय दशा देख कर मानसरोवर में रहने वाले एक हंस को उस पर दया आई। उस ने मेंढक को कहा,' भाई तुम्हें मानसरोवर ले चलूं। वहां हीरे-मोती चुनकर आनंद भरा जीवन व्यतीत करेंगे।' मेंढक कुएँ की एक ओर छलांग लगा कर दूसरे किनारे पर पहुँचा और कहा, 'मानसरोवर इतना बड़ा है?' तो हंस ने कहा कि,''उस मानसरोवर का तो कोई अंत नहीं है, तुम्हारी छलांगें क्या करेंगी। ऐसे ही यह जीव अज्ञानता वश विषय विकारों में फंसा रहता है और उसको अपना लोक-परलोक संवारने की कोई सुध नहीं रहती। पर संत महापुरुष जीव को इस अज्ञानता रूपी कुएँ में से निकालकर और प्रभु के नाम से जोड़कर उसका लोक-परलोक संवारने के लिए आते हैं।

(सत्‌गुरु कबीर साहिब जी कहते हैं -

कबीरा सेवा कउ दुइ भले एकु संतु इकु राम॥

राम जु दाता मुकति को संतु जपावै नामु॥

''सिमरन के लिए दोनों ही भले हैं प्रभु भी और संत भी। प्रभु मुक्ति का दाता है और संत जीव को नाम जपा कर प्रभु के साथ जोड़ते हैं।) परन्तु यह सांसारिक जीव अज्ञानता के कारण संत महापुरुषों से प्रश्न करते हैं कि प्रभु के नाम में धन, स्त्री, पुत्र जैसा सुख है?'' संत महापुरुष कहते हैं कि,''प्रभु का नाम तो सुखों का समुद्र है। सिमरन करने से जीव की सभी आवश्यकताएं पूरी हो जाती है। धन, स्त्री, पुत्र का सम्बन्ध तो जीव के साथ केवल शरीर के कारण है।''

सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी॥ 1॥ रहाउ॥

''सब भवनो खण्डों-ब्रह्माण्डों के मालिक प्रभु जी एक पल के लिए मुझे दर्शन दो जी। सब बंधनों से मुक्त होकर जीव को प्रभु के आनंद की प्राप्ति होती है। यह जीव प्रभु को मिलने के लिए बहुत व्याकुल हो उठता है और प्रभु के आगे प्रार्थना करता है कि प्रभु जी मुझे एक पल के लिए दर्शन दो जी, ताकि आपके दर्शन कर कर मेरा मन शांत हो जाए जी।''

मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ॥

करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ॥ 2॥

''हे प्रभु जी! अज्ञानता के कारण इस जीव की मति इतनी मैली हो चुकी है कि यह जीव आप के सरूप की पहचान नहीं कर सकता। आप कृपा दृष्टि करो

जी, जिस से सब भ्रम दूर हो जाए और मुझे भाव जीव को शुभ व श्रेष्ठ बुद्धि प्रदान करो जी।''

जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार॥
प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार॥ 3॥ 1॥

''हे प्रभु जी, बड़े-बड़े योगी भी आपके गुणों का अंत नहीं पा सके क्योंकि आप के गुण अनंत हैं।'' सत्गुरू रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि मैं चमार तो केवल प्रेमा भक्ति के कारण ही आप के गुण गाता हूँ।''

राग आसा

शब्द - 14

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस॥1॥
माधो अबिदिआ हित कीन॥ बिबेक दीप मलीन॥ 1॥ रहाउ॥
त्रिगद जोनि अचेत संभव पुन पाप असोच॥
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच॥ 2॥
जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ।
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ॥ 3॥
रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन॥
भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान॥ 4॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज ने जीव के जीवन में पांच विकारों और अज्ञानता का प्रभाव बताते हुए, ''जीव को गुरु ज्ञान प्राप्त कर, विकारों और अज्ञानता से मुक्त होकर, प्रभु का नाम सिमरन कर, जीवन सफल करने का, पावन उपदेश दिया है क्योंकि अज्ञानता ही संसार के सभी दु:खों का कारण है।''

म्रिग मीन भ्रिंग पतंग कुंचर एक दोख बिनास॥
पंच दोख असाध जा महि ता की केतक आस॥ 1॥

''हिरन, मछली, भंवरा, पतंगा और हाथी इन पाँचों में एक-एक दोष होने के कारण इनका विनाश हो जाता है। जब शिकारी ने हिरन को पकड़ना होता है तो घंडे हेड़े का नाद बजाता है और हिरन घंडे-हेड़े का नाद सुनता हुआ जाल में फंस जाता है और शिकारी उसे मार देता है। मछली जिह्वा के स्वाद के कारण अपना

नाश कर लेती है। जब शिकारी कांटे के साथ मांस लगाकर पानी में फेंकता है तो मछली जिह्वा के स्वाद के कारण मांस खाती है और कांटे में उसका मुंह फंस जाता है और शिकारी उसे पानी में से बाहर निकाल लेता है और वह मर जाती है। भंवरा नासिका रस भाव सुगन्धि के कारण अपनी जान गंवा लेता है। जब सूर्य उदय होता है तो कमल का फूल खिल जाता है। भंवरा फूल पर सुगन्धि लेने के लिए बैठता है। जिस समय सूर्य अस्त होता है, कमल का फूल बंद हो जाता है और भंवरा कमल के फूल में दब कर मर जाता है। पतँगे को आँख रस के कारण अपनी जान गँवानी पड़ती है। जिस समय पतंगा रोशनी को देखता है तो देखता-देखता वह उसके इतना पास पहुँच जाता है कि उसमें जलकर मर जाता है। हाथी में काम-वासना है। जब शिकारी ने हाथी को पकड़ना होता है तो शिकारी गड्ढा खोद कर, उस पर बांस की छत डालकर, उस पर कागज़ की हथिनी बनाकर खड़ी कर देता है। जब हाथी हथिनी के पास पहुंचता है तो वो गड्ढे में गिर जाता है और सारी जिंदगी महावत के कुंडे सहता हुआ मर जाता है, पर जीव में तो यह असाध्य पाँचों दोष हैं तो इसके बचने की कितनी उम्मीद की जा सकती है।''

माधो अबिदिआ हित कीन॥
बिबेक दीप मलीन॥ 1॥ रहाउ॥

''हे प्रभु जी! इस जीव ने अज्ञानता में ही अपना हित समझ लिया है, जिस कारण जीव की सोचने और समझने की शक्ति, भाव सत्य-असत्य को जानने की शक्ति मलीन हो गई है। ज्ञान की कमी के कारण यह जीव भेद-भाव में फंस कर अपना जीवन व्यर्थ गंवा रहा है।''

त्रिगद जोनि अचेत संभव पुन पाप असोच॥
मानुखा अवतार दुलभ तिही संगति पोच॥2॥

''टेडी योनियों वाले जीवों (साँप, बिच्छु, छिपकली इत्यादि)में चेतना मनुष्य की भांति नहीं होती। अत: संभवत: उनमें पुण्य-पाप की और अच्छे-बुरे की समझ नहीं होती है। पर इस जीव को अवतारों की भांति अनमोल मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है, इसकी संगत विकारों के कारण नीच है।''

(सत्‌गुरू कबीर साहिब जी भी वर्णन करते हैं :-

गुर सेवा ते भगति कमाई। तब इह मानस देही पाई॥
इस देही कउ सिमरहि देव॥ सो देही भजु हरि की सेव॥

''गुरु की सेवा करने के लिए और भक्ति की कमाई करने के लिए यह

मनुष्य जन्म मिला है, जिस जन्म को देवी-देवता तरसते हैं। यह जन्म हरि के सिमरन के लिए मिला है।'')

जीअ जंत जहा जहा लगु करम के बसि जाइ॥
काल फास अबध लागे कछु न चलै उपाइ॥ 3॥

''जीव जहाँ-जहाँ लगे हुए हैं अपने किये हुए कर्मों के वसीकार में लगे हैं। पर जब जीव को न काटी जाने वाली काल रूप मृत्यु की फाँसी लगती है तो उसके आगे जीव का कोई उपाय काम नहीं आता। उसको यह संसार छोड़ कर जाना पड़ता है।''

रविदास दास उदास तजु भ्रमु तपन तपु गुर गिआन॥
भगत जन भै हरन परमानंद करहु निदान ॥ 4॥ 1॥

सत्गुरू रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जो जीव इस संसार में तपों में से श्रेष्ठ तप, गुरु का ज्ञान, प्राप्त कर लेता है वह विषय-विकारों से मुक्त हो जाता है। उसकी मति संसार की ओर से उपराम हो जाती है और उसके भ्रम का नाश हो जाता है। प्रभु अपने भक्तों के डर का नाश करने वाला है। हे परमानंद प्रभु जी! आप इस संसार में जीवों के विकारों और जन्म मरण के चक्र का अंत करो जी।''

शब्द - 15

संत तुझी तनु संगति प्रान॥
सतिगुर गिआन जानै संत देवादेव॥ 1॥
संत ची संगति संत कथा रसु॥
संत प्रेम माझै दीजै देवा देव॥ 1॥ रहाउ॥
संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी॥ 2॥
अउर इक मागउ भगति चिंतामणि॥
जणी लखावहु असंत पापीसणि॥ 3॥
रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु॥
संत अनंतहि अंतरु नाही॥ 4॥ 2॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को संत महापुरुषों की संगत् करने का पावन उपदेश देते हैं। ''संत महापुरुषों की संगत में से ही एकता, समानता, भाईचारा, सांझीवालता एवं प्रभु को मिलने का रास्ता प्राप्त होता है क्योंकि संतों और प्रभु में कोई भेद नहीं है।''

संत तुझी तनु संगति प्रान॥
सतिगुर गिआन जानै संत देवादेव॥ 1॥

"हे प्रभु जी! संत आप का शरीर हैं और संत महापुरुषों की संगत आप के प्राण है। सत्गुरु के ज्ञान द्वारा ही जाना जाता है कि संत देवों के पूजनीय देव हैं और प्रभु का स्वरूप हैं।"

(बाबा फ़रीद साहिब जी भी वर्णन करते हैं :-

करि क्रिपा, प्रभ साधसंगि मेली।।
जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली।।

"प्रभु ने कृपा जब मुझे संतो की संगत के साथ मिलाया तो संतों की संगत के प्रताप के कारण मैंने जिस तरफ भी देखा मुझे अलाह बेली ही नज़र आया।)

संत ची संगति संत कथा रसु॥
संत प्रेम माझै दीजै देवा देव ॥ 1॥ रहाउ॥

"हे देवों के देव प्रभु जी! मुझे संत महापुरुषों की संगत, संतों की कथा का आनंद और संत महापुरुषों से प्रेम देना करो जी।"

(सतगुरु कबीर महाराज जी वर्णन करते हैं:-

संतसंगति रामु रिदै बसाई ॥ 1॥
साध संगति उपजै बिस्वास॥
बाहरि भीतरि सदा प्रगास ॥ 4॥

"संतों की संगति में जाकर जीव के हृदय में प्रभु के नाम का वास होता है। संतों की संगत द्वारा मन में भरोसा पैदा होने से शरीर के अंदर और बाहर भाव ब्रह्माण्ड में सदा उस प्रभु का प्रकाश दिखाई देता है।")

संत आचरण संत चो मारगु संत च ओल्हग ओल्हगणी॥ 2॥

"हे प्रभु जी! संतों वाला आचरण और संत महापरुषों वाला श्रेष्ठ मार्ग मुझे दो जी क्योंकि संसार में संत महापुरुषों का आचरण और मार्ग सब से श्रेष्ठ है।" हे प्रभु जी! मुझे संत महापुरुषों के दासों का दास बना दो जी क्योंकि संतों के दासों का दास बनने से मुझे संत महापुरुषों वाली संगत प्राप्त होगी।

अउर इक मागउ भगति चिंतामणि ॥
जणी लखावहु असंत पापीसणि॥ 3॥

"प्रभु जी आप से एक मांग और करता हूँ कि मुझे मन इच्छुक फल देने

वाली नाम रूप भक्ति-मणि दो, पर कदापि मुझे, जिनका आचरण संत महापुरुषों के विपरीत है, उन पापियों के दर्शन न कराओ जी।''

रविदासु भणै जो जाणै सो जाणु॥
संत अनंतहि अंतरु नाही॥ 4॥ 2॥

सत्गुरू रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''सांसारिक लोग संत महापुरुषों को जो चाहे समझें पर सच्चाई तो यह है कि संत और प्रभु में कोई भेद नहीं है। संत संसार में प्रभु का ही रूप हैं।''

शब्द - 16

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा॥
नीच रूख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा॥ 1॥
माधउ सतसंगति सरनि तुम्हारी॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी॥ 1॥ रहाउ॥
तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा॥
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा॥ 2॥
जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा॥
राजा राम की सेव न कीन्ही कहि रविदास चमारा॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को सतसंगत् में मधु-मक्खियों की तरह मिलकर रहने का पावन उपदेश देते हैं।

तुम चंदन हम इरंड बापुरे संगि तुमारे बासा॥
नीच रुख ते ऊच भए है गंध सुगंध निवासा॥ 1॥

''हे प्रभु जी! आप संसार में चंदन की भांति श्रेष्ठ हो। हम सांसारिक जीव विकारों के कारण इरिण्ड की तरह गुणहीन हैं पर जैसे चंदन के पास इरिण्ड का वास होता है ऐसे ही प्रभु जी हमारा वास आपके पास है। जैसे चंदन के पास रहने से इरिण्ड में भी चंदन जैसी सुगन्धि आ जाती है और नीच कहा जाने वाला इरिण्ड चंदन जैसा ही उत्तम बन जाता है। इसी प्रकार ही प्रभु जी, आप की संगत करने से हम आप का ही रूप हो गए हैं।''

(सत्गुरू कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-
कबीर चंदन का बिरवा भला बेढिओ ढाक पलास॥

ओइ भी चंदनु होइ रहे बसे जु चंदन पासि ॥ 11 ॥

''इसी प्रकार जो जीव संसार में आकर प्रभु का नाम सिमरन करता है संत महापुरुषों की संगत करता है वह इस संसार में उत्तम बन जाता है।'')

माधउ सतिसंगति सरनि तुम्हारी ॥
हम अउगन तुम्ह उपकारी ॥ 1 ॥ रहाउ॥

''हे प्रभु जी! आप की शरण ही सतसंगत है। हम सांसारिक जीव अवगुणों से भरे हुए हैं पर आप परोपकारी हो और जीवों पर दया कर उनके अवगुण बख्शने वाले हो।''

तुम मखतूल सुपेद सपीअल हम बपुरे जस कीरा ॥
सतसंगति मिलि रहीऐ माधउ जैसे मधुप मखीरा ॥ 2 ॥

''हे प्रभु जी! आप सफेद पीले रेशम की भांति हो। हम अवगुणों से भरे हुए कीड़े हैं। हम सांसारिक जीव विकारों के कारण कीड़ों की तरह निकम्मे हैं पर आप हम पर कृपा करो। हम आप की संगत में ऐसे मिलकर रहें जैसे मधु मक्खियां मधु के छत्ते में मिलकर रहती हैं। मधु मक्खी अपने हाकिम के आदेश की पाबन्द है। हिम्मत और मेहनत में परिपक्व है। अधिकार छीनने वाले को मिटा देती है। विकारों का नाश कर मिठास पैदा करती है। आप कृपा करो कि हम भी आपकी संगत में इसी प्रकार मिलकर रहें।''

जाती ओछा पाती ओछा ओछा जनमु हमारा ॥
राजा राम की सेव न कीन्ही कहि रविदास चमारा ॥ 3 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जीव की संगत, मेल-मिलाप और जीवन नीच है क्योंकि जीव ने दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त कर प्रभु रूपी राजा का सिमरन नहीं किया।''

शब्द - 17

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु ॥
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु ॥ 1 ॥
तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु ॥
पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु ॥ 1 ॥ रहाउ॥
संपति बिपति पटल माइआ धनु ॥
ता महि मगन होत न तेरो जनु ॥ 2 ॥

प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन॥ 3॥ 4॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज मानवता को प्रभु-प्रेम का पावन उपदेश देते हैं कि,''प्रभु से प्रेम करने वाले को अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े होने की भी कोई चिंता नहीं होती क्योंकि उसने प्रभु को प्रेम रूपी डोरी से बाँधा होता है।''

कहा भइओ जउ तनु भइओ छिनु छिनु॥
प्रेमु जाइ तउ डरपै तेरो जनु॥ 1॥

''मनुष्य जन्म प्रभु के मिलन के लिए प्राप्त हुआ है।'' सत्‌गुरु जी प्रभु के प्रति तीव्र और गहरे प्यार की अवस्था का वर्णन करते हैं कि,''यदि मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े भी हो जाएँ तो भी मुझे कोई डर नहीं, डर है तो केवल इस बात का कि मेरे मन में से आप का प्रेम कम न हो जाए।''

तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु॥
पान करत पाइओ पाइओ रामईआ धनु॥ 1॥ रहाउ॥

''प्रभु जी, आपके चरण कमल फूल की भांति है और मेरा मन भंवरे की तरह है। मेरे मन ने आप जी के चरण कमलों में रहने के लिए जगह प्राप्त कर ली है। हे प्रभु जी! आप का पावन नाम रूपी अमृत पीकर मैंने नाम रूपी धन प्राप्त कर लिया है।''

संपति बिपति पटल माइआ धनु॥
ता महि मगन होत न तेरो जनु॥ 2॥

''प्रभु जी, आप के नाम का आनंद लेने वाला आप का दास सुख-दुख रूपी पर्दा, सांसारिक माया और संसार रूप झूठे धन में मग्न नहीं होता।''

प्रेम की जेवरी बाधिओ तेरो जन॥
कहि रविदास छूटिबो कवन गुन॥ 3॥ 4॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''प्रभु जी, दास ने आप को प्रेम की डोरी से बांध लिया है। अब आप कौन से प्रयत्न करने से छूटेंगे। अर्थात् आप प्रेम के सच्चे बंधन में से निकल नहीं सकते।''

(सत्‌गुरु नामदेव जी उच्चारण करते हैं:-

मेरी बांधी भगतु छडावै बांधै भगतु न छूटै मोहि॥

प्रभु जी कहते हैं,''मेरी करनी मेरा नाम सिमरन करने वाले संत एवं भक्त तो बदल सकते हैं पर मैं उनकी करनी नहीं बदल सकता क्योंकि उन्होंने मुझे प्रेम

के बंधन में बाँध लिया है। इस लिए मैं प्रेम के बन्धन में बँधा हुआ किसी भी प्रयत्न से आज़ाद नहीं हो सकता।'')

शब्द - 18

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे॥ 1॥ रहाउ॥
हरि के नाम कबीर उजागर॥
जनम जनम के काटे कागर ॥ 1॥
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ॥
तउ जग जनम संकट नही आइआ॥ 2॥
जन रविदास राम रंगि राता॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता॥ 3॥ 5॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज समस्त प्राणियों को हरि नाम जपने का पावन उपदेश देते हुए वर्णन करते हैं कि,''हरि नाम में रंग हो कर संसारिक जीव जीवन मुक्त हो जाते हैं।''

हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे॥ 1॥ रहाउ॥

''हरि-हरि नाम जप कर पहले भी संसारिक जीव मुक्त हुए हैं, हरि-हरि नाम जप कर अब भी मुक्त हो रहे हैं और हरि-हरि नाम जपकर आगे भी मुक्त होंगे। हरि नाम जीवों के हृदय को उज्जवल करने वाला है। श्वास-श्वास हरि नाम जप कर जीव संसार के अगम्य भवसागर से पार हो जाते हैं।''

(सत्गुरु नाम देव जी वर्णन करते हैं:-
हरि हरि करत मिटे सभि भरमा॥
हरि को नामु लै ऊतम धरमा॥ 1॥

''हरि-हरि नाम जपने से सभी तरह के भ्रम दूर हो जाते है। हरि नाम जपना संसार में सब से सर्वोत्त्म धर्म है।'')

(सत्गुरू कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-
ऐसा ज्ञान बिचारु मना॥
हरि के न सिमर दुख भंजना।। 1।।

''हे मन, तूँ प्रभु के ऐसे 'हरि' ज्ञान का विचार कर जो दुखों को निवृत्त करने वाला है।)

हरि के नाम कबीर उजागर।।

जनम जनम के काटे कागर।। 1।।

प्रभु के नाम का जप करके कबीर जी इस संसार में प्रसिद्ध हुए, जिन्होंने अपने तो जनमों-जनमांतरों के हिसाब-किताब तो काट ही दिए हैं और संसारी लोगों को एकता-समानता-भाईचारे के धागे में बांध कर प्रभु के नाम को जपा कर भवसागर को पार किया है।

निमत नामदेउ दूधु पीआइआ॥

तउ जग जनम संकट नही आइआ॥ 2॥

जब सत्गुरु नामदेव जी ने विनम्र भाव से हरि को दूध पिलाया तो उसके बाद संसार के जन्म-मरण रुपी संकट में नहीं आए भाव मुक्त हो गए।

ठाकुरों को दूध पिलाना

"संसार के कार्य अनंत हैं। जीव जगत में रहता हुआ कार्य करता-करता थक जाता, है, पर कार्य खत्म नहीं होते। एक दिन नामदेव जी के पिता जी को कोई ऐसा काम पड़ गया कि उनको तीन दिन तक घर से बाहर रहना पड़ा। वह ठाकुरों को हर-रोज़ दूध का भोग लगाते थे। जब नामदेव जी के पिता जी काम के कारण घर से बाहर चले तो उन्होंने नामदेव जी से कहा की कि मैं तीन दिन के लिए बाहर जा रहा हूं। सुबह उठकर पहले स्नान करना, फिर मंदिर जाकर ठाकुर जी को स्नान कराना और गाय दोह कर उन्हें दूध का भोग लगाना। यह बात मत भूलना। यदि ठाकुर जी नाराज़ हो गए तो हमारा कोई ठिकाना नहीं रहेगा।" ऐसा कहने के पश्चात् नामदेव जी के पिता जी चले गए।

अगले दिन नामदेव जी जल्दी उठे, स्नान किया, कपिला गाय का दूध दोह कर मंदिर चले गए। दूध को ऊँची जगह पर रख कर ठाकुर जी को स्नान कराया। मंदिर का अंदरूनी हिस्सा साफ किया। जब वह स्थान सूख गया तो धूप जलाकर दूध की कटोरी भरी और ठाकुर जी के आगे रख दिया और नामदेव जी ने विनती की।

दूधु कटोरै गडवै पानी। कपल गाइ नामै दुहि आनी॥ 1॥

दूधु पीउ गोबिंदे राइ॥ दूधु पीउ मेरो मनु पतीआइ॥

नाही त घर को बापु रिसाइ॥ 1॥ रहाउ।।

सोइन कटोरी अंम्रित भरी॥ लै नामै हरि आगै धरी॥ 2॥

भोले नामदेव जी को नहीं पता था कि जगत् ठाकुरों के साथ धोखा करता है। एक चम्मच दूध ठाकुर जी के मुँह पर लगाकर बाकी का दूध स्वयं पी जाता है। नामदेव जी ने सोचा कि जितना दूध ठाकुर जी के आगे रखा जाता है वो सारा दूध ठाकुर जी की मूर्ति पी लेती है, पर पत्थर की मूर्ति दूध कैसे पी सकती है? दूध की कटोरी आगे रख कर नामदेव जी बैठे रहे। जब बहुत देर हो गई तो नामदेव जी बोलकर विनती करने लगे,''हे प्रभु! दूध की कटोरी और पानी का कलश आप के पास रखी हुई है। मैं यह कपिला गाय का दूध लेकर आया हूँ, हे मेरे गोबिंद, दूध ग्रहण कीजिए। यदि आप दूध को ग्रहण कर लेंगे तो मेरा मन शांत हो जाएगा, नहीं तो पिता जी नाराज़ होंगे। मैंने आप के समक्ष सोने की कटोरी रखी है। कृप्या! आप ज़रूर ग्रहण करें! मैंने कोई पाप नहीं किया। यदि, मेरे पिता जी से हर रोज़ दूध ग्रहण करते हो तो मुझ से क्यों नहीं? हे प्रभु! कृपा करो, दया करो, यदि आज आपने दूध ग्रहण नहीं किया तो मेरी खैर नहीं।''

कहते हैं कि शुद्ध हृदय से की गई प्रार्थना व्यर्थ नहीं जाती। प्रभु को पत्थरों में से भी प्रकट कर देती है। जो काम नामदेव जी के पिता जी सारी जिंदगी न कर सके, ठाकुर और अपने जीवन से धोखा करते रहें। न कभी शुद्ध हृदय से प्रार्थना की और न ही ठाकुर ने दूध पिया। जैसे ब्राह्मण चम्मच से दूध ठाकुर जी के मुंह पर लगाकर पीछे हटा लेता था वैसे ही नामदेव जी के पिता जी किया करते थे। परन्तु मासूम आत्मा नामदेव जी को ठाकुर द्वारा दूध न पीना अच्छा न लगा। वह ठाकुर जी के आगे प्रार्थना करने लगे। आखिर भगवान को नामदेव जी की भक्ति भावना देख कर आना पड़ा। भगवान् पत्थर की मूर्ति में से प्रकट हुए और हँसे:-

एकु भगत मेरे ह्रिदय बसै॥ नामे देखि नरायनु हसै॥ 3॥

एक भक्त (नामदेव जी)उनके हृदय में बसा। नामदेव जी को देखकर भगवान हंस पड़े। हँस कर दोनों हाथ आगे बढाए और दूध पी लिया। दूध पीकर मूर्ति फिर वैसे हो गई जैसी पहले थी।

दूधु पीआइ भगतु घरि गइआ। नामे हरि का दरसनु भइया॥

दूध पिलाकर नामदेव जी घर चले गए। ऐसे उनको प्रभु ने दर्शन दिये। यह सत्गुरु नामदेव जी की भक्ति मार्ग पर पहली प्राप्ति थी। भगवान उनका कहा मानने लगे और छोटी आयु में ही उनको प्रभु के दर्शन हो गए। लोगों में बहुत शोभा हुई। नामदेव जी के पिता जी को जब इस बात का पता चला तो वे बहुत प्रसन्न हुए।

जन रविदास राम रंगि राता॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता॥ 3॥ 5॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि जो जीव 'हरि' नाम में रंग, जाता है वह जीव गुरु की कृपा से नरक में नहीं जाता।

शब्द - 19

माटी को पुतरा कैसे नचतु है॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है॥ 1॥ रहाउ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है॥ 1॥
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना॥ 2॥
कहि रविदास बाजी जगु भाई॥
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई॥ 3॥ 6॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज इस शब्द द्वारा समस्त मानवता को पावन उपदेश देते हैं कि मिट्टी के पुतले (जीव)को माया का त्याग कर सृजनहार प्रभु से सच्ची प्रीति करनी चाहिए।

माटी को पुतरा कैसे नचतु है॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है॥ 1॥ रहाउ॥

"पाँच तत्वों से बना हुआ यह जीव अपने संसार में आने के वास्तविक मनोरथ प्रभु के नाम को भूल कर संसार की माया में फँसा हुआ, माया के लिए किस तरह नाचता-फिरता है। जीव माया की ओर देख देख कर खुश होता है और उसे माया के बारे में सुनना और बोलना अच्छा लगता है। वह माया के प्रभाव में ही भाग-दौड़ कर रहा है।"

जब कछु पावै तब गरबु करतु है।
माइआ गई तब रोवनु लगतु है॥ 1॥

"जब जीव माया प्राप्त कर लेता है तो वह माया का अहँकार करता है पर जब माया की हानि हो जाती है तब वह रोने लग जाता है, कहता है कि मैं तो लुट गया।"

मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥ 2 ॥

''यह जीव संसार की माया में मग्न होकर मन में माया के बारे में ही सोचता है और वचन विचार एवं कर्म भी वही करता है जिससे जीव को माया प्राप्त हो। इस तरह वह मन, वचन और कर्म के कारण रसों में मग्न रहता है पर उसे यह मालूम नहीं जब मर जाएगा तो कहां जाकर समाना है?''

कहि रविदास बाजी जगु भाई ॥
बाजीगर सउ मोहि प्रीति बनि आई ॥ 3 ॥ 6 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''प्रभु बाजीगर सृष्टि सृजनहार ने संसार की रचना रची है, वह जैसे चाहे जीव से उसी प्रकार कर्म करवाता है, परन्तु मुझे बाजीगर प्रभु से प्रेम हो गया है।''

राग गूजरी
शब्द - 20

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ ॥
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ ॥ 1 ॥
माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ॥
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ॥ 1 ॥ रहाउ॥
मैलागर बेहे है भुइअंगा ॥
बिखु अंम्रितु बसहि इक संगा ॥ 2 ॥
धूप दीप नईबेदहि बासा ॥
कैसे पूज करहि तेरी दासा ॥ 3 ॥
तनु मनु अरपउ पूज चरावउ॥
गुर परसादि निरंजनु पावउ॥ 4 ॥
पूजा अरचा आहि न तोरी ॥
कहि रविदास कवन गति मोरी ॥ 5 ॥ 1 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को प्रभु के आगे तन, मन अपर्ण करने का पावन उपदेश देते है। प्रभु की पूजा केवल सच्चे मन से ही की जा सकती है क्योंकि दुनिया के सभी पदार्थ अपवित्र हैं।

दूधु त बछरै थनहु बिटारिओ॥
फूलु भवरि जलु मीनि बिगारिओ॥ 1॥

''हे प्रभु जी! आप जी की पूजा सांसारिक पदार्थों से नहीं की जा सकती। सांसारिक जीव आप के आगे दूध रख कर पूजा करते हैं पर दूध दोहने से पहले ही बछड़े ने थन में ही जूठा कर दिया है। फूलों को भंवरे ने सुगन्धि लेकर जूठा कर दिया है और जल मछली ने जूठा कर दिया है। इस लिए दूध, फल और जल पूजा में भेंट करने के योग्य नहीं है।''

(सत्गुरु नामदेव जी वर्णन करते हैं:-

आनीले कुंभ भराईले ऊदक ठाकुर कउ इसनानु करउ॥
बइआलीस लख जी जल महि होते बीटलु भैला काइ करउ॥
आनीले फूल परोईले माला ठाकुर की हउ पूज करउ॥
पहिले बासु लई है भवरह बीठल भैला काइ करउ॥
आनीले दूधु रीधाईले खीर ठाकुर कउ नैवेदु करउ॥
पहिले दूधु बिटारिओ बछरै बीठलु भैला काइ करउ।

''ठाकुर को स्नान कराने के लिए पानी का घड़ा लिया पर वह पानी अपवित्र है क्योंकि उसमें 42 लाख योनियों के जीव हैं। ऐसे ही पूजा के लिए माला बनाने के लिए लाए गए फूल भँवरे द्वारा सुगन्धि लेने के कारण अपवित्र हैं और दूध की बनी खीर भी अपवित्र है क्योंकि खीर वाले दूध को बछड़े ने थनों में ही अपवित्र किया होता है।'')

माई गोबिंद पूजा कहा लै चरावउ॥
अवरु न फूलु अनूपु न पावउ॥ 1॥ रहाउ॥

''हे माई! मैं प्रभु की पूजा करने के लिए संसार में से पवित्र भेटां कहाँ से ला कर चढ़ाऊं। संसार में कोई पवित्र और अनुपम फूल प्राप्त नहीं होता।''

मैलागर बेहे है भुइअंगा॥
बिखु अम्रितु बसहि इक संगा॥ 2॥

''प्रभु जी, चंदन भी आप जी की पूजा करने के योग्य नहीं है क्योंकि चंदन के वृक्ष के साथ विष भरे साँप लिपटे होते हैं। इस लिए विष भरे साँप और अमृत से भरा हुआ चंदन एक स्थान पर इक्ट्ठे रहते हैं। चंदन को साँपों ने विष के साथ अपवित्र कर दिया है।''

धूप दीप नईबेदहि बासा॥
कैसे पूज करहि तेरी दासा॥ 3॥

''धूप, दीपक और मीठे एंव बासी पदार्थ भी आप की पूजा के योग्य नहीं है। तो प्रभु जी आप का दास इन अपवित्र पदार्थों से आप की पूजा कैसे करे?''

तनु मनु अरपउ पूज चरावउ॥
गुर परसादि निरंजनु पावउ॥ 4॥

''माया से मुक्त निरंजन प्रभु जी आप की पूजा के लिए आप के आगे तन मन अर्पण करने से और गुरु की कृपा से आप की प्राप्ति होती है।''

पूजा अरचा आहि न तोरी॥
कहि रविदास कवन गति मोरी॥ 5॥ 1॥

''हे प्रभु जी! अपना तन मन अर्पण रूप सच्ची पूजा के बिना सांसारिक अपवित्र पदार्थों से आप की पूजा नहीं की जा सकती। सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि सच्ची पूजा के बिना मेरी गति कैसे होगी? मैं आप जी की सच्ची पूजा सच्चे मन से कर के आप में विलीन हो गया हूँ।''

राग सोरठि

शब्द - 21

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही॥
अनल अगम जैसे लहरि मइओदधि जल केवल जल मांही॥ 1॥
माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा॥
जैसा मानीए होइ न तैसा॥ 1॥ रहाउ॥
नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी॥
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी॥ 2॥
राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ॥
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ॥ 3॥
सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुोगवै सोई॥
कहि रविदास हाथ पै नैरै सहजे होइ सु होई॥ 4॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को पावन उपदेश देते हैं कि,''

जब जीव के मन में से झूठे अहँकार और भ्रम का नाश हो जाता है तब सर्व-व्यापक प्रभु उसे अपने भीतर ही नज़र आता है।''

जब हम होते तब तू नाही अब तूही मै नाही॥
अनल अगम जैसे लहरि मइओदधि जल केवल जल मांही॥ 1॥

''हे प्रभु! जब तक जीव के मन में मैं, मेरी का झूठा अहँकार है तब तक जीव को आपकी प्राप्ति नहीं होती, पर जब जीव अपने मन में से मैं (अहँकार) मिटा देता है तो प्रभु जी आप ही हो, मैं कुछ नहीं का निश्चय हो जाता है। सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि जैसे समुद्र में तेज़ आँधी आने के कारण बहुत सी लहरें उठती है और फिर समुद्र में समा जाती हैं और केवल पानी ही पानी नज़र आता है। ऐसे ही जब जीव के मन में अहँकार होता है तब तक यह जीव प्रभु से दूर रहता है। जब जीव अपने मन से अहँकार को मिटाकर प्रभु का सिमरन करता है तो प्रभु का ही रूप हो जाता है।''

माधवे किआ कहीऐ भ्रमु ऐसा॥
जैसा मानीए होइ न तैसा॥ 1॥ रहाउ॥

''हे प्रभु जी! क्या कहें जीव भ्रम के कारण इस संसार को सच मानता है पर जैसा यह जीव संसार को सच समझ कर मानता है यह संसार वैसा नहीं है, भाव यह कि संसार असत्य है।''

नरपति एकु सिंघासनि सोइआ सुपने भइआ भिखारी॥
अछत राज बिछुरत दुखु पाइआ सो गति भई हमारी॥ 2॥

''जैसे एक राजा अपने सिंघासन पर सोया हुआ सपने में भिखारी बन जाता है और अपना राज्य होते हुए भी राजा सपने में भिखारी बन कर दु:ख प्राप्त करता है। ऐसी ही हालत इस जीव की है जो संसार रूप सपने में प्रभु से बिछुड़ कर दु:ख पाता है।

जैसे राजा सपने में भिखारी बन कर अपने राज भाग को खोकर दु:ख प्राप्त करता है, इसी प्रकार हमारे समाज के पूर्वजों का भारतवर्ष पर राज था और मेरे समाज के लोग राज भाग को खोकर दुख प्राप्त कर रहे हैं।''

राज भुइअंग प्रसंग जैसे हहि अब कछु मरमु जनाइआ॥
अनिक कटक जैसे भूलि परे अब कहते कहनु न आइआ॥ 3॥

''जैसे साँप और रस्सी का प्रसंग है कि जीव अँधेरे के भ्रम के कारण रस्सी को साँप समझ लेता है परन्तु वास्तव में वह साँप नहीं होती। ऐसे ही भ्रम के

कारण जीव को संसार सत्य नज़र आता, पर यह असत्य है। इसी तरह जीव भ्रम के कारण स्वर्ण और स्वर्ण से बने हुए आभूषणों को भिन्न-भिन्न मानता है। असल में स्वर्ण और स्वर्ण से बने हुए आभूषण स्वर्ण ही होते हैं। ऐसे ही जीव भ्रम के कारण प्रभु को अपने से भिन्न समझता है और जब भ्रम दूर हो जाता है तो प्रभु में विलीन हो जाता है।''

सरबे एकु अनेकै सुआमी सभ घट भुोगवै सोई॥
कहि रविदास हाथ पै नेरै सहजे होइ सु होई॥ 4॥ 1॥

''भ्रम के दूर होने से प्रभु एक से अधिक रूप धारण कर सारे संसार में व्यापक नज़र आता है और सारे संसार में सभी जीवों में बसा हुआ सब प्रबन्ध चला रहा है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं मैं और मेरी का भ्रम दूर होने से वह प्रभु हाथों और पाँव से भी निकट अनुभव होता है। सहज ही उसकी प्राप्ति हो जाती है।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:
हरि महि तनु है तन महि हरि है सरब निरंतरि सोइ रे॥
कहि कबीर राम नामु न छोडउ सहजे होइ सु होइ रे॥ 3॥ 3॥

''प्रभु सभी शरीरों में है, सब शरीर प्रभु में हैं। प्रभु सर्व-व्यापक है। सत्गुरु कबीर साहिब जी कहते हैं कि राम नाम का सिमरन न छोड़ो, सहज ही उसकी प्राप्ति हो जाएगी।'')

शब्द - 22

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे॥ 1॥
माधवे जानत हहु जैसी तैसी॥
अब कहा करहुगे ऐसी॥ 1॥ रहाउ॥
मीनु पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहुबानी॥
खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी॥ 2॥
आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा॥
मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा॥ 3॥
कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ॥
जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहु सहीऐ॥ 4॥ 2॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को प्रभु से सच्ची प्रीति कर प्रभु को प्रेम के बंधन में बांध कर, संसार के झूठे बंधनों से मुक्त होने का पावन उपदेश देते हैं। ''जीव को प्रभु से ऐसी प्रीति करनी चाहिए जैसी प्रीति मछली की पानी के साथ है।''

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे॥ 1॥

''हे प्रभु जी! यदि आप जी ने हमें संसार में मोह रूपी फाँस में बाँधा है तो हमने आपको प्रेम के बंधन में बांध लिया है। अब आप अपने छूटने का प्रयत्न करो क्योंकि हमने तो आपकी भक्ति कर अपने आप को सांसारिक मोह से मुक्त कर लिया''

माधवे जानत हहु जैसी तैसी॥
अब कहा करहुगे ऐसी॥ 1॥ रहाउ॥

''हे प्रभु जी! जैसी मेरी आप के साथ प्रीति है, आप भली-भांति जानते हो। आप इस प्रीति से छुटकारा पाने के लिए क्या करोगे?''

मीन पकरि फांकिओ अरु काटिओ रांधि कीओ बहुबानी॥
खंड खंड करि भोजनु कीनो तऊ न बिसरिओ पानी॥ 2॥

''मेरी आप से ऐसी अटल (अटूट) प्रीति है जैसी प्रीति मछली की पानी के साथ है। फंदक मछली को पकड़ कर पानी से अलग कर के उसे काट कर टुकड़े-टुकड़े करता है। कई ढंग से पका कर चबा-चबा कर खाता है, तो भी मछली पानी को नहीं भूलती। जो जीव मछली को खाता है उसे प्यास बहुत लगती है। इस लिए मछली मर कर भी पानी को नहीं भूलती।''

(सत्गुरु नामदेव जी वर्णन करते हैं:-

मछुली कउ जैसे नीरु बालहा तिउ मेरै मन रमइआ॥

''जैसे मछली को पानी प्यारा है ऐसे ही मेरे मन को प्रभु से प्यार है।'')

आपन बापै नाही किसी को भावन को हरि राजा॥
मोह पटल सभु जगतु बिआपिओ भगत नही संतापा॥ 3॥

''प्रभु जी आप किसी के बाप की सम्पत्ति नहीं हो। हरि-प्रकाश रूप पातिशाह जी आप तो केवल प्रेम-भक्ति करने वालों के ही हो। मोह रूपी पर्दा सारे संसार में फैला हुआ है, पर यह पर्दा प्रभु का नाम जपने वाले भक्तों को दुख नहीं देता।''

कहि रविदास भगति इक बाढी अब इह का सिउ कहीऐ॥
जा कारनि हम तुम आराधे सो दुखु अजहु सहीऐ॥ 4॥ 2॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि, ''हे प्रभु जी, मेरे हृदय में आप की प्रेम-भक्ति बहुत बढ़ गई है, यह मैं किस को बताऊँ? जिस जन्म-मरण के दु:ख से छुटकारा पाने के लिए मैं आप जी की आराधना कर रहा हूँ क्या यह दु:ख अब और भी झेलने पड़ेंगे? भाव नहीं झेलने पड़ेंगे।''

शब्द - 23

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेकै॥
राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै॥ 1॥
न बीचारिओ राजा राम को रसु॥
जिह रस अनरस बीसरि जाही॥ 1॥ रहाउ॥
जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही॥
इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥ 2॥
कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ॥
कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ॥ 3॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को पावन उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु भक्ति के बिना चाहे दुर्लभ मनुष्य जन्म में जीव के पास राजा इन्द्र की भांति स्वर्ग का सुख भी हो, सब निष्फल है।''

दुलभ जनमु पुंन फल पाइओ बिरथा जात अबिबेके॥
राजे इंद्र समसरि ग्रिह आसन बिनु हरि भगति कहहु किह लेखै॥ 1॥

''जीव को पूर्व हुए पुण्य का फल अमूल्य मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है परन्तु आत्म विचार के बिना यह जन्म निष्फल जा रहा है।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-

कबीर मानस जनमु दुलंभु है होइ न बारै बार॥
जिउ बन फल पाके भुइ गिरहि बहुरि न लागहि डार॥

''मनुष्य जन्म अमूल्य है, यह बार-बार प्राप्त नहीं होता। जैसे किसी फल के पेड़ से पका हुआ फल टूट जाए तो वह दोबारा शाखा पर नहीं लगता।) सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, किसी जीव के पास चाहे राजा इन्द्र के समान सुंदर-सुंदर घर और स्वर्ण के सिंहासन भी हों, परन्तु हरि की भक्ति के बिना उसका जीवन किसी लेखे नहीं लगता।''

न वीचारिओ राजा राम को रसु ॥
जिह रस अनरस बीसरि जाही ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

''इस जीव ने प्रभु पातिशाह के श्रेष्ठ आनंद का विचार नहीं किया, जिस आनंद के आने से संसार के और सभी रस चले जाते हैं।''

जानि अजान भए हम बावर सोच असोच दिवस जाही ॥
इंद्री सबल निबल बिबेक बुधि परमारथ परवेस नही ॥ 2 ॥

''हे प्रभु जी! आप जी को समझने से अनजान बन कर, बावरा हो कर अच्छी-बुरी सोच में और सोचे-समझे बिना सांसारिक जीव दिन व्यतीत कर रहें हैं। इन्द्रियों के विषय विकारों में संलिप्त होने से जीव की सोचने और समझने की शक्ति कमज़ोर हो जाती है, जिस कारण जीव का (परमार्थ) प्रभु के नाम में प्रवेश नहीं होता।''

कहीअत आन अचरीअत अन कछु समझ न परै अपर माइआ ॥
कहि रविदास उदास दास मति परहरि कोपु करहु जीअ दइआ ॥ 3 ॥ 3 ॥

''जीव कहता कुछ और है करता कुछ और है। इस कारण जीव को प्रबल माया की समझ नहीं आती। सत्गुरु रविदास जी महाराज कहते हैं कि प्रभु जी, मुझ दास की मत माया से उपराम है। आप गुस्सा त्याग कर मुझ पर अपनी कृपा करो जी।''

शब्द - 24

सुखसागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जाके ॥
चारि पदारथ असट दसा सिधि नवनिधि करतल ताके ॥ 1 ॥
हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥
अवर सभ तिआगि बचन रचना ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ 2 ॥
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥ 3 ॥ 4 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को सुखों के समुद्र प्रभु का हरि सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं। जिस हरि के नाम के मूल्य के समान मूल्य रखने वाली कोई भी मूल्यवान वस्तु नहीं है।''

सुखसागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जाके॥
चारि पदारथ असट दसा सिधि नवनिधि करतल ताके॥ 1॥

हरि का नाम सुखों का समुद्र है। जिस प्रभु के नाम के अधीन सुरतर कल्प वृक्ष, मन इच्छुक फल देने वाली मणि–चिंतामणि, कामधेनु गाय है। चार पदार्थ काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष।''

अठारह सिद्धियां

1. अणिमा–परमाणु तुल्य सूक्ष्म हो जाना, 2. महिमा–महां स्थूल हो जाना, 3. गरिमा–रूई जैसा पदार्थ भारी हो जाना, 4. लघिमा प्रबन–भारी पदार्थ का रूई तुल्य हो जाना, 5. प्राप्ति–सभी पदार्थों का इच्छानुसार हाथ में आ जाना, 6. प्रकारमय–बिन किसी रोक के जल की तरह पृथ्वी में लय हो जाना और इच्छानुसार प्रकट हो जाना, 7. वशीकरण–भौतिक पदार्थों को अपनी आज्ञा में कर लेना, 8. ईशता–पदार्थों के रचने और लय करने की शक्ति होना, 9. अनरूपी सिद्धि–खुधा त्रिखा इत्यादि तकलीफें अनुभव न होना, 10. श्रवण सिद्धि–दूर बैठे हुए सभी की बात सुन लेना, 11. दर्शन सिद्धि–दूर बैठे हुए अपने नेत्रों से सब को देख लेना, 12. मनोवेग सिद्धि मन के वेग अनुसार जहां दलील हो वहीं गमन करना, 13. काम रूप सिद्धि–जैसी इच्छा हो वैसा रूप धारण करना, 14. परकाया प्रवेश सिद्धि–भूत की तरह पराए शरीर में प्रवेश कर जाना, 15. स्वछन्द मृत्यु सिद्धि–भीष्म पितामाह की तरह अपनी इच्छा के अनुसार शरीर का त्याग करना, 16. सुर क्रीड़ा सिद्धि–अपसराओं से मिलकर विचरते देवों को देखना, 17. संकल्प सिद्धि–जो दिल में संकल्प धारण करो सो पूरा होना, 18. अप्रहतिगति– जहां जाना चाहें वहीं झट–पट पहुँच जाना।

नौ निधियां

1. पद्म निधिः–पद्म स्वर्ण इत्यादि धातुओं की खरीद फरोख्त करने योग्य सब देव मंदिर बनवाने और श्रेष्ठ आचरण वाला होना पदम् निधि कहलाती है। यहि निधि सतोगुणी पुत्र–पौत्रों तक रहती है।
2. महा पद्म निधिः–मोती, मूंगे, हीरे इत्यादि का व्यापार करना, उत्तम पुरुषों को दान देना, इस का नाम महा पद्म निधि है। यह निधि भी सतो गुणी और सात पीढ़ियों तक रहती है।

3. मकर निधिः–बाण, खड़्ग, बरछी, धनुष, ढालादिक जमा करे, इन का व्यापार करे, राजाओं से मित्रता रखे इसका नाम मकर निधि है। यह निधि तमो गुणी एक पुरुख तक रहती है।

4. कछप निधिः–अन्न, घी, गुड़ इत्यादि का व्यापार करना, कछप सामान–अंगों का संकोच करना, अथवा रखना, न आप खाना न किसी को धन देना। जमीन में दबा रखना इसका नाम कछप निधि है, यह निधि तमोगुणी है एक पुरख पर्यन्त रहती है।

5. मुकंद निधिः–वीणा मृदंग इत्यादि बाजे संग्रहि करने भट, मागध, सूत, गवइयों को धन देना, वेसवा गमन करना इसका नाम मुकंद निधि है। यह निधि रजोगुणी है एक पुरख पर्यन्त रहती है।

6. कुंद निधिः–धातुओं और रत्नों और अन्नादिक का व्यापार करना, अपमान का वचन न सहारना, उपमा होनी, बहुत प्रीति करना, बहुत भार्या होनी मां, संतान अच्छी होना, पूर्व मित्रों से मिलाप का प्रेम आलाप करना, नये से बहुत करना इसका नाम कुंद निधि है। यह राजस, तामस और दो पीढ़ियों तक रहती है।

7. नील निधिः–बस्त कपास, अन्न, फल, पुष्प मोती, मूंगे, शंख, सिप्पियों, लकड़ियों और जल की वस्तुओं का व्यापार करना, तालाब–बगीचे लगाना, नदियों पर–पुल बनाना, वृक्षों के जंगल और पुष्प वाटिकादि अनेक प्रकार भोगों का भोगी होना, इसका नाम नील निधि है। यहि निधि सात्विक एंव तामसिक है, तीन पीढ़ियों तक रहती है।

8. संतख निधिः–अकेला ही उत्तम भोजन करे, उत्तम वस्त्र पहने और सब को घटिया अन्न दे, वस्त्र मैले दे, सुत दारादिकों को कुछ न दे, केवल अपने शरीर का पालन करे, इस निधि का नाम संतख निधि है। यह निधि रजो–तमो है और एक पुरुष पर्यन्त रहती है।

9. खरब निधिः–हर तरह के पदार्थ पास होना, खरब निधि कही जाती है।)

यह सब प्रभु के हाथ की हथेली पर है। जो जीव प्रभु का सिमरन कर प्रभु के साथ एक रूप हो जाता है, उसके वश में यह सब कुछ आ जाता है।

हरि हरि हरि न जपहि रसना॥
अवर सभ तिआगि बचन रचना॥ 1॥ रहाउ॥

''हे जीव! तू ऐसे सुखों के समुद्र प्रभु का हरि नाम अपनी रसना से क्यों

नहीं जपता? और सभी व्यर्थ की बातों को छोड़ कर हरि के नाम का सिमरन कर।''

नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ 2 ॥

अनेकों प्रकार के प्रसंग अठारह पुराण और चार वेदों की विधियाँ सभी चौतीस अक्षरों में ही लिखे गए हैं। वेद व्यास जी ने सभी ग्रंथों और शास्त्रों को विचार कर अंत में यही परमार्थ कहा है कि इस संसार में हरि नाम के समान कुछ भी नहीं है।

सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥ 3 ॥ 4 ॥

उस हरि के नाम में निर्विकल्प समाधि विषय विकारों रूप उपाधियों से मुक्त होकर लगती है। बड़े भाग्य से जीव का ध्यान प्रभु के साथ जुड़ता है। सत्‌गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि, ''जिस जीव के हृदय में प्रभु के नाम का प्रकाश हो जाता है वह जीव जन्म-मरण के भय से मुक्त हो जाता है।''

शब्द - 25

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा ॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा ॥ 1 ॥
माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि ॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
जउ तुम दीवरा तउ हम बाती ॥
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती ॥ 2 ॥
साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी ॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी ॥ 3 ॥
जह जह जाउ तहा तेरी सेवा ॥
तुम सो ठाकुरु अउरु न देवा ॥ 4 ॥
तुमरे भजन कटहि जम फांसा ॥
भगति हेत गावै रविदासा ॥ 5 ॥ 5 ॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज मानवता को प्रभु से अटूट प्रीति करने का उपदेश देते हैं:-

जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा॥
जउ तुम चंद तउ हम भए है चकोरा॥ 1॥

''प्रभु जी मेरी प्रीति आप के साथ ऐसी हो, यदि आप हरियाली भरपूर पहाड़ हों तो मैं उस पहाड़ पर रहने वाला मोर बनूं क्योंकि मोर की सब से अधिक प्रीति हरियाली भरपूर पहाड़ के साथ होती है। यदि आप चन्द्रमा हो तो मैं चकोर बनूं।''

माधवे तुम न तोरहु तउ हम नही तोरहि॥
तुम सिउ तोरि कवन सिउ जोरहि॥ 1॥ रहाउ॥

''हे प्रभु जी! यदि आप मुझ से प्रीति नहीं तोड़ोगे तो मैं भी आप से प्रीति नहीं तोडूंगा। आप से प्रीति तोड़ कर मैं और किसके साथ जोड़ूंगा?''

जउ तुम दीवरा तउ हम बाती॥
जउ तुम तीरथ तउ हम जाती॥ 2॥

''यदि प्रभु जी आप दीपक हो तो मैं उस दीपक में जगने वाली बाती बनूँ। यदि आप तीर्थ हो तो मैं उस तीर्थ का यात्री बनूं।''

साची प्रीति हम तुम सिउ जोरी॥
तुम सिउ जोरि अवर संगि तोरी॥ 3॥

''हे प्रभु जी! मैंने संसार की झूठी प्रीति त्याग कर आप के साथ सच्ची प्रीति जोड़ी है और आप के साथ सच्ची प्रीति जोड़ कर और अन्य सभी से तोड़ ली है।''

जह जह जाउ तहा तेरी सेवा॥
तुम सो ठाकुरू अउरु न देवा॥ 4॥

''हे प्रभु जी! मैं जहाँ-जहाँ जाता हूँ आप की ही सेवा और सिमरन करता हूं। आप जैसा इस संसार में कोई और मालिक देव नहीं है।''

तुमरे भजन कटहि जम फांसा॥
भगति हेत गावै रविदासा॥ 5॥ 5॥

''प्रभु जी, आप का सिमरन यमदूतों की फाँसी को काट देता है। सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि मैं आप जी की प्रेमा-भक्ति के लिए ही आप जी के गुण गाता हूँ।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-
कोई गावै को सुणै हरि नामा चितु लाइ ॥

कहु कबीर संसा नहीं अंति परम गति पाइ॥

''कोई भी जीव हरि के गुण श्रद्धा सहित मन लगाकर गाए या सुने, सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं कि इसमें कोई शंका नहीं कि ऐसा बड़े भाग्य वाला-जीव अन्त समय जरूर ही मुक्ति प्राप्त करेगा।'')

शब्द - 26

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा॥
हाड मास नाड़ी को पिंजरु पंखी बसै बिचारा॥ 1॥
प्रानी किआ मेरा किआ तेरा॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा॥ 1॥ रहाउ॥
राखहु कंध उसारहु नीवां॥
साढे तीन हाथ तेरी सीवां ॥ 2॥
बंके बाल पाग सिर डेरी॥
इहु तनु होइगो भसम की ढेरी ॥ 3॥
ऊचे मंदर सुंदर नारी॥
राम नाम बिनु बाजी हारी॥ 4॥
मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा॥
तुम सरनागति राजा राम चंद कहि रविदास चमारा ॥ 5॥ 6॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों की अस्थिरता का वर्णन करते हुए पावन उपदेश देते हैं कि, ''जीव के शरीर की रचना पाँच तत्वों से हुई है। संसार में जीव का रहना वृक्ष के पक्षी की तरह है, इस लिए सब जीवों को भेद-भाव से मुक्त होकर प्रभु का नाम सिमरन करना चाहिए।''

जल की भीति पवन का थंभा रकत बुंद का गारा॥
हाड मास नांड़ी को पिंजरू पंखी बसै बिचारा॥ 1॥

''जीव का शरीर पाँच तत्वों से बना है। जिसमें पानी की दीवार और हवा की स्तम्भ है। माता के रक्त और पिता के वीरज (अग्नि)का कीचड़ लगा हुआ है। हड्डिओं, मांस (मिट्टी) और नसों (आकाश) का पिंजर बना हुआ है, जिसमें आत्मा रूपी पक्षी विचारा रहता है।''

प्रानी किआ मेरा किआ तेरा॥
जैसे तरवर पंखि बसेरा॥ 1॥ रहाउ॥

''हे जीव! इस संसार में क्या मेरा और क्या तेरा है। जीव का इस संसार में रहना वृक्ष के पक्षी की तरह है। जैसे कोई पक्षी आकाश में उड़ता है और रात काटने के लिए किसी वृक्ष पर ठहरता है और सुबह होते ही उड़ जाता है।''

(सत्गुरु नामदेव महाराज जी वर्णन करते हैं –

राम कोइ न किस ही केरा॥

जैसे तरवरि पंखि बसेरा॥ 1॥ रहाउ॥

इस विचार की प्रौढ़ता करते हुए सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:–

बिरख बसेरो पंखि को तैसो इहु संसार॥

''जीव का इस संसार में रहना पक्षी के वृक्ष पर ठहरने के समान है जो रात गुज़ार कर उड़ जाता है।'')

राखहु कंध उसारहु नीवां॥

साढे तीन हाथ तेरी सीवां॥ 2॥

''जीव इस संसार में रहने के लिए गहरी नींव खोद कर दीवारें और महल बनाता है पर अन्त समय सब कुछ यहीं छोड़ कर चला जाता है। इस जीव के हिस्से में केवल साढ़े तीन हाथ धरती आती है जिस पर जीव का अन्तिम संस्कार किया जाता है।''

बंके बाल पाग सिर डेरी॥

इहु तनु होइगो भसम की ढेरी॥ 3॥

''जीव प्रभु को भूलाकर सुंदर बाल संवार कर सिर पर टेढ़ी पगड़ी बाँधता है, पर अन्त समय यह शरीर मिट्टी की ढेरी बन कर रह जाता है।''

ऊचे मंदर सुंदर नारी॥

राम नाम बिनु बाजी हारी॥ 4॥

''यदि जीव के पास ऊंचे महल हों और उसमें सुंदर स्त्री हो तो भी प्रभु के नाम के बिना अमूल्य मनुष्य जन्म की बाजी हार जाता है।''

मेरी जाति कमीनी पांति कमीनी ओछा जनमु हमारा॥

तुम सरनागति राजा रामचंद कहि रविदास चमारा॥ 5॥ 6॥

''जीव का विकारों से साथ होने के कारण स्वभाव, संगत और जीवन नीच बन जाता है।'' सत्गुरु रविदास चमार कहते हैं कि, ''हे सब के पातिशाह प्रभु जी, मैं आपकी शरण में आया हूँ, आप मेरे ऊपर कृपा करो।''

शब्द - 27

चमरटा गांठि न जनई॥
लोगु गठावै पनही॥ 1॥ रहाउ॥
आर नही जिह तोपउ॥
नही रांबी ठाउ रोपउ॥ 1॥
लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा॥
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा ॥ 2॥
रविदास जपै राम नामा॥
मोहि जम सिउ नाही कामा॥ 3॥ 7॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को उपदेश देते हैं कि, ''जो जीव इस शरीर से झूठी प्रीति त्याग कर प्रभु का नाम सिमरन करता है वह यमदूतों के भय से मुक्त हो जाता है।''

चमरटा गांठि न जनई॥
लोगु गठावै पनही॥ 1॥ रहाउ॥

''चमड़े से बने हुए शरीर के साथ मैं झूठी प्रीति करना नहीं जानता। सांसारिक लोग मेरे पास शरीर रूपी जूते गँठवाने भाव पदार्थों के साथ झूठी गाँठ पाने के लिए आते हैं।''

आर नही जिह तोपउ॥
नही रांबी ठाउ रोपउ॥ 1॥

''मेरे पास तीक्ष्ण बुद्धि रूपी आर नहीं है जिसके साथ मैं इस शरीर से झूठी गांठ-तुप करूं और न ही मेरे पास राँबी भाव काट कर उल्टी सीधी धोखे भरी बातों वाली शिक्षा है, जिस से पदार्थ रूप चमड़े की टाँकी को छील कर और सँवार कर शरीर रूपी जूते पर लगा सकूँ भाव संसार के साथ सच्ची प्रीति कर सकूँ।''

लोगु गंठि गंठि खरा बिगूचा॥
हउ बिनु गांठे जाइ पहूचा॥ 2॥

''सांसारिक लोग इस शरीर से झूठी प्रीति जोड़ कर और झूठे संसार से प्रीति कर खुआर भाव दु:खी हो रहे हैं पर मैंने झूठे शरीर और सांसारिक पदार्थों से प्रीति नहीं की। प्रभु के साथ सच्ची प्रीति करके उसके पास पहुँच गया हूँ भाव उसमें विलीन हो गया हूँ।''

रविदास जपै राम नामा॥
मोहि जम सिउ नाही कामा॥ 3॥ 7॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,"मैंने प्रभु का नाम जप कर सच्ची प्रीति जोड़ ली है जिस कारण अब मेरा यमदूतों के साथ कोई लेन-देन नहीं।"

शब्द - 28

रे मन! चेत मीचु दिन आया,
तो जग जाल न भया पराया।। टेक।।
कानि सुनै न नजरि दीसै, जीह थिरु न रहाई।
मुण्ड रु तन थर थर कांपे, अंतहु बिरियां पहुंतौ आई।।॥ 1॥
केसौ सेतह पिकु भये सभु, तन मनु बल बिलमाया।
मध्यांन गयौ तुरा चलिं आई, अजहुं जग रह्यौ भरमाया।। 2।।
पानी गयो पलु छीजै काया, यहि तन जरा जराना।
पांचौ थाके जरा जरु सानै, तौ रामहि मरमु न जाना।। 3।।
हंस पंखेरू चंचलु भाई, समुझि पेखि मन मांहि।
प्रति पलु मीचु गरासै देही, फुनि रविदास चेतहु नांहि।। 4।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज, शरीर में वास कर रहे आत्मा रूपी हंस को प्रभु का नाम जपकर अमूल्य जन्म सफल करने का पावन उपदेश दे रहे हैं।

रे मन! चेत मीचु दिन आया,
तो जग जाल न भया पराया।। टेक।

"हे मन! तुम चेतन हो जाओ और प्रभु को याद करो क्योंकि तुम्हारे आँखें मींचने का समय अर्थात् अंत समय निकट आ रहा है। अंत समय आने पर भी तुम्हें संसार रूपी जंजाल पराया नहीं लग रहा है। भाव इस जगत के जंजाल से स्वयं को मुक्त करो।"

कानि सुनै न नजरि दीसै, जीह थिरु न रहाई।
मुण्ड रु तन थर थर कांपे, अंतहु बिरियां पहुंतौ आई।। 1॥

"अंत समय अर्थात् वृद्धावस्था के आने पर, कान सुनने में एवं आँखें देखने में असमर्थ हो जाते हैं तथा जिह्वा बोल नहीं पाती है। मन स्थिर नहीं रहता

अर्थात् मन को कई प्रकार के डर व्याप्त हो जाते हैं। वृद्धावस्था आने पर बाल झड़ जाते हैं, शरीर कांपने लगता है और अंततः मृत्यु आ जाती है।''

केसौ सेतह पिकु भये सभु, तन मनु बल बिलमाया।
मध्यांन गयौ तुरा चलि आई, अजहुं जग रह्यौ भरमाया।। 2।।

''हे जीव तेरे बाल सफेद और भूरे हो चुके हैं, तन एवं मन का बल कम होना शुरू हो गया है। प्रौढ़ावस्था बीत जाती है एवं बुढ़ापा आ घेरता है। फिर भी जीव संसार में भटकता रहता है। भाव प्रभु को याद नहीं करता।''

पानी गयो पलु छीजै काया, यहि तन जरा जराना।
पांचौ थाके जरा जरु सानै, तौ रामहि मरमु न जाना ।। 3।।

''शरीर को सींचने वाला श्वासों रूपी पानी कम होना शुरू हो जाता है और इस तन को बुढ़ापा आने लगता है। पांचों ज्ञानेन्द्रियां थक जाती हैं और फिर भी यह जीव प्रभु का भेद नहीं जान पाता।''

हंस पंखेरू चंचलु भाई, समुझि पेखि मन मांहि।
प्रति पलु मीचु गरासै देही, फुनि रविदास चेतहु नांहि ।। 4।।

''हे चंचल मन वाले भाई! यह आत्मा रूपी हंस शरीर में से उड़ने वाला है। इस बात को तू अपने मन में समझ कर देख ले।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हे जीव! काल पल-पल शरीर को खा रहा है, फिर पुनः प्रभु को स्मरण करने का समय नहीं मिलेगा, इस लिए तू प्रभु का स्मरण कर।''

राग धनासरी

शब्द - 29

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै॥ 1॥
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने॥
कारन कवन अबोल॥ रहाउ॥
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे॥ 2॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को विनम्रता धारण कर इस मनुष्य जन्म को प्रभु को समर्पित करने का पावन उपदेश देते हैं।

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै॥

प्रभु के आगे प्रार्थना करते हैं कि,"प्रभु जी, मेरे जैसा इस संसार में कोई गरीब नहीं है और आप जैसा गरीबों पर दया करने वाला कोई दयालु नहीं है। अब आप मेरी क्या परख कर रहे हो?"

बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै॥ 1॥

"हे प्रभु जी! आप जी के सत्य-ज्ञान रूपी वचनों पर मेरा मन पसीज गया है और इस के लिए मुझे अपने दास को सम्पूर्ण ज्ञान देना करो जी।"

हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने॥
कारन कवन अबोल॥ रहाउ॥

"सारे संसार में रमे हुए प्रभु जी मैं आप पर बार-बार बलिहार जाता हूं, पर क्या कारण है कि आप मेरे साथ बोलते नहीं?"

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे।।

"हे प्रभु जी आप से बिछुड़े हुए बहुत जन्म गुज़र गए हैं पर यह मनुष्य जन्म मैंने आप जी को समर्पित कर दिया है।"

कहि रविदास आस लगि जीवउ
चिर भइओ दरसनु देखे॥ 2॥ 1॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, "हे प्रभु जी, मैं आप जी के दर्शनों की आशा में जी रहा हूँ क्योंकि आप जी के दर्शन किये हुए बहुत समय हो गया है, इस लिए कृपा कर मुझे दर्शन दो जी।"

शब्द - 30

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो
स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ॥
मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ
रसन अंम्रित राम नाम भाखउ॥ 1॥
मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै॥ 1॥ रहाउ॥
साध संगति बिना भाउ नही ऊपजै
भाव बिनु भगति नही होइ तेरी॥
कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ पैज राखहु राजा राम मेरी ॥ 2॥ 2॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को प्रभु से ऐसी आनंदमय प्रीति करने का पावन उपदेश देते हैं, ''जिस प्रीति में जीव (चित्त, आँखें, कानों, जिह्वा और मन के कारण) प्रभु के रंग में रंग हो कर प्रभु में विलीन हो जाता है।''

चित सिमरनु करउ नैन अविलोकनो
स्रवन बानी सुजसु पूरि राखउ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज प्रभु के साथ अपनी अटूट प्रीति का वर्णन करते हैं कि, ''हे प्रभु जी! मैं मन में आपका सिमरन करता हूँ अंतः करण रूपी आँखों में आप के दर्शन करता हूँ और कानों से आप जी का पावन यश सुनकर आनन्द से भरपूर हो गया हूँ।''

मनु सु मधुकरु करउ चरन हिरदे धरउ
रसन अंम्रित राम नाम भाखउ॥ 1॥

''मैं अपने मन को भँवरा बनाकर आपके चरण-कमलों को अपने हृदय में बसाता हूँ, उनसे श्रेष्ठ रस प्राप्त करता हुँ और अपनी रसना से आप जी के अमृत राम नाम को उच्चारण करता हुँ।''

मेरी प्रीति गोबिंद सिउ जिनि घटै॥
मै तउ मोलि महगी लई जीअ सटै॥ 1॥ रहाउ॥

''हे गोबिंद प्रभु जी! आप से मेरी प्रीति कभी भी कम न हो क्योंकि यह प्रीति मैंने अपना जीवन अर्पण कर मंहगे मोल से प्राप्त की है।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं-

कंचन सिउ पाईए नही तोलि॥ मनु दे राम लीआ है मोलि॥

''प्रभु को सोने से तोल कर नहीं पाया जाता, अपना मन देकर आपा भाव मिटा कर मोल लिया जाता है।'')

साध संगति बिना भाउ नही उपजै
भाव बिनु भगति नही होई तेरी॥

''हे प्रभु जी! संत महापुरुषों की संगति के बिना आप जी के प्रति प्रेम पैदा नहीं होता और प्रेम के बिना आप जी की भक्ति नहीं हो सकती।''

कहै रविदासु इक बेनती हरि सिउ
पैज राखहु राजा राम मेरी ॥ 2॥ 2॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज प्रभु के आगे विनती करते हैं कि, ''सच्चे पातशाह जी! आप मेरी लाज रखो जी। मेरी प्रीति सदैव आप से बनी रहे''

शब्द - 31

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे॥ 1॥ रहाउ॥
नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा नामु तेरा केसरो ले छिटकारे॥
नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे॥ 1॥
नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे॥
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे॥ 2॥
नामु तेरो तागा नामु फूल माला भार अठारह सगल जूठारे॥
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नामु तेरा तुही चवर ढोलारे॥ 3॥
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे॥
कहै रविदास नामु तेरो आरती सतिनामु है हरि भोग तुहारे॥ 4॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को सभी वहम-भ्रमों से मुक्त होकर प्रभु का नाम जपने रूप सच्ची आरती करने का पावन उपदेश देते हैं।

नामु तेरो आरती मजनु मुरारे॥
हरि के नाम बिनु झूठे सगल पासारे॥ 1॥ रहाउ॥

''हे हरि जी! तेरा नाम सिमरन करना ही तेरी सच्ची आरती है और आप जी का नाम सिमरन ही आप को स्नान करवाना है। आप जी के नाम के बिना संसार के सभी पसारे (कारोबार) झूठे हैं।''

नामु तेरो आसनो नामु तेरो उरसा
नामु तेरा केसरो ले छिटकारे॥

''आप जी का नाम जपना ही आरती के लिए आसन लगाना है और आप का नाम जपना ही केसर रगड़ने वाला उरसा है भाव केसर रगड़ने वाली शिला है और आप का नाम जपना ही आप पर केसर छिड़कना है।''

नामु तेरा अंभुला नामु तेरो चंदनो
घसि जपे नामु ले तुझहि कउ चारे॥ 1॥

''आप जी का नाम ही पानी है, आप जी का नाम ही चंदन है और आप जी का नाम ही चंदन रगड़कर आपको चढ़ाना है।''

नामु तेरा दीवा नामु तेरो बाती
नामु तेरो तेलु ले माहि पसारे॥

"आप का नाम जपना ही आरती के लिए दीपक है,नाम रूपी बाती दीपक में, डाली है और आप का नाम ही उस दीपक में डाला गया तेल है।"

नाम तेरे की जोति लगाई
भइओ उजिआरो भवन सगलारे॥ 2॥

"आप के नाम की ही ज्योति जगाई है जिस से सब भवनों भाव खण्डों ब्रह्माण्डों में आप जी के नाम का प्रकाश हो रहा है।"

नामु तेरो तागा नामु फूल माला
भार अठारह सगल जूठारे॥

"आप का नाम ही धागा है और आप का नाम ही फूलों की माला है। आप के नाम के बिना सारी वनस्पति के अठारह भार अपवित्र हैं।"

तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ
नामु तेरा तुही चवर ढोलारे॥ 3॥

"हे प्रभु जी आप जी की पैदा की हुई सृष्टि में मैं आपको क्या अर्पण करूँ? आप जी का नाम ही आप जी पर चंवर झुलाना है।"

दस अठा अठसठे चारे खाणी
इहै बरतणि है सगल संसारे॥

"अठारह पुराणों, अठाहट तीर्थों और चारें खाणियों (अंडज, जेरज, सेतज और उत्भुज) में सारा संसार विचर रहा है।"

कहै रविदास नामु तेरो आरती
सतिनामु है हरि भोग तुहारे॥ 4॥ 3॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,"हे हरि जी! आप जी का नाम ही मेरे लिए आपकी सच्ची आरती करना है। हे हरि जी सतिनाम का ही आप जी को भोग लगाता हूँ।"

शब्द-32

मेरी प्रीति गोपाल सों जन घटै हो।
मै मोल महिंगै लई तन सटै हो।। टेक॥
रिदै सुमिरन करूँ नैन अवलोकनो
स्रवना हरि कथा पूरि राखूँ।
मन मधुकर करौं चरना चित्त धरौं

राम रसायन रसन चाखूँ॥ 1॥
साधु संगति बिना भाव नहिं ऊपजै
भाव बिन भगति क्यों होइ तेरी।
बंदत रविदास राज राम सुनु बीनती
गुर प्रसाद कृपा करो न देरी॥ 2॥

जगत्गुरु रविदास महाराज जी, मानवता को प्रभु के साथ ऐसी आनन्दपूर्ण प्रीति करने का पावन उपदेश देते हैं, जिस प्रीति में जीव (मन, आँखों, कानों, जिह्वा व चित्त के कारण) प्रभु के नाम में रंग होकर प्रभु में अभेद्य हो जाता है।

मेरी प्रीति गोपाल सों जनि घटै हो।
मैं मोलि महँगै लई तन सटै हो।। टेक॥

''हे हरि जी। मेरी प्रीति आप से कभी भी कम न हो क्योंकि यह प्रीति, मैंने अपना जीवन समर्पित कर, महंगे मूल्य पर प्राप्त की है।''

रिदै सुमिरन नैन अवलोकनो
स्रवना हरि कथा पूरि राखूँ।

''हे प्रभु जी! मैं हृदय में आप जी का सिमरन करता हूँ, आँखों से आपके दर्शन करता हूँ और कान आप जी की पावन कथा श्रवण कर आनंद से भरपूर रखता हूँ।''

मन मधुकर करौं चरना चित्त धरौं
राम रसायन रसना चाखूँ॥ 1॥

''मैं अपने मन को भंवरा बनाकर, आप जी के चरण कंवलों को, अपने हृदय में बसाता हूँ। उस से श्रेष्ठ रस प्राप्त करता हूँ, रसना से आप जी का अमृत राम-नाम चखता हूँ।''

साधु संगति बिना भाव नहिं ऊपजै
भाव बिन भगति क्यों होइ तेरी।

''हे प्रभु जी, संतों की संगत के बिना, आप जी के प्रति प्रेम उत्पन्न नहीं होता और प्रेम के बिना, आप जी की भक्ति कैसे उत्पन होगी?''

बंदत रविदास राज राम सुनु बीनती
गुरू प्रसाद कृपा करो न देरी॥ 2॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज, पातिशाह प्रभु के समक्ष एक निवेदन करते हैं कि,'' हे प्रभु जी! आप कृप्या मुझे दर्शन दो, देरी मत कीजिए।''

शब्द – 33

त्राहि त्राहि त्रिभुवनपति पावन।
अतिशय सूल सकल बलि जावन॥ टेक॥
काम क्रोध लंपट मन मोरा।
कैसे भजन करूं मैं तोरा॥ 1॥
बिषम बिषाद बहंडनकारी।
असरन सरन सरनि भौहारी॥ 2॥
देव देव दरबार दुआरै।
राम राम रविदास पुकारै॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को, तीनों लोकों के स्वामी, प्रभु का सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं। ''प्रभु का सिमरन करने से, कष्टों की निवृत्ति हो जाती है।''

त्राहि त्राहि त्रिभुवनपति पावन।
अतिशय सूल सकल बलि जावन॥ टेक॥

''हे तीनों लोकों के स्वामी और जीवों को पवित्र करने वाले प्रभु जी, आप मेरी रक्षा करो, ताकि मैं श्वास-श्वास आपका सिमरन करता रहूँ। हे प्रभु जी! आप बड़े-बड़े दुखों का नाश करने वाले हो जी। सब जीव आप से बलिहारे जाते हैं।''

काम क्रोध लंपट मन मोरा।
कैसे भजन करूं मैं तोरा॥ 1॥

''प्रभु को भूले हुए जीव का मन काम, क्रोध जैसे विकारों में लिप्त होने के कारण भजन किस तरह कर सकता है?''

बिषम बिषाद बिहंडनकारी।
असरन सरन सरनि भौहारी॥ 2॥

''प्रभु जी आप असहनीय, पापी और रोगी का नाश करने वाले हो। परन्तु जब जीव बेसहारा आपका आश्रय ले लेता है, तो उसके सारे संकट दूर हो जाते हैं।''

देव देव दरबार दुआरै।
राम राम रविदास पुकारै॥ 3॥

''देवों के देव प्रभु जी! मैं आप के दरबार के द्वार पर खड़ा होकर, पुकार करता हूँ, आपका श्वास-श्वास सिमरन करता हूँ, आप मुझे दर्शन दो जी।''

शब्द - 34

दरशन दीजै राम दरशन दीजै।
दरशन दीजै बिलंब न कीजै।। टेक ।।
दरशन तोरा जीवन मोरा।
बिन दरशन क्यों जिवै चकोरा ।। 1 ।।
माधो सतिगुर सब जग चेला।
अब के बिछुरे मिलन दुहेला ।। 2 ।।
धन जोबन की झूठी आसा।
सत सत भाखै जन रविदासा ।। 3 ।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु प्रेमी जीव के मन में, हर समय प्रभु के दर्शनों की प्यास रहती है।''

दरशन दीजै राम दरशन दीजै।
दरशन दीजै बिलंब न कीजै ।। टेक ।।

''हे संसार में रमे हुए प्रभु जी! मुझे दर्शन दो जी, दर्शन दो जी, मुझे शीघ्र दर्शन दो, देर न करो जी क्योंकि मैं आप के दर्शन के बिना जीवित नहीं रह सकता।''

दरशन तोरा जीवन मोरा।
बिन दरशन क्यों जिवै चकोरा ।। 1 ।।

''हे प्रभु जी! आप का दर्शन ही मेरे जीवन का आधार है। जैसे चकोर चन्द्रमा के दर्शन के बिना जीवित नहीं रह सकता, चकोर के मन में हर समय, चन्द्रमा के दर्शनों की प्यास रहती है और वह चन्द्रमा के दर्शन की आशा में जीता है, ऐसे ही प्रभु जी, मैं आपके दर्शन के बिना कैसे जी सकता हूँ? भाव नहीं जी सकता।''

माधो सतिगुर सब जग चेला।
अब के बिछुरे मिलन दुहेला ।। 2 ।।

''हे प्रभु जी! आप सारे संसार के सतगुरु हो, ज्ञान का अंधकार दूर करने

वाले हो और संसार के सभी जीव आप के शिष्य हैं पर यदि जीव अमूल्य जीवन प्राप्त कर भी आप से बिछुड़ा रहा तो पुन: जीव का आप से मिलाप होना बहुत कठिन है।''

धन जोवन की झूठी आसा।
सत सत भाखै जन रविदासा॥ 3॥

''प्रभु को भूला हुआ जीव धन और यौवन की झूठी इच्छाओं में मग्न रहता है। सतगुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि मैं प्रभु का दास सच उच्चारण करता हूँ कि प्रभु प्रेमी हर पल प्रभु के दर्शनों के लिए व्याकुल रहता है।''

शब्द - 35

जन को तारि तारि नाथ रमईया।
कठिन फँद परियो पंच जमईया।। टेक॥
तुम बिन सकल देव मुनि ढूँढू।
कहूँ न पाऊँ जम पास छुड़ईया॥ 1॥
हम से दीन दयाल न तुम सर
चरन सरन रविदास चमईया॥ 2॥

इस पावन शब्द में जगतगुरू रविदास जी महाराज जीवों को प्रभु के समक्ष संसार रूपी भवसागर से पार होने के लिए विनती करने का उपदेश देते हैं।

जन को तारि तारि नाथ रमईया।
कठिन फँद परियो पंच जमईया।। टेक॥

''हे सर्वव्यापक परमपिता प्रभु जी! अपने दास को पार लगाओ। प्रभु आप के नाम के बिना जीव को बहुत ही कठिन पाँच विषय-विकारों काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार रूपी यमदूतों का बंधन व्याप्त रहा है।''

तुम बिन सकल देव मुनि ढूँढू।
कहूँ न पाऊँ जम पास छुड़ईया॥ 1॥

''प्रभु जी! आप के बिना जीव, चाहे सभी देवताओं और मुनियों को ढूँढ ले, परन्तु फिर भी आप के नाम के बिना, कोई भी उसे यमदूतों से छुड़ा नहीं सकता।''

हम से दीन दयाल न तुम सर।
चरन सरन रविदास चमईया॥ 2॥

"प्रभु जी! मेरे जैसा कोई गरीब नहीं और आप जैसा कोई दयालु नहीं। सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि मैं चमार आपके चरण कंवलों की शरण में आ गया हूँ।"

शब्द – 36

जो तुम गोपालहिं नहिं गैहौ।
तो तुम को सुख में दुख उपजै सुखहि कहाँ ते पैहौ।। टेक ।।
माला नाम सभै जग डहको झूठौ भेख बनैहौ।
झूठे ते साँचि तब होइहौ हरि की सरन जब ऐहौ ।। 1 ।।
कन रस बत रस और सबै रस झूठहि मूड़ मंडेहौ।
जब लगि तेल दिया में बाती देखत ही बुझि जैहौ ।। 2 ।।
जौ जन राम नाम रँग राते और रंग न सुहैहौ।
कहै रविदास भजो रे कृपा निधि प्रान गये पछितैहौ ।। 3 ।।

जगत्गुरू रविदास जी महाराज इस शब्द द्वारा, जीवों को प्रभु की शरण प्राप्त कर, परमानंद की प्राप्ति करने का पावन उपदेश देते हैं।

जो तुम गोपालहिं नहिं गैहौ।
तो तुम को सुख में दुख उपजै सुखहि कहाँ ते पैहौ।। टेक ।।

"हे जीव! यदि तू सृष्टि के पालनहार प्रभु की शरण ग्रहण नहीं करेगा, तो तुझे सांसारिक सुखों में, भी दुख ही प्राप्त होंगे। तब तू सच्चा सुख कैसे प्राप्त करेगा?"

माला नाम सभै जग डहको झूठौ भेख बनैहौ।
झूठे ते साँचि तब होइहौ हरि की सरन जब ऐहौ ।। 1 ।।

"अज्ञानता के कारण, जीव झूठे भ्रमों में भटके हुए हैं, और गले में माला पहन कर, प्रभु की प्राप्ति के लिए, झूठे भेष बनाए हुए हैं। जब जीव प्रभु की शरण लेता है, तो उस समय झूठ को त्याग कर, सच्चे प्रभु से जुड़ जाता है।"

कन रस बत रस और सबै रस झूठहि मूड़ मंडैहौ।
जब लगि तेल दिया में बाती देखत ही बुझि जैहौ ।। 2 ।।

"प्रभु को भूला हुआ जीव, कानों के रस, बातों के रस और झूठे रसों में मग्न हुआ भटकता घूम रहा है। सिर मुंडवा कर भक्ति करने का दिखावा करता है।

जैसे जितना समय दीपक में तेल होता है, उतना समय बाती जलती है और तेल समाप्त होने पर बाती बुझ जाती है। ऐसे ही जितना समय शरीर में, श्वास हैं, जीव जीवित है और श्वासों के समाप्त होने पर, जीवन समाप्त हो जाता है।''

जौ जन राम नाम रँग राते और रँग न सुहैहौ।
कहै रविदास भजो रे कृपा निधि प्रान गये पछितैहौ॥ 3॥

जो जीव प्रभु के नाम में रंगे हुए हैं, उनको संसार के अन्य रंग नहीं भाते। सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे जीव, कृपा के खज़ाने! प्रभु का सिमरन करो नहीं तो अंत समय में तुझे पछताना पड़ेगा।''

शब्द - 37

प्रभु जी संगति सरन तिहारी।
जग जीवन राम मुरारी॥ टेक॥
गली गली को जल बहि आयो, सुरसरि जायि समायो।
संगत कै परताप महातम, नाम गंगोदक पायो॥ 1॥
स्वाँति बूँद बरसैं फनि ऊपर, सीस बिषै बिष होय।
बाही बूँद कै मोती निपजै संगति की अधकाई॥ 2॥
तुम चंदन हम इरंड बापुरे, निकट तुम्हारे बासा।
नीच बृिख तै ऊंच भये है, तुम्हारी बास शुबासा॥ 3॥
जाति भी ओछी पात भी ओछा, ओछा कसब हमारा।
तुम्हारी कृपा ते ऊंच भये है, कहै रविदास चमारा॥ 4॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज सतसंगत करने का पावन उपदेश देते हैं कि,''जो जीव सतसंगत करता है, वह श्रेष्ठ बन जाता है।''

प्रभु जी संगति सरन तिहारी। जग जीवन राम मुरारी॥ टेक॥

''हे प्रभु जी! आप के मिलाप के लिए श्रेष्ठ संगत आप जी की शरण है। आप सारे संसार को जीवन प्रदान करने वाले हो।''

गली गली को जल बहि आयो सुरसरि जायि समायो।
संगत कै परताप महातम नाम गंगोदक पायो॥ 1॥

''जब गलियों का पानी गंगा नदी में समा जाता है, तो गंगा का ही रूप हो जाता है। यह अच्छी संगत के प्रताप की महानता है। लोग भ्रम के कारण जिन जीवों को नीच समझते हैं, वे भी प्रभु का नाम सिमरन कर प्रभु का ही रूप हो जाते हैं।''

स्वाँति बूंद बरसैं फनि ऊपर सीस बिषै बिष होय।
बाही बूंद कै मोती निपजै संगति की अधकाई॥ 2॥

''जब स्वाँति बूंद, साँप के फन के ऊपर गिरती है, तो वह विष बन जाती है, परन्तु वही बूंद जब सीप में गिरती है, तो मोती बन जाता है। यह संगत का ही प्रताप है।''

तुम चंदन हम इरंड बापुरे, निकट तुम्हारे बासा।
नीच बृिख तै ऊंच भये है तुम्हारी बास शुबासा॥ 3॥

''हे प्रभु जी! आप चंदन की तरह सुगंधी प्रदान करने वाले श्रेष्ठ हो और हम सांसारिक जीव इरिंड की तरह सुगंधी रहित हैं। जैसे चंदन की संगत कर इरिंड में से भी सुगंधि आने लगती है ऐसे ही प्रभु जी आप का नाम जप कर हम भी श्रेष्ठ गिने जाते हैं।''

जाति भी ओछी पात भी ओछा, ओछा जनम हमारा।
तुम्हारी कृपा ते ऊंच भये है, कहै रविदास चमारा॥ 4॥

''मानव विरोधी लोग मेरी जात, कुल और कार्य को नीच समझते हैं। सतिगुरू रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं कि, हे प्रभु आप जी की कृपा से मैं श्रेष्ठ बन गया हूँ। मैं चमार को सभी सनमान देते हैं।''

शब्द – 38

पांडे कैसी पूजि रची रे।
सति बोलै सोय सतिवादी, झूठी बात बदी रे॥ टेक॥
जो अबिनासी सबका करता, व्यापि रहिउ सब ठोर रे।
पँच तत्त जिनि कीया पसारा, सो यों ही किछु और रे॥ 1॥
तूं जो कहैत हौ यौ ही करता, याकूँ मानिख करै रे॥
तारणि सकति सही जे या मैं, तो आपण क्यों न तिरै रे॥ 2॥
अंही भरोसे सब जग बूडा, सुण पंडित की बात रे।
या कै दरसि कूण गुणा छूटा, सब जग आया जात रे॥ 3॥
या की सेव सूल नहिं भाजै, कटै न संसे पांस रे।
सोचि विचारि देख या मूर्ति, यूं छांडी रविदास रे॥ 4॥

इस पावन शब्द में जगतगुरू रविदास जी महाराज आडम्बरों और वहम–भ्रमों में भूले–भटके हुए जीवों को, प्रभु का सिमरन करने का उपदेश देते हैं। इस

संसार में सत्यवादी वह जीव है, जो सच पर चलता हुआ मानवता से प्यार करता है।

पांडे कैसी पूजि रची रे।
सति बोलै सोय सतिवादी झूठी बात बदी रे॥ टेक॥

''हे पण्डित! तूने प्रभु की आडम्बर रूपी पूजा किस प्रकार की बनाई है? तुम अपने आप को सत्यवादी कहते हो, सत्यवादी वही है जो केवल सच बोलता है और झूठ बोलना एक बुराई है।''

जो अबिनासी सबका करता, व्यापि रहिउ सब ठोर रे।
पँच तत्त जिनि कीया पसारा, सो यों ही किछु और रे॥ 1॥

''वह प्रभु अमर, अविनाशी, सब कुछ करने वाला कर्तापुरख और सब जगह व्यापक-सर्वव्यापक है। प्रभु ने पाँच तत्वों जल, वायु, धरती, अग्नि और आकाश से सारी सृष्टि की रचना की है। उसके अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है।''

तूं जो कहैत हौ यौ ही करता याकूँ मानिख करै रे॥
तारणि सकति सही जे या मैं तौ आपण क्यों न तिरै रे॥ 2॥

''हे पंडित! तू तो कहता है कि यह मूर्ति ही जगत की कर्ता है, पर इस मूर्ति को तो मनुष्य ने बनाया है। जो वस्तु मनुष्य ने बनाई है, वह कर्तापुरुख कैसे हो सकती है? यदि इस मूर्ति को पार लगाने वाली शक्ति मान लिया जाए, तो यह मूर्ति स्वयं क्यों नहीं तैरती?''

अंही भरोसे सब जग बूडा सुण पंडित की बात रे।
या कै दरसि कूण गुणा छूटा सब जग आया जात रे॥ 3॥

''पंडितों की ऐसी वहमों-भ्रमों की बातें सुन कर और उन बातों पर विश्वास कर, सारा संसार डूब रहा है, परन्तु यह बताओ कि इस मूर्ति के दर्शन करने मात्र से, कौन मुक्त हुआ है? सारा संसार ही आवागमन के चक्र में फँसा हुआ है।''

या की सेव सूल नहिं भाजै कटै न संसे पांस रे।
सोचि बिचारि देख या मूर्ति यूं छांडी रविदास रे॥ 4॥

''सच्चे प्रेम के बिना मूर्ति पूजा करने से दुख दूर नहीं होता और न ही झूठे भ्रम का नाश होता है। सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि मैं इस बात को अच्छी तरह से सोच विचार कर और देख कर बाहरी मूर्ति पूजा से बहुत दूर हूँ।''

राग जैतसरी

शब्द – 39

नाथ कछूअ न जानउ॥
मनु माइआ कै हाथि बिकानउ॥1॥ रहाउ॥
तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी॥
हम कहीअत कलिजुग के कामी॥ 1॥
इन पंचन मेरो मनु जु बिगारिओ॥
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ॥ 2॥
जत देखउ तत दुख की रासी॥
अजौं न पत्याइ निगम भए साखी॥ 3॥
गोतम नारि उमापति स्वामी॥
सीसु धरनि सहस भग गांमी॥ 4॥
इन दूतन खलु बधु करि मारिओ॥
बडो निलाजु अजहू नही हारिओ॥ 5॥
कहि रविदास कहा कैसे कीजै॥
बिन रघुनाथ सरनि का की लीजै॥ 6॥ 1॥

मानवता को पावन उपदेश देते हुए जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीव के जीवन पर शक्तिशाली पाँच विकारों का प्रभाव बताते हैं कि,''इन पाँचों के प्रभाव कारण जीव प्रभु से दूर रहता है। प्रभु का नाम सिमरन करने से ही जीव इन पाँचों के प्रभाव से मुक्त हो जाता है।''

नाथ कछूअ न जानउ॥
मनु माइआ कै हाथि बिकानउ॥ 1॥ रहाउ॥

''हे सृष्टि के मालक प्रभु जी! मैं भाव यह जीव कुछ भी नहीं जानता क्योंकि मेरा मन माया के हाथ बिक चुका है।''

तुम कहीअत हौ जगत गुर सुआमी॥
हम कहीअत कलिजुग के कामी॥ 1॥

''प्रभु जी! आप संसार के मालिक कहे जाते हो। हम सांसारिक जीव माया के प्रभाव के कारण कल्युग के विषय कहे जाते हैं।''

इन पंचम मेरो मनु जु बिगारिओ॥
पलु पलु हरि जी ते अंतरु पारिओ॥ 2॥

"इन पाँच विकारों ने मेरे मन को इतना बिगाड़ा है कि यह जीव पल-पल में आप जी से दूर ही दूर ले जा रहे हैं।"

जत देखउ तत दुख की रासी॥

अजौं न पत्याइ निगम भए साखी॥ 3॥

"माया के प्रभाव के कारण जहाँ भी देखता हूँ। वहीं दुःख ही दुःख भाव दुःखों की खान हैं। यह मन विश्वास नहीं करता कि यह संसार दुखों का घर है चाहे सभी धार्मिक पुस्तकें इस बात की गवाही देते हैं।"

गोतम नारि उमापति स्वामी॥

सीसु धरनि सहस भग गांमी॥ 4॥

"इस माया के प्रभाव के कारण ही गौतम ऋषि, उसकी स्त्री अहल्या, उमापति-पार्वती का पति शिव जी और स्वामी ब्रह्मा यह सभी ही माया के दूतों (काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहँकार इत्यादि) की लपेट में आए।"

"गौतम ऋषि की स्त्री अहल्या जिसके साथ इन्द्र ने छल किया, पार्वती का पति शिव भी माया के रूप पर मोहित हुआ और ब्रह्मा अपनी ही बेटी पर मोहित हो गया था। जहाँ भी उसकी बेटी जाती उस ओर ही वह अपना नया मुख बनाकर सामने आ जाता। तंग आकर उसकी बेटी आकाश की ओर चली गई। ब्रह्मा ने अपना पाँचवा मुख आकाश की ओर बनाया तो शिव ने ब्रह्मा का सिर काट दिया। गौतम ऋषि के शाप के कारण इन्द्र के शरीर पर अनेकों स्त्रियों के गुप्त अंग प्रकट हो गए। यह सभी माया के कारण दुखी हुए हैं।"

(सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-

सरपनी ते ऊपरि नहीं बलीआ॥

जिनि ब्रहमा बिसनु महादेउ छलीआ॥

"माया रुप नागिन से बढ़कर कोई शक्तिशाली नहीं है, जिसने ब्रह्मा, विष्णु और शिव इत्यादि को छला है।")

इन दूतन खलु बधु करि मारिओ॥

बडो निलाजु अजहु नही हारिओ॥ 5॥

"माया के इन पाँच दूतों ने जीव को बांध कर मारा है पर जीव बड़ा निर्लज है कि वह अब भी इनको नहीं छोड़ता।"

कहि रविदास कहा कैसे कीजै॥

बिन रघुनाथ सरनि का की लीजै॥ 6॥ 1॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''इन से बचने के लिए क्या किया जाए? और कहाँ जाया जाए? प्रभु के बिना किस की शरण ली जाए? भाव प्रभु की शरण लेकर ही जीव माया के प्रभाव से मुक्त हो सकता है।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी माया के प्रभाव से बचने का उपाय बताते हैं कि:-

साधू संगति दीओ रलाइ॥ पंच दूत ते लीओ छडाइ॥
कहि कबीर जिसु उदरु तिसु माइआ॥
तब छूटे जब साधू पाइआ॥ 5 ॥ 5 ॥ 23 ॥

''साधुओं की संगत करके और प्रभु का नाम सिमरन कर यह जीव माया और माया के पाँच दूतों से मुक्त हो जाता है।'')

राग सूही

शब्द - 40

सह की सार सुहागनि जानै॥
तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै॥
तनु मनु देइ न अंतरु राखै॥
अवरा देखि न सुनै अभाखै॥ 1 ॥
सो कत जानै पीर पराई॥
जा कै अंतरि दरदु न पाई॥ 1 ॥ रहाउ॥
दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी॥
जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी॥
पुर सलात का पंथु दुहेला॥
संगि न साथी गवनु इकेला॥ 2 ॥
दुखीआ दरदवंदु दरि आइआ॥
बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ॥
कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी॥
जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी॥ 3 ॥ 1 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीव रूप स्त्री को दुर्लभ जन्म में प्रभु पति की प्राप्ति कर सुहागन बन कर लोक-परलोक का सुख प्राप्त करने का पावन उपदेश देते हैं।

सह की सार सुहागनि जानै॥

तजि अभिमानु सुख रलीआ मानै॥

''जैसे पति की संभाल को सुहागिन जानती है जो अपने अहंकार को छोड़कर पति के साथ आनन्द मनाती है, ऐसे ही पति-प्रभु की संभाल तत्तवेता रूप महात्मा सखियां ही जानती हैं जो अहंकार को त्याग कर पति प्रभु के साथ आनन्द मनाती हैं।''

(बाबा फरीद जी महाराज वर्णन करते हैं:-

जिन्हा नाउ सुहागणी तिन्हा झाक न होर॥

''जिनका नाम सुहागवती होता है भाव जिन्हें पति प्रभु मिल जाता है उनकी दृष्टि किसी और तरफ नहीं जाती।''

तनु मनु देइ न अंतरु राखै॥

अवरा देखि न सुनै अभाखै॥ 1॥

''जैसे सुहागिन स्त्री अपने पति के बिना न तो किसी ओर की तरफ (मंद भावना से) देखती है और न ही ओरों के वचन (बुरी मत) सुनती है। न ही किसी और के साथ बोलती है। इसी तरह महात्मा रूप स्त्रियां प्रभु पति के आगे अपना तन मन अर्पण कर देती हैं और कोई भेद नहीं रखतीं। पति-प्रभु के बिना किसी देवी देवता की बात में ध्यान नहीं देतीं।''

सो कत जानै पीर पराई॥

जा कै अंतरि दरदु न पाई॥ 1॥ रहाउ॥

''जिन दुहागिन स्त्रियों ने अपने प्रभु-पति से प्रेम नहीं किया वो सुहागिन स्त्रियों वाले पति-प्रेम के वियोग के दु:ख को नहीं जान सकतीं।''

दुखी दुहागनि दुइ पख हीनी॥

जिनि नाह निरंतरि भगति न कीनी॥

''जैसे कुटिला स्त्री दुखी होती हुई मायके और ससुराल घर दोनों तरफ के सुख से वंचित रह जाती है ऐसे ही प्रभु को भूली हुई जीव रूप स्त्री लोक-परलोक के सुखों से वंचित रहती है।''

पुरसलात का पंथु दुहेला॥

संगि न साथी गवनु इकेला॥ 2॥

''पुरसलात का रास्ता कठिन है। मरने के बाद जीव आत्मा को अकेले ही यह रास्ता तय करना पड़ता है। जहाँ कोई साथी-मित्र नहीं जाता।''

दुखीआ दरद बंदु दरि आइआ ॥
बहुतु पिआस जबाबु न पाइआ ॥

"हे दुखों के ज्ञाता प्रभु जी! मैं दुखी होकर आप के दर पर आया हूँ मेरे मन में आपके दर्शनों की बहुत अभिलाषा है, पर मुझे आप जी ने कोई उत्तर नहीं दिया भाव मुझे दर्शन नहीं दिए।"

कहि रविदास सरनि प्रभ तेरी ॥
जिउ जानहु तिउ करु गति मेरी ॥ 3 ॥ 1 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"हे प्रभु जी! मैं आप की शरण में आया हूँ। आप जैसा चाहें उसी तरह मेरा उद्धार करें जी।"

शब्द – 41

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥
संगु चलत है हम भी चलना ॥
दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना ॥ 1 ॥
किआ तू सोइआ जागु इआना ॥
तै जीवनु जगि सचु करि जाना ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै ॥
सभ घट भीतरि हाटु चलावै ॥
करि बंदिगी छाडि मै मेरा ॥
हिरदै नामु सम्हारि सवेरा ॥ 2 ॥
जनमु सिरानो पंथु न सवारा ॥
सांझ परी दह दिस अंधिआरा ॥
कहि रविदास निदानि दिवाने ॥
चेतसि नाही दुनीआ फनखाने ॥ 3 ॥ 2 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज संसार की अस्थिरता का वर्णन करते हुए जीव को अज्ञानता रुप नींद से जाग कर प्रभु का नाम जप कर अपना पंथ संवारने का पावन वैरागमयी उपदेश देते हैं।

जो दिन आवहि सो दिन जाही ॥
करना कूचु रहनु थिरु नाही ॥

''जैसे जो दिन आता है वह बीत जाता है इसी तरह जीव की आयु भी कम होती जा रही है। सभी ने संसार को छोड़ कर चले जाना है। संसार में सदैव रहने वाला कोई भी जीव नहीं है।''

(सतगुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-

किआ मागउ किछु थिरु न रहाई॥

देखत नैन चलिओ जगु जाई॥

''प्रभु जी! आप से क्या माँगू क्योंकि इस संसार में कुछ भी स्थिर रहने वाला नहीं है। आँखों के सामने संसार नाश होता दिखाई दे रहा है।'')

संगु चलत है हम भी चलना॥

दूरि गवनु सिर ऊपरि मरना॥ 1॥

''जीव के साथी-मित्र साथ छोड़कर संसार से जा रहे हैं। हमें भी एक दिन संसार छोड़कर जाना पड़ेगा। जिस मृत्यु को जीव दूर समझता है वह मृत्यु जीव के सिर पर खड़ी है।''

किआ तू सोइआ जागु इआना॥

तै जीवनु जगि सचु करि जाना॥ 1॥ रहाउ॥

''हे जीव! तू इस संसार में अज्ञानता रुपी नींद में क्यों सोया हुआ है? तू इस सांसारिक जीवन को सच समझ बैठा है, वास्तव में यह संसार नाशवान् है। इस लिए भाई अज्ञानता रुपी नींद से जाग कर प्रभु को याद कर।''

जिनि जीउ दीआ सु रिजकु अंबरावै॥

सभ घट भीतरि हाटु चलावै॥

''जिस प्रभु ने जीवन दिया है, वही प्रभु सभी को धैर्य भी पहुंचाता है। प्रभु सभी शरीरों में सभी इन्द्रियों को चला रहा है।''

करि बंदिगी छाडि मै मेरा॥

हिरदै नामु सम्हारि सवेरा॥ 2॥

''हे जीव! तू मैं-मेरी के अहंकार को छोड़कर एक प्रभु की बंदगी कर। अमृत समय उठकर अपने हृदय में प्रभु के नाम का सिमरन कर।''

जनमु सिरानो पंथु न सवारा॥

सांझ परी दहदिस अंधिआरा॥

''हे जीव! तेरा मनुष्य जन्म निष्फल ही व्यतीत हो रहा है। तू केवल अपना जन्म संवारने में लगा हुआ है पर तुमने नाम सिमरन कर अपना परलोक का

रास्ता संवारा नहीं। जैसे शाम होने से दसों ही दिशाओं में भाव सभी ओर अंधेरा हो जाता है ऐसे ही जब मृत्यु रूपी शाम होती है तो दस इन्द्रियों में अंधकार हो जाता है, उस समय तुझसे प्रभु का नाम नहीं जपा जाएगा।''

कहि रविदास निदानि दिवाने॥
चेतसि नाही दुनीआ फनखाने॥ 3॥ 2॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''बावरे नादान पुरुष! तेरे जीवन का अंत समय आ रहा है, पर तुम्हें यह बात याद नहीं है कि यह संसार नाशवान्‌ है। इस लिए हे भाई उस प्रभु का सिमरन कर जो लोक परलोक में काम आएगा।''

शब्द - 42

ऊचे मंदर साल रसोई॥
एक घरी फुनि रहनु न होई॥ 1॥
इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी॥
जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी॥ 1॥ रहाउ॥
भाई बंध कुटंब सहेरा॥
ओइ भी लागे काढु सवेरा॥ 2॥
घर की नारि उरहि तन लागी॥
उह तउ भूतु भूतु करि भागी॥ 3॥
कहि रविदास सभै जगु लूटिआ॥
हम तउ एक राम कहि छूटिआ॥ 4॥ 3॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज मनुष्य शरीर की नश्वरता का वर्णन करते हुए वैरागमयी उपदेश देते हैं कि,''जीव सांसारिक बंधनों में फंस कर प्रभु को भुलाकर अपना अनमोल जन्म व्यर्थ गंवा रहा है। इस लिए गुरु जी जीव को प्रभु का नाम जपकर सभी बंधनों से मुक्त होने का उपाय बताते हैं।''

ऊचे मंदर साल रसोई॥
एक घरी फुनि रहनु न होई॥ 1॥

''हे जीव! तू इस संसार में रहने के लिए ऊँचे महल और उसमें सुंदर रसोई घर बनाता है पर जब अंत समय आएगा तो एक घड़ी भर भी इन महलों में रहना नहीं मिलेगा।''

इहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी॥

जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी॥ 1॥ रहाउ॥

''हे जीव! तेरा शरीर घास की झोपड़ी की भांति है। जैसे घास की झोपड़ी जल कर मिट्टी में मिल जाती है ऐसे ही शरीर ने भी मरने के बाद मिट्टी में मिल जाना है''

भाई बंध कुटंब सहेरा॥

ओइ भी लागे काढु सवेरा॥ 2॥

''हे जीव! जिन्हें तू अपना समझता है, वह भाई, स्नेही, परिवार के सदस्य और मित्र इत्यादि, जिस समय मृत्यु आयेगी तो यह सब सुबह-सुबह घर से निकालने लगेंगे भाव मृतक शरीर का अन्तिम संस्कार करने की तैयारी करने लग जाते हैं।''

घर की नारि उरहि तन लागी॥

उह तउ भूतु भूतु करि भागी॥ 3॥

''घर की स्त्री जो इसकी छाती के साथ लग कर रहती थी, जिस समय जीव मर जाता है वो भी उसको भूत-भूत कह कर दूर भागती है।''

कहि रविदास सभै जगु लूटिआ॥

हम तउ एक राम कहि छूटिआ॥ 4॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''सारा संसार माया के प्रभाव के कारण लुटा जा रहा है पर मैं तो एक सर्वव्यापक प्रभु का नाम जप कर छूट गया हूँ।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं: -

हम देखत जिनि सभु जगु लूटिआ।

कहु कबीर मैं राम कहि छूटिआ॥ 3॥

''हम देख रहे हैं कि माया ने सारे संसार को लूटा हुआ है। मैं प्रभु का नाम जप कर इस माया के बंधन से छूट गया हूँ। जो जीव संसार में आकर प्रभु का नाम जपता है वो जीव माया के प्रभाव से मुक्त होकर प्रभु में विलीन हो जाता है।'')

* * *

राग सूही चौपदा

शब्द – 43

दुखियारी दुखियारा जग महिं,
मन जप लै राम पियारा रे।। टेक।।
गढ़ कांचा तस्कर तिह लागा,
तूं काहे न जाग अभागा रे॥
नैन उघारि न पेखियो तूने,
मानुष जनम किह लेखा रे॥
पाऊं पसार किमि सोय परयो,
तैं जनम अकारथ खोया रे।
जन रविदास राम नित भेंटहि,
रहि संजम जागित पहरा रे।। 1।।

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को दुखों को दूर करने वाले प्रभु का सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं।

दुखियारी दुखियारा जग मंहि,
मन जप लै राम पियारा रे।। टेक।।

''जीव प्रभु के नाम के बिना सारे संसार में दुखी रहता है इसलिए हे मन तू प्रभु प्यारे का नाम जप ले।''

गढ़ कांचा तस्कर तिह लागा,
तूं काहे न जाग अभागा रे॥

''हे जीव! तेरा शरीर रूपी किला कच्चा है और मृत्यु ने इसे चुरा ले जाना है। हे अभागे पुरुष! तूं अज्ञानता रूपी नींद से जागकर, प्रभु का सिमरन क्यों नहीं करता।''

नैन उघारि न पेखियो तूने,
मानुष जनम किह लेखा रे॥

''हे जीव! तूने कभी आँखे खोलकर नहीं देखा कि मनुष्य जन्म में तुम्हें अपने किए हुए कर्मों का क्या हिसाब देना पड़ेगा?''

पांउ पसार किमि सोय परयो,
तैं जनम अकारथ खोया रे।

"हे जीव! प्रभु को भुलाकर, तुम पांव पसार कर कैसे अज्ञानता रूपी नींद में सो रहे हो और अपने अमूल्य जन्म को व्यर्थ गंवा रहे हो।"

जन रविदास राम नित भेंटहि,
रहि संजम जागित पहरा रे॥ 1॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,"हे जीव! नित्यप्रति प्रभु का सिमरन कर और संयम में रहकर, प्रभु का ज्ञान प्राप्त कर और जाग कर अपने अधिकारों पर पेहरा दे।"

राग बिलावलु

शब्द - 44

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी॥ 1॥
तू जानत मै किछु नही भवखंडन राम॥
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम॥ 1॥ रहाउ॥
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु॥ 2॥
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै॥
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै॥ 3॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज उस समय की प्रचलित मानव विरोधी दशा का वर्णन करते हुए मानवता को उपदेश देते हैं कि,"प्रभु का नाम सिमरन करने वाला चाहे सांसारिक तौर पर ऊंचा या नीचा समझा जाता हो पर प्रभु की शरण प्राप्त करने से उसके सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं।"

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी॥ 1॥

"हे प्रभु जी! जिस समाज में मेरा जन्म हुआ है, उसको मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया है। हमारी ऐसी गरीबी और दयनीय दशा को देख कर सभी हँसते थे। पर प्रभु जी आप जी का नाम जपने के कारण अब अठारह सिद्धियां मेरे हाथ की हथेली पर आ गई है। यह सब आप जी की ही कृपा है।"

तु जानत मै किछु नही भवखंडन राम॥
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम॥ 1॥ रहाउ॥

"हे जन्म मरण के चक्र से मुक्त करने वाले प्रभु जी! आप कण-कण के ज्ञाता हो, पर मैं कुछ भी नहीं जानता। जो जीव आप की शरण लेते हैं उन सब की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं। भाव सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं।"

जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥ 2 ॥

"हे प्रभु जी! जो जीव आप की शरण ग्रहण कर लेता है उसे कोई भी दुःख और कर्मों का भार नहीं रहता। आप की शरण प्राप्त करने से सभी जीव ऊँचे, नीचे, अमीर, गरीब न अगम्य भवसागर से पार हो जाते हैं।"

कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥ 3 ॥ 1 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, "हे प्रभु जी! आप की कथा अकथनीय है, इस लिए बहुत कथाएँ किस लिए करनी हैं। प्रभु जी आप जी जैसे हो वैसे ही रहोगे। यह सांसारिक जीव आप को कौन सी उपमा दे सकते हैं? जो आप हैं केवल आप हैं। आप के सामान कोई दूसरा है ही नहीं।"

शब्द - 45

जिह कुल साधु बैसनो होइ ॥
बरन अबरन रंकु नही ईसुरु
बिमल बासु जानीऐ जगि सोइ ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ ॥
होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ ॥ 1 ॥
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ ॥
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस
होइ रस मगन डारे बिखु खोइ ॥ 2 ॥
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबर अउरु न कोई ॥
जैसे पुरैन पात रहै जल समीप
भनि रविदास जनमे जगि ओइ ॥ 3 ॥ 2 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, "जिस कुल में प्रभु का सिमरन करने वाले सन्त होते हैं। वह कुल इस संसार में सर्वोत्तम मानी

जाती है चाहे वो कुल वर्णों एवं अवर्गों में से हो। प्रभु के भक्त की समानता महाविद्वान पण्डित, सारे संसार पर विजय प्राप्त करने वाला शूरवीर, सारे संसार पर राज्य करने वाला छत्रपति राजा एवं और कोई भी नहीं कर सकता।''

जिह कुल साधु बैसनो होइ॥

बरन अबरन रंकु नही ईसुरु बिमल बासु जानीए जगि सोइ॥ 1॥ रहाउ॥

''जिस कुल में प्रभु का नाम सिमरन करने वाले संत महापुरुष जन्म लेते हैं चाहे वह वर्गों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और चाहे वर्णों के बाहर हों। चाहे वह गरीब हो चाहे अमीर हो वह कंगाल नहीं है बल्कि वह प्रभु का स्वरूप है और उसकी पवित्र महिमा सारे संसार में जानी जाती है।''

(सत्‌गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-

कबीर सोई कुल भली जा कुल हरि को दासु॥

वही कुल भली है जिस कुल में हरि का दास पैदा होता है।)

ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ॥

होइ पुनीत भगवंत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ॥ 1॥

''चाहे कोई जीव ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र, क्षत्रिय, डोम (मरासी), चांडाल और मलेच्छ किसी भी मन वाला हो पर वह प्रभु का भजन कर पुनीत हो जाता है। वह आप भी पार होता है और अपनी दोनों कुलों ननिहाल-दादके और अनंत जीवों को भी नाम जपा कर पार कर देता है।''

धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ॥

''धन्य वह गाँव है, धन्य वह स्थान है और धन्य ही वह पुनीत परिवार है जिस में संत जन्म लेते हैं।''

जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होइ रस मगन डारे बिखु खोइ॥ 2॥

''जो जीव प्रभु के उत्तम नाम रूप रस को पीते हैं वह और झूठे सांसारिक रसों का त्याग कर देते हैं। वह प्रभु के नाम रूपी रस में मग्न होकर संसार के मीठे (विषरूप) रसों का त्याग कर देते हैं।''

पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबर अउरु न कोइ॥

''संसार में सब से महान् विद्वान् पण्डित, सब से बड़ा शूरवीर, चक्रवर्ती बादशाह एवं और कोई भी प्रभु की भक्ति करने वाले की समानता नहीं कर सकता।''

जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ॥ 3॥ 2॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते करते हैं कि,"जैसे पुरैण बूटी जल के पास रह कर भी जल से निरलेप रहती है, इसी तरह संत संसार में रहते हुए भी संसार से निरलेप रहते है।"

शब्द - 46

का तूँ सोवै जागि दिवाना। झूठा जीवन सांचि करि जाना॥ टेक॥
जो दिन आवै सो दुख मे जाही। कीजै कूच रहियो सच नाही॥
संगि चलियो है हम भी चलना। दूर गवन सिर ऊपर मरना॥ 1॥
जो कछु बोया लुनिये सोई। ता में फेर फार नहीं होई॥
छाड़िय कूर भजो हरि चरना। ता को मिटै जनम अरु मरना॥ 2॥
जिनि जीऊ दिया सो रिजक अमड़ावै। घट घट भीतर रहट चलावै॥
करि बंदगी छाड़ि मैं मेरा। हिरदै करीम संभरि सबेरा॥ 3॥
आगे पंथ खरा है झीना। खाँडै धार जैसा है पैना॥
जिस ऊपर मारग है तेरा। पंथी पंथ संवार सवेरा॥ 4॥
क्या तैं खरचा क्या तैं खाया। चल दरहाल दिवान बुलाया॥
साहिब तो पै लेखा लेसी। भीरि परिया तूँ भरि भरि देसी॥ 5॥
जनम सिराना किया पसारा संवारा। सांझ परी चहुँ दिसि अंधियारा॥
कहि रविदास निदानि दिवाना। अजहुँ न चेतै दुनी फंदखाना॥ 6॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज संसार की अस्थिरता का वर्णन करते हुए जीव को अज्ञानता रूपी नींद से जगा कर प्रभु का नाम जप कर अपना पंथ संवारने का पावन वैरागमयी उपदेश देते हैं।

का तूँ सोवै जागि दिवाना। झूठा जीवन सांचि करि जाना।। टेक॥

"हे जीव! तुम इस संसार में अज्ञानता रूपी नींद में क्यों सोये हुए हो? तुम इस झूठे जीवन को ही सत्य समझ रहे हो। वास्तव में यह संसार नश्वर है, अतः हे भाई! अज्ञानता रूपी नींद से जागकर, प्रभु का स्मरण करो।"

जो दिन आवै सो दुख मे जाही। कीजै कूच रहियो सच नाही॥
संगि चलियो है हम भी चलना। दूर गवन सिर ऊपर मरना॥ 1॥

"जो दिन चढ़ता है, वह दुख में व्यतीत हो जाता है। इसी प्रकार जीव की आयु घटती जाती है। सभी ने संसार को छोड़कर चले जाना है। संसार में स्थिर रहने

वाला कोई भी जीव नहीं है। जीव के संगी साथी साथ छोड़ कर संसार से जा रहे हैं। हमें भी एक दिन संसार त्याग कर चले जाना है। जिस मृत्यु का आना जीव दूर समझता है, वह मृत्यु इन्सान के सिर पर खड़ी है।''

जो कछु बोया लुनिये सोई। ता में फेर फार नहीं होई॥
छाड़िय कूर भजो हरि चरना। ता को मिटै जनम अरु मरना॥ 2॥

''हे भाई! जो कुछ तुमने बोया है, तुम वही काटोगे अर्थात तुम जैसे कर्म करोगे, वैसा ही परिणाम भुगतोगे। इनमें कोई कमी-वृद्धि नहीं होगी। हे भाई, कूड (झूठ) को छोड़कर, प्रभु के चरणों के साथ जुड़, जिसके साथ तेरा जन्म मरण मिट जाए।''

जिनि जीऊ दिया सो रिजक अमड़ावै। घट घट भीतर रहट चलावै॥
करि बंदगी छाड़ि मैं मेरा। हिरदै करीम संभरि सबेरा॥ 3॥

''जिस प्रभु ने जीवन प्रदान किया है, वही सब को रिज़क पहुँचाता है। प्रभु सभी शरीरों में सारी इन्द्रियों को चला रहा है। हे इन्सान तू मैं-मेरी के अहंकार को छोड़कर प्रभु की बंदगी कर और प्रातः काल उठकर अपने हृदय में सब पर रहम करने वाले प्रभु के गुणों की संभाल कर भाव प्रभु के नाम का सिमरन कर।''

आगे पंथ खरा है झीना। खाँडै धार जैसा है पैना॥
जिस ऊपर मारग है तेरा । पंथी पंथ संवार सवेरा॥ 4॥

''मृत्यु के पश्चात् आगे परलोक का मार्ग तलवार की धार जैसा बारीक है, जिसके ऊपर से गुज़र कर जाना है। अतः हे नाशवान जीव! तुम प्रातः काल के समय प्रभु का सिमरन करके, अपना पंथ संवार अर्थात् परलोक का मार्ग संवार लो।''

क्या तैं खरचा क्या तैं खाया। चल दरहाल दिवान बुलाया॥
साहिब तो पै लेखा लेसी।भीरि परिया तूँ भरि भरि देसी॥ 5॥

''हे भाई! इस संसार में आकर तुमने क्या खर्च किया और क्या खाया। धर्मराज दरबार को बुलाकर तुमसे यह पूछेगा। उस समय साहिब तुमसे हिसाब मांगेगा। एक समय प्रभु के नाम के बिना, तुम पर बुरे कर्म हावी हो जाएंगे तथा तुम्हें हिसाब देना पड़ेगा।''

जनम सिराना किया पसारा संवारा । सांझ परी चहुँ दिसि अंधियारा॥
कहि रविदास निदानि दिवाना। अजहुँ न चेतै दुनी फंदखाना॥ 6॥

"हे जीव! तेरा मनुष्य जन्म निष्फल ही व्यतीत होता जा रहा है। तू केवल संसार पासारे में लग कर अपने जन्म को संवार रहा है। इस लिए तुमने नाम जपकर अपना परलोक मार्ग नहीं संवारा। जैसे शाम ढलने पर, चारों दिशाओं में अर्थात् हर ओर अंधेरा ही अंधेरा पसर जाता है। इसी प्रकार जब मृत्यु रूपी शाम ढलती है, तो चारो तरफ प्रभु के नाम बिना अंधकार हो जाता है, इस समय तुमसे प्रभु के नाम का सिमरन नहीं किया जा सकेगा।" सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,"हे नासमझ पुरुष! अभी तक भी तुम्हें याद नहीं कि यह दुनिया नश्वर है। इसलिए हे भाई, उस प्रभु का सिमरन कर, जो लोक-परलोक में तुम्हारा सहायक होगा।"

शब्द - 47

खालिक सिकस्ता मै तेरा।
दे दीदार उमेदगार बेकरार जीऊ मेरा॥ टेक॥
अवलि आखिर इलह आदिम मौज फरिस्ता बन्दा।
जिस की पनह पीर पैगम्बर मैं गरीब क्या गंदा ॥ 1॥
तूं हाजरा हजूर जोग इक अवर नहीं दूजा।
जिसके इसक आसरा नाहीं क्या निवाज क्या पूजा॥ 2॥
नालीदोज़ हनोज बेबखत कमि खिजमतिगार तुम्हारा।
दरमाँदा दर ज्वाब न पावै कहि रविदास बिचारा॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि,"प्रभु को भूला हुआ जीव, जितनी चाहे पूजा अर्चना करता रहे, परन्तु प्रभु की शरण प्राप्त किये बिना, उसका जीवन सफल नहीं हो सकता।"

खालिक सिकस्ता मै तेरा।
दे दीदार उमेदगार बेकरार जीऊ मेरा। टेक॥

"हे प्रभु जी! मैं तेरा हूँ, परन्तु तेरे दर्शन न होने के कारण मैं अपने आप को आप से भिन्न अनुभव करता हूँ। हे प्रभु जी! आप मुझे दर्शन दो। मेरा हृदय आप जी के दर्शनों की उम्मीद के लिए व्याकुल हो उठा है।"

अवलि आखिर इलह आदिम मौज फरिस्ता बन्दा।
जिस की पनह पीर पैगम्बर मैं गरीब क्या गंदा॥ 1॥

"प्रभु जी! आदि से लेकर अंत तक, आप ही संसार के कण-कण में समाए हुए हो। हे खुदा सृष्टि के पहले इलम आप जी हो जिस ज्ञान को जान के इन्सान और फरिश्ते अन्नंदत हो जाते हैं। प्रभु जी! आप का नाम सिमरन करने वाला ही, श्रेष्ठ मनुष्य है। हे प्रभु जी! आप की शरण, तो पीर पैगम्बरों ने भी ली है, तो मैं गरीब आप जी की शरण कैसे नहीं, ले सकता?"

तूं हाजरा हजूर जोग इक अवर नहीं दूजा।
जिसके इसक आसरा नाहीं क्या निवाज क्या पूजा ॥ 2 ॥

"प्रभु जी आप सारे संसार में हाजर-नाजर और व्याप्त हो। आप के समान अन्य कोई दूसरा नहीं है। प्रभु जी जिस जीव ने आपके प्रेम को अपना आश्रय नहीं बनाया चाहे वह नमाज़ गुज़ार ले, चाहे पूजा कर ले यह सब करना निष्फल है।"

नालीदोज़ हनोज बेबखत कमि खिजमतिगार तुम्हारा।
दरमाँदा दर ज्वाब न पावै कहि रविदास बिचारा ॥ 3 ॥

"प्रभु जी, आप से अनभिज्ञ होने के कारण, जीव अब तक नाली में पड़े कीड़े की तरह दुख भोग रहा है, बताओ वह आपका सेवक कैसे बन सकता है? सत्गुरु रविदास जी महाराज विनती करते हैं कि हे प्रभु! आप के दरवाजे पर आपका दर्शन रूपी उत्तर न पाकर यह दीन जीव दुखी रहता है। कृपा कर आप दर्शन दो जी।"

शब्द - 48

जो मोहि बेदनि कासनि आखूँ
हरि बिन जीवन कैसे करि राखूँ।। टेक ॥
जिव तरसै इक दंग बसेरा, करहु सँभाल तुम सिरजन मेरा ॥
बिरह तपै तन अधिक जरावै, नींद न आवै भोजन न भावै ॥ 1 ॥
सखी सहेली गरब गहेली, पिउ की बात न सुनहु सहेली ॥
मैं रे दुहागनि अधिकरि जानी, गयो सो जोबन साध न मानी ॥ 2 ॥
तूँ दाना सांईं साहिब मेरा, खिदमतगार बंदा मैं तेरा ॥
कहै रविदास अंदेसा येही, बिन दरसन क्यों जीवहि सनेही ॥ 3 ॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज प्रभु प्रेम की अवस्था

का वर्णन करते हैं कि,''हरि जी, आप जी का सेवक आप के दर्शन के बिना जीवित नहीं रह सकता, वह तो केवल आप जी के दर्शन की आशा में ही जी रहा है।''

जो मोहि बेदनि कासनि आखूँ
हरि बिन जीवन कैसे करि राखूँ।। टेक।।

''हे भाई! मेरे मन में हरि के वियोग की इतनी पीड़ा है कि मैं ब्यान नहीं कर सकता। हरि के बिना मैं अपना जीवन कैसे जीऊँ?''

जिव तरसै इक दंग बसेरा, करहु सँभाल तुम सिरजन मेरा।।
बिरह तपै तन अधिक जरावै, नींद न आवै भोजन न भावै।। 1।।

''हे हरि जी! आप के छिन भर दर्शन के लिए मेरा जीवन तरस रहा है, आप कृपा दर्शन देकर मेरी संभाल करो। हरि जी, आप के वियोग की पीड़ा में मेरा शरीर बहुत जला जा रहा है भाव आप के दर्शनों के वियोग में, मन और तन बहुत तड़प रहा है, जिस कारण मुझे नींद नहीं आती और भोजन भी अच्छा नहीं लगता।''

सखी सहेली गरब गहेली पिउ की बात न सुनहु सहेली।।
मैं रे दुहागनि अधिकरि जानी गयो सो जोबन साध न मानी।। 2।।

''हे सखी, सहेली जीव रूपी स्त्री! जितना समय तुझ में अहंकार है, उतनी देर तुम पति रूपी हरि की, बात भी नहीं सुनती। मैं उन जीव रूपी स्त्रियों को दुहागिन मानता हूँ, जो अपने पति रूपी हरि को भुला देती हैं और जीवन की यौवनावस्था, पति प्रभु के बिना व्यतीत कर रही हैं। वे जीवन में संत महापुरुषों की शिक्षा पर नहीं चलतीं।''

तूँ दाना सांई साहिब मेरा खिदमतगार बंदा मैं तेरा।।
कहै रविदास अंदेसा येही बिन दरसन क्यों जीवहि सनेही।। 3।।

''हे प्रभु जी! सब के भीतर की बात को समझने वाले, आप मेरे स्वामी हो और मैं आप की सेवा और सिमरन करने वाला, आप का दास हूँ।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''प्रभु जी मेरे मन में यह डर है कि आप जी का सेवक आप के दर्शनों के बिना कैसे जी सकता है? भाव दर्शनों के बिना नहीं जी सकता।''

शब्द – 49

ता थैं पतित नही कौ पावन, हरि तज आन न ध्याया रे।।
हम अपूजि पूजि भये हरि थै, नाम अनूपम गाया रे।। टेक।।
अस्टादस बुयाकरन बखानै रे, तीन काल खट जीता रे।।
प्रेम भगति अंतर गति नाहीं, ता ते धानुक नीका रे।। 1।।
ता थै भलो स्वान को सत्रु, हरि चरनन चित लाया रे॥
मूआं मुकति बैकुंठ बासा, जीवत इहां जस पाया रे।। 2।।
हम अपराधी नीच घर जनमे, कुटम्ब लोक करै हाँसी रे।।
कहै रविदास राम जपु रसना, काटै जनम की पासी रे।। 3।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि,''प्रभु का नाम पापियों को पावन करने वाला है और जिस का सिमरन करके, इन्सान संसार में पूजनीय बन जाता है। प्रभु के चरण कवलों के साथ प्रीति लगाकर, जीव जीवन काल में ही मुक्त हो जाता है।''

ता थैं पतित नही कौ पावन, हरि तज आन न ध्याया रे।।
हम अपूजि पूजि भये हरि थै, नाम अनूपम गाया रे।। टेक॥

''उस प्रभु से बड़ा पतित पावन अर्थात् पापियों को पावन करने वाला, अन्य कोई नहीं है, इसलिए प्रभु के बिना, अन्य किसी का स्मरण क्यों करें। हे भाई! उस संसार में पूजनीय नहीं थे, परन्तु प्रभु का सिमरन कर हम पूजनीय हो गए। अत: भाई! उस अनुपम प्रभु के नाम का गुण–गान करो।''

अस्टादस बुयाकरन बखानै रे, तीन काल खट जीता रे।।
प्रेम भगति अंतर गति नाहीं, ता ते धानुक नीका रे।। 1।।

अठारह व्याकरण बताते हैं कि,''प्रभु सिमरन करने वाला जीव तीनों कालों व छह कर्मों से ऊपर उठ जाता है। जिस जीव के हृदय में, प्रभु की प्रेम भक्ति नहीं है, उसे नीच समझा जाता है।''

ता थै भलो स्वान को सत्रु, हरि चरनन चित लाया रे।।
मूआं मुकति बैकुंठ बासा, जीवत इहां जस पाया रे॥ 2॥

''उसकी अपेक्षा वह जीव श्रेष्ठ है, जो लोभ रूपी कुत्ते पर विजय प्राप्त कर प्रभु के चरणों के साथ अपना मन जोड़ता है। जीव जीवित भाव को मारकर इस जीवन में ही बैकुंठ का निवासी बन जाता है, उसकी महिमा प्रत्येक ओर होती है।''

हम अपराधी नीच घर जनमे, कुटम्ब लोक करै हाँसी रे।।
कहै रविदास राम जपु रसना, काटै जनम की पासी रे।। 3।।

''चाहे अज्ञानी लोग भ्रम वश हमें अपराधी, निम्न घर में और कुटुम्ब में जन्म लेने वाले समझते हैं और हमारी तरफ देखकर मज़ाक उड़ाते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''हे जीव! सभी प्रकार के भेदभाव से मुक्त होकर, रमना से प्रभु का सिमरन करो, जिससे जन्म-मरण का आवागमन समाप्त हो जाता है।''

शब्द - 50

ऐसा ही हरि क्यूं पइवो, मन चंचलु रे भाई।
चपल भयो चहुंदिस धावइ, राख्यो रहाई।। टेक।।
मैं मेरी छूटइ नहिं कबहूं, मैं मंमता मदु बीध्यो।
लोभ मोह महि रहयो रूझानौ, नित विषया रस रीझयो।।॥ 1॥
डंम कोह मोह माया बसु, कपट कूड़ हूं बंधायौ।।
काम लुबधु को बसि परयौ, कुलकांनि छाँड बिकायो।। 2।।
छापा तिलक छपौ नहीं सोभइ, जौ लौं केसौ नहिं गायो।।
संजमि रह्यो न हरि हूँ सिमरियो, बिरथा भरमयो रू भरमायो।। 3।।
अनिक कौतक कला काछै कछे, बहुरि सांग दिखावौ ।।
मूरिख आपन आपु समुझि नहिं, औरनि का समुझावौ।। 4।।
आस करै वैकुण्ठ गवन कउ, चल मन कभउ न थिरायौ।।
जौ लौं मन वसि नहिं हूंतौ, तौं लगि सभु जूठारियो।। 5।।
कपट कीया रीझय नहिं कैसौ, जगु करता नहिं कांचा
कहि रविदास भजौ हरि माधौ, सेवग होवै मन सांचा।। 6।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को अहंकार को त्यागकर प्रभु का सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं।

ऐसा ही हरि क्यूं पइवो, मन चंचलु रे भाई।
चपल भयो चहुंदिस धावइ, राख्यो रहाई।। टेक।।

''हे भाई! जब तक तुम्हारा मन चंचल है, तब तक तुम्हें प्रभु की प्राप्ति कैसे हो सकती है? प्रभु के बिना कोई भी तुम्हारी रक्षा नहीं करेगा, चाहे तुम चारों ओर घूम लो।''

मैं मेरी छूटइ नहिं कबहूं, मैं मंमता मदु बीध्यो।
लोभ मोह महि रहयो रूझानौ, नित विषया रस रीझयो।।। 1।।

''तेरे मन में से 'मेरी' का अहंकार कभी नहीं मिटता और ममता व अहंकार में मन बंधा हुआ है। लोभ और मोह में जीव का मन उलझा हुआ है, वह हर समय विषयों में लिप्त रहता है।''

डंम कोह मोह माया बसु, कपट कूड़ हूं बंधायौ।।
काम लुबधु को बसि परयौ, कुलकांनि छंड़ि बिकायो।। 2।।

''आडंबर के कारण जीव माया में ग्रसित है और उसने कूड-कपट की ओर अपने ध्यान को बढ़ाया हुआ है। वह काम रूपी शिकारी के वश में आकर अपनी कुल की मर्यादा छोड़कर बिक चुका है।''

छापा तिलक छपौ नहीं सोभइ, जौ लौं केसौ नहिं गायो।।
संजमि रह्यो न हरि हूँ सिमरियो, बिरथा भरमयो रू भरमायो।। 3।।

''प्रभु के गुणगान के बगैर बाह्य श्रंगार व तिलक आदि शोभा नहीं देते। जीव ने संयम न रखकर प्रभु का सिमरन नहीं किया और अपना अमूल्य जन्म निरर्थक भ्रमों में फंसकर गंवा रहा है।''

अनिक कौतक कला काछै कछे, बहुरि सांग दिखावौ।।
मूरिख आपन आपु समुझि नहिं, औरनि का समुझावौ।। 4।।

''जीव विभिन्न प्रकार के कला-कौतुक करते हुए पाखंड रूपी स्वांग रचता है। वह मूर्ख मन स्वयं को तो समझ नहीं सका और दूसरों को समझाता है।''

आस करै वैकुण्ठ गवन कउ, चल मन कभउ न थिरायौ।।
जौ लौं मन वसि नहिं हूंतौ, तौं लगि सभु जूठारियो।। 5।।

''यह जीव आशा तो बैकुंठ धाम जाने की करता है परन्तु इसका मन कभी भी स्थिर नहीं होता। जब तक जीव का मन उसके वश में नहीं होता तब तक सब कुछ झूठ है।''

कपट कीया रीझय नहिं कैसौ, जगु करता नहिं कांचा।।
कहि रविदास भजौ हरि माधौ, सेवग होवै मन सांचा।। 6।।

''कपट करने से प्रभु प्रसन्न नहीं होता, वह प्रभु अनजान नहीं है। संसार का कर्ता घट-घट का ज्ञानी है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''प्रभु को प्रसन्न करने के लिए उसका भजन करने से सेवक जीव का मन सत्य और स्थिर हो जाता है।''

शब्द - 51

का गाऊं कछु गायि न होयि, गाऊ रूप सहजै सोयि॥ टेक।।
नहिं अकास नहिं धर धरणी, पवन पुर घट चंदा।
नहिं अब राम कृस्न गुण भाई, बोलत है सुछ छंदा।। 1।।
नहिं अब बेद कतेब पुराननि, सुनि सहिज रे भाई।।
नहिं अब मैं तैं, तैं मैं नांही, का सिउं कहो बताई।। 2।।
भणै रविदास का कहि गाऊं, गायिन गायि हराणा ।।
समुझि बिचारि बोलि कहां घौं, आपहि आप समाणा।। 3।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को आडंम्बर मुक्त होकर एकाग्रचित होकर प्रभु का यशगान करने का पावन उपदेश देते हैं।

का गाऊं कछु गायि न होयि, गाऊं रूप सहजै सोयि।। टेक।।

''हे प्रभु जी मैं आप में लीन हो गया हूं, अब मैं प्रभु के गुण क्या गाऊँ? उसके गुणों को गाया नहीं जा सकता। सच्चे मन से उसके गुण गाने वाले सहजावस्था में पहुँच जाते हैं।''

नहिं अकास नहिं धर धरणी, पवन पुर घट चंदा ।
नहिं अब राम कृस्न गुण भाई, बोलत है सुछ छंदा।। 1।।

''वह प्रभु न केवल आकाश है, न केवल धरती है न केवल वायु है न पानी है और न ही केवल चन्द्रमा है। वह प्रभु तो सर्व-व्याप्त है। मैं न ही कृष्ण और राम के गुण गाता हूँ, यह बात मैं सत्य कहता हूँ।''

नहिं अब बेद कतेब पुराननि, सुनि सहिज रे भाई।।
नहिं अब मैं तैं, तैं मैं नांही, का सिउं कहो बताई।। 2।।

''हे भाई! मुझे अब वेद, कतेब व पुराणों को पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। क्योंकि मुझे सच्चा आनन्द प्रभु की सुन्न सहजावस्था में पहुँचकर प्राप्त हुआ है। अब मेरा तेरा और तेरा मेरा का भेद समाप्त हो गया है। यह बात मैं किसे बताऊँ?''

भणै रविदास का कहि गाऊं, गायिन गायि हराणा।।
समुझि बिचारि बोलि कहां घौं, आपहि आप समाणा॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''मैं अब प्रभु के गुण क्या गाऊँ? प्रभु के गुण अनंत हैं। यह जीव उन्हें गाता-गाता हार जाता है। यह जीव प्रभु की महिमा समझ कर उस पर विचार कर क्या बोल सकता है? सच्चे मन से

प्रभु के गुण विचार कर क्या बोल सकता है? सच्चे मन से प्रभु के गुण गाकर ये उसमें विलीन हो जाता है।''

शब्द – 52

अब का कहि कौन बताऊं।
अब का कहि देबलि देव समाऊं।। टेक॥
का सिऊं राम कहौं सुनि भाई, का सिऊं कृस्न करीमां।
का सिऊं बेद कतेब कहूँ अब, का सिऊं कहूँ लयो लीना।
का सिऊं तप तीरथ बरत पूजा, का सिऊं नाउं कहाऊं।। 1।।
का सिऊं भिस्ति दोजिगु ना सति करि, का सिऊं कहूं कहाई॥ 2॥
का सिऊं जीव सीव कहौं साधौ, सुंनि सहजि घरि भाई।
का सिऊं गुणी न गुण कहूँ माधौ, का सिऊं कहूँ बताई।। 3।।
जल के तरंग जल मांहि समाई, कहि का कौ नांव धरयीये।
ऐसे एक रूप मैं माधो, आपण ही निरवरिये।। 4॥
भणै रविदास अब का कहि गाऊं, जउ कोई औरहि होई।
जा सिऊं गायिये गायि कहत हैं, परम रूप हम सोई।। 5।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को पावन उपदेश देते हैं कि प्रभु सर्वव्यापक है उसका सिमरन करने से द्वेष भाव समाप्त हो जाता हैं।

अब का कहि कौन बताऊं।
अब का कहि देबलि देव समाऊं।। टेक।।

''हे प्रभु जी मैं आप का सिमरन कर आप में समा गया हूं, अब मैं प्रभु को क्या कहकर आप जी की उस्तत बताना? आप जी की महिमा अपरमपार है। प्रभु को छोड़कर मैं अन्य किस मंदिर के देवी-देवता में विलीन हो जाऊँ?''

का सिऊं राम कहौं सुनि भाई, का सिऊं कृस्न करीमां।
का सिऊं बेद कतेब कहूँ अब, का सिऊं कहूँ लयो लीना।

''हे भाई! मैं सर्व-व्याप्त प्रभु के बिना किसे राम कहूँ, किसे कृष्ण-करीम कहूँ? अब मैं प्रभु का सिमरन छोड़कर, अन्य कौन से वेद-कतेब पढ़ूँ और किस में विलीन हो जाऊँ?''

का सिऊं तप तीरथ बरत पूजा, का सिऊं नाउं कहाऊं।। 1।।
का सिऊं भिस्ति दोजिगु ना सति करि, का सिऊं कहूं कहाई।। 2।।

"प्रभु को छोड़कर मैं क्या तप करूँ, क्या तीर्थ-स्नान करूँ, क्या व्रत व पूजा करूँ? और किस नाम से पुकारूँ? प्रभु का सिमरन करने के कारण मैने स्वर्ग और नरक को सत्य नहीं समझा और किसी के कहने पर मैं कुछ नहीं कहता।"

का सिऊं जीव सीव कहौं साधौ, सुंनि सहजि घरि भाई।
का सिऊं गुणी न गुण कहूँ माधौ, का सिऊं कहूँ बताई।। 3।।

"हे साधो! प्रभु के अतिरिक्त मैं किस जीव को कल्याणकारी कहूँ? हे भाई, उसकी प्राप्ति तो सहज शून्य अवस्था में पहुँचकर होती है। हे प्रभु जी, आपके बिना मैं किसे गुणीजन कहूँ। आपकी उपमा मैं किस प्रकार करूं?"

जल के तरंग जल मांहि समाई, कहि का कौ नांव धरयीये।
ऐसे एक रूप मैं माधो, आपण ही निरवरिये। 4।।

"तरंग पानी से उत्पन्न होती है और पानी में ही विलीन हो जाती है, इसी प्रकार जीव प्रभु से उत्पन्न हुआ है और प्रभु में ही विलीन हो जाता है। फिर इसे कौन सा नाम दिया जाए? प्रभु जी, आप जी का सिमरन कर, जीव आप जी का ही, रूप हो जाता है। आप स्वयं ही कृपा करने वाले जीवों के भ्रम दूर करने हो।"

भणै रविदास अब का कहि गाऊं, जउ कोई औरहि होई।
जा सिऊं गायिये गायि कहत हैं, परम रूप हम सोई।। 5।।

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,"अब मैं किस का गुणगान करूँ? क्योंकि प्रभु के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं है। अब मैं किसे उसका गुणगान करने के लिए कहूँ क्योंकि मैं प्रभु का सिमरन कर उसका ही रूप हो गया हूँ।"

शब्द - 53

खोजत किथूं फिरै तेरे घट महि सिरजनहार॥ टेक॥
कस्तूरी मृग पास है रे, ढूंढ़त घास फिरै।
पाछै लागो काल पारधी छिन महिं प्रान हरै॥ 1॥
इड़ा पिंगला सुखमना नाड़ी, जा मैं चित न धरै।
सहसतार महिं भंवर गुफा है, भंवरा गूंज करै॥ 2॥
दिल दरियाव हीरा लाल है गुरमुख समझ परै।
मरजी वा की सैन विचारै तउ हीरा हाथ परै॥ 3॥

कहि रविदास समुझि रे सन्तो, एहु पद है निरवान।
एह रहसि कोउ खोजै बूझे, सोउ है सन्त सुजान॥ 4॥

इस पावन शब्द द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को त्रिकुटी में ध्यान-लगाकर, अपने भीतर विद्यमान् प्रभु की खोज कर, निर्वाण पद प्राप्त करने का पावन उपदेश देते हैं।

खोजत किथूं फिरै तेरे घट महि सिरजनहार।। टेक॥

''हे जीव! तू प्रभु को बाहर कहाँ खोज रहा है? प्रभु सृजनहार तो तुम्हारे भीतर है।''

कस्तूरी मृग पास है रे, ढूंढ़त घास फिरै।
पाछै लागो काल पारधी छिन महिं प्रान हरै॥ 1॥

''हिरन की नाभि में कस्तूरी होती है और वह बाहर घास पर उसे ढूँढता फिरता है। इस तरह ही प्रभु तुम्हारे अंदर है परन्तु तुम अज्ञानता के कारण उस प्रभु को बाहर ढूंढ रहे हो। परन्तु काल रूपी शिकारी तुम्हारे पीछे लगा हुआ है और अन्त समय आने पर वह एक पल में ही तुम्हारे प्राण छीन लेगा।''

इड़ा पिंगला सुखमना नाड़ी, जा मैं चित न धरै।
सहसतार महिं भंवर गुफा है, भंवरा गूंज करै॥ 2॥

''हे जीव! तू इड़ा, पिंगला, सुष्मना जहाँ यह तीनों नाड़ियां इक्ट्ठी होती हैं, त्रिकुटी में ध्यान लगा कर प्रभु को अपने मन में याद नहीं करता। सहस्त्र दल कमल में मानो हजारों पत्तियों वाला कमल फूल खिला है, भँवर गुफा रुपी चौथी रुहानी मंज़िल हैं, जहाँ प्रभु का नाम अनहद नाद रूपी धुन निरंतर गूंज रही है।''

दिल दरियाव हीरा लाल है, गुरमुख समझ परै।
मरजी वा की सैन विचारै, तउ हीरा हाथ परै॥ 3॥

''इस भँवर गुफा में ही तेरा दिल समुद्र की भांति विशाल है, जहाँ प्रभु का नाम रुपी अमूल्य लाल हीरा पड़ा है। पर इस बात की समझ गुरमुख को ही आती है, जो गुरु के सच्चे उपदेश रूपी इशारे पर चलता है और प्रभु के नाम की विचार करता है। वही प्रभु के नाम रूपी हीरे को प्राप्त कर लेता है।''

कहि रविदास समुझि रे सन्तो, एहु पद है निरवान।
एहु रहसि कोउ खोजै बूझे सोउ है सन्त सुजान॥ 4॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज संबोधन करते हैं,''हे सन्त जनों! इस प्रकार प्रभु की भक्ति ही निर्वाण पद है। जो जीव अपने भीतर, विराजमान प्रभु के, भेद को, खोज कर, जान लेता है, वही श्रेष्ठ संत है।''

शब्द – 54

संतो कुल पखी भगति ह्वैसी कलियुग मे ॥ निपख बिरला निवहैसी ॥
जाणि पिछाणि हरिष मन हुलसे ॥
बिन पिछाणि मिलत मुरझासी ॥ टेक ॥
अपसवारथ परमाधि दधयादे ॥ परमारथ न दिड़ासी ॥
बिन बिसवास बांझ सुति जइसै ॥ हरि कारनि क्यों रासी ॥ 1 ॥
भाव भगति हिरदै नहिं आसी ॥ विषै लागी सुख पासी ॥
कहि रविदास पूरा गुर पावै ॥सवांग की सवांग दुखासी ॥ 2 ॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज जीवों को आडम्बरों से भरी, बाहरी दिखावे की पक्षपाती भक्ति त्याग कर, प्रभु की सच्ची प्रेमा–भक्ति, जो कि पूर्ण गुरु के मिलाप से पैदा होती है, करने का पावन उपदेश देते हैं।

संतो कुल पखी भगति ह्वैसी कलियुग मे ॥ निपख बिरला निवहैसी ॥

''हे संत महापुरुषों ! कल्युग में जीव अपने स्वार्थ के लिए, बाहरी भक्ति करने का दिखावा करते है, पर प्रभु की सच्ची भक्ति कोई विरला जीव ही कर सकता है।''

जाणि पिछाणि हरिष मन हुलसे ॥
बिन पिछाणि मिलत मुरझासी । टेक ॥

''सच्ची भक्ति करने से जीव का मन प्रभु का ज्ञान प्राप्त कर, आनन्द रूपी सुख में रहता है। प्रभु को न जानने के कारण, यह जीव दुखी होता है और ईर्ष्यावश मुरझा जाता है।''

अपसवारथ परमाधि दधयादे ॥ परमारथ न दिड़ासी ॥

''जो जीव अपने स्वार्थ के लिए आडम्बरों से भरी भक्ति करता है, वह दुखी रहता है और उसे प्रभु के नाम की प्राप्ति नहीं होती।''

बिन बिसवास बांझ सुति जइसै ॥ हरि कारनि क्यों रासी ॥ 1 ॥

''जैसे बांझ स्त्री को संतान होने का विश्वास नहीं हो सकता, ऐसे ही प्रभु के नाम सिमरन के बिना, जीव को संसार रूपी भवसागर से पार होने का, विश्वास नहीं हो सकता।''

भाव भगति हिरदै नहिं आसी ॥ विषै लागी सुख पासी ॥

''प्रभु को भूले हुए जीव के हृदय में प्रभु के प्रेम भक्ति की इच्छा पैदा नहीं होती क्योंकि वह जीव संसार के झूठे विकारों में ही सुख समझता है।''

कहि रविदास पूरा गुर पावै।।सवांग की सवांग दुखासी।। 2 ।।

सत्गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''जीव को पूर्ण गुरू की शरण में जाना चाहिए। अन्यथा तो यह जीव आडम्बरों रूपी पक्षपाती भक्ति करने से दुःखी होता है। भाव पूर्ण गुरू की कृपा से बाहरी दुख रूपी भक्ति समाप्त हो जाती है और जीव प्रभु की सच्ची भक्ति से जुड़ जाता है।''

शब्द - 55

पांडे! हरि विच अंतर डाढा।।
मुंड मुंडावै सेवा पूजा भ्रम का बंधन गाढ़ा।। टेक।।
माला तिलक मनोहर बानों लागो जम की पासी।।
जो हरि सेती जोड़यो चाहो तो जग सो रहो उदासी।। 1 ।।
भुख न भाजै तृस्ना न जाई कहो कौण कवन गुण होई।।
जो दधि में कांजी को जावण तो घ्रित न काडै कोई।। 2 ।।
करनी कथनी ज्ञान अचारा भगति इन्हुँ सो नयारी।।
दोय घोड़ा चढ़ि कोऊ न पहुँचौ सतिगुरु कहै पुकारी।। 3 ।।
जो दासा तण कीयो चाहो आस भगति की होई।।
तो निरमल सांग मगन हवै नाचो लाज सरम सब खोई।। 4 ।।
कोई दाधौ कई सीधो साचौ कूड़ निति मारया।।
कहै रविदास हौ न कहत हौ योकादसत पुकारिया।। 5 ।।

जगत्गुरु रविदास जी महाराज आडम्बरों में फंसे हुए जीवों को, पावन उपदेश देते हैं कि,''प्रभु भक्ति के बिना जीव भ्रम में फँसा रहता है। प्रभु के नाम में लीन होकर, जीव संसार में रहते हुए भी, संसार से उपराम रहता है। सच्ची भक्ति के पैदा होने से भ्रम का नाश हो जाता है।''

पांडे! हरि विच अंतर डाढा।।
मुंड मुंडावै सेवा पूजा भ्रम का बंधन गाढ़ा।। टेक।।

''हे कर्मकाण्डो में फँसे पंडित! तेरी कर्मकाण्डी भक्ति और प्रभु की भक्ति में बहुत अन्तर है। जीव प्रभु प्रेम के बिना सिर मुंडवाकर, सेवा पूजा करने से भ्रम के बँधन में बँधा रहता है।''

माला तिलक मनोहर बानों लागो जम की पासी।।
जो हरि सेती जोड़यो चाहो तो जग सो रहो उदासी।। 1 ।।

"प्रभु के नाम के बिना गले में माला पहनना, माथे पर तिलक लगाना, सुंदर वस्त्र पहनना इत्यादि आडम्बरों से यमदूतों की फांसी लगती है। हे भाई! अगर तुम प्रभु को मन से जोड़ना चाहते हो, तो तुम इस संसार में रहते हुए भी उपराम रहो।"

भुख न भाजै तृस्ना न जाई कहो कौण कवन गुण होई॥
जो दधि में कांजी को जावण तो घ्रित न काढे कोई॥ 2॥

"हे भाई! प्रभु के नाम के बिना, तुम्हारी भूख और तृष्णा नहीं मिट सकती। फिर भाई तू ही बता, ऐसे आडम्बर करने में कौन सा गुण है? अगर दही बनाने के लिए, जोड़न लगाने की जगह कांजी से जोड़न लगाया जाए तो उस में से घी कैसे निकल सकता है? भाव नहीं निकलेगा।"

करनी कथनी ज्ञान अचारा, भगति इन्हुँ सो नयारी॥
दोय घोड़ा चढ़ि कोऊ न पहुँचौ, सतिगुरु कहै पुकारी॥ 3॥

"हे भाई! तेरी करनी और कथनी, तुम्हारे ज्ञान और व्यवहार आडम्बरों के कारण सच्ची भक्ति से विपरीत हैं, पर भाई, प्रभु भक्ति इन आडम्बरों से न्यारी है। जैसे कोई जीव एक ही समय पर दो घोड़ों पर सवार होकर अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकता, ऐसे ही सच्चे सत्गुरु ने संसार को पुकार कर उपदेश दिया है कि आडम्बरों और प्रेम भक्ति, दोनों पर एक समय नहीं चला जा सकता।"

जो दासा तण कीयो चाहो आस भगति की होई॥
तो निरमल सांग मगन हवै नाचो लाज सरम सब खोई॥ 4॥

"जो जीव अपने मन में, दास-भाव को धारण कर लेता है, उसके मन में ही भक्ति भावना पैदा होती है। वह जीव प्रभु के निर्मल नाम में लीन होता है और प्रभु के नाम में लीन होकर नाच उठता है, संसार की झूठी माया, झूठी लज्जा और शर्म सब का त्याग कर देता है।"

कोई दाधो कई सीधौ साचौ कूड़ निति मारया॥
कहै रविदास हौ न कहत हौ योकादसत पुकारिया॥ 5॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि, "चाहे कोई दुख दे चाहे कोई सुख दे प्रभु के भक्त सुख और दुख से ऊपर उठ जाते हैं, सच सदैव झूठ का नाश करता है। परन्तु मैंने दशों दिशायों भाव हर जगह पर पुकार कर कहा है कि हृदय में प्रेमा-भक्ति आने से, कर्मकाण्ड रूपी कूड़ पसारे का, नाश हो जाता है। भाव प्रभु की प्रेमाभक्ति आने से, अज्ञानता का नाश हो जाता है।"

शब्द – 56

मन मेरो थिरु न रहाई,
कोटि कौतिक करि दिखरावै, इत उत जग महिं धाई।। टेक।।
माया ममता मोह लपटानो, दिन दिन उरझत जाई।
सुआन पुछ कभु होय न सूधो, कीजहु लाख उपाई।।
गुरु को गियान प्रेम की सांटी, कुबुध कुकरम छुड़ाई।
कहि रविदास मन थिरु ह्वैसी, चलि सब छाडि गुरसरणाई।। 1।।

इस शब्द में जगत्‌गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को बाह्य आडंबर त्यागकर गुरू की शरण में जाकर प्रभु का सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं।

मन मेरो थिरु न रहाई,
कोटि कौतिक करि दिखरावै, इत उत जग महिं धाई।। टेक।।

''प्रभु के नाम के बिना जीव का मन स्थिर नहीं रह सकता, चाहे जीव अनेकों प्रकार के बाह्य खेल खेलें और संसार में इधर–उधर कहीं भी भटक लें।''

माया ममता मोह लपटानो, दिन दिन उरझत जाई।
सुआन पुछ कभु होय न सूधो, कीजहु लाख उपाई।।

''जीव प्रभु के नाम के बिना माया, ममता और मोह में लिप्त होने से, दिन प्रतिदिन उलझ रहा है। जिस प्रकार चाहे कितने भी उपाय कर लिये जाएं, कुत्ते की दुम कभी भी सीधी नहीं हो पाती, इस प्रकार प्रभु नाम के बिना जीव चाहे कितने भी कर्म काण्ड कर ले परन्तु उसे मुक्ति केवल प्रभु नाम में ही मिलती है।''

गुरु कौ गियान प्रेम की सांटी, कुबुध कुकरम छुड़ाई।
कहि रविदास मन थिरु ह्वैसी, चलि सब छाडि गुरसरणाई॥ 1॥

''गुरु का ज्ञान व प्रेम की छड़ी खोटी बुद्धि, दुष्कर्मों को दूर कर देती है। सत्‌गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि जीव का मन प्रभु के नाम में स्थिर हो जाता है और ये सभी कर्मकाण्ड छोड़कर, जीव गुरु की शरण ग्रहण कर लेता है।''

शब्द – 57

हम घर आयहु राम भतार, गावहु सखि मिल मंगलाचार।
तन मन रत करहिं आपुनो, तौ कहुं पाइहिं पिव पिआर॥ 1॥
प्रीतम को जो दरसन पायि, मन मन्दिर महिं भइयो उजियार।
हौं मड़यि तै नौ निधि पाई, कृपा कीन्ही राम करतार॥ 2॥

बहुत जनम बिछुरे पिव पायो, जनम जनम तैं बिलयि रार।।
कहि रविदास हौं कछु नहिं जानौं, चरण कंवल महिं तुव मुरार॥ 3 ॥

यह पावन शब्द जगत्गुरू रविदास जी महाराज ने उस समय उच्चारण किया। जब उन के गृह में संत जन पधारे। सत्गुरु जी फरमाते हैं कि,''प्रभु के प्यारे संत महापुरुषों के आने से, मुझे प्रभु के दर्शन हुए हैं और मेरा मन ज्ञान से प्रकाशमान हो गया है।''

हम घर आयहु राम भतार, गावहु सखि मिल मंगलाचार।

''आज मेरे घर में प्रभु के प्यारे संत आए हैं। हे जीव रूपी सहेली उन से मिलकर प्रभु की महिमा का गान करो।''

तन मन रत करहिं आपुनो, तौ कहुं पाइहिं पिव पिआर॥ 1 ॥

''इन के समक्ष तन-मन अर्पण करके, इनकी संगत से प्रभु का प्रेम प्राप्त होता है।''

प्रीतम को जो दरसन पायि, मन मन्दिर महिं भइयो उजियार।

''इनकी कृपा से प्रभु प्यारे के दर्शन होते हैं और मन मन्दिर में ज्ञान का प्रकाश होता है।''

हौं मड़यि तै नौ निधि पाई, कृपा कीन्ही राम करतार॥ 2 ॥

''इनकी कृपा से मैंने नौ निधियां प्राप्त कर ली हैं। प्रभु करतार ने मुझ पर कृपा करके इनके दर्शन करवाए हैं।''

बहुत जनम बिछुरे पिव पायो जनम जनम तैं बिलयि रार।

''मुझे, प्रभु से बहुत जन्मों से बिछड़े हुए को, प्रभु प्रीतम की प्राप्ति हो गई है, और मेरे जन्मों-जन्मों के दुख दूर हो गए हैं।''

कहि रविदास हौं कछु नहिं जानौं, चरण कंवल महिं तुव मुरार॥ 3 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज प्रभु के आगे विनती करते हैं कि,''मैं कुछ भी नहीं जानता, आप की कृपा से, आप के चरण कमलों में, मुझे शरण प्राप्त हुई है।''

शब्द - 58

कालहु नायि ताहि पद सीस,
नहिं बिसराऊं खिन एकहु ईश।। टेक॥
जनम मरुन अरु जग जाला,
नाम परताप न बिआपहिं ब्याला।

अगत विगत अनादि अनूपा,
विसव वियापक ब्रह्म अरूपा।।
घट घट तिह पेखीयत अयिसे,
जल महिं लहिर, लहिर जल जयिसे।
कहि रविदास हरि सरब वियापक,
सरब चिंतामणि सरब प्रतिपालक।।। 1।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज, सभी जीवों को सर्वव्याप्क प्रभु का सिमरन करने का, पावन उपदेश देते हैं।

कालहु नायि ताहि पद सीस,
नहिं बिसराऊ खिन एकहु ईश।। टेक।।

''काल के प्रभाव से मुक्त प्रभु के चरणों में, मैं अपना शीश झुकाता हूँ और एक क्षण मात्र भी प्रभु को भुलाता नहीं हूँ।''

जनम मरुन अरु जग जाला,
नाम परताप न बिआपहिं ब्याला।

''प्रभु नाम के प्रताप के कारण, जन्म-मरण रूपी दुख, संसार के जंजाल और बाधाएँ नहीं सताते।''

अगत विगत अनादि अनूपा,
विसव वियापक ब्रह्म अरूपा।।

''प्रभु की गति को कोई भी नहीं जान सकता, वह घटता-बढ़ता नहीं है, वह प्रभु अमर, अभिनासी और आदि रहित है और अनुपम है। ऐसा प्रभु सारे ब्रह्माण्ड में विद्यमान् है, उसका कोई विशेष रूप नहीं है।''

घट घट तिह पेखीयत अयिसे,
जल महिं लहिर, लहिर जल जयिसे।

''प्रभु सारे संसार में इस प्रकार विद्यमान् है, जिस प्रकार पानी में लहरें और लहरों में पानी होता है।''

कहि रविदास हरि सरब वियापक,
सरब चिंतामणि सरब प्रतिपालक।। 1।।

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हरि सर्व-व्याप्क है सब चिंतायों को दूर करने वाला तथा मनवांछित फल देने वाला है। वही सब का पालन करने वाला है।''

रागु गोंड

शब्द - 59

मुकंद मुकंद जपहु संसार॥
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार॥
सोई मुकंद मुकति का दाता॥
सोई मुकंद हमरा पित माता ॥ 1॥
जीवत मुकंदे मरत मुकंदे॥
ता के सेवक कउ सदा अनंदे॥ 1॥ रहाउ॥
मुकंद मुकंद हमारे प्रानं॥
जपि मुकंद मसतकि नीसानं॥
सेव मुकंद करै बैरागी॥
सोई मुकंद दुरबल धन लाधी॥ 2॥
एक मुकंद करै उपकारु॥
हमरा कहा करै संसारु॥
मेटी जाति हुए दरबारि॥
तुही मुकंद जोग जुग तारि॥ 3॥
उपजिओ गिआन हुआ परगास॥
करि किरपा लीने कीट दास॥
कहु रविदास अब त्रिसना चूकी॥
जपि मुकंद सेवा ताहू की॥ 4॥ 1॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को भेद-भाव से ऊपर उठ कर मुक्तिदाता प्रभु मुकंद का नाम जपने का पावन उपदेश देते हैं।

मुकंद मुकंद जपहु संसार॥
बिनु मुकंद तनु होइ अउहार॥

''हे संसार के लोगों! जन्म-मरण के चक्र से मुक्त करने वाले प्रभु का मुकंद नाम जपो। उस मुकंद नाम जपने के बिना यह मनुष्य तन निष्फल चला जाता है।''

सोई मुकंद मुकति का दाता॥
सोई मुकंद हमरा पित माता॥ 1॥

''वह मुकंद मुक्ति दाता है, वही मुकंद मेरा पिता और माता है।''

जीवत मुकंदे मरत मुकंदे॥

ता के सेवक कउ सदा अनंदे॥ 1॥ रहाउ॥

''जो जीव जीते हुए मरने तक मुक्ति दाता प्रभु का नाम सिमरन करता है, उस परमेश्वर के सेवक को हमेशा ही आनंद अनुभव होता रहता है।''

मुकंद मुकंद हमारे प्रानं॥

जपि मुकंद मसतकि नीसानं॥

''उस प्रभु का मुकंद नाम मेरे प्राण है। मस्तक के अच्छे भाग्य के अनुसार जीव उस मुकंद नाम को जपता है।''

सेव मुकंद करै बैरागी॥

सोई मुकंद दुरबल धन लाधी॥ 2॥

''संसार से वैरागी होकर जीव मुकंद प्रभु का सिमरन सेवा करता है। उस मुकंद का नाम ही मुझ दीन को श्रेष्ठ धन मिला है।''

एकु मुकंद करै उपकारु॥

हमरा कहा करै संसारू॥

''एक मुकंद ने मेरे ऊपर उपकार किया है, इस लिए संसार के लोग मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।''

मेटी जाति हुए दरबारि॥

तुही मुकंद जोग जुगतारि॥ 3॥

''जाति भाव को दूर करके ही जीव उस मुकंद के दरबार में निवास कर सकता है। हे मुकंद जी! आप ही संसार के जीवों को युगों-युगान्तरों से पार लगाने वाले हो।''

उपजिओ गिआन हुआ परगास॥

करि किरपा लीने कीट दास॥

''जिस समय जीव के हृदय में प्रभु के ज्ञान का प्रकाश होता है, प्रभु कृपा करके कीड़े जैसे जीव को भी अपना दास बना लेता है।''

कहु रविदास अब त्रिसना चूकी॥

जपि मुकंद सेवा ताहू की॥ 4॥ 1॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''मैं मुकंद का सिमरन करता हूं। प्रभु के सिमरन और सेवा के कारण सब तृष्णाएँ समाप्त हो गई हैं।''

शब्द – 60

जे ओहु अठिसठि तीरथ न्हावै ॥
जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥ 1 ॥
साध का निंदकु कैसे तरै ॥
सरपर जानहु नरक ही परै ॥ 1 ॥ रहाउ॥
जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥
अरपै नारि सीगार समेति ॥
सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै ॥
करै निंद कवनै नही गनै ॥ 2 ॥
जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥
भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥
अपना बिगारि बिरांना सांढै ॥
करै निंद बहु जोनी हांढै ॥ 3 ॥
निंदा कहा करहु संसारा ॥
निंदक का परगटि पाहारा ॥
निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥
कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥ 4 ॥ 2 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,''जीव को कभी भी संत महापुरुषों की निंदा नहीं करनी चाहिए। संत महापुरुषों की निंदा करने वाला चाहे जितने चाहे उपाय कर ले, उसे नरक में जरूर जाना ही पड़ता है।''

जे ओहु अठिसठि तीरथ न्हावै ॥
जे ओहु दुआदस सिला पूजावै ॥
जे ओहु कूप तटा देवावै ॥
करै निंद सभ बिरथा जावै ॥ 1 ॥

''यदि कोई जीव अठासठ तीर्थों पर स्नान करे, बारह शिलाओं की पूजा भी करे, चाहे वो जीवों की भलाई के लिए कुएँ और तालाब बनाए, यदि वह संतों की निंदा करता है तो यह सब कुछ किया हुआ निष्फल जाता है।''

साध का निंदकु कैसे तरै ॥

सरपर जानहु नरक ही परै ॥ 1 ॥ रहाउ॥

''संतों की निंदा करने वाला जीव कैसे भवसागर पार कर सकता है? उस को अवश्य ही नरक में जाना पड़ता है।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-

संता कउ मति कोई निंदहु संत रामु है इको ॥

''हे सांसारिक जीवों! संत महापुरुषों की कभी भी निंदा न करो क्योंकि संत और प्रभु एक रूप हैं।'')

जे ओहु ग्रहन करै कुलखेति ॥

अरपै नारि सीगार समेति ॥

सगली सिंम्रिति स्रवनी सुनै ॥

करै निंद कवनै नही गुनै ॥ 2 ॥

''यदि कोई कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के समय स्नान करे और अपनी स्त्री को सोलह श्रृंगार से सजा कर दान कर दे, सताईस स्मृतियों को कानों से सुन ले, पर यदि वह जीव संत महापुरुषों की निंदा करता है तो उस द्वारा यह सब किया किसी काम नहीं आता।''

जे ओहु अनिक प्रसाद करावै ॥

भूमि दान सोभा मंडपि पावै ॥

अपना बिगारि बिरांना सांडै ॥

करै निंद बहु जोनी हांढै ॥ 3 ॥

''यदि कोई जीव अनेकों प्रकार के प्रसाद बना कर लोगों को भोजन कराए, अपनी भूमि दान कर सारे संसार में प्रशंसा प्राप्त कर ले और अपना काम बिगाड़ कर दूसरों का काम सँवार दे, फिर भी यदि वह संत महापुरुषों की निंदा करता है तो उसको बहुत सी योनियों में भटकना पड़ता है।''

निंदा कहा करहु संसारा ॥

निंदक का परगटि पाहारा ॥

निंदकु सोधि साधि बीचारिआ ॥

कहु रविदास पापी नरकि सिधारिआ ॥ 4 ॥ 2 ॥

''हे संसार के लोगों! तुम संत महापुरुषों की निंदा क्यों करते हो? सारे संसार मे संत महापुरुषों की निंदा करने वाले का अपमान होता है।'' सत्गुरु

रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''निंदा करने वाले जीव के कर्मों का फल अच्छी तरह विचार कर यह निर्णय किया है कि उस को अवश्य ही नरक में जाना पड़ेगा।''

शब्द - 61

आज दिवस लेऊँ बलिहारा॥
मेरे गृह आया राजा राम का प्यारा॥ टेक॥
आँगन बगड़ भवन भयो पावन॥
हरिजन बैठे हरिजस गावन॥ 1॥
करूँ डंडोत चरन पखारूं॥
तन मन धन संतन पर वारूँ॥ 2॥
कथा कहैं अरु अर्थ बिचारैं ॥
आप तरैं औरन को तारैं॥ 3॥
कह रविदास मिलै निज दास॥
जनम जनम कै काटै पास ॥ 4॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज,''संतों के मिलाप का महत्व ब्यान करते हैं कि संतों के चरण पड़ने से, जीव का गृह पवित्र हो जाता है, जहाँ बैठकर संत जन प्रभु के नाम की कथा करते हैं। ऐसे संत स्वयं भी पार होते हैं और जीवों को भी पार लगाते हैं।''

आज दिवस लेऊँ बलिहारा॥
मेरे गृह आया राजा राम का प्यारा।। टेक॥

यह पावन शब्द सत्गुरु रविदास जी महाराज ने उस समय उच्चारण किया,''जिस समय उनके घर में संत पधारे।'' महाराज जी कहते हैं कि,''मैं आज के महान् दिन पर बलिहार जाता हूँ क्योंकि आज मेरे गृह को पवित्र करने के लिए, प्रभु के प्यारे संत आए हैं।''

आँगन बगड़ भवन भयो पावन॥
हरिजन बैठे हरिजस गावन॥ 1॥

''संतों के आने से, मेरा घर, आस-पास और सारा भवन, आंगन पवित्र हो गए हैं, जहाँ बैठ कर प्रभु के संत-जन प्रभु का यश गा रहे हैं।''

करूँ डंडोत चरन पखारूं॥

तन मन धन संतन पर वारूँ॥ 2॥

''मैं संतों को दंडवत् प्रणाम करता हूँ, उनके चरण धोता हूँ और अपना तन-मन-धन संत महापुरुषों पर कुर्बान करता हूँ, समर्पित करता हूँ।''

कथा कहैं अरु अर्थ बिचारैं॥

आप तरै औरन को तारैं॥ 3॥

संत महापुरुष प्रभु की कथा उच्चारण करते हैं,''प्रभु के पावन नाम की विचार करते हैं। वह प्रभु का नाम सिमरन कर स्वयं तो पार लगते ही हैं और दूसरे जीवों को भी प्रभु का नाम सिमरन करवा कर पार लगाते हैं।''

कह रविदास मिलै निज दास॥

जनम जनम कै काटै पास॥ 4॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज विनती करते हैं कि,''प्रभु जी आप के दास अर्थात् मेरा मिलाप हर रोज़ संतों से होता रहे और मैं जन्म-जन्म के बन्धनों से सदा के लिए मुक्त हो जाऊँ।

शब्द - 62

ऐसे जानि जपो रे जीव। जपि लियो राम न भरमो जीव॥ टेक॥

गनिका थी किस करमा जोग। पर पुरसन सो रमती भोग॥ 1॥

निसि बासर दुस्करम कमाई। राम कहत बैकुंठे जाई॥ 2॥

नामदेव कहिये जाति कै ओछ। जा को जस गाइये त्रिलोक॥ 3॥

भगति हेत भगता के चले। अंकमाल ले बीठल मिले॥ 4॥

कोटि यग जो कोउ करै। राम नाम सम तऊ न निस्तरै॥ 5॥

निरगुन का गुन देखो आई। देही सहित कबीर सिधाई॥ 6॥

मोरी कुचिल जात कुचिल में बास। भगत चरन हरिचरन निवास॥ 7॥

चारिउ बेद किया खंडौति । जन रविदास करै डंडौति॥ 8॥

इस पावन शब्द द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को वहम-भ्रमों और कर्म-काण्डों से मुक्त होकर, प्रभु का सिमरन करने का उपदेश देते हैं। जिस प्रभु का सिमरन करके, सतगुरू नामदेव जी और सतगुरू कबीर जी की महिमा तीनों लोक में होती है।

ऐसे जानि जपो रे जीव। जपि लियो राम न भरमो जीव॥ टेक॥

''हे जीव! ऐसे सर्वव्यापक प्रभु को जान कर उसका सिमरन कर, जिस प्रभु का सिमरन करने से तेरी भटकन समाप्त हो जाएगी।''

गनिका थी किस करमा जोग। पर पुरसन सो रमती भोग॥ 1॥

''गनिका एक वेश्या थी, जो बुरे कर्मो को करने को योग्य समझती थी? जो पराये पुरुषों के साथ खोटे कर्म करने में लिप्त रहती थी।''

निसि बासर दुस्करम कमाई। राम कहत बैकुंठे जाई॥ 2॥

''वह वेश्या रात दिन खोटे कर्म करती थी, पर संतों की संगत करने से उसने खोटे कर्मों को त्याग कर, प्रभु का नाम सिमरन करने से सच्चखण्ड (बैकुंठ धाम) में निवास किया।''

नामदेव कहिये जाति कै ओछ। जा को जस गाइये त्रिलोक॥ 3॥

''सत्गुरु नामदेव जी को सांसारिक लोग भ्रम के कारण निम्न जाति का कहते थे, जिनका नाम आज सारे लोग गाते हैं और उनकी महिमा तीनों लोक में होती है।''

भगति हेत भगता के चले। अंकमाल ले बीठल मिले॥ 4॥

''प्रभु अपने भक्तों के प्रेम के कारण उनको मिलता है। प्रभु अपने भक्तों को प्रेम सहित आलिंगन में लेकर मिलता है।''

कोटि यग जो कोउ करै। राम नाम सम तऊ न निस्तरै॥ 5॥

''चाहे जीव करोड़ों यज्ञ कर ले पर वह प्रभु नाम के बिना संसार रूपी भवसागर को पार नहीं कर सकता।''

निरगुन का गुन देखो आई। देही सहित कबीर सिधाई॥ 6॥

''निर्गुण प्रभु के गुण देखो कि सत्गुरु कबीर जी निर्गुण प्रभु का नाम सिमरन कर, देह सहित ही बैकुंठ धाम चले गए।''

मोरी कुचिल जात कुचिल में बास। भगत चरन हरिचरन निवास॥ 7॥

''हे प्रभु जी! अज्ञानी लोग मेरी जात और मेरे रहन-सहन को नीच समझते हैं, पर प्रभु जी मुझे संत महापुरुषों की संगत कर, आप जी के चरणों में निवास प्राप्त हुआ है।''

चारिउ बेद किया खंडौति। जन रविदास करै डंडौति॥ 8॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमान करते हैं कि,''जीव को वर्णों के आधार पर बाँटने वाले और कर्मकाण्डों में फंसाने वाले, चार वेदों का मैं खण्डन करता हूँ। हे प्रभु जी! मैं आप जी का दास आपको दंडवत् प्रणाम करता हूँ।''

राग रामकली

शब्द - 63

पड़ीऐ गुनीऐ नाम सभु सुनीऐ अनभउ भाउ न दरसै ॥
लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥ 1 ॥
देव संसै गांठि न छूटै ॥
काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटै ॥ 1 ॥ रहाउ॥
हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥
गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥ 2 ॥
कहु रविदास सभै नही समझसि भूल परे जैसे बउरे ॥
मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥ 3 ॥ 1 ॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,''पारस रूप गुरु के उपदेश के बिना चाहे जीव प्रभु के नाम को पढ़ता रहे, गुणों की विचार करता रहे और सभी नामों को सुनता रहे पर फिर भी इस को ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती और झूठे अहंकार का नाश नहीं होता।''

पड़ीऐ गुनीऐ नाम सभु सुनीऐ अनभउ भउ न दरसै ॥
लोहा कंचनु हिरन होइ कैसे जउ पारसहि न परसै ॥ 1 ॥

''गुरु के उपदेश के बिना चाहे जीव अपने आप प्रभु का नाम पढ़े, गुणों की विचार करे और सभी नाम सुने पर वह ज्ञान स्वरुप प्रभु के दर्शन नहीं कर सकता।''

(सत्‌गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-
किआ पड़ीऐ किआ गुनीऐ।
किआ बेद पुरानां सुनीऐ ॥ पड़े सुने किआ होई ॥
जह सहज न मिलिओ सोई ॥ 1 ॥

''प्रभु के नाम के बिन क्या पढ़ना, क्या विचार करना और क्या वेद-पुराणों का सुनना, इस सब का क्या लाभ है? जब तक प्रभु के सहज ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती। इस जीव का पढ़ना, गुणना, सुनना निष्फल है।'')

''जैसे लोहा तब तक शुद्ध स्वर्ण नहीं बन सकता जब तक उसका पारस के साथ स्पर्श नहीं होता ऐसे ही जीव तब तक विकारों से मुक्त होकर शुद्ध नहीं हो सकता जब तक गुरु रूप पारस के साथ उसका मिलाप नहीं होता।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी भी इस सम्बन्ध में फरमाते हैं:-

पारस कै संगि तांबा बिगरिओ सो तांबा कंचनु होइ निबरिओ ॥ 3 ॥

संतन संगि कबीरा बिगरिओ ॥ सो कबीरु रामै होई निबरिओ ॥

"पारस के साथ स्पर्श होने से जैसे ताँबा स्वर्ण बन जाता है, उसी तरह मैं (कबीर) संत महापुरुषों के साथ के कारण प्रभु का रूप हो गया हूँ।")

देव संसै गांठि न छूटै ॥

काम क्रोध माइआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटै ॥ 1 ॥ रहाउ॥

"हे प्रभु जी! गुरु के उपदेश के बिना जीव की अज्ञानता के कारण भ्रम की गांठ नहीं खुलती क्योंकि भ्रम के कारण ही पाँच विकार (काम, क्रोध, माया, अहंकार और ईष्या) मिल कर जीव को लूट रहे हैं, भाव प्रभु से दूर ले जा रहे हैं।"

हम बड कबि कुलीन हम पंडित हम जोगी संनिआसी ॥

गिआनी गुनी सूर हम दाते इह बुधि कबहि न नासी ॥ 2 ॥

"पाँच विकारों के प्रभाव के कारण सांसारिक जीव इस भ्रम में फंसे हुए हैं कि हम बड़े कवि हैं, उत्तम कुल में पैदा हुए ज्ञानी हैं, बड़े पण्डित हैं, हम बड़े योगी और सन्यासी हैं, ज्ञानी गुणवान हैं, महान् शूरवीर हैं, बड़े दानी हैं। ऐसी अहंकार वाली बुद्धि का नाश नहीं होता, जिस कारण जीव के भ्रम की निवृत्ति नहीं होती।"

कहु रविदास सभै नही समझसि भूल परे जैसे बउरे ॥

मोहि अधारु नामु नाराइन जीवन प्रान धन मोरे ॥ 3 ॥ 1 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि, "सभी लोगों को समझाने पर भी यह समझते नहीं क्योंकि यह लोग प्रभु को बावरे जीवों की तरह भूल चुके हुए हैं, पर मुझे केवल एक नारायण का ही सहारा है। इस लिए मेरे जीवन रूपी प्राण धन्यता योग्य हैं।"

शब्द - 64

परचै राम रमै जो कोई। पारस परसे दुबिधा न होई ॥ टेक ॥

जो दीसे सो सकल बिनास। अनडीठे नाहीं विसवास ॥ 1 ॥

बरन सहित कहै जो राम। सो भगता केवल निहकाम ॥ 2 ॥

फल कारन फूलै बनराई। उपजै फल तब पुहुप बिलाई ॥ 3 ॥

ज्ञानहि कारन करम कराई। उपजै ज्ञान तब करम नसाई॥ 4॥
बटिक बीज जैसा आकार। पसरियौ तीनि लोक पासार॥ 5॥
जहाँ का उपजा तहां समाई। सहज शूनय मे रह्यो लुकाई॥ 6॥
जो मन बिंदै सोई बिंद। अमावस मैं जैसे दीसै चंद॥ 7॥
जल में जैसे तूंबा तिरै। परचै पिंड जीवै नाहिं मरै॥ 8॥
सो मुनि कौण जु मन को खायि। बिन दुआरे तिरलोक समाइ॥ 9॥
मन की महिमा सब कोय कहै। करता सो जो अनभै रहै॥ 10॥
कहै रविदास यह परम बैराग। राम नाम कीन जपहु सुभाग॥ 11॥
घ्रित कारनि दधि मथै सयान। जीवन मुक्ति सदा निरबाण॥ 12॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज प्राणियों को पारस रूपी गुरु के उपदेशानुसार चल कर प्रभु प्राप्ति करने का पावन उपदेश देते हैं।

परचै राम रमै जो कोई।
पारस परसे दुबिधा न होई॥ टेक॥

''जो प्राणी गुरु उपदेशानुसार प्रभु का सिमरन करता है जिस प्रकार पारस को छू लेने से लोहा शुद्ध सोना हो जाता है, इस में कोई दुविधा नहीं रहती। उसी प्रकार यह प्राणी भी पारस रूपी गुरु की संगत में जाकर सोने की भांति शुद्ध हो जाता है।''

जो दीसे सो सकल बिनास।
अनडीठे नाहीं विसवास॥ 1॥

''जो संसार में दिखाई देता है, सब नश्वर है, परन्तु प्रभु को देखे बिना उस पर विश्वास नहीं होता भाव उसके प्रति आस्था उत्पन्न नहीं होती।''

बरन सहित कहै जो राम।
सो भगता केवल निहकाम॥ 2॥

''जो भक्त प्रेम सहित प्रभु का नाम जपता है, वह प्रभु भक्त केवल निष्कामी है।''

फल कारन फूलै बनराई।
उपजै फल तब पुहुप बिलाई॥ 3॥

''जैसे वनस्पति के वृक्षों को फल लगने से पहले फूल लगते हैं, परन्तु जिस समय फल लग जाते हैं, तो फूल झड़ जाते हैं।''

ज्ञानहि कारन करम कराई।
उपजै ज्ञान तब करम नसाई॥ 4॥

''इसी प्रकार जिज्ञासु ज्ञान की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ कर्म करते हैं, परन्तु जब उसे ज्ञान प्राप्त होता हो जाता है तब कर्मों का नाश हो जाता है, अर्थात् फिर कर्म करने की आवश्यकता नहीं रहती।''

बटिक बीज जैसा आकार।
पसरियौ तीनि लोक पासार॥ 5॥

''जैसे वट वृक्ष की शाखाएँ बहुत दूर तक फैली होती हैं परन्तु ऊपर से देखने पर उसका आकार अपेक्षा छोटा नज़र आता है। उसी प्रकार प्रभु तीनों लोकों अर्थात् समस्त सृष्टि में विद्यमान् है।''

जहाँ का उपजा तहां समाई।
सहज शूनय मे रह्यो लुकाई॥ 6॥

''प्राणी प्रभु से उत्पन्न हुआ, उसी का अंश है तथा उसका सिमरन कर वह सहज शून्य अवस्था में विलीन हो जाता है। सारी सृष्टि में प्रभु को समाया हुआ अनुभव करता है।''

जो मन बिंदै सोई बिंद।
अमावस मैं जैसे दीसै चंद॥ 7॥

''जो मन है, वह प्रभु का अंश है परन्तु प्रभु प्रेम के बिना उसके दर्शन नहीं होते। जैसे चन्द्रमा तो होता है परन्तु अमावस के दिन दिखाई नहीं देता। उसी प्रकार प्रभु का अस्तित्व तो सदैव है परन्तु अज्ञानतावश जीव उसको अनुभव नहीं कर सकता।''

जल में जैसे तूंबा तिरै।
परचै पिंड जीवै नाहिं मरै॥ 8॥

''जिस प्रकार तूंबा (कद्दू) सदैव जल में तैरती है उसी प्रकार जो जीव गुरु उपदेशानुसार इस शरीर रूपी पिण्ड में बैठे प्रभु का स्मरण करता है, वह सदैव जीवित रहता है, उसकी मृत्यु नहीं होती।''

सो मुनि कौण जु मन को खायि।
बिन दुआरे तिरलोक समाइ॥ 9॥

''वास्तविक मुनि वह है जो मन में से दुविधा को समाप्त कर लेता है, द्वारों से रहित तीनों लोकों में विद्यमान् प्रभु में लीन हो जाता है।''

मन की महिमा सब कोय कहै।
करता सो जो अनभै रहै॥ 10॥

''संसार के सभी जीव अपने मन की महिमानुसार कर्म करते हैं, परन्तु जो प्राणी कर्तापुरुष के साथ एक रूप हो जाते हैं, वे निर्भय हो जाते हैं।''

कहै रविदास यह परम बैराग।
राम नाम कीन जपहु सुभाग॥ 11॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हे सौभाग्यशाली प्राणी! तू अपने मन में प्रभु के परम वैराग्य को धारण कर, उसका नाम जप।''

घ्रित कारनि दधि मथै सयान।
जीवन मुक्ति सदा निरबाण॥ 12॥

''जिस प्रकार एक समझदार स्त्री घी की प्राप्ति के लिए दहीं को मथती है, परन्तु उसमें से मक्खन निकल आता है तो वह उसे मथना बंद कर देती है। इसी प्रकार ज्ञान की प्राप्ति के लिए जीव/प्राणी श्रेष्ठ कर्म करता है, जब उसे ज्ञान प्राप्त हो जाता है, तो वह प्राणी इस जीवन में ही सदैव रहने वाले निर्वाण पद को प्राप्त कर लेता है।''

शब्द - 65

अब मैं हारयो रे भाई।
थकित भयों सभ हाल चाल ते, लोकन बेद बड़ाई॥ टेक॥
थकित भयो गायन अरु नाचन, थाकी सेवा पूजा॥
काम क्रोध ते देह थकित भई, कहूँ कहाँ लौ दूजा॥ 1॥
राम जनु होऊँ न भगत कहाऊँ, चरन पखारु न देवा॥
जोई जोई करूँ उलटि मोहिं बांधे, ता ते निकटि न भेवा॥ 2॥
पहले ज्ञान का किया चाँदना, पीछे दीया बुझाई॥
शुन्य सहज मैं दोऊ त्यागे राम कहूँ न खुदाई॥ 3॥
दूर बसै खट कर्म सकल अरु, दूरऊ कीन्हे सेऊ॥
ज्ञान ध्यान दोऊ दूर कीन्हे, दूरिउ छाड़ै तेऊ॥ 4॥
पंचो थकित भयो हैं जहाँ तहाँ, जहाँ तहाँ थिति पाई॥
जा कारन मैं दौरयो फिरतो, सो अब घट में पाई॥ 5॥
पंचो मेरी सखी सहेली, तिन निधि दई दिखाई॥
अब मन फूलि भयो जग महिया, उलटि आप में समाई॥ 6॥

चलत चलत मेरो निज मन थाक्यो, अब मोसे चलयो न जाई॥
साई सहज मिलयो सोई सनमुख, कहै रविदास बड़ाई॥ 7॥

इस पावन शब्द में जग्तगुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''जीव प्रभु का नाम सिमरन कर परम आनन्द रूपी सहजावस्था में पहुँच कर प्रभु में विलीन हो जाता है। कर्म-काण्डों द्वारा जीव को प्रभु की प्राप्ति नहीं होती।''

अब मैं हारयो रे भाई।
थकित भयों सभ हाल चाल ते, लोकन बेद बड़ाई॥ टेक॥

''हे भाई! प्रभु के नाम के बिना मैं हार गया हूँ। संसार के लोग वेदों शास्त्रों को महत्त्व देते हैं। इस हाल से थक कर मैं प्रभु का नाम सिमरन कर उसका ही रूप हो गया हूं।''

थकित भयो गायन अरु नाचन, थाकी सेवा पूजा॥
काम क्रोध ते देह थकित भई, कहूँ कहाँ लौ दूजा॥ 1॥

''सच्चे प्रेम के बिना गाने, नाचने, बाह्य पूजा और सेवा में जीव थक जाता है। काम, क्रोध इत्यादि विकारों के कारण शरीर भी थक जाता है। बताओ कि ऐसी स्थिति में इन कर्म काण्डों से जीव प्रभु के साथ कैसे जुड़ सकता है? भाव नहीं जुड़ सकता।''

राम जनु होऊँ न भगत कहाऊँ, चरन पखारु न देवा॥
जोई जोई करूँ उलटि मोहिं बांधे, ता ते निकटि न भेवा॥ 2॥

''मैं प्रभु का दास हूँ। मैं न तो किसी देवता का भक्त कहलाता हूँ और न ही किसी देवता के चरण धोता हूँ। प्रभु के नाम के बिना जो कुछ भी करता हूँ, उसके विपरीत मैं माया जाल में फँस जाता हूँ क्योंकि इन आडम्बरों से प्रभु के भेद को नहीं जाना जा सकता।''

पहले ज्ञान का किया चाँदना, पीछे दीया बुझाई॥
शुन्य सहज मैं दोऊ त्यागे, राम कहूँ न खुदाई॥ 3॥

''पहले ज्ञान का प्रकाश होने से अज्ञानता रूपी दीपक बुझ गया, तत्पश्चात् सहज आत्मिक अवस्था में पहुँच कर न राम और न ही खुदा कहने की आवश्यकता है, अर्थात् जीव प्रभु का रूप हो जाता है।''

दूर बसै खट कर्म सकल अरु, दूरऊ कीन्हे सेऊ॥
ज्ञान ध्यान दोऊ दूर कीन्हे, दूरिउ छाड़ै तेऊ॥ 4॥

''शास्त्रों के अनुसार छः कर्मों को भी त्याग दिया है और शिव की भक्ति

से भी मुझे कोई लेन देन नहीं है। सहजावस्था में पहुँच कर मैं ऐसे ज्ञान-ध्यान इत्यादि से मुक्त हो गया हूँ।''

पंचो थकित भयो हैं जहाँ तहाँ, जहाँ तहाँ थिति पाई॥
जा कारन मैं दौरयो फिरतो, सो अब घट में पाई॥ 5॥

''पाँच विकारों का नाश कर मैंने स्थिर सहजावस्था प्राप्त कर ली है। जिस प्रभु की प्राप्ति के लिए मैं इधर-उधर दौड़ता फिर रहा था उसकी प्राप्ति मुझे अपने शरीर में से हो गई है।''

पंचो मेरी सखी सहेली, तिन निधि दई दिखाई॥
अब मन फूलि भयो जग महिया, उलटि आप में समाई॥ 6॥

''अब पाँचों ज्ञानेन्द्रियां मेरी सहेलियाँ बन गईं हैं और पाँचों को प्रभु की ओर लगाने से मैंने अपने भीतर से ही प्रभु का नाम रूपी ख़ज़ाना प्राप्त कर लिया है। जो मन संसार की उपमा में लगा हुआ था अब इसके विपरीत प्रभु जी में विलीन हो गया है।''

चलत चलत मेरो निज मन थाक्यो, अब मोसे चलयो न जाई॥
साई सहज मिलयो सोई सनमुख, कहै रविदास बड़ाई॥ 7॥

''चलते-चलते मेरा मन इतना थक गया है कि अब इससे और चला नहीं जाता। सत्गुरु रविदास जी महाराज महिमा करते हुए फरमाते हैं कि सहजावस्था में पहुँचकर प्रभु प्रीतम मुझे प्रत्यक्ष रूप में प्राप्त हो गया है।''

शब्द - 66

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ।
गावणहार कूँ निकट बताऊँ॥ टेक॥
जब लगि है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावणहारा॥ 1॥
जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बडै हंकारा।
जब मन मिल्यौ राम सागर सो, तब यह मिटी पुकारा॥ 2॥
जब लग भगति मुकति की आसा, परम तत्त सुणि गावै।
जहाँ जहाँ आस धरत है यह मन, तहाँ तहाँ कछु न पावै॥ 3॥
छाडै आस निरास परम पदु, तब सुख सति कर होई।
कहै रविदास जासूँ और कहत है, परम तत्त अब सोई॥ 4॥

जगत्गुरु रविदास जी महाराज प्रभु को अपने निकट अनुभव करने का

पावन उपदेश देते हैं,''जैसे कि नदी समुद्र में समाकर समुद्र का ही रूप हो जाती है ऐसे ही जीव प्रभु का नाम सिमरन कर उसका ही रूप हो जाता है।''

गाइ गाइ अब का कहि गाऊँ।
गावणहार कूँ निकट बताऊँ॥ टेक॥

''जिस प्रभु के गुण मैं गाता हूँ अब मैं उसके क्या गुण गाऊँ? क्योंकि उसको अब मैं अपने निकट ही पाता हूँ।''

जब लगि है या तन की आसा, तब लग करै पुकारा।
जब मन मिल्यौ आस नहिं तन की, तब को गावणहारा॥ 1॥

''जब तक जीव को प्रभु की प्राप्ति की आशा है तब तक वह प्रभु को पुकारता है, पर जब मन प्रभु से मिल जाता है, तब उसे शरीर की सुध-बुध नहीं रहती। फिर कोई गाने वाला भी नहीं रहता।''

जब लग नदी न समुद समावै, तब लग बडै हंकारा।
जब मन मिल्यौ राम सागर सो, तब यह मिटी पुकारा॥ 2॥

''जब तक नदी में अंहकार रहता है, समुद्र में नहीं मिल जाती, तब तक वह खूब वेग से चलती रहती है, शोर मचाती है, बाढ़ लाती है और मिट्टी को काटती है। परन्तु जब वह समुद्र में समा जाती है तो समुद्र का ही रूप हो जाती है। ऐसे ही जब तक जीव के मन में अहंकार रहता है तब तक प्रभु से दूर रहता है। जब अहंकार समाप्त हो जाता है तब जीव प्रभु रूपी समुद्र में समा कर प्रभु का ही रूप हो जाता है। पुकार समाप्त हो जाती है।''

जब लग भगति मुकति की आसा, परम तत्त सुणि गावै।
जहाँ जहाँ आस धरत है यह मन, तहाँ तहाँ कछु न पावै॥ 3॥

''जब तक प्रभु भक्त को मुक्ति की इच्छा होती है वह परम तत्त्व प्रभु की महिमा गाता और सुनता है। प्रभु को छोड़ कर अपने मन में और यहां-वहां आस रखता है, तहां-तहां कुछ भी प्राप्त नहीं होता।''

छाडै आस निरास परम पदु, तब सुख सति कर होई।
कहै रविदास जासूँ और कहत है, परम तत्त अब सोई॥ 4॥

''जब जीव सांसारिक इच्छाओं से निराश होकर सिमरन करता है, तब वह जीव परम पद को प्राप्त कर, सदैव सुख प्राप्त करता है।'' सतगुरू रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि सांसारिक लोग, प्रभु को भिन्न-भिन्न प्रकार से व्यक्त करते हैं, परन्तु उसकी प्राप्ति ही परम तत्व है।''

शब्द – 67

राम जन होऊँ न भगत कहाऊँ, सेवा करूँ न दासा।
गुनी जोग जगय कछू न जानूं, तां थै रहूँ उदासा॥ टेक॥
भगत हुआ तो चड़ै बड़ाई, जोग करूँ जग मानै॥
गुन हुआ तो गुणी जन कहै , गुनी आप को तानै॥ 1॥
ना मैं ममता मोह न मोहिया, ये सब जाहि बिलाई॥
दोजख भिस्त दोऊ सम कर जानै, दुहुँ तरक है भाई॥ 2॥
मैं तैं तैं मैं देखि सकल जग, मैं तैं मूल गंवाई।
जब मन समता एक एक मन, तबहिं एक है भाई॥ 3॥
किसन करीम राम हरि राघव, जब लग एक न पेखा।
बेद कतेब कुरान पुराननि, सहज एक नहिं देखा॥ 4॥
जोय जोय कर पूजिए सोय सोय कांची, सहज भाव सति होई।
कहि रविदास मैं ताहि को पूजूँ, जाके गांव ठांव नहिं कोई॥ 5॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज उस परम आनन्दमयी अवस्था का वर्णन करते हैं जिसमें जीव प्रभु का नाम सिमरन कर उसमें (प्रभु में) ही विलीन हो जाता है।

राम जन होऊँ न भगत कहाऊँ, सेवा करूँ न दासा।
गुनी जोग जगय कछू न जानूं, तां थै रहूँ उदासा।। टेक॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज प्रभु में विलीन होकर उस परम उच्च आनन्दमयी अवस्था का वर्णन करते हैं कि,''प्रभु जी! मैं आप का नाम सिमरन कर आप का ही रूप हो गया हूँ। हे प्रभु जी! न मैं आपका दास और न ही भक्त कहलाता हूँ, न ही आपकी सेवा करने वाला सेवक हूँ। हे प्रभु जी! न ही मैं योग और यज्ञ करने वाले गुणों के बारे में कुछ जानता हूँ। ऐसे कर्म करने से मैं उदास (उपराम) रहता हूँ।''

भगत हूआ तो चड़ै बड़ाई, जोग करूँ जग मानै॥
गुन हुआ तो गुणी जन कहै, गुनी आप को तानै॥ 1॥

''हे प्रभु जी! जो जीव आप की भक्ति करता है, उसकी महिमा बढ़ेगी और अगर कोई जीव जोग की साधना करता है, तो वह योगी माना जाता है। अगर कोई गुणवान है, तो उसको सांसारिक लोग गुणी कहेंगे और गुणी स्वयं को उत्तम मानता है कि मेरे जैसा गुणी और कौन है?''

ना मैं ममता मोह न मोहिया, ये सब जाहि बिलाई॥
दोजख भिस्त दोऊ सम कर जानै, दुहुँ तरक है भाई॥ 2॥

''न ही मुझे संसार की झूठी ममता और मोह ने मोहित किया है, यह सब मुझ से बहुत दूर चले गए हैं। मैं नरक और स्वर्ग दोनों को एक समान समझता हूँ, इस लिए मैंने दोनों को त्याग दिया है।''

मैं तैं तैं मैं देखि सकल जग, मैं तैं मूल गंवाई।
जब मन समता एक एक मन, तबहिं एक है भाई॥ 3॥

''सांसारिक जीव मैं मेरी और अहंकार के कारण प्रभु को भूले हुए हैं और इस अहंकार में प्रभु को दिल से भुला दिया है। पर जब जीव सब जीवों को एक समान जानकर प्रभु से सच्चा प्रेम करता है तब यह जीव और प्रभु एक हो जाते हैं।''

किसन करीम राम हरि राघव, जब लग एक न पेखा।
बेद कतेब कुरान पुराननि, सहज एक नहिं देखा॥ 4॥

''कृष्ण, करीम, राम, हरि और राघव इत्यादि उस सर्वव्यापक प्रभु के अनेकों नाम हैं। इस बात का अनुभव तब तक नहीं होता जब तक सब जीवों को एक समान नहीं देखा जाता। फिर चाहे वह वेद, कतेब, कुरान, पुराण सभी पढ़ ले, पर सहजावस्था की प्राप्ति तो उसे प्रभु के नाम सिमरन से ही होती है।''

जोय जोय कर पूजिए सोय सोय कांची, सहज भाव सति होई।
कहि रविदास मैं ताहि को पूजूँ, जाके गांव ठांव नहिं कोई ॥ 5॥

''प्रभु के नाम के बिना जो भी और किसी की पूजा कर्मकाण्ड और साधना है, वह कच्ची भाव झूठी है। सहजावस्था रूपी सच्ची पूजा कर, जीव उस सत्य-स्वरूप प्रभु की प्राप्ति कर लेता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते है कि,''मैं तो उस प्रभु की पूजा करता हूँ जिसका कोई विशेष स्थान और नाम नहीं, अर्थात् वह प्रभु ब्रह्माण्ड के कण-कण में विद्यमान है।''

शब्द - 68

अब मेरी बूडी रे भाई तातै चडी लोक बड़ाई॥ टेक॥
अति अहंकार उर में सत रज तम ता मैं रह्यो उरझाई॥
क्रम बसि परयौ कछू न सूझै स्वामी नाम भुलाई॥ 1॥
हम मानौ गुनी जोग सुनि जुगता हम महा पुरुख रे भाई॥

हम मानौ सूर सकल बिधि तियागी ममता नहीं मिटाई॥ 2 ॥
हम मानै अखिल शुन्नि मन सोध्यो सब चेतनि सुधि पाई।
ज्ञान ध्यान सबही हम जान्यो बूझै काऊन सों जाई॥ 3 ॥
हम मानै परम प्रेम रस जान्यो, नौ बिधि भगति कराई।
स्वांग देखि सबही जग डहक्यो फिर आपन पोर बँधाई॥ 4 ॥
सांग धे सांच न जान्यो लोगनि यहि भरमाई॥
सयंघ रुप मेशी जब पहेरी बोली तब सुधि पाई॥ 5 ॥
ऐसी भगति हमारी सन्तो प्रभुता एह बड़ाई॥
आपन अन्नन और नहिं मानत तातै मूल गंवाई॥ 6 ॥
भणै रविदास उदास ताही तैं अब कछु करयो न जाई॥
आपो खोइया भगति होत है तब रहै अन्तर उरझाई॥ 7 ॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज जीवों को अहंकार का त्याग कर प्रभु का नाम सिमरन करने का उपदेश देते हैं।

अब मेरी बूडी रे भाई तातै चडी लोक बड़ाई।। टेक॥

''हे भाई! जिस समय जीव का अहंकार खत्म हो जाता है उस समय उसकी संसार में उपमा होने लगती है।''

अति अहंकार उर में सत रज तम ता मैं रह्यो उरझाई॥
क्रम बसि परयौ कछू न सूझै स्वामी नाम भुलाई॥ 1 ॥

''प्रभु के नाम के बिना जीव अहंकार के कारण सतोगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी बुद्धि में उलझा रहता है। कर्मों के वश में रहकर इस जीव को प्रभु के प्रति कोई समझ नहीं रहती। प्रभु की नाम रूपी नाव जो संसार रूपी भवसागर से पार कराने वाली है उसको जीव ने भुला दिया है।''

हम मानौ गुनी जोग सुनि जुगता हम महा पुरुख रे भाई॥
हम मानौ सूर सकल बिधि तियागी ममता नहीं मिटाई॥ 2 ॥

''यदि जीव अहंकार के कारण अपने आप को विद्वान, गुणी, योगी, अच्छी युक्ति को जानने वाला और महान् समझता है। जीव अहँकार के कारण ही अपने आप को वीर सभी विधियों का ज्ञाता और त्यागी समझता है,परन्तु इसकी ममता नहीं मिटती।''

हम मानै अखिल शुन्नि मन सोध्यो सब चेतनि सुधि पाई।
ज्ञान ध्यान सबही हम जान्यो बूझै काऊन सों जाई॥ 3 ॥

''जीव स्वयं को सबसे बड़ा शांत अवस्था में रहने वाला और मन पर नियंत्रण वाला मानता है कि मैंने चेतन का ज्ञान पाया है, पर इसने प्रभु को याद करने की समझ नहीं पाई। यह जीव अहंकार के कारण खुद को बड़ा ज्ञानवान और ध्यानी समझता है। इसने प्रभु को जाना ही नहीं। इस जीव को कौन जा कर समझाये?''

हम मानै परम प्रेम रस जान्यो, नौ बिधि भगति कराई॥
स्वांग देखि सबही जग डहक्यो फिर आपन पोर बँधाई॥ 4॥

''यह जीव अपने आप को प्रेम रस का ज्ञाता मानता है और कहता है कि मैंने नौ प्रकार की भक्ति की है। संसार रूपी झूठे स्वाँग को देखकर सारा संसार भ्रम से भरा हुआ और अपनी उपमा बढ़ाने में लगा रहा।''

सांग धे सांच न जान्यो लोगनि यहि भरमाई॥
सयंघ रुप मेशी जब पहिरी बोली तब सुधि पाई॥ 5॥

''संसार के झूठे स्वरूप को देखकर सच्चे प्रभु को नहीं जाना, यही भ्रम लोगों को हो रहा है। जैसे यदि भेड़ शेर का रूप धारण कर ले तो भी उसकी आवाज़ सुनकर उसको पहचाना जा सकता है कि यह शेर नहीं है। इसी तरह जब तक जीव प्रभु के नाम से नहीं जुड़ता, तब तक इसको प्रभु की प्राप्ति नहीं होती, चाहे जितने चाहे रूप बदल ले।''

ऐसी भगति हमारी सन्तो प्रभूता एह बड़ाई॥
आपन अन्नन और नहिं मानत तातै मूल गंवाई॥ 6॥

''हे संत जनों! प्रभु की भक्ति इतनी सच्ची है कि मैं उस प्रभु की सच्ची भक्तिकर उसका ही रूप हो गया हूँ। यह सब प्रभु की ही उपमा है, परन्तु जो जीव अपने आप को सबसे प्रिय मानता है और दूसरे लोगों को कुछ नहीं समझता, अहंकार के कारण वह अपना आप गँवा लेता है।''

भणै रविदास उदास ताही तैं अब कछु करयो न जाई॥
आपो खोइया भगति होत है तब रहै अन्तर उरझाई॥ 7॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''मैं संसार से उपराम हूं। मैं प्रभु की क्या उपमा करूँ? भाव उसकी महिमा अपरम्पार है। स्वयं को मिटाकर प्रभु की भक्ति होती है, जिसके पश्चात् जीव और प्रभु में अन्तर समाप्त हो जाता है, तथा जीव प्रभु का ही रूप हो जाता है।''

शब्द - 69

भाई रे! भ्रम भगति सुजानि। जो लों साँच नहीं पहिचान।। टेक॥
भ्रम नाचन भ्रम गायण भ्रम जप तप दान।
भ्रम सेवा भ्रम पूजा भ्रम सों पहिचान॥ 1॥
भ्रम खट कर्म सकल संहिता भ्रम गृहि बन जानि॥
भ्रम करि करि करम कीउ भ्रम की यह बानि॥ 2॥
भ्रम इंद्री निग्रह कीया भ्रम गुफा में बास॥
भ्रम तौ लौ जानिये करै सुन्न की आस॥ 3॥
भ्रम शुद्ध सरीर जो लौ भ्रम नांव बिनांव॥
भ्रम भनि रविदास तौ लौ जौ लौ चाहै ठांव॥ 4॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को प्रभु की भक्ति करने का उपदेश देते हैं। उस प्रभु की भक्ति के बिना सब जीव भ्रम-ग्रस्त भ्रमण कर रहें हैं।

भाई रे! भ्रम भगति सुजानि।
जो लों साँच नहीं पहिचान।। टेक॥

''हे भाई! भ्रम को त्याग कर प्रभु के उत्तम ज्ञान को तुम भक्ति के द्वारा जानो। जब तक जीव के हृदय में प्रभु की सच्ची भक्ति नहीं है, तब तक उसे प्रभु की पहचान नहीं हो सकती।''

भ्रम नाचन भ्रम गायण भ्रम जप तप दान।
भ्रम सेवा भ्रम पूजा भ्रम सों पहिचान॥ 1॥

''प्रभु के नाम के बिना नाचना, गाना, जप करना, तप करना और दान करना सब भ्रम है। प्रभु-प्रेम के बिना सेवा करनी, पूजा करनी यह सब भ्रम है। इस लिए हे भाई! तुम भ्रम की पहचान करो क्योंकि यह संसार भी एक भ्रम है।''

भ्रम खट कर्म सकल संहिता भ्रम गृहि बन जानि॥
भ्रम करि करि करम कीउ भ्रम की यह बानि॥ 2॥

''छः प्रकार के कर्म करना, वेदों शास्त्रों के सारे विधि विधान और गृहस्थ छोड़ कर जंगल में चले जाना यह सब भ्रम ही हैं। भ्रम वश किए गए सभी कर्म भ्रम ही है।''

भ्रम इंद्री निग्रह कीया भ्रम गुफा में बास॥
भ्रम तौ लौ जानिये करै सुन्न की आस॥ 3॥

''इन्द्रियों को वश में करना और गुफा में वास करना यह सारे ही भ्रम हैं। जब जीव सहजावस्था में पहुँच कर प्रभु की इच्छा करता है, तब वह संसार के झूठे भ्रम को जान लेता है।''

भ्रम शुद्ध सरीर जो लौ भ्रम नांव बिनांव॥
भ्रम भनि रविदास तौ लौ जौ लौ चाहै ठांव॥4॥

''प्रभु की सच्ची भक्ति के बिना शुद्ध शरीर रखना भी भ्रम है। प्रभु के नाम बिना कोई स्थान नहीं है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''जब तक जीव को प्रभु की प्राप्ति नहीं होती, तब तक भ्रम का नाश नहीं होता, चाहे जीव सारी दुनिया का भ्रमण कर ले।''

शब्द – 70

ज्यो तुम कारनि केसवे अंतर लिव लागी।
एक अनुपम अनुभवी किमि होइ बिभागी॥ टेक॥
एक अभिमानी चातृगा बिचरत जग माहीं।
जदपि जल पूरन मही कहूँ वा रुचि नाहीं॥ 1॥
जैसे कामी देखि कामिनी हिरदै सूल उपजाई॥
कोटि वेद बिधि उचरै बाकी बिथा न जाई॥ 2॥
जो जेहि चाहै सो मिलै आरति गति होई।
कहै रविदास यह गोप नाही जानै सब कोई॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज प्रभु प्रेम का वर्णन करते हैं कि,''जिस समय जीव की प्रभु से लगन लग जाती है, तब वह जीव प्रभु का रूप हो जाता है।

ज्यो तुम कारनि केसवे अंतर लिव लागी।
एक अनुपम अनुभवी किमि होइ बिभागी।। टेक॥

''हे प्रभु जी! जब से मेरे मन में आपके प्रेम की लगन लगी है, मैं आप में ही समा गया हूँ। एक आपके प्रेम का अनुभव भी अनुपम है जो बांटा नहीं जा सकता और न ही व्यक्त किया जा सकता है।''

एक अभिमानी चातृगा बिचरत जग माहीं।
जदपि जल पूरन मही कहूँ वा रुचि नाहीं॥ 1॥

''जैसे एक प्रेम अभिमानी पपीहा संसार में स्वांति बूंद की तलाश में

घूमता है, चाहे सारी धरती पानी से भरी हो, परन्तु उसकी रूचि स्वाति बूंद के बिना, किसी और पानी में नहीं होती, ऐसे ही प्रभु प्रेमी की रूचि केवल आप जी के नाम में ही है।''

जैसे कामी देखि कामिनी हिरदै सूल उपजाई॥
कोटि वेद बिधि उचरै बाकी बिथा न जाई॥ 2॥

''जैसे कामी पुरुष स्त्री को देखकर, शूल जैसी पीड़ा अनुभव करता है चाहे करोड़ों वैद, अनेक विधियों से उसका इलाज करें, परन्तु उसकी काम पीड़ा खत्म नहीं होती। ऐसे ही प्रभु के प्रेमी जीव को, प्रभु से एक पल के वियोग से भी, दु:ख अनुभव होता है।''

जो जेहि चाहै सो मिलै आरति गति होई।
कहै रविदास यह गोप नाही जानै सब कोई॥ 3॥

''जो जीव प्रभु से प्यार करता है, उसको प्रभु की प्राप्ति होती है। आवश्यकता केवल प्रभु की शरण में जाने की है। सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि यह बात छुपी हुई नहीं है, हर कोई इस बात को जानता है कि जो जीव प्रभु से सच्चा प्यार करता है, उसको प्रभु की प्राप्ति हो जाती है।''

शब्द - 71

आयौं हो आयौं देव तुम सरना।
जानि कृपा कीजै आपनौ जना॥ टेक॥
त्रिबिधि जोनि बास जम की अगम त्रास
तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिरयौ॥
ममिता अंह विखै मदि मातौं
ऐह सुख कबहुं न दूतुर तिरौं॥ 1॥
तुम्हरे नांव बिसास छाड़ी है आन की आस
संसार धरम मेरे मन न धीजै॥
रविदास दास की सेवा मानि हो देवाधिदेव
पतित पावन नाम प्रगट कीजै॥ 2॥

इस शब्द द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''जो जीव प्रभु की शरण में आ जाता है, प्रभु की कृपा से वह जीव जीवन मुक्त हो जाता है।''

आयौं हो आयौं देव तुम सरना।
जानि कृपा कीजै आपनौ जना॥ टेक॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज विनम्रता से प्रभु के आगे निवेदन करते हैं कि,"हे देवों के देव प्रभु जी! मैं आप की शरण में आया हूं। आप मुझे अपना दास समझकर मुझ पर कृपा कीजिए, अपने दर्शन दीजिए।"

त्रिबिधि जोनि बास जम की अगम त्रास
तुम्हरे भजन बिन भ्रमत फिरयौ।

"प्रभु जी! आपके सिमरन के बिना यह जीव तीन योनियों (आकाश, धरती, पाताल) में निवास कर और जमों के असहनीय कष्ट सहता है और अनेक दुखों में भटक रहा है।"

ममिता अंह विखै मदि मातौं
ऐह सुख कबहुं न दूतुर तिरौं॥ 1॥

"प्रभु के नाम के बिना जीव ममता, अहंकार, विषय-वासनाओं में मग्न रहता है। विषयों के सुख में रह कर जीव पाँच विकारों रूपी दूतों पर विजय हासिल नहीं कर सकता।"

तुम्हरे नांव बिसास छाड़ी है आन की आस
संसार धरम मेरे मन न धीजै॥

"प्रभु जी! आप के नाम पर विश्वास कर मैंने अन्य सभी इच्छाए छोड़ दी हैं क्योंकि आपके नाम के बिना, मेरा संसार के झूठे धर्म कर्म में मन नहीं लगता।"

रविदास दास की सेवा मानि हो देवाधिदेव
पतित पावन नाम प्रगट कीजै॥ 2॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज, प्रभु से विनम्र भाव से निवेदन करते हैं कि, "हे प्रभु जी! अपने दास की सेवा स्वीकार करो और पापियों को पवित्र करने वाले नाम की बख्शिश करो जी।"

शब्द - 72

भाई रे राम कहां है मोहि बतावो॥
सत राम ता के निकट न आवो॥ टेक॥
राम कहत सब जगत भुलाना॥ सो यहु राम न होई॥

करम अकरम करुनामय केसो ॥ करता नाव सु कोई ॥ 1 ॥
जा रामहि सबै जग जानै ॥ भ्रमि भूलो रे भाई ॥
आप आप थै कोई न जाणै ॥ कहै कौन सो जाई ॥ 2 ॥
सत तन लोभ परस जीय तन मन ॥ गुन परसत नहीं जाई ॥
अलिख नाम जा कौ ठौर न कतहूँ ॥ क्यूं न कहौ समुझाई ॥ 3 ॥
भणै रविदास उदास ताही तै ॥ करता कौ हैं भाई ॥
केवल करता एक सही करि ॥ सति राम तिहि ठाई ॥ 4 ॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज जीवों को सर्वव्यापक राम का नाम सिमरन करने का उपदेश देते हैं।

भाई रे राम कहां है मोहि बतावो ॥
सत राम ता के निकट न आवो ॥ टेक ॥

"हे भई! तुम राम नाम का उच्चारण तो करते हो, पर मुझे बताओ कि वे राम कहाँ हैं? सर्वव्याप्क सच्चे राम के तो तुम निकट भी नहीं आ रहे, भाव तुम अज्ञानता के कारण भटक रहे हो।"

राम कहत सब जगत भुलाना ॥ सो यहु राम न होई ॥
करम अकरम करुनामय केसो ॥ करता नाव सु कोई ॥ 1 ॥

"सच्चे सर्वव्यापक राम को भुलाकर, राम राम करता हुआ, सारा संसार भूला हुआ है, पर वह सर्वव्याप्क राम नहीं है। मेरा राम दशरथ का पुत्र राम नहीं है। सर्वव्याप्क राम तो, सारे संसार के कर्मों को करने वाला और दयालु प्रभु सारे संसार का कर्णधार है। उसका कोई विशेष नाम नहीं है, उसको अनेकों नामों से जाना जाता है।"

जा रामहि सबै जग जानै ॥ भ्रमि भूलो रे भाई ॥
आप आप थै कोई न जाणै ॥ कहै कौन सो जाई ॥ 2 ॥

"जिस सर्वव्यापी राम को सारा संसार जानता है, हे भाई! तूने झूठे भ्रम में उसे भुला दिया है। भाई अपने आप ही उस प्रभु को कोई नहीं जान सकता। तुम्हें यह बात कौन समझाए?"

सत तन लोभ परस जीय तन मन ॥ गुन परसत नहीं जाई ॥
अलिख नाम जा कौ ठौर न कतहूँ ॥ क्यूं न कहौ समुझाई ॥ 3 ॥

"वह प्रभु सतोगुण, तमोगुण और रजोगुण तीनों पर तन,मन और लोभ से मुक्त है और उसके गुणों को व्यक्त नहीं किया जा सकता। राम का नाम सर्वज्ञ है,

उसकी महिमा लेखन रहित है। उसके रहने का कोई एक ठिकाना नहीं है। हे भाई! तुम्हें इस बात की समझ क्यों नहीं आती?''

भणै रविदास उदास ताही तै॥ करता कौ हैं भाई॥
केवल करता एक सही करि॥ सति राम तिहि ठाई॥ 4॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''मेरा मन संसार से उपराम होकर, कर्णधार प्रभु के नाम से जुड़ा है और वह केवल सृष्टि का करता, सदैव रहने वाला, सर्व-व्यापक प्रभु कण-कण में है।''

शब्द - 73

ऐसो कुछु अनुभौ कहत न आवै॥
साहिब मिलै तो को बिगरावै॥ टेक॥
सब में हरि है हरि में सब है हरि अपनो जिन जाना॥
साखी नहीं और कोई दूसर जाननहार सयाना॥ 1॥
बाजीगर सों रचि रहीये बाजी का मरम न जाना॥
बाजी झूठ साँच बाजीगर जाना मन पतियाना॥ 2॥
मन थिर होइ तो कोई न सूझै जानै जाननहारा ॥
कहै रविदास बिमल विवेक सुख सहिज सरूप संभारा॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज सब जीवों को हरि के नाम का सिमरन करने का उपदेश देते हैं कि,''उस हरि के मिलाप के आलौकिक अनुभव का वर्णन नहीं किया जा सकता। जीव को हरि रूपी बाज़ीगर से प्रेम करना चाहिए।''

ऐसो कुछु अनुभौ कहत न आवै॥
साहिब मिलै तो को बिगरावै॥ टेक॥

''प्रभु के मिलाप के परम आनन्द का वर्णन नहीं किया जा सकता। जब जीव को हरि की प्राप्ति हो जाती है, तब कोई उसे हरि से अलग नहीं कर सकता।''

सब में हरि है हरि में सब है, हरि अपनो जिन जाना॥
साखी नहीं और कोई दूसर जाननहार सयाना॥ 1॥

''सारे जीवों में हरि है और सब जीव हरि में विद्यमान्‌ हैं। इस भेद को केवल उसने ही जाना है जिसने हरि को जान लिया है। उस हरि के समान कोई दूसरा और नहीं है। उस हरि को समझने वाला इस संसार में उत्तम है।''

बाजीगर सों रचि रहीये बाजी का मरम न जाना ॥
बाजी झूठ साँच बाजीगर जाना मन पतियाना ॥ 2 ॥

"जैसे कोई जीव बाज़ीगर की बाज़ी को देखकर उस में मग्न हो जाता है परन्तु बाजीगर के खेल के भेद को नहीं जान सकता। इस प्रकार ही हरि रूपी बाज़ीगर ने संसार का खेल रचाया है, यह झूठा है परन्तु वह हरि बाज़ीगर सच्चा है। जिस जीव को इस बात का ज्ञान हो गया है कि यह माया झूठी है और हरि सच है, उस जीव का मन हरि में विलीन हो जाता है।"

मन थिर होइ तो कोई न सूझै जानै जाननहारा ॥
कहै रविदास बिमल विवेक सुख सहिज सरूप संभारा ॥ 3 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "जिस जीव का मन प्रभु के नाम में स्थिर होकर लीन हो गया है, उस को और कुछ नहीं भाता और वह कण-कण के ज्ञाता प्रभु को जान लेता है। उस जीव को निर्लेप प्रभु विचार सच्चे सुख और सहज स्वरूप की प्राप्ति हो जाती है।"

शब्द - 74

पंडत! अखिल खिलै नही का कहि गाऊं कोई न कहै समुझाई ॥
अबरन बरन रूप नहीं जा के सो कहाँ लयो लायि समाई ॥ टेक ॥
चंद सूर नहिं राति दिवस नहिं धरनि आकास न भाई ॥
करम अकरम नहीं सुभ असुभ नही का कहि देहु बड़ाई ॥ 1 ॥
सीत न ऊसन वायु नहीं सरवत काम कुटिल नहीं होई ॥
जोग न भोग रोग नहीं जा कै कहों नांव सति सोई ॥ 2 ॥
निरंजन निराकार निरलेपहि निरबिकार निरासी ॥
काम कुटिलता ता ही कहि गावै हर हर आवै हांसी ॥ 3 ॥
गगन धूर धूप नहिं जा के पवन पूर नहीं पाणी ॥
गुन बिगुन कहियत नहीं जा कै कहो तुम बात सयानी ॥ 4 ॥
याही सौ तुम जोग कहत हौ जब लग आस की पासी ॥
छूटे तबही जब मिलै एक ही भणै रविदास उदासी ॥ 5 ॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "प्रभु सर्वव्यापक है और एक है। उसमें कोई भिन्न-भेद नहीं है। इस लिए सांसारिक

लोगों को जाति-पाति, भ्रम, कर्म-काण्ड, वर्ण-अवर्ण के चक्र से मुक्त होकर उस प्रभु का सिमरन करना चाहिए।''

पंडत! अखिल खिलै नही का कहि गाऊं कोई न कहै समुझाई॥
अबरन बरन रूप नहीं जा के सो कहाँ लयो लायि समाई॥ टेक॥

''हे भाई! कोई भी पंडित यह बात समझाकर नहीं बताता कि सर्वव्यापक प्रभु भिन्न-भिन्न नहीं होता भाव वह सर्वज्ञ है और सब जीवों में एक से अनेक रूप धारण कर सारे संसार में विद्यमान् है। उस प्रभु का कोई अवर्ण नहीं है, कोई वर्ण नहीं है, कोई रूप नहीं है और वह कहाँ समाया हुआ है?''

चंद सूर नहिं राति दिवस नहिं धरनि आकास न भाई॥
करम अकरम नहीं सुभ असुभ नही का कहि देहु बड़ाई॥ 1॥

''वह प्रभु न चन्द्रमा है, न सूर्य, न ही रात, न ही दिन, न ही धरती और न आकाश है। वह कर्म नहीं, अकर्म नहीं, शुभ नहीं, अशुभ नहीं। हे भाई! मैं प्रभु की उपमा कैसे करूँ?''

सीत न ऊसन वायु नहीं सरवत काम कुटिल नहीं होई॥
जोग न भोग रोग नहीं जा कै कहों नांव सति सोई॥ 2॥

''वह प्रभु न ठंडी न गर्म न वायु न पानी है और नीच कर्म भी नहीं है। प्रभु योग भोग क्रिया और सभी प्रकार के रोगों से मुक्त है क्योंकि उस प्रभु का नाम सच्चा है।''

निरंजन निराकार निरलेपहि निरबिकार निरासी॥
काम कुटिलता ता ही कहि गावै हर हर आवै हांसी॥ 3॥

''प्रभु माया रहित, आकार रहित, निरलेप, विकार रहित, आशा रहित निरंतर रहने वाला है। कामी और कुटिल जीव सच्ची प्रीति के बिना उसका नाम गाते हैं, जिस पर मुझे बार-बार हँसी आती है क्योंकि ऐसे जीव बाहरी दिखावा ही करते हैं।''

गगन धूर धूप नहिं जा के पवन पूर नहीं पाणी॥
गुन बिगुन कहियत नहीं जा कै कहो तुम बात सयानी॥ 4॥

''प्रभु को केवल आकाश, धूल और धूप नहीं कहा जा सकता और न ही उसको वायु और जल कहा जा सकता है। उस प्रभु को केवल निर्गुण और सगुण भी नहीं कहा जा सकता। यही बात सर्वोत्तम है।''

याही सौ तुम जोग कहत हौ जब लग आस की पासी॥

छूटे तबही जब मिलै एक ही भणै रविदास उदासी॥ 5॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज कहते हैं कि,''हे पंडित! जिस उम्मीद से तुम बँधे हुए हो तुम उन बाहरी आडम्बरों को योग कहते हो, इस कारण तुम प्रभु के स्वरूप को नहीं समझ सकते। जीव इन बाहरी आडम्बरों से तब मुक्त होता है, जब वह केवल एक प्रभु को प्राप्त कर, संसार में रहते हुए उपराम हो जाता है।''

शब्द – 75

नरहरि चंचल है मति मोरी कैसे भगति करूँ मैं तोरी॥ टेक॥
तूँ मोहिं देखै मैं तोहि देखू प्रीति परस्पर होई॥ 1॥
तूँ मोहिं देखै हऊं तोहि न देखूँ ऐहु मति सब बुधि खोई॥ 2॥
सब घट अंतर रमसि निरंतर मैं देखत हूँ नहीं जाना॥
गुन सब तोर मोरि सब औगुन कृित उपकार न माना॥ 3॥
मैं तो तोरि मोरी असमझिस कैसे करि निसतारा॥
कहि रविदास माधो करुणामय जै जै जगत अधारा॥ 4॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज जीव को पावन उपदेश देते हैं कि,''जीव अज्ञानता वाली बुद्धि को त्याग कर प्रभु की सच्ची भक्ति करता है और प्रभु का ही रूप हो जाता है।''

नरहरि चंचल है मति मोरी कैसे भगति करूँ मैं तोरी।। टेक॥

''हे प्रभु जी! आप को भूले हुए जीव की मति चंचल है, इस लिए आप ही बताइए कि जीव आप की भक्ति कैसे करे, भाव जब तक मेरी मति चंचल थी, तब तक मैं आप की भक्ति नहीं कर सकता था।''

तूँ मोहिं देखै मैं तोहि देखूँ प्रीति परस्पर होई॥ 1॥

''हे प्रभु जी! अब मैंने चंचल मति को त्याग दिया है और आप जी की सच्ची भक्ति करता हूँ। मुझे अब ऐसा अनुभव हो रहा है जैसे आप मुझे देख रहे है और मैं भी आपके दर्शन कर रहा हूँ। अब हमारी परस्पर, आपकी और मेरी, सच्ची प्रीति हो गई है।''

तूँ मोहिं देखै हऊं तोहि न देखूँ ऐहु मति सब बुधि खोई॥ 2॥

''मैंने यह विचार अपने मन से निकाल दिया है कि आप मुझे देख रहे है और मैं आप के दर्शन नहीं कर रहा हूँ। भाव कि तुम्हारी और मेरी प्रीति अटूट है।''

सब घट अंतर रमसि निरंतर मैं देखत हूँ नहीं जाना॥

''हे प्रभु जी! आप सभी प्राणियों में निरंतर निवास कर रहे हो। मैं इस सच को समझकर भी नहीं समझ सका।''

गुन सब तोर मोरि सब औगुन कि्त उपकार न माना॥ 3॥

''हे प्रभु जी! आप सर्व गुणी हो, मुझ में सब अवगुण हैं क्योंकि मैंने आपके उपकार को नहीं जाना।''

मैं तो तोरि मोरी असमझिस कैसे करि निसतारा॥

''हे प्रभु! जब तक, मैं आपको समझने से अनभिज्ञ था, तब तक मैं मुक्त कैसे हो सकता था?''

कहि रविदास माधो करुणामय जै जै जगत अधारा॥ 4॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे सर्वव्यापी प्रभु! आप कृपावान हो, आप सारे जगत का आधार स्वरूप हो और आप के नाम से जुड़ कर जीव मुक्त होते हैं।''

शब्द - 76

तब राम नाम कहि गावैगा॥
रारंकार रहित सभहिन में अंतरि मेल मिलावैगा॥ टेक॥
लोहा कंचन सम कर देखै भेद अभेद समावैगा॥
जो सुख होवै पारस के परसे सो सुख वा को आवैगा॥ 1॥
गुर प्रसादि भई अनुभै मति विष अमि्त सम ध्यावैगा॥ 2॥
कहै रविदास मेटि आपा पर तब वा ठौरहि पावैगा॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज प्राणियों को यह पावन उपदेश देते हैं कि जीव प्रभु से सच्ची प्रीति कर प्रभु का नाम सिमरन कर उसका ही रूप हो जाता है।

तब राम नाम कहि गावैगा॥
रारंकार रहित सभहिन में अंतरि मेल मिलावैगा॥ टेक॥

''जब जीव एकाग्र होकर, प्रभु का नाम गाएगा, तब जीव घट-घट में उपस्थित अकार रहित प्रभु को, अपने भीतर ही मिल लेगा।''

लोहा कंचन सम कर देखै भेद अभेद समावैगा॥

''प्रभु की कृपा से लोहे व सोने को समान जानने की स्थिति में पहुंच कर प्रभु अभेद के भेद को पाकर उसी में विलीन हो जाएगा।''

जो सुख होवै पारस के परसे सो सुख वा को आवैगा॥ 1॥

''जैसे जो सुख और आनन्द लोहे को पारस के साथ स्पर्श होने से मिलता है, भाव लोहा स्वर्ण बन जाता, ऐसे ही जीव को प्रभु की प्राप्ति से परमानंद मिलता है, जीव प्रभु का रूप हो जाता है।''

गुर प्रसादि भई अनुभै मति विष अमृित सम ध्यावैगा॥ 2॥

''गुरु की कृपा से जीव की मति भय से मुक्त हो जाती है। जिसके फलस्वरूप विष और अमृत एक समान हो जाते है।''

कहै रविदास मेटि आपा पर तब वा ठौरहि पावैगा॥ 3॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं,''जब जीव अंह भाव मिटा लेता है, उस समय प्रभु के दरबार में स्थान प्राप्त कर लेता है, भाव प्रभु का ही रूप हो जाता है।''

शब्द - 77

संतो अनिन भगति यह नाहीं॥
जब लग सत रज तम तीनो गुन बियापत है या माहीं॥ टेक॥
सोई आन अंतर करै हरि सों अपमारग को आनै।
काम क्रोध मद लोभ मोह की पल पल पूजा ठानै॥ 1॥
सकित सनेह इष्ट अंग लावै अस्थल अस्थल खेलै।
जो कछु मिलै आन अखत जियो सुत दारा सिर मेलै॥ 2॥
हरिजन हरि बिनु और न जानै तजै आन सभ तियागी।
कहि रविदास सोई जन निर्मल निसिदिन निज अनुरागी॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरु रविदास जी महाराज जीवों को प्रभु के समक्ष समर्पित होकर सच्ची भक्ति करने का उपदेश देते हैं।

संतो अनिन भगति यह नाहीं॥
जब लग सत रज तम तीनो गुन बियापत है या माहीं॥ टेक॥

''हे संतों! यह प्रभु की अनन्य भक्ति नहीं है, जब तक जीव में सतो, रजो, तमो तीन गुण, विद्यमान है।''

सोई आन अंतर करै हरि सों अपमारग को आनै।
काम क्रोध मद लोभ मोह की पल पल पूजा ठानै॥ 1॥

''संसार की झूठी माया ही जीव को प्रभु से दूर विपरीत दिशा में ले जा

रही है। जिस कारण जीव काम, क्रोध, अंहकार, लोभ और मोह में फँसा हुआ पल-पल माया की पूजा करके प्रभु से दूर जा रहा है।''

सकित सनेह इष्ट अंग लावै अस्थल अस्थल खेलै।
जो कछु मिलै आन अखत जियो सुत दारा सिर मेलै॥ 2॥

''प्रभु का प्रेमी भक्त सर्व शक्तिमान प्रभु को अपने हृदय में बसा लेता है और खण्डों ब्रह्माण्डों में जा कर आनन्द लेता है। प्रभु के नाम के बिना जीव को संसार में जो कुछ प्राप्त होता है। वह पुत्र और स्त्री भाव परिवार के काम आता है। अंत समय में जीव के साथ केवल सिमरन ही जाएगा।''

हरिजन हरि बिनु और न जानै तजै आन सभ तियागी।
कहि रविदास सोई जन निर्मल निसिदिन निज अनुरागी॥ 3॥

''प्रभु का दास किसी भी वस्तु को प्रभु के समान नही समझता और सब पदार्थों को त्याग देता है। सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''वही जीव माया मुक्त है, जो दिन रात अर्थात् श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करता है और उसके नाम में लीन रहता है।''

शब्द - 78

भक्ति ऐसी सुनहु रे भाई।
आई भगति तऊ गई बडाई॥ टेक॥
कहा भयो नाचे अरु गाये कहा भयो तप कीन्हे ।
कहा भयो जो चरन पखारे जौ लो तत्त नहीं चीन्हें॥ 1॥
कहा भयो जे मूंड मुंडायौ बहु तीरथ ब्रत कीन्हे ।
स्वामी दास भगत अरु सेवक काहू परम तत्त नहीं चीन्हें॥ 2॥
कहै रविदास तेरी भगति दूर है भाग बडै सो पावै।
तजि अभिमान मेटि आपा पर पिपलक ह्वै चुनि खावै॥ 3॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज जीवों को प्रभु भक्ति करने का पावन उपदेश देते हैं कि,''प्रभु की भक्ति उस समय जीवन में आती है जब जीव के मन में से लोक उपमा और झूठे अंहकार का नाश हो जाता है।''

भक्ति ऐसी सुनहु रे भाई।
आई भगति तऊ गई बडाई॥ टेक॥

''हे भाई! सुनो, प्रभु की भक्ति ऐसी पवित्र है जिस के आने से जीव के मन से अहंकार और उपमा का नाश हो जाता है।''

कहा भयो नाचे अरु गाये कहा भयो तप कीन्हे ।
कहा भयो जो चरन पखारे जौ लो तत्त नहीं चीन्हें॥ 1॥

''बाह्य आडम्बरों के कारण कुछ हासिल नहीं हो सकता। चाहे जीव नाचे, गाये, तप करे और देवी देवताओं के चरण धोये, यह सब करने से कोई लाभ नहीं होता, जब तक कोई जीव परम तत्व को नहीं जानता, भाव सच्ची प्रेम भक्ति नहीं करता।''

कहा भयो जे मूंड मुंडायौ बहु तीरथ ब्रत कीन्हे ।
स्वामी दास भगत अरु सेवक काहू परम तत्त नहीं चीन्हें॥ 2॥

''चाहे जीव सिर मुंडवा ले, अनेको तीर्थ स्नान करे और व्रत रखे, इस से प्रभु की प्राप्ति नहीं हो सकती। स्वामी और दास भक्ति (गुरु और शिष्य भक्ति करने) का भी कोई लाभ नहीं जब तक यह जीव परम तत्त्व प्रभु को नहीं जानता।''

कहै रविदास तेरी भगति दूर है भाग बडै सो पावै।
तजि अभिमान मेटि आपा पर पिपलक ह्वै चुनि खावै॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''प्रभु जी आपकी भक्ति दूर है। जिस जीव के बड़े भाग्य हैं, वही जीव आपकी भक्ति करता है। जिस प्रकार अपने झूठे अंहकार को त्याग कर चींटी रेत में मिली हुई चीनी को चुन-चुन कर खा लेती है, ऐसे ही जो जीव इस संसार के झूठे अंहकार को त्याग कर विनम्रता ग्रहण कर प्रभु की भक्ति करता है, वह परमानन्द की प्राप्ति कर लेता है।''

शब्द - 79

अब कछु मरम बिचारा हो हरि।
आदि अंत औसान राम बिन कोय न करै निसतारा हो हरि॥ टेक॥
जल ते पंक पंक ते अमृतजल जलहि सुध होइ जैसे।
ऐसे भरम करम जीय बांधियो छूटैं तुम बिन कैसे हो हरि॥ 1॥
जप तप बिधी निषेध नाम करूणामै पाप पुन्न दोऊ माया।
ऐसे मोहित मन गति बिमुख धन जनम जनम डँहकाया हो हरि॥ 2॥
ताड़न छेदन त्राछन खेदन बहु बिधि करि ले उपाई।
लुणखड़ी संजोग बिना जैसे कनिक कलंक न जाई हो हरि॥ 3॥
कहि रविदास उदास ताही तैं कहा उपाय अब कीजै।
भै बूड़त भैभीत भगति जन करि अवलंबन दीजै हो हरि॥ 4॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को उपदेश देते हैं कि,''हरि के नाम के बिना जीव की मुक्ति नहीं हो सकती। हरि के नाम का सहारा लेकर जीव इस संसार रूपी भवसागर को पार कर लेता है।''

अब कछु मरम बिचारा हो हरि।
आदि अंत औसान राम बिन कोय न करै निसतारा हो हरि॥ टेक॥

''हे हरि जी! आप जी का सिमरन कर मैंने अब वास्तविक रहस्य अर्थात् ज्ञान के भेद को समझ लिया है कि सृष्टि के आदि से लेकर अंत तक आप जी के बिना प्राणियों को कोई भी मुक्ति नहीं दे सकता।''

जल ते पंक पंक ते अमृितजल जलहि सुध होइ जैसे।
ऐसे भरम करम जीय बांधियो छूटै तुम बिन कैसे हो हरि॥ 1॥

''जैसे पानी में कीचड़ होता है और कीचड़ में कमल के रूप में अमृत पैदा होता है इस प्रकार पानी ही पानी को शुद्ध करता है। कीचड़ में रह कर कमल कीचड़ से निर्लेप रहता है, ऐसे ही जीव कर्म और भ्रम के बंधन में बंधा हुआ है। हे प्रभु यह जीव आप के बिना इन झूठे बंधनों से कैसे मुक्त हो सकता है? केवल आप की कृपा से ही जीव झूठे बंधनो से मुक्त हो सकता है।''

जप तप बिधी निषेध नाम करूणामै पाप पुन्न दोऊ माया।
ऐसे मोहित मन गति बिमुख धन जनम जनम डँहकाया हो हरि॥ 2॥

''जप करना, तप करना, विधि के द्वारा वर्जित पाप-कर्म और पाप-पुण्य दोनों ही, हरि जी आप के नाम के बिना माया के रूप हैं। इन झूठे आडम्बरों के कारण जीव आप के नाम धन से विमुख होकर, जन्म-जन्मान्तर तक संसार के आवागमन के चक्र में पड़ा रहता है।''

ताड़न छेदन त्राछन खेदन बहु बिधि करि ले उपाई।
लुणखड़ी संजोग बिना जैसे कनिक कलंक न जाई हो हरि॥ 3॥

''चाहे सोने की कालिख दूर करने के लिए सोने को जितना मर्जी तपाया, छेदा, तराशा और खदेड़ा जाए, परन्तु सोने की कालख नौशादर के बिना नहीं उतरती। ऐसे ही जीव हरि के नाम के बिना जितनी चाहे योग-साधना और तप करे परन्तु जीव के अंतर्मन से कालख नहीं जाती।''

कहि रविदास उदास ताही तैं कहा उपाय अब कीजै।
भै बूड़त भैभीत भगति जन करि अवलंबन दीजै हो हरि॥ 4॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मैं इस कारण उदास हूँ कि

माया के प्रभाव से बचने के लिए अब जीव क्या उपाय (साधन) करे? हे हरि जी! संसार के भयपूर्ण भवसागर में डूब रहे जीव को आप कृपा कर अपना सहारा देकर भव-सागर से पार करो जी।''

शब्द - 80

नरहरि प्रगटसि ना हो प्रगटसि ना हो। दीना नाथ दयाल॥ टेक॥
जनमत ही ते हो बिगरान। अब कछू बूजत बहुरि सियान॥ 1॥
परिवार बिमुख मोहि लाग। कछु समुझि परत नहिं जानि॥ 2॥
यह भौ बिदेस कलि काल। हम आन परियो जमजाल॥ 3॥
कबहुक तोर भरोस । जो मैं न कहुँ तो मोर दोस॥ 4॥
अस कहियत हू मैं अजान। प्रभु तुम सर्वज्ञ सयान॥ 5॥
सुत सेवक सदा असोच। ठाकर पितहिं सब सोच॥ 6॥
रविदास बिनवै कर जोरि। अहो सुआमी तुम मोहिं न छोरि॥ 7॥
सुतौ पुरबला अकरम मोर। बलि जाऊँ करौ निज कोर॥ 8॥

इस शब्द द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को प्रभु के समक्ष विनम्रता से प्रार्थना करने का ढंग बताते है कि,''प्रभु के दर्शनों की चाह में जीव प्रभु के समक्ष दर्शन देने के लिए निवेदन करता है।''

नरहरि प्रगटसि ना हो प्रगटसि ना हो
दीना नाथ दयाल॥ टेक॥

''हे प्रभु जी! आप प्रकट हो कर मुझे दर्शन नहीं दे रहे हो। आप कृपा करके दीन-बन्धु मुझे दर्शन दीजिए।''

जनमत ही ते हो बिगरान ।
अब कछू बूजत बहुरि सियान ॥1॥

''प्रभु जी संसार में आकर जीव जन्म से ही आप से बिछुड़ जाता है। इस बात की समझ बुद्धिमान जीवों को ही आती है।''

परिवार बिमुख मोहि लाग।
कछु समुझि परत नहिं जानि॥ 2॥

''प्रभु के नाम में लीन जीव को संसार रूपी परिवार विमुख प्रतीत होता है। जब तक जीव अज्ञानता रूपी निद्रा से नहीं जागता तब तक जीव को इस बात की समझ नहीं आती।''

यह भौ बिदेस कलि काल।
हम आन परियो जमजाल॥ 3॥

''जीव अपने निज घर को भूल, मृतलोक (विदेश) में काल के अधीन होकर कलयुग में बुरे कर्म करता है, इसी लिए यमदूतों के जंजाल में फंस जाता है।''

कबहुक तोर भरोस।
जो मैं न कहुँ तो मोर दोस॥ 4॥

''प्रभु जी! मुझे हर समय आप पर दृढ़ विश्वास है। अगर जीव आपका नाम सिमरन नहीं करता तो यह उसका ही दोष है।''

अस कहियत हू मैं अजान।
अहो प्रभु तुम सर्वज्ञ सयान॥ 5॥

''प्रभु जी! माया के जाल में फंसा हुआ बेसमझ जीव आप की महिमा नहीं कह सकता और न ही आपके बारे में जान सकता है। प्रभु जी आप सबसे श्रेष्ठ, सर्वव्याप्क व अन्तर्यामी हो।''

सुत सेवक सदा असोच।
ठाकर पितहिं सब सोच॥ 6॥

''जैसे पिता के होते हुए पुत्र व स्वामी के होते हुए दास चिंता मुक्त रहता है क्योंकि पिता को हर समय पुत्र की तथा स्वामी को दास की चिंता रहती है,उसी प्रकार प्रभु का नाम सिमरन करने वाले दास सदैव चिंता से मुक्त होते हैं क्योंकि उनकी चिंता स्वयं प्रभु करते हैं।''

रविदास बिनवै कर जोरि।
अहो सुआमी तुम मोहिं न छोरि॥ 7॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज विनम्रता से प्रभु के समक्ष हाथ जोड़कर विनती करते है कि, ''हे स्वामी, प्रभु जी! आप मुझे कभी मत छोड़ना, हम पर कृपा करो जी।''

सुतौ पुरबला अकरम मोर।
बलि जाऊँ करौ जिन कोर॥ 8॥

''प्रभु जी, जीव पिछले जन्म में किए हुए बुरे कर्मों के कारण, आप से बिछुड़ा हुआ था। मैं आप पर बलिहार जाता हूँ। आप मेरे दोषों की तरफ ध्यान न दो जी, मुझे अपना सहारा देकर अपना नाम जपाओ जी।''

शब्द - 81

ज्यो तुम कारन केसवे लालच जिव लागा।
निकट नाथ प्रापत नहीं मति मंद अभागा॥ टेक॥
सागर सलिल सरोदिका जल थल अधि काई॥
स्वाती बूंद की आस है पिउ पियास न जाई॥ 1॥
जो रे सनेही चाहीए चितवत हो दूरी।
पंगुल फल न पहुँच ही कछु साध न पूरी॥ 2॥
कहै रविदास अकथ कथा उपनिषद् सुनीजै।
जस तूँ तस तूँ ही कस उपमा दीजै॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज प्रभु के प्रेम में मग्न जीव की अवस्था का वर्णन करते हैं कि,''प्रभु प्रेमी जीव को प्रभु के दर्शन करने से सच्चा सुख मिलता है। प्रभु के गुणों का वर्णन नहीं किया जा सकता।''

ज्यो तुम कारन केसवे लालच जिव लागा।
निकट नाथ प्रापत नहीं मति मंद अभागा॥ टेक॥

''प्रभु जी आप की प्राप्ति के लिए जीव को दुर्लभ जन्म मिला है परन्तु जीव को संसार में झूठा लालच लगा हुआ है, जिस कारण ऐसे खोटे मन वाले अभागे जीव को, अपने भीतर विद्यमान् प्रभु की प्राप्ति नहीं हो रही।''

सागर सलिल सरोदिका जल थल अधिकाई॥
स्वाती बूंद की आस है पिउ पियास न जाई॥ 1॥

''संसार में सागर, तालाब, सरोवर और जल के बहुत से स्त्रोत हैं परन्तु पपीहे को केवल स्वाति बूंद की अभिलाषा है। स्वाति बूंद के बिना पपीहे की किसी और जल से प्यास नहीं मिटती। इस प्रकार ही प्रभु प्रेमी जीव की प्यास, केवल प्रभु के दर्शन करने से ही मिटती है।''

जो रे सनेही चाहीए चितवत हो दूरी।
पंगुल फल न पहुँच ही कछु साध न पूरी॥ 2॥

''जो सच्चा प्रेम जीव को प्रभु के साथ करना चाहिए था, वह प्रेम जीव के मन से बहुत दूर है भाव वह प्रेम जीव के अंदर नहीं है। इस लिए जीव को प्रभु की प्राप्ति नहीं होती। जैसे अपंग जीव वृक्ष पर लगे हुए फल तक नहीं पहुँच सकता, क्योंकि उसके पास साधन नहीं है। केवल फल को दूर से देख ही सकता है, ऐसे ही जीव सच्ची प्रीति के बिना, प्रभु को प्राप्त नहीं कर सकता और जीव की आशा पूरी नहीं होती।''

कहै रविदास अकथ कथा उपनिषद् सुनीजै।
जस तूँ तस तूँ ही कस उपमा दीजै॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''प्रभु की कथा अकथनीय है चाहे जीव जितने भी उपनिषद सुन ले, परन्तु प्रभु जी आप जैसे हो, वैसे ही रहोगे। सांसारिक जीव आप की क्या उपमा कर सकते हैं। भाव आपकी उपमा नहीं की जा सकती।''

शब्द - 82

गोबिंदे भौजल बियाधि अपारा।
ता तै कछु सूझत वार न पारा॥ टेक॥
अगम ग्रेह दूर दूरन्तर बोलि भरोस दीजै।
तेरी भगति परोहन सन्त अरोहन मोहिं चढ़ाई किन लीजै॥ 1॥
लोह की नाव पखानन बोझी सुकिरित भाव बिहीना।
लोभ तरंग मोह भयों गालौ मन मीन भयो जन लीना॥ 2॥
तुम दीना नाथ दयाल दमोदर कीनै हेत बिलंब कीजै।
रविदास दास सन्त चरन मोहि अवलंबन दीजै॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज इस शब्द में पावन उपदेश देते हैं कि, ''संसार रूपी समुद्र दुखों से भरा हुआ है, जिसमें सन्त ही जीव को प्रभु का नाम जपा कर, इस संसार रूपी समुद्र से पार कर सकते हैं।''

गोबिंदे भौजल बियाधि अपारा।
ता तै कछु सूझत वार न पारा॥ टेक॥

''हे सृष्टि के मालिक प्रभु जी! संसार रूपी भवसागर अनंत दुखों से भरा हुआ है। इस लिए जीव को भवसागर के पार जाने की समझ नहीं है।''

अगम ग्रेह दूर दूरन्तर बोलि भरोस दीजै।
तेरी भगति परोहन सन्त अरोहन मोहिं चढ़ाई किन लीजै॥ 1॥

''जीव प्रभु के निज घर से दूर संसार में आया है। प्रभु के नाम के बिना कोई भी बोलकर निज घर में पहुँचने का भरोसा नहीं देता। आप जी की भक्ति संसार रूपी बेड़े सागर से पार करती है। संत उस भक्ति रूप नाव पर सवार होकर, सांसारिक जीवों को भक्ति के साथ जोड़कर पार करते हैं। प्रभु जी, इस भक्ति रूपी नाव पर मुझे क्यों नहीं बैठने देते।''

लोह की नाव पखानन बोझी सुकिरित भाव बिहीना।
लोभ तरंग मोह भयों गालौ मन मीन भयो जन लीना॥ 2॥

''जीव ने संसार में भ्रम के कारण जीवन रूपी नाव को लोहे की बनाकर उस में बुरे कर्म रूपी पत्थर भरे हुए हैं, वह श्रेष्ठ कर्मों से रहित है। लोभ की तरंगें और मोह के जाल के कारण जीवन रूपी नाव डूब रही है। जैसे मछली लोभ के काँटे में फँस कर अपनी जान गँवा लेती है, वैसे ही प्रभु को भूल कर जीव का मन झूठे जंजालों में फँस कर अपने जीवन को निष्फल गँवा लेता है।''

तुम दीना नाथ दयाल दमोदर कीनै हेत बिलंब कीजै।
रविदास दास सन्त चरन मोहि अवलंबन दीजै॥ 3॥

''हे गरीबों के स्वामी, दीन-दयालु खंडों-ब्रहमन्डों के मालिक प्रभु जी आप मेरी विनती सुनो जी, मुझे दर्शन दो जी। आप जी किस कारण देर (विलंभ) कर रहे हो। सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि मैं संतों के चरणों का दास हूँ। मुझे आप अपना दर्शन देकर सहारा दो जी।''

शब्द - 83

आगै मंदा हवै रहया परकिरति न जाई॥
कूकर चौकी चहोडियै फिरि बहे सु भाई॥ टेक॥
सुरसरी मै जु सुरा परयौ को करै न बिचार॥
राम नाम हिरदै बसै सब सुख निधि सार॥ 1॥
कहै रविदास सुंनि केसवे अंतह करन बिचार॥
तुम्हारी भगति कै कारनै फिरि हवै हो चमार॥ 2॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज जीवों को प्रभु से प्रेम करने वाला, स्वभाव बना कर, जीवन सफल करने का उपदेश देते हैं।

आगै मंदा हवै रहया परकिरति न जाई॥
कूकर चौकी चहोडियै फिरि बहे सु भाई।। टेक॥

''प्रभु के नाम सिमरन के बिना, जीव का आगे जाकर बुरा हाल होता है भाव जीव दुख भोगता है। इस कारण जीव का स्वभाव नहीं बदलता। जैसे कुत्ते को नहला-धुलाकर अगर चौंकी पर बिठाया जाए तो वह अपने स्वभाव वश वहाँ बैठ नहीं सकता, ऐसे ही यह जीव जितने चाहे आडम्बर और कर्मकाण्ड करे परन्तु सत्संग के बिना जीव का खोटा स्वभाव नहीं बदलता।''

सुरसरी मै जु सुरा परयौ को करै न बिचार ॥
राम नाम हिरदै बसै सब सुख निधि सार॥ 1॥

''यदि गंगा में मदिरा पड़ जाए तो वह गंगा का ही रूप हो जाती है, इस में कोई संशय नहीं है। ऐसे ही जिस समय जीव के हृदय में प्रभु का नाम बस जाता है तो जीव प्रभु का ही रूप हो जाता है और सब से श्रेष्ठ सुख रूपी खजाने को प्राप्त कर लेता है।''

कहै रविदास सुंनि केसवे अंतह करन बिचार॥
तुम्हारी भगति कै कारनै फिरि हवै हो चमार॥ 2॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज निवेदन करते हैं कि,''हे प्रभु! मेरी विनती सुनिए और इस पर विचार करिए जी! हे प्रभु! अपने अंर्तमन में आप के नाम की विचार करने और भक्ति करने से मैं चमार आप जी का ही रूप हो गया हूँ।''

राग रामकली, चउपदा

शब्द - 84

ध्रिग ध्रिग जीवणु राजे राम बिना।। टेक।।
देहि नैन बिनु चंद रैन बिनु, ज्यों मीना गहरु जले बिना।
हसती सुंड बिनु, पंखी पंख बिनु, जैसे मन्दिर दीप बिना।॥ 1॥
जैसे ब्राह्मण वेद विहूणा, तैसो प्राणी तुझ नाम बिना।।
बेसबा कूं सुत काकौ कहीए, तैसो भगत जन राम बिना।। 2।।
मंतर सुरति बिनु नारी कंत बिनु, जैसो धरती इन्द्र बिना।
ज्यों ब्रिच्छा फलहिं विहूणा, त्यों प्राणी तुझ प्रेम बिना।। 3।।
काम क्रोध हंकार निबारउ, तृष्ना त्यागहु संत जना।
कहि रविदास भई सीतल काया, ज्यों हौं लागो गुर चरना।। 4।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास महाराज जी उपदेश देते हैं कि प्रभु के नाम के बिना जीव का जीवन निरर्थक है।

ध्रिग ध्रिग जीवणु राजे राम बिना।। टेक।।

प्रभु पातिशाह के बिना जीव का जीवन फिटकारयोग और निष्फल है।

देहि नैन बिनु चंद रैन बिनु, ज्यूं मीना गहरु जले बिना।
हसती सुंड बिनु पंखी पंख बिनु, जैसे मन्दिर दीप बिना।॥ 1॥

जीव दो नेत्रों के बिना, चन्द्रमा रात्रि के बिना, मछली गहरे पानी के बिना, हाथी सूंड के बिना, पक्षी पंख के बिना, मन्दिर दीपक के बिना व्यर्थ है।

जैसे ब्राह्मण वेद विहूणा, तैसो प्राणी तुझ नाम बिना।।
बेसबा कूं सुत काकौ कहीए, तैसो भगत जन राम बिना।। 2।।

''जिस प्रकार ब्राह्मण वेदों के ज्ञान के बिना व्यर्थ है, उसी प्रकार प्रभु के नाम के बिना जीव का मानवीय जन्म व्यर्थ है। जिस प्रकार वेश्या के पुत्र को कोई पिता का नाम नहीं दिया जा सकता, उसी प्रकार भक्ति को भी प्रभु के नाम के बिना कोई नाम नहीं दिया जा सकता।''

मंतर सुरति बिनु नारी कंत बिन, जैसो धरती इन्द्र बिना।
ज्यों ब्रिच्छा फलहिं विहूणा, त्यों प्राणी तुझ प्रेम बिना।। 3।।

''जैसे मंत्र सुरति के बिना, स्त्री पति के बिना, धरती बारिश के बिना, वृक्ष फल के बिना अधूरे है, इसी तरह जीव प्रभु के प्रेम के बिना अधूरा है।''

काम क्रोध हंकार निबारउ, तृष्नि त्यागहु संत जना।
कहि रविदास भई सीतल काया, ज्यों हौं लागो गुर चरना।। 4।।

''हे भाई संत जनों के पास जाकर काम, क्रोध, अहंकार और तृष्णाओं का त्याग करो। सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि उस समय जीव की काया पवित्र हो जाती है, जब यह गुरु के चरणों के साथ लगती है।''

रागु मारु

शब्द - 85

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्र धरै॥ 1॥ रहाउ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥ 1॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै॥ 2॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जिन्हों ने इस संसार में क्रांतिकारी सामाजिक परिवर्तन किया, उस समाज में आगमन हुए जिस समाज को पढ़ने, लिखने, सुनने,

अच्छे कपड़े पहनने इत्यादि मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया था। विश्व में एकता, समानता, भाईचारा, स्थापित करने के लिए दबे-कुचले समाज के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए और जाति के अभिमानियों का अहँकार तोड़ने के लिए पानी मे पत्थर तैराने पड़े, राजाओं-महाराजाओं और कट्टरपंथियों के साथ लोहा लिया। अतः उनके क्रांतिकारी, मानववादी और परमार्थी विचारों से प्रभावित होकर चारों वर्ण उनके चरणों में नतमस्तक हुए और सम्मान के लिए सतगुरु रविदास महाराज जी की बनारस में हाथी पर सोने की पालकी में बिठाकर शोभा यात्रा निकाली गई। उस समय जगत्गुरू रविदास जी महाराज ने प्रभु की उपमा करते हुए यह पावन शब्द उच्चारण किया:-

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्र धरै॥ 1॥ रहाउ॥

"हे मेरे सुंदर प्रभु जी! ऐसा कौतुक आप जी के बिना और कौन कर सकता है? हे गरीबों को निवाजने वाले प्रभु जी, आज मेरे माथे पर आप जी ने यश रूपी छत्र झूला दिया है।"

जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुंही ढरै॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै॥ 1॥

"जिसके स्पर्श से जगत के लोग अपवित्र हो जाते थे, आपकी कृपा से आज हर ओर मेरी जय-जय कार हो रही है। मेरा गोबिंद नीचों को ऊंच कर देता है और ऐसा करते समय वह किसी से नहीं डरता।"

नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै॥ 2॥ 1॥

सत्गुरु नामदेव जी, सत्गुरु कबीर जी, सत्गुरु त्रिलोचन जी, सत्गुरु सधना जी, सत्गुरु सैन जी प्रभु का नाम जप कर तर गये हैं और जिन के सामाजिक, क्रांतिकारी एवं परमार्थी विचारों के आगे राजा-महाराजा और कट्टरपंथियों को झुकना पड़ा और जिन से प्रेरणा लेकर असंख्य जीव इस संसार में से पार हो गए। सत्गुरु रविदास महाराज जी संतों को संबोधन करते हुए कहते हैं कि, "हे संत महापुरुषों सुनो! उस प्रभु द्वारा यह सब बातें बन जाती हैं, वो जो चाहे कर सकता है।"

शब्द - 86

सुखसागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जाके रे॥
चारि पदारथ असट महा सिधि नवनिधि करतल ता कै॥ 1॥
हरि हरि हरि न जपसि रसना॥ अवर सभ छाडि बचन रचना॥ 1॥ रहाउ॥
नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर मांही॥
बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही॥ 2॥
सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी।
कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी॥ 3॥ 2॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि,"प्रभु का नाम सुखों का समुद्र है। इस लिए जीव को देवी-देवताओं की उपासना छोड़ कर कर्म-कांडों, वहम-भ्रमों से मुक्त होकर उस प्रभु का सिमरन करना चाहिए।"

सुखसागर सुरितरु चिंतामनि कामधेन बसि जाके रे॥
चारि पदारथ असट महा सिधि नवनिधि करतल ता कै॥ 1॥

"हे संसार के लोगों! सुखों के समुद्र प्रभु का सिमरन करो, जिस के अधीन सुरतर कल्पवृक्ष, मन इच्छुक फल देने वाली मणि (चिंतामणि) मनोकामना पूरी करने वाली कामधेनु गाय और चार पदार्थ काम, अर्थ, धर्म और मोक्ष, आठ बड़ी सिद्धियां और नौ खज़ाने उस प्रभु के हाथ की हथेली पर हैं। जो जीव उस प्रभु का सिमरन करता है, उसके वश में यह सब कुछ आ जाता है।"

हरि हरि हरि न जपसि रसना॥
अवर सभ छाडि बचन रचना॥ 1॥ रहाउ॥

"हे जीव! ऐसे सुखों के समुद्र प्रभु का हरि-हरि हरि नाम रसना से क्यों नहीं जपता? तू संसार की झूठी रचना के वचनों को रसना से त्याग कर हरि का सिमरन कर।"

नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अछर मांही॥
बिआस बीचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही॥ 2॥

"अनेकों प्रकार प्रसंग पुराण और वेदों की विधियां सभी चौतीस अक्षरों में लिखे गए हैं। महाऋषि वेद व्यास जी ने अनेकों प्रकार के प्रसंग और वेदों की विधियों को विचार कर उनका गहराई से अध्ययन कर अंत: यह परम तत्त्व कहा है कि राम नाम के मूल्य के समान मूल्य रखने वाली दुनिया की कोई मूल्यवान वस्तु नहीं है।"

सहज समाधि उपाधि रहत होइ बडे भागि लिव लागी।
कहि रविदास उदास दास मति जनम मरन भै भागी॥ 3 ॥ 2 ॥

''प्रभु के नाम में सहज-समाधि विकारों से मुक्त होकर लगती है और बड़े भाग्य से सहज समाधि अवस्था में पहुंच कर जीव की प्रभु से लगन लगती है। फिर उस प्रभु के दास की मति संसार में से उपराम हो जाती है और उसका मन जन्म-मरण के भय से मुक्त हो जाता है।''

राग मारू (चौपदे)

शब्द - 87

पीआ राम रसु पीआ रे॥ टेक॥
भरि भरि देवै सुरति कलाली दरिया दरिया पीना रे।
पीवत पीवतु आपा जग भुला हरि रस मांहि बौराना रे॥ 1 ॥
दर घरि विसरि गयो रविदासा उनमनि सद मतवारी रे।
पलु पलु प्रेम पियाला चालै, छूटे नांहि खुमारी रे॥ 2 ॥

इस शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज, सांसारिक जीवों को गुरु रूप कलाली के पास जाकर, अमृत पीने का पावन उपदेश देते हैं। जिस अमृत के पीने से जीव सहज अवस्था में पहुँच कर, प्रभु के नाम की खुमारी में मग्न हो जाता है।

पीआ राम रसु पीआ रे॥ टेक॥

मैने प्रभु के नाम रूपी अमृत का प्याला पी लिया है।

भरि भरि देवै सुरति कलाली दरिया दरिया पीना रे।
पीवत पीवतु आपा जग भुला हरि रस मांहि बौराना रे॥ 1 ॥

''गुरु रूप कलाली दशम् द्वार में सुरति लगाकर, भर-भर कर प्रभु के नाम के प्याले पिला रहे हैं। समुद्र के समान अमृत के प्याले जीव पी रहा है। ऐसा अमृत पीने से, जीव संसार को भूल जाता है और प्रभु के नाम रूपी आनंद में लीन हो जाता है।''

दर घरि विसरि गयो रविदासा उनमनि सद मतवारी रे।
पलु पलु प्रेम पियाला चालै, छूटे नांहि खुमारी रे॥ 2 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''जीव शरीर रूपी घर को भुला कर, उनमनी भाव आत्मिक अवस्था में पहुँच कर, मतवाला हो जाता है।

दशम् द्वार में वह प्रेम प्याला पल-पल निरंतर चल रहा है, जिसका सदीवी आनंद कभी भी नहीं उतरता।''

शब्द - 88

मन मोरा माया महि लपटानो।। टेक।।
बिसासक्त रहियो निसवासर, अजहूँ नहिं अघानो।
कामी कुटिल लबार कुचाली, समझयि नहीं समुझानो।। 1।।
सतिसंगत पलु नहीं कीन्ही, मन मूरखि बहु गरवानो।
सोत खात दिन रैन बितायि, ताहि मैं रसना सुख मानो।। 2।।
माया मंहि हिल मिलि रहियो, फोकट साटे जनम गंवानो।
कहि रविदास कछु चेत बाबरे, राम नाम विन नहि उबरानो।। 3।।

जगत्गुरु रविदास जी महाराज इस पावन शब्द द्वारा, सभी जीवों को प्रभु का नाम सिमरन कर, माया के प्रभाव से मुक्त होने का पावन उपदेश देते हैं।

मन मोरा माया महि लपटानो।। टेक।।

प्रभु को भूलकर, जीव का मन, माया में लिप्त है।

बिसासक्त रहियो निसवासर, अज हूँ नहिं अघानो।
कामी कुटिल लबार कुचाली, समझयि नहीं समुझानो॥ 1॥

''दिन रात विषों में फंसा हुआ। अभी तक त्रिप्त नहीं हुआ। यह जीव कामी, कपटी, झूठा, बुरे आचरण वाला, कुचाली बना हुआ है, जो समझाने पर भी नहीं समझता।''

सतिसंगत पलु नहीं कीन्ही, मन मूरखि बहु गरवानो।
सोत खात दिन रैन बितायि, ताहि मैं रसना सुख मानो।। 2।।

''इस जीव ने क्षण भर के लिए भी सतसंगत नहीं की और मन मूर्ख बहुत अहंकार करता है। यह जीव दिन रात सोने और खाने में व्यतीत कर रहा है, और जिह्वा के सुख को भोग रहा है फिर भी इसकी जिह्वा नहीं भरती।''

माया मंहि हिल मिलि रहियो, फोकट साटे जनम गंवानो।
कहि रविदास कछु चेत बाबरे, राम नाम विन नहि उबरानो।। 3।।

''माया में ग्रसित जीव, झूठे कर्मों में अपना जन्म कौड़ी के भाव गंवा रहा है। सत्गुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं कि, हे मूर्ख जीव, तू प्रभु को याद कर, प्रभु के नाम के बिना तुम्हारे जीवन का उधार नहीं होगा।''

शब्द - 89

बीति आयु भजनु नहीं कीन्हा॥ टेक॥
सेत भयो तन थर थर कंपहि, हरि सिमरनु नहीं कीन्हा।
सतसंगति नहिं गुर पद सेऊ प्रभ कीरति नहिं गाई॥ 1॥
नहि मन रमयो प्रभ चरनन महिं, तन सिऊं पीरीत द्रिडाई।
कहि रविदास चलन की बरिया, कोउ न होय सहाई॥ 2॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को पावन उपदेश देते हैं कि,''जीव की आयु व्यतीत होती जा रही है और बुढ़ापा आने से शरीर कांपने लगता है। अन्त समय में प्रभु के बिना, जीव का और कोई साथ नहीं देता। इस लिए गुरु के उपदेश पर चल कर और प्रभु से सच्ची प्रीत करके जीव को अपना जीवन सफल करना चाहिए।''

बीति आयु भजनु नहीं कीन्हा॥ टेक॥

''हे जीव! अमूल्य जन्म की तुम्हारी आयु व्यतीत होती जा रही है, पर तुम ने प्रभु का नाम सिमरन नहीं किया।''

सेत भयो तन थर थर कंपहि, हरि सिमरनु नहीं कीन्हा।

''जब बुढ़ापा आ जाता है और बाल सफेद हो जाते हैं, तब शरीर काँपने लग जाता है और उस समय प्रभु का स्मरण नहीं होता।''

सतसंगति नहिं गुर पद सेऊ प्रभ कीरति नहिं गाई॥ 1॥

''गुरु की श्रेष्ठ शिक्षा सत संगत नहीं की न सतगुरू के चरणों में सेवा की और प्रभु की उपमा नहीं गाई।''

नहि मनु रमयो प्रभ चरनन महिं, तन सिऊं पीरीत द्रिडाई।

''प्रभु के चरण-कमलों में मन नहीं लगाया, केवल अपने शरीर से ही प्रीति लगाई रखी।''

कहि रविदास चलन की बरिया, कोउ न होय सहाई॥ 2॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''अन्त समय भाव मृत्यु आने पर प्रभु के बिना तुम्हारा किसी ने भी साथ नहीं देना। इस लिए हे जीव! तू प्रभु का नाम सिमरन किया कर।''

शब्द - 90

प्रभु जी तुम औगुन बख्शणहार।
हऊं बहु नीच उधरौ पातकी, मूरखि निपट गंवार॥ टेक॥
मो सम पतित अधम नहीं कोऊ खीन दुखी विसियार।
नाम सुनहि नरकु भजै ह्वै, तुम बिन कवन हमार॥ 1॥
पतित पावन विड़द तिहारौ आयि परौं तोहि दुआर।
कहि रविदास ऐहु मन आसा निज कर लेहु उभार॥ 2॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज इस पावन शब्द में प्रभु के समक्ष विनम्र भाव से विनती करते हैं कि,''आप सांसारिक जीवों के अवगुणों को क्षमा करने वाले हो, जो जीवों पर कृपा करके पापों का नाश कर उद्धार कर देते हो।''

प्रभु जी तुम औगुन बख्शणहार।
हऊं बहु नीच उधरौ पातकी, मूरखि निपट गंवार॥ टेक॥

''हे प्रभु जी!आप जीवों के अवगुणों को क्षमा करने वाले हो। हम सांसारिक जीव आप को भूल जाने के कारण बड़ा पापी, मलीन बुद्धि वाला नीच हैं। आप हम संसार रूपी परिवार में लिप्त हुए मूर्ख प्राणियों पर कृपा करके, हमारे पापों का नाश करके हमें क्षमा कर दो।''

मो सम पतित अधम नहीं कोऊ खीन दुखी विसियार।
नाम सुनहि नरकु भजै ह्वै, तुम बिन कवन हमार॥ 1॥

''प्रभु जी आपको भूलने के कारण हमारे समान कोई पापी, नीच, कामी, कमजोर और दुखी नहीं है। पर आप दुखियों पर कृपा करने वाले हो। आप जी का नाम स्मरण करने से ही नरक का भय दूर हो जाता है। प्रभु आप के बिना हमारा कौन सहारा है?''

पतित पावन विड़द तिहारौ आयि परौं तोहि दुआर।
कहि रविदास ऐहु मन आसा निज कर लेहु उभार॥ 2॥

''हे प्रभु जी! आप का नाम पापियों को पवित्र करने वाला है। मैं आपके द्वार पर खड़ा हूँ, मुझ पर कृपा करो।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज प्रभु के आगे विनती करते हैं कि,''प्रभु जी मेरे मन में केवल यही इच्छा है कि आप मुझ पर कृपा कर, मेरे अवगुणों को क्षमा कर मेरा उद्धार कर दीजिए।''

राग केदारा

शब्द - 91

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि॥
चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि॥ 1॥
रे चित चेति चेत अचेत॥ काहे न बालमीकहि देख॥
किसु जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख॥ 1॥ रहाउ॥
सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु॥
लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेस॥ 2॥
अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पास॥
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास॥ 3॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीव को प्रभु का सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं कि,''संसार में वह जीव श्रेष्ठ है जो प्रभु की भक्ति करता है। गुरु जी सांसारिक जीवों को ब्रह्मज्ञानी त्रिकाल दूरदर्शी महाऋषि वाल्मीकि जी की प्रभु भक्ति से प्रेरणा लेकर अपना जीवन सफल करने का पावन उपदेश देते हैं।''

खटु करम कुल संजुगतु है हरि भगति हिरदै नाहि॥
चरनारबिंद न कथा भावै सुपच तुलि समानि॥ 1॥

''चाहे कोई जीव ऊँची समझी जाति कुल का हो और छः कर्म (शिक्षा प्राप्त करनी और पढ़ाना, यज्ञ करना और कराना, दान करना और कराना) करता हो, पर यदि उसके हृदय में हरि प्रभु की भक्ति नहीं है और उसे प्रभु के चरण कमलों की कथा नहीं भाती तो वह जीव चंडाल के समान है।''

रे चित चेति चेत अचेत॥ काहे न बालमीकहि देख॥
किस जाति ते किह पदहि अमरिओ राम भगति बिसेख॥ 1॥ रहाउ॥

''हे अचेत चित! मैं तुझे याद कराता हूँ कि तू प्रभु को अपने हृदय में याद कर। हे जीव ब्रह्मज्ञानी महाऋषि वाल्मीकि जी की ओर क्यों नहीं देखता? उनके जीवन से प्रेरणा क्यों नहीं लेता। उनका आगमन उस जाति में हुआ जिसको शूद्र समझा जाता था पर उस प्रभु की भक्ति कर किस पद पर पहुँच गए हैं, अर्थात् अमर होकर प्रभु का रुप हो गए हैं।''

सुआन सत्रु अजातु सभ ते क्रिस्न लावै हेतु॥
लोगु बपुरा किआ सराहै तीनि लोक प्रवेश॥ 2॥

"महाऋषि वाल्मीकि जी जिन्हों ने लोभ रुपी कुत्ते एवं अन्य विकारों पर विजय प्राप्त की हुई थी और जिनके जाने पर पाण्डवों का यज्ञ संपूर्ण हुआ उस समय कृष्ण जी एवं सब ने महाऋषि वाल्मीकि जी के चरण धोकर चरणामृत पिया और उन से प्रेम किया। लोगों ने महाऋषि वाल्मीकि जी की महिमा क्या करनी है? उनकी महिमा तो तीन लोक (मात लोक, पाताल लोक और आकाश लोक) में हो रही है। खण्डों-ब्रह्माण्डों में उनकी जय-जय कार होती है।"

अजामलु पिंगुला लुभतु कुंचरु गए हरि कै पास ॥
ऐसे दुरमति निसतरे तू किउ न तरहि रविदास॥ 3 ॥ 1॥

"अजामल महापापी, पिंगला जनकपुरी की वेश्या, लुभत शिकारी और कुंचर हाथी यह सभी प्रभु हरि का नाम जप कर प्रभु हरि के पास चले गए।"

सत्गुरु रविदास महाराज जी वर्णन करते हैं कि,"इतनी बुरी बुद्धि वाले जीव प्रभु का नाम जप कर मुक्त हो गए। हे जीव! यदि तू भी एक चित होकर प्रभु का सिमरन करेगा तो तू क्यों नहीं पार होगा। भाव तू भी अवश्य ही पार हो जाएगा।"

शब्द - 92

रे मन राम नाम संभारि।
माया कै भ्रम कहा भूल्यौ, जाहिगे कर झारि।। टेक।।
देखि धौं इहां कौण तेरो, सगा सुत नहिं सार।
तोरि तंग सब दूरि करिहै , दैहिंगे तन जारि॥ 1॥
प्रान गये कहो कौण तेरा, देखि सोच बिचारि।
बहुरि येहि कलि काल माही, जीति भावै हारि।। 2।।
यह माया सब थोथरी रे, भगति को प्रतिपारि।
कहि रविदास सति बचन गुर कै, सो न जीअ तै बिसारि।। 3।।

जगत्गुरु रविदास जी महाराज जीवों को अपने हृदय में प्रभु का सिमरण करने का पावन उपदेश देते हैं कि,"जीवों को प्रभु के साथ मिलाने वाले, गुरु के अमृतमयी वचनों को अपने हृदय में धारण कर, प्रभु की सच्ची भक्ति कर, संसार की झूठी माया से, मुक्त होकर जीवन सफल करना चाहिए।"

रे मन राम नाम संभारि।
माया कै भ्रम कहा भूल्यौ, जाहिगे कर झारि।। टेक।।

"हे भाई! अपने मन में प्रभु के नाम की संभाल कर अर्थात् प्रभु को याद कर। यदि तू प्रभु का नाम नहीं लेगा तो माया के भ्रम में फंसकर, अंत समय में, तुझे इस संसार से, खाली हाथ ही जाना पड़ेगा।"

देखि धौं इहां कौण तेरो, सगा सुत नहिं सार।
तोरि तंग सब दूरि करिहै , दैहिंगे तन जारि।। 1।।

"तू देख तो सही, तेरा इस संसार में कौन अपना है? यहां तक कि तेरे सारे संबंधी और अपना पुत्र भी अंत समय में सहायी नहीं होंगे। तेरे सभी संगी साथी, तेरी मृत्यु के समय, तुझसे संबंध विच्छेद कर लेंगे तथा तेरे शरीर को अग्नि भेंट कर देंगे।"

प्रान गये कहो कौण तेरा, देखि सोच बिचारि।
बहुरि येहि कलि काल माही, जीति भावै हारि।। 2।।

"हे भाई! तू अपने भीतर इस बात की सोच विचार करके देख कि जिस समय तू अपने प्राण त्याग देगा, उस समय तेरे साथ कौन जाएगा? अर्थात् उस समय प्रभु के नाम के बिना तेरे साथ कोई नहीं जाएगा। इस कल्युग में, जीवन सफल करने के लिए तुझे अनेक प्रकार से समझा दिया है, अब तू प्रभु का नाम जपकर, इस संसार की बाजी जीतो, चाहे प्रभु के नाम को भुलाकर इसे हारो, यह सब अब तुम्हारे हाथ में है।"

यह माया सब थोथरी रे, भगति को प्रतिपारि।
कहि रविदास सति बचन गुर कै, सो न जीअ तै बिसारि।। 3।।

"हे भाई! प्रभु नाम के सामने इस संसार की माया झूठी है, इसलिए हे भाई! तू प्रभु की प्रेमा-भक्ति को अपने हृदय में बसा ले।" सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,"हे जीव! प्रभु से मिलाने वाले गुरु के सत्य वचनों को अपने भीतर से मत भुला, बल्कि उन पर चलकर अपना जीवन सफल कर।"

शब्द - 93

हो बनिजारौ राम को, हरि जू को टांडो लादो जायि रे।
राम नाम धन पायो, ता ते सहज करूँ व्योपार रे।। टेक।।
औघट घाट घनो घना रे, निरगुन बैल हमार रे।
राम नाम हम लादि्यो, ताथै बिष लादि्यो संसार रे।। 1।।
अनतहिं धन धर्यो रे, अनतहिं ढूँढ़न जायि रे।

अनत को धर्‍यो न पाइये, ताथै चाल्यो मूल गमाई रे।। 2।।
रैन गँवाई सोइ करि, दिवस गँवायो खाइ रे।।
हीरा यह तन पायि करि, कौड़ी बदले जायि रे।। 3।।
साधु संगति पूँजी भई रे, बसुत लई निर्मोल रे।।
सहजै बलदिया लादि करि चहुं दिसि टाँडो मेलि रे।। 4।।
जैसा रंग कसुंभ का, तैसा यहु संसार रे।।
रमइया रंग मजीठ का, भणै रविदास बिचार रे।। 5।।

जगत्गुरु रविदास जी महाराज समस्त मानवता को उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु प्राप्ति का मार्ग, अज्ञानता एवं सांसारिक झूठे बंधनों के कारण, उलझनों भरा व कठिन है। जीव का मन रूपी बैल उस अकाल पुरख की कृपा से, यह कठिन मंज़िल तय कर, प्रभु के मजीठी रंग में रंग होकर, अपना जीवन सफल कर सकता है।''

हो बनिजारौ राम को, हरि जू को टांडो लादो जायि रे।।
राम नाम धन पायो, ता ते सहज करूँ व्योपार रे।। टेक।।

''यदि राम-नाम का व्यापार करने वाला कोई व्यापारी है, तो मेरे पास आकर प्रभु के राम-नाम का व्यापार कर ले। मेरा टांगा, हरि के नाम के साथ लदा हुआ है। मैं प्रभु नाम धन को प्राप्त कर संसार में आत्मिक सहज अवस्था का व्यापार करता हूँ।''

औघट घाट घनो घना रे, निरगुन बैल हमार रे।।
राम नाम हम लादि्यो, ताथै बिष लादि्यो संसार रे।। 1।।

''जिस प्रकार एक निर्गुण बैल के लिए, पहाड़ी का दुर्गम व सघन मार्ग तय कर, अपनी मंज़िल को प्राप्त करना कठिन है, उसी प्रकार सांसारिक जीव के लिए, दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त कर, प्रभु प्राप्ति का मार्ग, अज्ञानता व सांसारिक झूठे बंधनों के कारण, खतरनाक पहाड़ी की भांति कठिन तथा जंगल की भांति घना है। इस मार्ग से गुज़रने वाले जीव, का मन रूपी बैल, बहुत कमजोर है। मैंने शरीर रूपी बैल पर प्रभु के नाम का धन लादा हुआ है परन्तु सांसारिक लोगों ने इस पर विकारों रूपी विष लादा हुआ है।''

अनतहिं धन धर्‍यो रे, अनतहिं ढूँढन जायि रे।।
अनत को धर्‍यो न पाइये, ताथै चाल्यो मूल गमाई रे।। 2।।

प्रभु का अनन्त धन प्राप्त करने के लिए, प्रभु को भीतर से खोजा जाता है। परन्तु यदि जीव प्रभु को प्राप्त नहीं करता, तो वह अपना मूल गंवा लेता है।

रैन गँवाई सोइ करि, दिवस गँवायो खाइ रे।।
हीरा यह तन पायि करि, कौड़ी बदले जायि रे।। 3।।

''प्रभु को भूलकर, यह जीव रात्रि सो कर तथा दिन खाकर व्यर्थ व्यतीत कर लेता है। इस प्रकार वह इस हीरे की भांति दुर्लभ तन को कौड़ियों के मोल गंवा लेता है।''

साधु संगति पूँजी भई रे, बसुत लई निर्मोल रे।।
सहजै बलदिया लादि करि चहुं दिसि टाँडो मेलि रे।। 4।।

''संतों की संगत में ही, प्रभु के नाम की पूँजी है और वह निर्मोल प्रभु के नाम रूपी वस्तु, संत जनों से ही प्राप्त होती है। सहज अवस्था में अपने शरीर रूपी बैल पर, प्रभु के नाम रूपी धन को लादकर, चारों ओर अर्थात् हर तरफ जीव प्रभु के नाम रूपी धन का व्यापार करता है।''

जैसा रंग कसुंभ का, तैसा यहु संसार रे।।
रमइया रंग मजीठ का, भणै रविदास बिचार रे।। 5।।

''जिस प्रकार कसुंभ का रंग कच्चा व अस्थिर है, उसी प्रकार यह संसार भी अस्थिर एवं नश्वर है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार कर फरमाते हैं कि,''मेरे प्रभु का रंग मजीठ की भांति पक्का, स्थिर एवं सदीव है, मैं यह सब विचार कर कहता हूँ।''

शब्द - 94

प्रीति सुधामनि आव।।
तेज सरूपी सकल सिरोमनि, अलख निरंजन राव॥ टेक॥
पीव संग प्रेम कबहुँ नहि पायो, करनी कवन बिसारी।।
चक को ध्यान दधिसुत सो होत है, यों तुम तै मैं न्यारी॥ 1॥
भोर भयौ मोहिं इक टक जोवत, तलफल रजनी जाई।।
पीव बिन सेजइ का सुख सोऊँ, बिरह बिथा तन खाई॥ 2॥
मेटि दुहाग सुहागिन कीजै, अपने अंग लगाई।।
कहै रविदास प्रभु तुमहरे बिछोहे, एक पलक जुग जाई॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को पति प्रभु से सच्ची प्रीति करके, सच्ची सुहागिनें बनकर, प्रभु से एक रूप होकर अपना अमूल्य जीवन सफल करने का पावन उपदेश देते हैं।

प्रीति सुधामनि आव।।
तेज सरूपी सकल सिरोमनि अलख निरंजन राव॥ टेक॥

''हे जीव! तू उस प्रभु से सच्ची प्रीति कर श्रेष्ठ आनंद का अनुभव कर अपना जीवन सुधार जो प्रभु सब से शक्तिवान, प्रकाश रूप, सर्व-श्रेष्ठ, सब से शरोमणी, अदृष्ट, निर्लेप और सब का मालिक है।''

पीव संग प्रेम कबहुँ नहि पायो, करनी कवन बिसारी।।
चक को ध्यान दधिसुत सो होत है, यों तुम तै मैं न्यारी॥ 1॥

''प्रभु प्रियतम से जीव रूपी स्त्री ने, सच्ची प्रीति नहीं की और अपना अमूल्य जीवन प्रभु को भूलकर व्यर्थ ही गँवा लिया। परन्तु जैसी चकोर का ध्यान चन्द्रमा में रहता है और चकोर की सच्ची प्रीति चन्द्रमा से है, ऐसी ही अनोखी प्रीति, जीव की प्रभु से होनी चाहिए।''

भोर भयौ मोहिं इक टक जोवत, तलफल रजनी जाई।।
पीव बिन सेजइ का सुख सोऊँ, बिरह बिथा तन खाई॥ 2॥

''जीव रूपी स्त्री की संसार में जीवन रूपी रात प्रभु के मिलन के लिए तड़पती हुई बीत रही है, पर उसका अभी तक प्रभु से मिलन नहीं हुआ। प्रभु मिलाप के बिना स्त्री सेज पर कैसे सुख से सो सकती है? वियोग का दर्द उसे खाए जा रहा है।''

मेटि दुहाग सुहागिन कीजै, अपने अंग लगाई।।
कहै रविदास प्रभु तुमहरे बिछोहे, एक पलक जुग जाई॥ 3॥

''हे प्रभु जी! आप से बिछुड़ी हुई दुहागिन जीव रूपी स्त्री को, अपने दर्शन देकर, अपने गले से लगाकर, सुहागिन बना दो। सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं, हे संसार के स्वामी! यह जीव रूपी स्त्री आपके वियोग में कैसे जीये क्योंकि एक पलक मात्र भी, जीव रूपी स्त्री आप से बिछुड़ कर युगों का वियोग अनुभव करती है, भाव बहुत दुःख अनुभव करती है।''

राग भैरउ
शब्द - 95

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥
जो दीसै सो होइ बिनासा ॥
बरन सहित जो जापै नामु ॥
सो जोगी केवल निहकामु ॥ 1 ॥
परचै रामु रवै जउ कोई ॥
पारसु परसै दुबिधा न होई ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥
बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥
मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥
करता होइ सु अनभै रहै ॥ 2 ॥
फल कारन फूली बनराइ ॥
फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥
गिआनै कारन करम अभिआसु ॥
गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥ 3 ॥
घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥
जीवत मुकत सदा निरबान ॥
कहि रविदास परम बैराग ॥
रिदै रामु की न जपसि अभाग ॥ 4 ॥ 1 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,''जो जीव पारस रूप गुरु के बताए हुए उपदेश पर चलकर प्रेम सहित प्रभु का सिमरन करता है उसके मन में से दुविधा का नाश हो जाता है और तीन लोक में समाए हुए प्रभु को प्राप्त कर लेता है। ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति होने से इस जीवन में मुक्त होकर सदा रहने वाले निर्वाण पद को प्राप्त कर लेता है।''

बिनु देखे उपजै नही आसा ॥
जो दीसै सो होइ बिनासा ॥

''प्रभु के देखे बिना जीव के मन में उसको प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न नहीं होती। पर संसार में जो कुछ भी दिखाई दे रहा है वह सब कुछ नाशवान है।''

बरन सहित जो जापै नामु ॥
सो जोगी केवल निहकामु ॥ 1 ॥

''जो जीव प्रेम भाव से प्रभु का नाम जपता है केवल वही निष्कामी सच्चा योगी है।''

परचै रामु रवै जउ कोई ॥
पारसु परसै दुबिधा न होई ॥ 1 ॥ रहाउ ॥

''जो जीव गुरु के उपदेश के अनुसार प्रभु का सिमरन करता है, उसके जीवन में से दुविधा का नाश हो जाता है। जैसे लोहा पारस से स्पर्श कर स्वर्ण बन जाता है, ऐसे ही वह जीव गुरु रूपी पारस से मिलकर सोने की भांति शुद्ध हो जाता है।''

सो मुनि मन की दुबिधा खाइ ॥
बिनु दुआरे त्रै लोक समाइ ॥

''वास्तविक मुनि संसार में वह है जो मन में से दुविधा को खत्म कर देता है और दस द्वारों से मुक्त तीन लोक (मात लोक, आकाश लोक, पाताल लोक) में समाए हुए प्रभु में विलीन हो जाता है।''

मन का सुभाउ सभु कोई करै ॥
करता होइ सु अनभै रहै ॥ 2 ॥

''संसार में सभी जीव अपने मन के स्वभाव के अनुसार ही कर्म करते हैं। पर जीव अपने मन को अपने वश में कर लेता है वह जीव संसार में बिना किसी भय के करता पुरुष के साथ एक रूप हो कर जीवन में चलता है।''

फल कारन फूली बनराइ ॥
फलु लागा तब फूलु बिलाइ ॥

''जैसे सारी सृष्टि की वनस्पति फल देने के लिए फलती है और उसको फूल लगते हैं पर जिस समय फल लग जाते हैं तो उस समय फूल झड़ जाते हैं।''

गिआनै कारन करम अभिआसु ॥
गिआनु भइआ तह करमह नासु ॥ 3 ॥

''इसी तरह जिज्ञासु ज्ञान प्राप्त करने के लिए श्रेष्ठ कर्म करता है पर जिस समय ज्ञान रूपी फल लग जाता है तो कर्म रूपी फूलों का नाश हो जाता है।''

घ्रित कारन दधि मथै सइआन ॥
जीवत मुकत सदा निरबान ॥

"जैसे समझदार स्त्री घी की प्राप्ति के लिए दही का मंथन करती है जब माखन निकल आता है तो मंथन करना बंद कर देती है। ऐसे ही ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति के लिए जिज्ञासु श्रेष्ठ कर्म करता है। जिस समय ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हो जाता है जीते जी मुक्त अवस्था प्राप्त कर हमेशा रहने वाले निर्वाणपद को प्राप्त कर लेता है।"

कहि रविदास परम बैराग॥
रिदै रामु की न जपसि अभाग॥ 4॥ 1॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,"हे अभागे पुरुष! तू परम वैराग की प्राप्ति के लिए अपने हृदय में प्रभु का नाम क्यों नहीं जपता? जिस नाम सिमरन के कारण अटल निर्वाणपद की प्राप्ति हो जाती है।"

शब्द – 96

ऐसा ध्यान धरौं बनवारी। मन पवन दिढ़ि सुखमन नाड़ी॥ टेक॥
सोई जपु जपौं जो बहुरि न जपना। सोई तपु तपौं जो बहुरि न तपना॥ 1॥
सोई गुरु करौ जो बहुरि न करना। ऐसी मरौं जो बहुरि न मरना॥ 2॥
उलटी गंग जमुन में लयावो। बिनही जल मजन है आवौं॥ 3॥
लोचन भरि भरि बियंब निहारौं । जोति बिचारि न और बिचारौं॥ 4॥
पिंड परे जीव जिस घरि जाता। शबद अतीत अनाहद राता॥ 5॥
जा पर किरपा सोई भल जानै। गूंगौ साकर कहा बखानै॥ 6॥
सुन्न मण्डल में तेरा बासा। ताथै जाव में रहौं उदासा॥ 7॥
कह रविदास निरंजन ध्याउ। जिस घरि जाओ हौ बहुरि न आउ॥ 8॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को, प्रभु का दशम द्वार में ध्यान लगा कर, सुन्न मंडल में पहुँच कर, जीवन मुक्त होने का पावन उपदेश देते हैं।

ऐसा ध्यान धरौं बनवारी। मन पवन दिढ़ि सुखमन नाड़ी।। टेक॥

"हे जीव! तू प्रभु का ऐसा ध्यान कर, जिससे तेरा मन प्रभु से जुड़ जाए और तेरे श्वास इड़ा-पिंगला, जहाँ दोनों नाड़ियाँ मिलती हैं। सुखमना नाड़ी भाव त्रिकुटी में पहुँच जाए।"

सोई जपु जपौं जो बहुरि न जपना।
सोई तपु तपौं जो बहुरि न तपना॥ 1॥

"हे जीव! आत्मदर्शी गुरु की शरण ग्रहण कर। इस अवस्था में पहुँच कर,

यदि तू प्रभु का नाम जाप करेगा, तो तुझे बार-बार नाम जाप करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी और ऐसा श्रेष्ठ तप करेगा, तो तुझे पुनः तप करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।''

सोई गुरु करौ जो बहुरि न करना। ऐसी मरौं जो बहुरि न मरना ॥ 2 ॥

''गुरु का ज्ञान ही अज्ञानता का नाश कर सकता है और फिर किसी और की आवश्यकता नहीं रहती। जब जीव प्रभु का नाम जप कर जीवन मुक्त हो जाता है तो उसे पुनः मरना नहीं पड़ता।''

उलटी गंग जमुन में लयावो। बिनही जल मजन ह्वै आवौं ॥ 3 ॥

''जब जीव अपने ध्यान को, संसार की ओर से हटा कर, प्रभु की ओर लगाता है, तो गंगा भाव इड़ा नाड़ी, जमुना भाव पिंगला नाड़ी मिल कर, सुखमना नाड़ी से मिलती हैं, तो त्रिकुटी से ऊपर जलविहीन रूपी दशम द्वार में स्नान कर अपना जीवन सफल कर लेता है।''

लोचन भरि भरि बियंब निहारौं । जोति बिचारि न और बिचारौं ॥ 4 ॥

''दशवें द्वार से निरत रूपी आँखों से प्रभु की स्वरूप को देखने का आनन्द अनुभव करता है और जीव प्रभु के सत्य स्वरूप का, विचार कर उसका रूप हो जाता है। उस की ज्योति में ही विलीन हो जाता है और उसके शेष सभी विचार समाप्त हो जाते हैं।''

पिंड परे जीव जिस घरि जाता। शबद अतीत अनाहद राता ॥ 5 ॥

''शरीर रूपी पिंड में विराजित प्रभु से मिल कर जीव उस बेगमपुरे भाव प्रभु के निज घर में जाता है और यह जीव एक रस आदि जुगादि सीमा रहित, बेअंत प्रभु के नाम में रंगा जाता है।''

जा पर किरपा सोई भल जानै। गूंगौ साकर कहा बखानै ॥ 6 ॥

''जिस पर प्रभु कृपा करता है वही श्रेष्ट जीव परमानन्द के अनुभव को जानता है। जैसे गूंगा जीव, शक्कर खाने के स्वाद को बता नहीं सकता, ऐसे ही प्रभु का आनन्द लेने वाला जीव, उसे व्यक्त नहीं कर सकता।''

सुन्न मण्डल में तेरा बासा। ताथै जाव में रहौं उदासा ॥ 7 ॥

''हे प्रभु जी सुन्न मंडल रूपी निजघर में आप का निवास है। इस लिए जो जीव इस निजघर का निवासी बन जाता है वह इस संसार में रहता हुआ भी, इस संसार से उपराम रहता है।''

कह रविदास निरंजन ध्याउ। जिस घरि जाओ हौ बहुरि न आउ॥ 8 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''मैं माया से मुक्त निरंजन प्रभु का सिमरन करता हूँ। अब प्रभु के सन्न मंडल रूपी निज घर में आने के कारण, मैं कहीं और नहीं जाऊँगा भाव मैं उस प्रभु का सिमरन कर, उसमें विलीन हो गया हूँ और मैं संसार में पुनः जन्म लेकर नहीं आऊंगा।''

शब्द - 97

अबिगति नाथ निरंजन देवा। मैं का जानूं तुम्हारी सेवा॥ टेक॥
बाँधू न बंधन छांऊ न छाया। तुमहीं सेऊं निरंजन राया॥ 1॥
चरन पताल सीस असमाना। सो ठाकुर कैसे संपुट समाना॥ 2॥
सिव सनकादिक अंत न पाया। ब्रह्मा खोजत जनम गंवाया॥ 3॥
तोड़ूँ न पाती पूजूँ न देवा। सहज समाधि करूँ हरि सेवा॥ 4॥
नख प्रसेद जा के सुरसरि धारा। रोमावली अठारह भारा॥ 5॥
चारो बेद जा के सुमिरत सांसा। भगति हेत गावै रविदासा॥ 6॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज आडम्बरों और कर्मकाण्डों से मुक्त होकर, सर्व-व्याप्त, प्रभु का सिमरन करने का उपदेश देते हैं।

अबिगति नाथ निरंजन देवा। मैं का जानूं तुम्हारी सेवा।। टेक॥

''हे अविनाशी मालक, माया मुक्त प्रभु जी! मैं आप जी की सेवा करने के बारे में कुछ नहीं जानता।''

बाँधू न बंधन छांऊ न छाया। तुमहीं सेऊं निरंजन राया॥ 1॥

''मैं सांसारिक बंधनों में नहीं पड़ा और इनकी छाया भी अपने ऊपर नहीं पड़ने दूंगा। हे माया मुक्त प्रभु, मैं केवल आप जी की सेवा ही करूँगा।''

चरन पताल सीस असमाना। सो ठाकुर कैसे संपुट समाना॥ 2॥

''वह प्रभु, जिसके चरण पाताल और शीश आकाश समझा जाता है, क्या वह ठाकुर प्रभु किसी स्थान पर सीमित हो सकता है? भाव नहीं, वह तो सर्व-व्यापक है।''

सिव सनकादिक अंत न पाया। ब्रह्मा खोजत जनम गंवाया॥ 3॥

''उस प्रभु का आदि-अन्त शिव जी और सनकादिक इत्यादि ब्रह्म के चारों पुत्र नहीं पा सके। प्रभु को भुलाकर ब्रह्मा ने वेदों को जानने में ही अपना अमूल्य जीवन गँवा लिया।''

तोड़ूँ न पाती पूजूँ न देवा।
सहज समाधि करूँ हरि सेवा ॥ 4 ॥

''हे हरि जी! वनस्पति की पत्तियां तोड़ कर, मैं आप की पूजा नहीं करता। हे हरि जी! मैं तो सहज समाधि में पहुँच कर, आप का सिमरन करता हूँ और आप जी की सेवा में उपस्थित हूँ।''

नख प्रसेद जा के सुरसरि धारा। रोमावली अठारह भारा॥ 5 ॥

''प्रभु के चरणों के पसीने में से गंगा की श्रेष्ठ धारा बहती है और उस प्रभु की कृपा से ही, वनस्पति के अठारह भार, शरीर के रोम जाने जाते हैं।''

चारो बेद जा के सुमिरत सांसा। भगति हेत गावै रविदासा॥ 6 ॥

''चारों वेदों के रचयिता भी, प्रभु का श्वास-श्वास सिमरन करते हैं। सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु की प्रेमा-भक्ति के लिए मैं गुण गा रहा हूँ।''

शब्द - 98

भेष लियो पै भेद न जान्यो। अमृत लेयि विषै सो मान्यो॥ टेक॥
काम क्रोध में जनम गंवायो। साधु संगति मिलि राम न गायो॥ 1 ॥
तिलक दियो पै तपनि न जाई। माला पहिर घनेरी लाई॥ 2 ॥
कहै रविदास मरम जो पाऊँ। देव निरंजन सत कर ध्याऊं॥ 3 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज, जीवों को आडम्बर त्याग कर, संत महापुरुषों की संगत में जाकर प्रभु के नाम सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं।

भेष लियो पै भेद न जान्यो। अमृत लेयि विषै सो मान्यो।। टेक॥

''हे आडम्बरी जीव! तुमने भेष तो साधुओं वाला बना लिया है परन्तु तुमने प्रभु के गुप्त भेद को नहीं जाना। तुमने प्रभु के ब्रह्मज्ञान को नहीं जाना, बल्कि संसार रूपी विषय-विकारों को अमृत समझ रखा है।''

काम क्रोध में जनम गंवायो। साधु संगति मिलि राम न गायो॥ 1 ॥

''हे जीव! तुम प्रभु को भूलकर, काम क्रोध इत्यादि विकारों में अपना जन्म गंवा रहे हो और संतों की संगत में जाकर प्रभु का नाम गाते नहीं।''

तिलक दियो पै तपनि न जाई। माला पहिर घनेरी लाई॥ 2 ॥

''माथे पर चंदन का तिलक लगाने से, तेरे भीतर से विषय विकारों की तपिश नहीं जाएगी। जितनी चाहे घनी मालाएँ पहन ले, फिर भी तुम्हारे भीतर से भ्रम का नाश नहीं होगा।''

कहै रविदास मरम जो पाऊँ । देव निरंजन सत कर ध्याऊं॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''जो जीव कर्मकाण्डों को त्याग कर, ज्ञान के भेद को जान लेता है, वही जीव माया से मुक्त प्रभु को, सत्य जान कर उसका सिमरन करता है।''

शब्द - 99

गुरु सभु रहसि अगमहि जानैं।
ढूंढे कोउ षट सासत्रन मंहि, किंधू को वेद वशानै।। टेक।।
सांस उसांस चढ़ावै बहु विधि, बैठहिं सुंनि समाधी।
फांटियो कानु भभूत तनि लाई, अनिक भरमत वैरागी।। 1।।
तीरथ बरत करयि बहुतेरे, कथा बसत बहु सानै।
कहि रविदास मिलियौ गुर पूरे, जिहि अंतर हरि मिलानै ।। 2।।

जगत्गुरु रविदास महाराज जी, सभी जीवों को, बाह्य कर्मकाण्डों से मुक्त होकर, गुरु की शरण में जाकर, प्रभु से मिलाप करने का, पावन उपदेश देते हैं।

गुरु सभु रहसि अगमहि जानैं।

''गुरु सभी अगम रहस्यों को जानने वाला है।''

ढूंढे कोउ षट सासत्रन मंहि, किंधू को वेद वशानै।। टेक।।

''कोई जीव उसे भ्रमवश बाहर छह शास्त्रों में तथा वेदों में प्रभु को खोजता फिरता है।''

सांस उसांस चढ़ावै बहु विधि, बैठहिं सुंनि समाधी।

''कोई जीव विविध प्रकार से, सांसों को चढ़ाता उतारता है तथा कोई सुन्न समाधि में बैठा है।''

फांटियो कानु भभूत तनि लाई,
अनिक भरमत वैरागी॥ 1॥

''किसी ने अपने कान फड़वाकर, शरीर पर राख लगाई हुई है तथा कई वैरागी बनकर, अनेक स्थानों का भ्रमण करते हैं।''

तीरथ बरत करयि बहुतेरे, कथा बसत बहु सानै।

''कई जीव विभिन्न तीर्थों पर स्नान करते हैं तथा कथाओं का व्याख्यान करते हैं।''

कहि रविदास मिलियौ गुर पूरे,
जिहि अंतर हरि मिलानै।। 2।।

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जब जीव को पूरा गुरु मिल जाता है, तब वह भीतर से ही जीव को प्रभु के साथ मिला देता है।''

राग बसंतु

शब्द – 100

तुझहि सुझंता कछू नाहि॥
पहिरावा देखे ऊभि जाहि॥
गरबवती का नाही ठाउ॥
तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ॥ 1॥
तू कांइ गरबहि बावली॥
जैसे भादउ खूंबराजु तू तिस ते खरी उतावली॥ 1॥ रहाउ॥
जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु॥
तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु॥
अप तन का जो करे बीचारु॥
तिसु नही जमकंकुरु करे खुआरु॥ 2॥
पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु॥
ठाकुरु लेखा मगनहारु॥
फेड़े का दुखु सहै जीउ॥
पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ॥ 3॥
साधू की जउ लेहि ओट॥
तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि॥
कहि रविदास जो जपै नामु॥
तिसु जाति न जनमु न जोनि कामु॥ 4॥ 1॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीव को अपने अमूल्य मनुष्य जीवन में नाशवान् शरीर के झूठे अहंकार को छोड़ कर संत महापुरूषों की शरण में जा कर अपने पापों की निवृत्ति करते हुए प्रभु का नाम सिमरन कर जाति–जन्म और योनियो इत्यादि के भेद–भाव से मुक्त होकर जीवन सफल करने का पावन उपदेश देते हैं।

तुझहि सुझंता कछू नाहि॥
पहिरावा देखे ऊभि जाहि॥

''हे जीव! तुम्हें इस संसार में झूठा अहंकार होने के कारण कुछ समझ नहीं आता और तू अपने पहरावे को देख कर अहंकार कर रहा है।''

गरबवती का नाही ठाउ॥ तेरी गरदनि ऊपरि लवै काउ॥ 1॥

''अहंकार से भरी हुई जीव रूप स्त्री का प्रभु के दरबार में कोई स्थान नहीं है। मृत्यु रूपी कौआ हर समय तुम्हारे सिर पर बोल रहा है भाव मृत्यु तम्हारे सिर पर खड़ी है।''

तू कांइ गरबहि बावली॥
जैसे भादउ खूबराजु तू तिस ते खरी उतावली॥ 1॥ रहाउ॥

''हे नादान स्त्री! तू झूठा अहंकार क्यों करती है? जैसे भादों के महीने में खुम्बों का राज ढाई दिन भाव जीवन कुछ समय के लिए ही होता है, तेरा तो कोई भरोसा ही नहीं, तू तो उससे भी जल्द समाप्त होने वाली है।''

जैसे कुरंक नही पाइओ भेदु॥
तनि सुगंध ढूढै प्रदेसु॥

''जैसे हिरन की नाभि में कस्तूरी की सुगन्धि है, पर वह इस सुगन्धि को जंगल और पहाड़ों में ढूंढता रहता है। इस तरह ही प्रभु का निवास जीव के अंदर है पर अज्ञानता के कारण यह जीव प्रभु को बाहर ढूँढ रहा है।''

अप तन का जो करे बीचारु॥
तिसु नही जमकंकुर करे खुआरू॥ 2॥

''जो जीव अपने अनमोल शरीर की विचार कर प्रभु की अपने अंदर खोज करता है, उसको यमदूत खुआर नहीं करते।''

(सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-

दिल महि खोजि दिलै दिलि खोजहु एही ठउर मुकामा॥ 2॥

''हे मानव! अपने दिल में प्रभु की खोज कर, यही प्रभु के ठहरने का स्थान है।''

सत्गुरु पीपा जी महाराज वर्णन करते हैं:-

जो ब्रहमंडे सोई पिंडे जो खोजै सो पावै॥

''जो प्रभु ब्रह्माण्ड में है वही प्रभु शरीर रूपी पिंड में है। जो जीव अपने अंदर उस प्रभु की खोज करता है, प्रभु को प्राप्त कर लेता है।'')

पुत्र कलत्र का करहि अहंकारु ॥
ठाकुरु लेखा मगनहारु ॥

''जो जीव प्रभु को भुलाकर अपने पुत्र और स्त्री का अहंकार करता है, उस से प्रभु लेखा माँगता है।''

फेड़े का दुखु सहै जीउ॥
पाछे किसहि पुकारहि पीउ पीउ॥ 3 ॥

''हे जीव! जिस समय तुम्हें किये हुए बुरे कर्मों का फल भोगना पड़ेगा तो उस समय किस को पुकार-पुकार कर अपने बचाव के लिए कहेगा कि,''हे प्यारे, मुझे बचाओ। तुम्हारी कोई सहायता नहीं करेगा।''

साधू की जउ लेहि ओट ॥
तेरे मिटहि पाप सभ कोटि कोटि ॥

''हे जीव! यदि तू संत महापुरुषों का आसरा ले लेगा तो तेरे किये हुए करोड़ों-करोड़ों पापों का नाश हो जाएगा।''

कहि रविदास जो जपै नामु ॥
तिसु जाति न जनमुन जोनि कामु ॥ 4 ॥ 1 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जो जीव इस संसार में प्रभु का नाम सिमरन करता है, उसका जाति, जन्म और योनियो से कोई काम नहीं रहता भाव वह जन्म मरण के चक्र से मुक्त होकर प्रभु में विलीन हो जाता है।''

राग मलार

शब्द - 101

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं॥
रिदै राम गोबिंद गुन सारं॥ 1 ॥ रहाउ॥
सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे संत जन करत नही पानं॥
सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहि होइ आनं॥ 1 ॥
तर तारि अपवित्र कर मानीऐ रे जैसे कागरा करत बीचारं॥
भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे पूजीऐ करि नमसकारं॥ 2 ॥
मेरी जाति कुटबांढला ढोर ढोवंता नितहि बानारसी आसा पासा॥
अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा ॥3 ॥1 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज मानवता को पावन उपदेश देते हैं कि, ''जो जीव प्रभु का सिमरन करता है वह प्रभु का ही रूप हो जाता है और उसकी महिमा सारे संसार में फैल जाती है।''

नागर जनां मेरी जाति बिखिआत चंमारं॥
रिदै राम गोबिंद गुन सारं॥ 1 ॥ रहाउ॥

''हे नगर के चतुर पुरुषों! हे नागर जाति के लोगों, हे नागर मल्ल! मेरी जाति प्रकट ही चमार है। मैंने अपने हृदय में प्रभु के गुणों को धारण किया है।''

सुरसरी सलल क्रित बारुनी रे
संत जन करत नहीं पानं॥

''यदि गंगाजल की मदिरा बनाई जाए तो संत जन उसको ग्रहण नहीं करते है, क्योंकि वह गंगाजल अपने चलते प्रवाह से अलग होकर अपवित्र हो गया है। इस तरह ही यदि कोई जीव ऊँचे कुल में पैदा हुआ है और वह प्रभु का नाम सिमरन नहीं करता तो वह प्रभु के दरबार में परवान नहीं होता।''

सुरा अपवित्र नत अवर जल रे ।
सुरसरी मिलत नहि होइ आनं॥ 1 ॥

''इस के विपरीत अपवित्र मदिरा या नदियों-नालियों का पानी जिस समय गंगा में मिल जाता है तो वह कुछ और नहीं रहता बल्कि गंगा का ही रूप हो जाता है। इस तरह ही जिन को संसार के अज्ञानी लोग जाति के कारण शूद्र समझते हैं, जब वह प्रभु का सिमरन करते हैं तो प्रभु में विलीन हो जाते हैं।''

तर तारि अपवित्र कर मानीए रे
जैसे कागरा करत बीचारं॥

''जैसे ताड़ का वृक्ष अपवित्र माना जाता है क्योंकि उसमें नशे जैसा जल होता है। विचार करने वाले ताड़ के वृक्ष के पत्तों से बने काग़ज को अपवित्र समझते हैं।''

भगति भागउतु लिखीऐ तिह ऊपरे
पूजीऐ करि नमसकारं ॥ 2 ॥

''परन्तु जब उन कागज़ों पर प्रभु का नाम और प्रभु की उपमा लिख दी जाती है तो नमस्कार कर पूजे जाते हैं। इसी तरह जिनको सांसारिक जीव अज्ञानता के कारण नीच समझते हैं उन्होंने प्रभु का नाम सिमरन किया तो वह भी इस संसार में पूज्य हो गये।''

मेरी जाति कुटबांढला ढोर ढोवंता
नितहि बानारसी आसा पासा॥

''मेरी जाति मरे हुए पशुओं का चमड़ा उतारने वाली और मरे हुए पशुओं को उठाने वाली है एवं चमड़े का कार्य करती है जो कि नित-प्रति बनारस के आस-पास रहती है।''

अब बिप्र परधान तिहि करहि डंडउति
तेरे नाम सरणाइ रविदासु दासा॥ 3 ॥ 1 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हे प्रभु जी! आप के दास ने अब आपकी शरण ली है। अब मुझे ब्राह्मणों के प्रमुख दंडवत् नमस्कार करते हैं। यह सब आप के नाम की महिमा है।''

शब्द - 102

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति
तास सम तुलि नही आन कोऊ॥
एक ही एक अनेक होइ बिसथरिओ
आन रे आन भरपूरि सोऊ॥ रहाउ॥
जा कै भागवतु लेखिऐ अवरु नही पेखीऐ
तास की जाति आछोप छीपा॥
बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ
नाम की नामना सपत दीपा॥ 1 ॥
जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे
बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा॥
जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी
तिहू रे लोक परसिध कबीरा॥ 2 ॥
जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर दोवंत
फिरहि अजहु बनारसी आस पासा॥
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति
तिन तनै रविदास दासान दासा॥ 3 ॥ 2 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,''प्रभु एक से अनेक रूप धारण कर सारे संसार में समाया हुआ है। जो जीव उस प्रभु का सिमरन

कर उस में विलीन हो जाता है, उस के समान कोई और नहीं हो सकता। ऐसे प्रभु का नाम जप कर सतगुरु नामदेव जी और सतगुरु कबीर जी प्रसिद्ध हुए। वेद व्यास जी और सनक जी ने भी उस प्रभु की उपमा की है।''

हरि जपत तेऊ जना पदम कवलास पति
तास सम तुलि नही आन कोऊ॥
एक ही एक अनेक होइ बसथरिओ
आन रे आन भरपुरि सोऊ॥ रहाउ॥

''जो जीव हरि का नाम सिमरन करते हैं उनकी समानता विष्णु, शिव एवं और कोई नहीं कर सकता। वह प्रभु एक है और एक से अनेक रूप धारण कर इस संसार में व्याप्त है। हे जीव! तुम उस प्रभु की ओर आओ। भाव उसका सिमरन करो।''

(सत्गुरु नामदेव जी वर्णन करते हैं:-

एक अनेक बिआपक पूरक जत देखउ तत सोई॥

''पूर्ण प्रभु एक से अनेक रूप धारण कर सारे संसार में व्यापक है। जहाँ भी देखते हैं वही प्रभु है।'')

जा कै भागवतु लेखिऐ अवरु नही पेखीऐ
तास की जाति आछोप छीपा॥

''नामदेव जी के जीवन में प्रभु की भक्ति को देखते हैं तो प्रभु सिमरन के बिना और कुछ नज़र नहीं आता। उनकी जाति अछूत समझी जाती छींबा थी, जो प्रभु का नाम जप कर प्रभु का ही रूप हो गए।''

बिआस महि लेखीऐ सनक महि पेखीऐ
नाम की नामना सपत दीपा॥ 1॥

महान् विद्वान वेद व्यास जी के लिखे हुए ग्रंथों में भी प्रभु के नाम की उपमा लिखी हुई है और ब्रह्मा के पुत्र सनक के जीवन में भी प्रभु के नाम का यश देखा जाता है अर्थात उन्होंने प्रभु के नाम की उपमा की। प्रभु के नाम की महिमा सात दीप में भाव सारे खण्डों-ब्रह्माण्डों में हो रही है।

जा कै ईदि बकरीदि कुल गऊ रे
बधु करहि मानीअहि सेख सहीद पीरा॥
जा कै बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी
तिहू रे लोक परसिध कबीरा॥ 2॥

"जिस कबीर जी की कुल के लोग ईद और बकरीद के दिनों में गाय और बकरी की कुर्बानी देकर अपने पूर्वजों शेख शहीद पीरों को मानते थे, पर उनके पुत्र ने प्रभु का नाम जप कर ऐसी बात की कि अपने बड़ों को गाय और बकरी को मारने से रोक दिया और वहम-भ्रमों से मुक्त कर प्रभु के नाम से जोड़ा। ऐसे परमार्थी विचारों के कारण कबीर साहिब तीन लोकों में प्रसिद्ध हुए।"

जा के कुटंब के ढेढ सभ ढोर दोवंत फिरहि
अजहु बनारसी आस पासा॥
आचार सहित बिप्र करहि डंडउति
तिन तनै रविदास दासान दासा॥ 3 ॥ 2 ॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,"मेरी कुल के लोग अभी तक बनारस के आस-पास मरे हुए पशुओं को उठाते हैं। उनका पुत्र मैं प्रभु के दासों का दास हूँ और अब ब्राह्मण के प्रमुख मुझे छड़ी की भांति सीधे लेट कर (दंडवत कर) पूरे मान सम्मान और मर्यादा से प्रणाम करते हैं।"

शब्द - 103

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते॥
साधसंगति पाई परम गते॥ रहाउ॥
मैले कपरे कहा लउ धोवउ॥
आवैगी नीद कहा लगु सोवउ॥ 1 ॥
जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ॥
झूठे बनजि उठि ही गई हाटिओ॥ 2 ॥
कहु रविदास भइओ जब लेखो॥
जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ॥ 3 ॥ 1 ॥ 3 ॥

जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को पावन उपदेश देते हैं कि,"संत महापुरुषों की संगत करने से पापों और अज्ञानता रूप नींद का नाश हो जाता है और जीव परम-पद को प्राप्त कर लेता है।"

मिलत पिआरो प्रान नाथु कवन भगति ते॥
साध संगति पाई परम गते॥ रहाउ॥

"प्राणों से प्यारा प्रभु कौन सी भक्ति करने से प्राप्त होता है? संत

महापुरुषों की संगत् करने से जीव सब से श्रेष्ठ अवस्था प्रभु मिलाप रूप परम-पद मुक्ति प्राप्त करता है।''

(बाबा फरीद जी फरमाते हैं:-

करि किरपा प्रभि साधसंगि मेली॥

जा फिरि देखा ता मेरा अलहु बेली॥ 3॥

''प्रभु ने कृपा दृष्टि कर मुझे साधु संगत् से मिलाया है (जोड़ा है)। जिसके प्रताप के कारण मैं जहाँ देखता हूँ मुझे अल्लाह बेली ही दिखाई देता है।'' सत्गुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-

कहु कबीर इह कहीऐ काहि॥

साध संगति बैकुंठ आहि॥

''यह बात क्यों कहें कि कोई बैकुंठ नहीं है। संतों की संगत् ही बैकुंठ है।'')

मैले कपरे कहा लउ धोवउ॥

आवैगी नीद कहा लगु सोवउ॥ 1॥

''संत महापुरुषों की संगत् के बिना जीव अंर्तमन रूपी मैले कपड़ों को कहाँ, जा कर धोएगा? और अज्ञानता रूप नींद में कब तक सोएगा?''

जोई जोई जोरिओ सोई सोई फाटिओ॥

झूठे बनजि उठि ही गई हाटिओ॥ 2॥

''संत महापुरुषों की संगत् कर जीव ने जो जो कर्मों का लेखा जमा किया हुआ है उस लेखे का नाश हो गया। संतों की संगत् के कारण संसार में से झूठे व्यापार की दुकान का नाश हो गया।''

कहु रविदास भइओ जब लेखो॥

जोई जोई कीनो सोई सोई देखिओ॥ 3॥ 1॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि, ''जिस समय जीव को हिसाब देना पड़ेगा तो जीव वही कुछ देखता है जो उसने किया है और इस लेखे का हिसाब संत महापुरुषों की संगत् और नाम सिमरन करने से ही खत्म होता है।''

(सतगुरु कबीर साहिब जी वर्णन करते हैं:-

धरम राइ जब लेखा मागै किआ मुखु लै कै जाहिगा॥

कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु साधसंगति तरि जाहिगा॥ 3॥॥ 1॥

''हे जीव! जिस समय धर्मराज ने तुम से कर्मों का हिसाब मांगना है तो

प्रभु के नाम के बिना उसके पास कौन सा मुख लेकर जाएगा।'' इस लिए कबीर साहिब जी कहते हैं कि,''हे संत जनों सुनो! संतो की संगत करने से जीव पार हो जाएगा।'')

राग आसावरी

शब्द - 104

केसवे विकट माया तोर ताते बिकल गति मोर॥ टेक॥
सुबिश डसन कराल अहिमुख ग्रसति सुद्रिड सु मेश।
निरूखि माखी बखत बियाकुल लोभ काल ना देख॥ 1॥
इंद्रियादिक दुख दारन असंख्यादिक पाप।
तोहि भजत रघुनाथ अंतरि ताहि त्रास ना ताप॥ 2॥
प्रतिज्ञा प्रतिपाल चहुँ जुगि भगति पुरवन काम।
आस मोहि भरोस है रविदास जै जै राम॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज प्रभु के नाम को ही माया के प्रभाव से मुक्ति दिलाने का एक मात्र उपाय बताते हैं।

केसवे विकट माया तोर ताते बिकल गति मोर।। टेक॥

''हे प्रभु जी! आप के नाम के बिना माया बहुत भयानक और कष्ट देने वाली है। इस लिए जीव की दशा और समझ बहुत ही व्याकुलता वाली है।''

सुबिश डसन कराल अहिमुख ग्रसति सुद्रिड सु मेश।
निरूखि माखी बखत बियाकुल लोभ काल ना देख॥ 1॥

''यह माया अपने सुंदर विष रूपी भयानक साँप जैसे मुँह से जीव को डंक मारती है। सुदृढ़ जीव को भी यह सुंदर माया खा जाती है। जैसे मक्खी मीठे पदार्थों को देखकर व्याकुल होती है, ऐसे ही लोभी पुरुष लोभ में आकर समय नहीं देखता और बेचैन रहता है।''

इंद्रियादिक दुख दारन असंख्यादिक पाप।
तोहि भजत रघुनाथ अंतरि ताहि त्रास ना ताप॥ 2॥

''जीव इन्द्रियों व विषय विकारों के अधीन होकर अनेक पाप करता है और दु:ख झेलता है यदि जीव प्रभु की बंदगी करेगा, तो वह सभी दु:खों से मुक्त हो जाएगा।

प्रतिज्ञा प्रतिपाल चहुँ जुगि भगति पुरवन काम।

आस मोहि भरोस है रविदास जै जै राम॥ 3॥

''प्रण के अनुसार चारों युगों भाव सदैव जीवों का पालन करने वाले प्रभु! आप अपने भक्तों की सभी कामनाएं पूर्ण करने वाले हो।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु जी मुझे तो आप पर ही भरोसा है। हे सर्वव्यापक प्रभु जी, आप की जै हो जी।''

शब्द - 105

रामहि पूजा कहा चढ़ाऊँ॥
फल अरु फूल अनुपम न पाऊँ॥ टेक॥
थनहर दूध जो बच्छरु जुठारओ॥
पुहुप भंवर जल मीन बिटारिओ॥ 1॥
मलियागिर बेडिओ भुअंगा।
विष अमृित दोऊ एकै संगा॥ 2॥
धूप दीप नईबेदहि बासा।
कैसे पूज करहि तेरी दासा॥
मनही पूजा मनही धूप।
मनही सेऊँ सहज सरूप॥ 3॥
पूजा अरचा न जानूँ तेरी॥
कहै रविदास कवन गति मेरी॥ 4॥

जगत्गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को कर्म-काण्डों तथा वहमों-भ्रमों से ऊपर उठकर, सच्चे मन से, प्रभु की पूजा करने का पावन उपदेश बख्शिश करते हैं।

रामहि पूजा कहा चढ़ाऊँ॥
फल अरु फूल अनुपम न पाऊँ।। टेक॥

''हे प्रभु जी! मैं सांसारिक पदार्थों में आप की पूजा के लिए क्या भेंट करूँ? संसार के सभी पदार्थ अपवित्र हैं। फिर मैं अद्‌भूत फल एवं फूल कहाँ से लाऊँ?''

थनहर दूध जो बच्छरु जुठारओ॥
पुहुप भंवर जल मीन बिटारिओ॥ 1॥

''दूध भी आप जी की पूजा के लिए भेंट करने योग्य नहीं है क्योंकि दूध

को तो बछड़ा पहले ही थनों में से पीकर जूठा कर देता है। फूल को भंवरा तथा जल को मछली अपवित्र कर देती है। इस लिए फूल एवं जल भी आप जी की पूजा के योग्य नहीं है।''

मलियागिर बेडिओ भुअंगा।
विष अमृित दोऊ एकै संगा॥ 2॥

''प्रभु जी! चंदन भी आप जी की पूजा योग्य नहीं हैं क्योंकि चंदन के साथ सदैव साँप लिपटे रहते हैं। विषैले साँप तथा अमृतमयी चंदन दोनों एक साथ इक्ट्ठे करते हैं।''

धूप दीप नईबेदहि बासा।
कैसे पूज करहि तेरी दासा॥

''धूप, दीपक, मीठे एवं बासे पदार्थ से प्रभु जी, मैं आप जी की पूजा कैसे करूँ? क्योंकि ये सभी अपवित्र है।''

मनही पूजा मनही धूप।
मनही सेऊँ सहज सरूप॥ 3॥

''प्रभु जी! सच्चे मन के साथ आपकी पूजा की जा सकती है और सच्चा मन ही आप जी को धूप चढ़ाने के समान है। मन की सहजावस्था में ही आप जी के स्वरूप के दर्शन होते हैं।''

पूजा अरचा न जानूँ तेरी॥
कहै रविदास कवन गति मेरी॥ 4॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज विनती करते हैं कि,''हे प्रभु जी! मैं सांसारिक पदार्थों के साथ आप जी की पूजा करना नहीं जानता। अब मेरी कौन सी गति होगी? अर्थात् मैं आप जी की पूजा सच्चे मन से करता हूँ।''

शब्द – 106

बरजि हो बरजि बीठुले माया जग खाया॥
महाप्रबल सब ही बस कीये, सुर नर मुनि भरमाया॥ टेक॥
बालक बिरध तरुन अति सुन्दर, नाना भेस बनावै।
जोगी जती तपी सन्यासी, पंडित रहिन न पावै॥ 1॥
बाजीगर की बाजी कारनि सब को कौतिग आवै।
जो देखै सो भुलि रहै वाका चेला मरम जो पावै॥ 2॥

खंड ब्रह्मण्ड लोक सभ जीते, ऐहि बिधि तेज जनावै।
सिअंभू का चित चौर लियो है, वा कै पाछै लागा धावै॥ 3॥
इन बातन सुखचैन मरियत है, सब को रहे उझारी।
नेक दृश्ट किन राखो कैसो, मेटो बिपति हमारी॥ 4॥
कहै रविदास उदास भयो मन, भाजि कहाँ अब जयीये।
इत उत तुम गोबिन्द गुसाईं तुमहीं मांहि समैईये॥ 5॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को झूठी माया से बचने का उपाय बताते हैं कि,''इस संसार में माया तो सभी को लुभा रही है, परन्तु जो जीव प्रभु का भजन करता है, वह माया के प्रभाव से मुक्त होकर, प्रभु में विलीन हो जाता है।''

बरजि हो बरजि बीठुले माया जग खाया॥
महाप्रबल सब ही बस कीये, सुर नर मुनि भरमाया॥ टेक॥

''संसार को झूठी माया से मुक्त कराने वाले प्रभु जी, अपनी शक्तिशाली माया को रोको। इस प्रबल माया ने सारा संसार अपने वश में किया हुआ है और देवताओं, मनुष्यों और मुनियों को भ्रम में डाला हुआ है।''

बालक बिरध तरुन अति सुन्दर, नाना भेस बनावै।
जोगी जती तपी सन्यासी, पंडित रहिन न पावै॥ 1॥

''इस माया ने अनेक प्रकार के सुंदर रूप बनाकर बच्चों, बुजुर्गों, युवकों/तरुणों और बुद्धिमानों को लुभाया हुआ है। इस माया के आगे योगी-जती, तपी, सन्यासी और पंडित भी नहीं टिक पाते।''

बाजीगर की बाजी कारनि सब को कौतिग आवै।
जो देखै सो भुलि रहै वाका चेला मरम जो पावै॥ 2॥

''प्रभु बाज़ीगर की बाज़ी के कारण, सारे संसार के जीव कौतुक भाव तमाशा कर रहे हैं, जो माया को देखकर प्रभु को भूल रहे हैं, परन्तु प्रभु का सच्चा उपासक वही है जो झूठी माया के भेद को जान लेता है।''

खंड ब्रह्मण्ड लोक सभ जीते, ऐहि बिधि तेज जनावै।
सिअंभू का चित चौर लियो है, वा कै पाछै लागा धावै॥ 3॥

''प्रभु का सिमरन करने वालों के बिना, इस माया ने खण्डों बह्माण्डों के लोगों को जीत कर, अपने अधीन कर लिया है। इस विधि से माया अपनी शक्ति दिखाती है। इस माया ने शिवजी का मन अपनी ओर लगा लिया है और शिवजी उस माया के पीछे दौड़ता रहा था।''

इन बातन सुखचैन मरियत है, सब को रहे उझारी।
नेक दृिश्ट किन राखो कैसो, मेटो बिपति हमारी॥ 4॥

''इस झूठी माया के पीछे लगकर और इसकी बातें करके जीव का सुख-चैन मर जाता है। माया ने सब को भरमाया हुआ है। हे प्रभु जी! आप हम पर कृपा दृष्टि कर हमारी रक्षा करो और विपता को समाप्त करो।''

कहै रविदास उदास भयो मन, भाजि कहाँ अब जयीये।
इत उत तुम गोबिन्द गुसाईं तुमहीं मांहि समैईये॥ 5॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''हे प्रभु जी! आप जी का भजन कर, मेरा मन माया से उपराम हो गया है और आप के नाम के बिना, माया से बचने का कोई अन्य उपाय नहीं है। प्रभु जी! आप हर जगह भाव लोक परलोक में विद्यमान हो, यह जीव आपका भजन करके, माया के प्रभाव से मुक्त होकर, आप में ही समा जाता है।'

शब्द - 107

तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु।
पान करत पायो पायो रमइया धन॥ टेक॥
संपति बिपति पटल माया धन।
ता महिं मगन न होत तेरो जन॥ 1॥
कहा भयो जे गत तन छिन छिन।
प्रेम जाइ तो डरपै तेरो निज जन॥ 2॥
प्रेम रज लै राखो रिदै धरि॥
कहै रविदास छूटिबो कवन परि॥ 3॥

जगत्गुरु रविदास जी महाराज समस्त मानवता को प्रभु प्रेम का पावन उपदेश देते हैं कि,''प्रभु प्रेम करने वाले को, अपने शरीर के टुकड़े-टुकड़े होने की भी कोई चिंता नहीं होती।''

तुझहि चरन अरबिंद भवन मनु।
पान करत पायो पायो रमइया धन॥ टेक॥

''प्रभु जी! आप के चरण, कंवल फूल के समान हैं और मेरा मन भंवरे के समान है। मेरे मन ने आप जी के चरण कंवलों में रहने के लिए, स्थान प्राप्त कर

लिया है। हे प्रभु जी! आप का पावन नाम रूपी अमृत पीकर, मैंने नाम रूपी धन प्राप्त कर लिया है।''

संपति बिपति पटल माया धन।
ता महिं मगन न होत तेरो जन॥ 1॥

''प्रभु जी! आप जी के नाम का आनंद लेने वाला आप जी का दास सुख दुख रूपी पर्दे, सांसारिक माया एवं संसार रूपी झूठे धन में मग्न नहीं होता।''

कहा भयो जे गत तन छिन छिन।
प्रेम जाइ तो डरपै तेरो निज जन॥ 2॥

''प्रभु जी! मेरा शरीर टुकड़े-टुकड़े भी हो जाए तो मुझे कोई भय नहीं, आप जी के दास को भय तो इस बात का है कि मेरे मन में से आप का प्रेम कम न हो जाए।''

प्रेम रज लै राखो रिदै धरि॥
कहै रविदास छूटिबो कवन परि॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु जी! दास ने आपको प्रेम भाव से हृदय में बसाया हुआ है। अब आप क्या यत्न करके उससे छुटकारा पाओगे? अर्थात् आप प्रेम के सच्चे बंधन में से निकल नहीं सकते।''

शब्द - 108

बंदे जानि साहिब गनी।
समझि बेद कतेब बोलै काबे में किया मनी॥ टेक॥
ज्वानी दुनी जमाल सूरति देखिए थिरि नाहिं वे।।
दम छ सै सहंस इक्कीस हर दिन खजाने थैं जाहिं वे॥ 1॥
मनी मारे गर्ब गाफिल बेमेहर बेपीर वे।
दरी खाने परत चोबा होत नहीं तकसीर वे॥ 2॥
स्याही सपेदी तुरँगी नाना रंग बिसाल वे।
नापैद तैं पैदा कीया पैमाल करत न बार वे॥ 3॥
कुछु गाँठि खरची मिहर तोसा खैर खूबी हाथि वे।
धनी का फुरमान आया तब कीया चालै साथ वे॥ 4॥
तजि बदजवां बेनजर कमदिलां करि खसम की कान वे।
रविदास की अरदास सुण कछु हक हलाल पछाण वे॥ 5॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को प्रभु का नाम सिमरन कर नाम रूपी श्रेष्ठ धन को प्राप्त करने का उपदेश देते हैं, जो जीव के लोक-परलोक में सहायक बनता है।

बंदे जानि साहिब गनी।

समझि बेद कतेब बोलै काबे में किया मनी।। टेक।।

''हे मनुष्य! यह बात अच्छी तरह जान ले कि प्रभु बहुत धनवान् है। वेद, कतेब इत्यादि धार्मिक पुस्तकें यही समझा रही हैं कि उस प्रभु के बिना काबे में कोई और विशेष मणि नहीं है।''

ज्वानी दुनी जमाल सूरति देखिए थिरि नाहिं वे।।

दम छ सै सहंस इक्कीस हर दिन खजाने थें जाहिं वे।। 1।।

''संसार में यौवन की अवस्था का जोश और सुंदरता सदैव रहने वाली नहीं है। इक्कीस हज़ार छः सौ श्वास तेरे अमूल्य जीवन की पूँजी में से हर रोज व्यर्थ जा रहे हैं।''

मनी मारे गर्ब 'गाफिल' बेमेहर बेपीर वे।

दरी खाने परत चोबा होत नहीं तकसीर वे।। 2।।

''हे मूर्ख! बे-रहम (क्षमाहीन) और बे-गुरे (नास्तिक) प्राणी तू सच्चे गुरु की कृपा के बिना अहंकार में नष्ट हो रहा है। सच्चे मार्ग पर चल, मृत्यु रूपी नगारा बजने पर तुझे संसार छोड़ कर जाना पड़ेगा। इस लिए तुमसे कोई भूल न हो।''

स्याही सपेदी तुरँगी नाना रंग बिसाल वे।

नार्पेद तैं पैदा कीया पैमाल करत न बार वे।। 3।।

''प्रभु ने काला, सफेद और पीला इत्यादि अनेक अनंत रंग बनाए हैं, उस स्वयं प्रकाशमान् प्रभु ने संसार की रचना की है और विनाश करते समय भी वह देर नहीं लगाता।''

कुछु गाँठि खरची मिहर तोसा खैर खूबी हाथि वे।

धनी का फुरमान आया तब कीया चालै साथ वे।। 4।।

''हे जीव! तू प्रभु के नाम और मेहर की खुराक और खर्च (तोसा) और अच्छे गुणों की खैर अपने दामन से बाँध ले, जो तेरे लोक-परलोक के मार्ग में तेरी सहायक होगी। जिससे तुम्हें परमानंद की प्राप्ति होगी। जिस समय प्रभु का आदेश

(बुलावा) आएगा, उस समय तेरे साथ क्या जायेगा भाव उस समय नाम रूपी धन ही तेरे साथ जाएगा।''

तजि बदजवां बेनजर कमदिलां करि खसम की कान वे।
रविदास की अरदास सुण कछु हक हलाल पछाण वे॥ 5॥

''हे बुरी नज़र और कमज़ोर दिल वाले जीव, तुम बुरा बोलना त्याग दो और प्रभु का आश्रय लो।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज समझाते हैं कि,''हे जीव! तु हक हलाल की पहचान भाव सच्चाई और ईमानदारी की राह पर चलता हुआ प्रभु की पहचान कर।''

शब्द - 109

सु कछु बिचारियो ताथे मेरो मनु थिरु ह्वै रहियो॥
हरि रंग लागो ताथै मेरो बरन पलटि भइयो॥ टेक॥
धन्न सो पंथी पंथ चलावा।
अगम गवन में गम दिखलावा॥ 1॥
अबरन बरन कथै जिन कोई।
घट घट बियापि रहियो हरि सोई॥ 2॥
जिहि पद सुर नर प्रेम पियासा।
सो पद रम रहियो रविदासा ॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को प्रभु के नाम का विचार करने का उपदेश देते हैं कि,''जब जीव प्रभु के नाम का विचार करता है तो प्रभु में विलीन हो जाता है।'' उस परमावस्था का वर्णन गुरु जी इस शब्द में करते हैं:-

सु कछु बिचारियो ताथे मेरो मनु थिरु ह्वै रहियो॥
हरि रंग लागो ताथै मेरो बरन पलटि भइयो।। टेक॥

''जब मैंने प्रभु के नाम की थोड़ी सी ही विचार की, तो मेरा मन स्थिर हो गया। जब मुझे हरिनाम का मजीठी रंग लगा, तो झूठा रंग बदल गया।''

धन्न सो पंथी पंथ चलावा। अगम गवन में गम दिखलावा॥ 1॥

''धन्य वे संत और साधक है जिन्होंने प्रभु भक्ति रूप पंथ चलाया है। प्रभु का नाम गम से मुक्त होकर प्रभु में विलीन होना सिखाता है और आवागमन् को समाप्त करता है।''

अबरन बरन कथै जिन कोई।
घट घट बियापि रहियो हरि सोई॥ 2॥

गुरु जी फरमाते हैं कि, ''अवर्ण-वर्ण भेद-भाव मत करो क्योंकि सब जीव एक समान हैं और संसार के कण-कण में हरि व्याप्त है।''

जिहि पद सुर नर प्रेम पियासा।
सो पद रम रहियो रविदासा ॥ 3॥

''जिस प्रभु के प्रेम पद की प्राप्ति के लिए देवता और जीव व्याकुल है,'' सतगुरु रविदास महाराज जी कथन करते हैं कि,''मैं उस प्रभु के परम पद की प्राप्ति कर, उसी में विलीन हो गया हूँ।''

शब्द - 110

भाई रे सहज बन्दो सोई बिन सहज सिद्धि न होई।
नयौलीन मन जो जानिये जब कीट भृंगी होई॥ टेक॥
आपा पर चीन्हें नहीं रे और को उपदेश।
कहां ते तुम आयो रे भाई जाहूगे कित देस॥ 1॥
कहिये तो कहिये का कहि कहीये कहाँ न को पतियाइ।
रविदास दास अजान है करि रहियो सहज समाइ॥ 2॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,''जीव को प्रभु के आगे तुरिया अवस्था की प्राप्ति के लिए विनती करनी चाहिए। जीव बाह्य आडम्बरों से मुक्त होकर, तुरिया अवस्था में पहुँच कर प्रभु में लीन हो जाता है।''

भाई रे सहज बन्दो सोई बिन सहज सिद्धि न होई।
नयौलीन मन जो जानिये जब कीट भृंगी होई।। टेक॥

''हे भाई! सहज अवस्था की प्राप्ति के लिए उस प्रभु के समक्ष विनती करो क्योंकि तुरिया अवस्था तक पहुँचने से पहले मुक्ति नहीं मिल सकती। जो जीव प्रभु के नाम से जुड़ कर उसमें लीन हो जाता है, उसे कीड़े के भृंगी होने के समान समझना चाहिए। भृंगी कीड़ा जिस कीड़े को अपनाता है, वह उसके चारों और चक्र काटता है। और वह भृंगी हो जाता है। इस कीड़े की तरह ही, वह जीव भी, प्रभु में लीन होकर, प्रभु का ही रूप हो जाता है।''

आपा पर चीन्हें नहीं रे और को उपदेश।
कहां ते तुम आयो रे भाई जाहूगे कित देस॥ 1॥

''हे जीव! तुम अपने को जान नहीं सके तथा औरों को उपदेश देते हो। हे भाई! तुम अपने अंदर से यह खोज करो कि तुम कहाँ से आए हो। और शरीर को छोड़ने के बाद किस देश में जाना है?''

कहिये तो कहिये का कहि कहीये कहाँ न को पतियाइ।
रविदास दास अजान ह्वै करि रहियो सहज समाइ॥ 2॥

''प्रभु में लीन होने की अवस्था के विषय में किया कहें, क्योंकि ऐसे कहने पर कोई विश्वास नहीं करता।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''मैं आप का दास संसार के आडम्बरों से अनजान होकर, सहजावस्था में पहुँच कर आप में ही विलीन हो गया हूँ।''

शब्द - 111

देहु कलाली एक पियाला। ऐसा अबधू होई मतवाला॥ टेक॥
कहै कलाली पियाला देऊ। पीवन हारे का सिर लेऊ॥ 1॥
ऐरी कलाली तैं क्या किया। सिर के साटै पियाला दिया॥
सिर कै साटै महिंगा भारी। पीवेगा अपना सिर डारी॥ 2॥
चंद सूर दोउ सनमुख होई। पीवै पियाला मरै न कोई॥ 3॥
सहज सुन्न में भाठी स्रवै। पीवै रविदास गुरमुख द्रवै॥ 4॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को प्रभु के नाम का दान देने वाले गुरु के पास जाकर, नाम रूपी प्याला पीने का पावन उपदेश देते हैं। ऐसा प्याला गुरु के आगे सर्वस्व भेंट करने से प्राप्त होता है।

देहु कलाली एक पियाला।
ऐसा अबधू होई मतवाला॥ टेक॥

''प्रभु के नाम रूपी अमृत का प्याला देने वाले संतजनों, एक प्याला मुझे भी देना जी। ऐसे प्याले को पीने के लिए मैं वैरागी हूँ और पीकर मस्त होने वाला हूँ।''

कहै कलाली पियाला देऊ।
पीवन हारे का सिर लेऊ॥ 1॥

प्रभु का नाम रूपी प्याला देने वाले गुरु जी फरमाते हैं कि,''मैं तुम्हें ऐसा प्याला तभी दे सकता हूँ, जब तुम मेरे आगे अपना शीश भेंट करो, भाव अपना आप मिटा दो।''

ऐरी कलाली तैं क्या किया।
सिर के साटै पियाला दिया॥

''हे प्रभु का नाम रूपी प्याला देने वाले गुरु जी! यह आप ने क्या किया? आप ने तो मेरा शीश लेकर मुझे अमृत का प्याला दिया है। भाव कि वही जीव अमृत का प्याला प्राप्त कर सकता है जो अपना तन-मन गुरु के आगे अर्पण कर देता है।''

सिर कै साटै महिंगा भारी।
पीवेगा अपना सिर डारी॥ 2॥

''सिर के बदले में अत्यधिक मूल्यवान प्याला प्राप्त होता है, अपना सिर न्यौछावर कर जीव ऐसा प्याला ग्रहण करता है।''

चंद सूर दोउ सनमुख होई।
पीवै पियाला मरै न कोई ॥ 3॥

''इड़ा और पिंगला दोनों नसें जहाँ इकट्ठी होती है, वहाँ सुष्मना नाड़ी से मिलती हैं, तो त्रिकुटी से ऊपर दशमद्वार में प्रवेश कर जीव प्रभु का नाम रूपी अमृत प्याला पीता है। फिर वह जीवन मुक्त हो जाता है।''

सहज सुन्न में भाठी स्रवै।
पीवै रविदास गुरमुख द्रवै॥ 4॥

''प्रभु के ऐसे नाम रूपी प्याले को सहज सुन्न भाव तुरिया अवस्था रूपी भट्ठी द्वारा तैयार हुई अमृतधारा झरती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''ऐसी अवस्था में पहुँच कर, गुरमुख जीव, गुरु की क्रिया से नाम रूपी प्रेम प्याला पीते हैं।''

शब्द - 112

ऐसी मेरी जाति विखियात चमारं ॥
हिरदे राम गोबिंद गुन सारं॥ टेक॥
सुरसरि जल लीया कृत बारुनी रे
जैसे संत जन नाहिं करत पानं।
सुरा अपवित्र निति गंगजल मानिये
सुरसरि मिलत नहिं होत आनं॥ 1॥
तर तारि अपवित्र कर मानिये

जैसे कागरा करत बिचारं।
भगवत भगवंत जब ऊपरे लिखिये
तब पूजिये करि नमस्कारं॥ 2॥
अनेक अधम जिब नाम सुनि ऊधरे
पतित पावन भये परसि सारं।
भनत रविदास रंरकार गुन गावंत
संत साधु भये सहज पारं॥ 3॥

जगत्गुरु रविदास जी महाराज मानवता को पावन उपदेश देते हैं कि,''जो जीव प्रभु का नाम लेता है, वह प्रभु का ही रूप हो जाता है और उसका यश संसार भर में फैल जाता है।''

ऐसी मेरी जाति विखियात चमारं ॥
हिरदे राम गोबिंद गुन सारं॥ टेक॥

''मैं प्रसिद्ध चमार जाति से संबंध रखता हूँ और मैने अपने हृदय में प्रभु के गुणों को धारण किया अर्थात् बसाया हुआ है।''

सुरसरि जल लीया कृत बारुनी रे
जैसे संत जन नाहिं करत पानं।

''यदि गंगाजल से मदिरा बना ली जाए, तब भी संत जन उसका सेवन नहीं करते क्योंकि वह गंगाजल अपने निरंतर प्रवाह से अलग होकर, अपवित्र हो गया है। उसी प्रकार यदि कोई जीव ऊँचे कुल में पैदा हुआ है परन्तु वह प्रभु का नाम नहीं जपता, वह प्रभु के दरबार में मान्य नहीं होता।''

सरा अपवित्र निति गंगजल मानिये
सुरसरि मिलत नहिं होत आनं॥ 1॥

''इसके विपरीत अपवित्र मदिरा अथवा अन्य नदियों नालों का पानी, जिस समय गंगा में मिल जाता है, तो वह कुछ और न रहकर, गंगा का ही रूप हो जाता है। इसी प्रकार जिन्हें संसार के अज्ञानी लोग जाति के कारण शूद्र समझते हैं, जब वह प्रभु का नाम जपते हैं, तो वह प्रभु के साथ मिलकर प्रभु में अभेद हो जाते हैं।''

तर तारि अपवित्र कर मानिये
जैसे कागरा करत बिचारं।

''जिस प्रकार ताड़ का वृक्ष अपवित्र माना जाता है, क्योंकि उसमें नशे के

समान जल होता है। विचारक ताड़ के वृक्ष के पत्तों से बने काग़ज को अपवित्र मानते हैं।''

भगवत भगवंत जब ऊपरे लिखिये
तब पूजिये करि नमस्कारं॥ 2॥

''परन्तु जब उन पर प्रभु का नाम तथा प्रशंसा लिख दी जाती है तो उन्हें नमस्कार कर उसकी पूजा की जाती है। इस प्रकार जिन जीवों को सांसारिक लोग अज्ञानता के कारण नीच समझते थे, जब उन्होंने प्रभु का नाम लिया, तो वे भी इस संसार में नमस्कार कर पूजे जाते हैं।''

अनेक अधम जिब नाम सुनि ऊधरे
पतित पावन भये परसि सारं।

''अनेकों जीव जिन्हें भ्रम वश लोग नीच जाति के समझते थे, वे जीव प्रभु का पावन नाम जपकर मुक्त हो गए।''

भनत रविदास रंरकार गुन गावंत
संत साधु भये सहज पारं॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''रंग-रूप से रहित, प्रभु के गुण गाकर, संत जन सहजावस्था में पहुँचकर मुक्त हो जाते हैं।''

शब्द - 113

पार गया चाहै सभ कोई दोहू उरवार पार नहि होई॥ टेक॥
पार कहै उरवार सो पारा बिन पद परचे भ्रमै गंवारा॥ 1॥
पार परमपद मांझि मुरारी ता में आप रमैं बनवारी॥ 2॥
पूरन ब्रह्म बसै सभ ठांई कहै रविदास मिलै सुख सांई॥ 3॥

जगत्गुरु रविदास जी महाराज जीवों को पावन उपदेश देते हैं कि,''हर जीव इस संसार में मुक्त होना चाहता है परन्तु उस परम तत्व प्रभु को जाने बिना जीव मुक्त नहीं हो सकता और परम-पद की प्राप्ति होने पर ही जीव को ब्रह्म सुख प्राप्त होता है।''

पार गया चाहै सभ कोई दोहू उरवार पार नहि होई॥ टेक॥

''हर जीव इस संसार में मुक्त होना चाहता है परन्तु प्रभु के नाम सिमरन के बिना जीव अपना जीवन निष्फल गँवा लेता है और इस जीव के दोनों लोक-परलोक सफल नहीं होते भाव संसार रूपी भवसागर से पार नहीं होता।''

पार कहै उरवार सो पारा बिन पद परचे भ्रमै गंवारा ॥ 1 ॥

प्रभु का नाम जप कर जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होने को ही संसार रूपी भवसागर से पार होना कहा जाता है परन्तु परम तत्व को जाने बिना यह गँवार पुरुष भ्रम में ही फँसा रहता है।

पार परमपद मांझि मुरारी ता में आप रमैं बनवारी ॥ 2 ॥

परम पद की अवस्था ही भवसागर से पार होने की अवस्था है जिस में सृष्टि का कर्ता प्रभु स्वयं निवास करता है।

पूरन ब्रह्म बसै सभ ठांई कहै रविदास मिलै सुख सांई ॥ 3 ॥

परम पद की अवस्था में पहुँच कर, पूर्ण प्रभु सब जगह भाव संसार के कण कण में विद्यमान प्रतीत होता है। सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि प्रभु मालिक की प्राप्ति ही परम-सुख है।

शब्द - 114

सतगुर हमहु लखाई बाट।
जनम पाछ्ले पाप नसाने, मिटेगौ सभु संताप।। टेक ॥
बाहर खोजत जनम गंवाए,
उनमनि ध्यान रहे घट आप।
शबद अनाहद बाजत घट मंहि,
अगम ग्यान भौ गुर प्रताप।। 1 ।।
धन दारा मंहि रहियो मगन नित,
गुणियो न मिचु कौ चाप।।
कहि रविदास गुरु राह दिखावै,
तृिछा बुझि मिटि मन संताप।। 2 ।।

जगत्गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को सत्गुरु के बताए मार्ग पर चलकर, प्रभु की अपने भीतर से ही प्राप्ति कर जीवन सफल करने का पावन उपदेश बख्शिश करते हैं।

सतगुर हमहु लखाई बाट।
जनम पाछ्ले पाप नसाने, मिटोगौ सभु संताप।। टेक ।।

''सत्गुरु जीव को संसार रूपी भवसागर से पार लगने के लिए नाम रूपी

मार्ग दिखलाते हैं, जिस पर चलकर, जीव अपने पिछले सभी पापों एवं दुखों को खत्म कर लेता है।''

बाहर खोजत जनम गंवाए,
उनमनि ध्यान रहे घट आप।

''जीव, प्रभु को बाहर खोजने में ही जन्म गंवा लेता है, परन्तु नाम जपकर, ध्यान लगाकर, सहजावस्था में पहुँचकर, वह अपने भीतर से ही प्रभु को प्राप्त कर लेता है।''

शबद अनाहद बाजत घट मंहि,
अगम ग्यान भौ गुर प्रताप।। 1।।

''अनहद शब्द एक रस जीव के भीतर गूंज रहा है। ऐसा गम से रहित ज्ञान, गुरु कृपा से ही प्राप्त होता है।''

धन दारा मंहि रहियो मगन नित,
गुणियो न मिचु कौ चाप।।

''जीव नित्य प्रति धन एवं स्त्री में मग्न रहता है और मृत्यु की विचार नहीं करता।''

कहि रविदास गुरु राह दिखावै,
तृिछा बुझि मिटि मन संताप।। 2।।

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जब गुरु प्रभु को मिलने का मार्ग दिखाता है, तो उस मार्ग पर चलकर, जीव के मन में से सारी तृष्णाएं एवं संताप समाप्त हो जाते हैं, जीव प्रभु के साथ जुड़ जाता है।''

शब्द - 115

बापुरो सत रविदास कहै रे।
गियान बिचार चरन चित लावै हरि की सरनि रहै रे॥ टेक॥
पाती तोड़े पूजि रचावै तारन तिरन कहै रे।
मूरति माहिं बसै परमेशर तौ पानी माहिं तिरै रे॥ 1॥
त्रिबिध संसार कवन बिधि तिरबौ जे दृिड़ नाव न गहे रे।
नाम छाडिजे डांडे बैसे तौ दूना दुःख सहे रे॥ 2॥
गुरु को सबद अरु सुरति कुदाली खोदत कोई लहै रे।
राम कहहु कै बाटै न आयो सो नेकु लबहै रे॥ 3॥

झूठी माया जग डहकाया तौ तिन ताप दहै रे।
कहै रविदास राम जप रसना माया काहू के संग न रहै रे॥ 4॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज ने जीवों को झूठी माया से बचने के लिए गुरु से शब्द लेकर उसका सिमरन करके, परमानंद की प्राप्ति करने का उपदेश दिया है।

बापुरो सत रविदास कहै रे।
गियान बिचार चरन चित लावै हरि की सरनि रहै रे॥ टेक॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु को भूले हुए बेचारे जीव मैं सत्य कहता हूं कि जीवों को हरि के सत्यज्ञान की विचार करके और हरि के चरणों में मन लगाना चाहिए और उसकी शरण में रहना चाहिए।''

पाती तोड़े पूजि रचावै तारन तिरन कहै रे।
मूरति माहिं बसै परमेशर तौ पानी माहिं तिरै रे॥ 1॥

''सच्चे प्रेम के बिना, जीव फूल पत्ते तोड़कर, मूर्ति के आगे, पूजा के लिए चढ़ाता है। मूर्ति को जीवों को पार लगाने वाला कहा जाता है। यदि मूर्ति में हरि का निवास है, तो मूर्ति को पानी पर तैरना चाहिए।''

त्रिबिध संसार कवन बिधि तिरबौ जे दृिड़ नाव न गहे रे।
नाम छाडिजे डांडे बैसे तौ दूना दुःख सहे रे॥ 2॥

''जब तक जीव को संसार रूपी भवसागर से पार होने के लिए हरि के नाम की मज़बूत नांव नहीं मिलती, तब तक जीव सत-रज-तम रूपी संसार से कैसे पार हो सकेगा? हरि के नाम की मज़बूत नांव को छोड़ कर, देवी-देवताओं की पूजा रूपी डंडे, भाव चप्पु का सहारा लेकर इसको बहुत कष्ट झेलना पड़ेगा।''

गुरु को सबद अरु सुरति कुदाली खोदत कोई लहै रे।
राम कहहु कै बाटै न आयो सो नेकु लबहै रे॥ 3॥

''इस संसार में कोई विरला ही ऐसा जीव है, जो गुरु से शब्द लेकर उसका, सिमरन कर, सुरति रूपी कुदाली से, अपने भीतर से, प्रभु की खोज से, शब्द-सुरति का मेल कर, परमानंद की खोज करता है। सब का मालिक राम, किसी की बांट में नहीं आया, जो नेक हृदय से हरि की खोज करता है वह मालिक को पा लेता है।''

झूठी माया जग डहकाया तौ तिन ताप दहै रे।
कहै रविदास राम जप रसना माया काहू के संग न रहै रे॥ 4॥

"झूठी माया ने सारे संसार को भरमाया हुआ है, इस लिए जीव को तीन दुख आधि, व्याधि, उपाधि व्याप रहे हैं।" सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि, "हे संसार के प्राणियों! अपनी रसना से हरि का नाम सिमरन करो ताकि तुम्हारा मन हरि से ही जुड़ा रहे। माया तो कभी भी किसी के साथ नहीं रहती।"

शब्द -116

ऐ अंदेस सोच यिह मेरे।
निसिवासर गुन गाऊँ तेरे॥ टेक॥
तुम चितंत मेरी चिंतहु जाई।
तुम चिंतामनि होय कि नाई॥ 1॥
भगति हेत तुम कहा कहा नहिं कीन्हा।
हमरी बेर भये बलहीना॥ 2॥
कहै रविदास दास अपराधी।
जेहि तुम द्रवो मैं भगति न साधी॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को पावन उपदेश देते हैं कि, "जीव के मन में दिन रात प्रभु के गुण गाने की चिंता होनी चाहिए।"

ऐ अंदेस सोच यिह मेरे।
निसिवासर गुन गाऊँ तेरे॥ टेक॥

"हे प्रभु जी! मेरे मन में यह चिंता और सोच लगी रहती है कि मैं दिन रात आप के गुण गाता रहूँ।"

तुम चितंत मेरी चिंतहु जाई।
तुम चिंतामनि होय कि नाई॥ 1॥

"प्रभु जी! आपका पावन नाम याद करने से मेरे मन की सभी चिंताएं समाप्त हो गई हैं। आप का एक नाम ही मन-वांछित फल देने वाली मणि है।"

भगति हेत तुम कहा कहा नहिं कीन्हा।
हमरी बेर भये बलहीना॥ 2॥

"प्रभु जी! आप अपने भक्तों के लिए क्या क्या नहीं करते? पर मेरी बारी आने पर आप बलहीन हो गए हो, मेरी सहायता क्यों नहीं करते?"

कहै रविदास दास अपराधी।
जेहि तुम द्रवो मैं भगति न साधी॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि, ''प्रभु जी वह दास अपराधी है, जो आप का दास कहला कर आप की भक्ति रूपी साधना नहीं करता।''

शब्द - 117

बौरी करिलै राम सनेहा।
संग सहेली वियाह चली सब,
छांडि नैहरि रा गेहा।। टेक।।
खेल खिलार बड़स सभ बीती,
मन चित भज न पिउ परतीती।
मैं मैं जौ लौं गर्भ बौरानी,
तौ लौं पियारा मनु नहिं आनी।। 1।।
आपा मेटि मैं मेरी खोही,
गरब तियागी अरपिहि निज देही।
पिउ कौ नारी उहि मन आई,
जिहि अभि अंतर अवरु नहिं काई।। 2।।
जौ लौं पियारा मन नहिं आई,
का सोरह शिंगार बनाई।।
सोइ सती रविदास बखानी,
तन मन सिऊं पिउ रंग समानी।। 3।।

इस शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज जीव रूपी स्त्री को, पति प्रभु को प्राप्त कर, अपना जीवन सफल बनाने का, पावन उपदेश बख्शीश करते हैं।

बौरी करिलै राम सनेहा।
संग सहेली वियाह चली सब।
छांडि नैहरि रा गेहा।। टेक।।

''प्रभु को भूली हुई जीव रूपी बौरी स्त्री! तू प्रभु के साथ स्नेह कर। अन्य जीव रूपी सहेलियां-स्त्रियां पिता का घर छोड़ कर ससुराल घर चली गयी है, प्रभु के साथ मिल गईं हैं अर्थात् ब्याही गई हैं। इस लिए तू भी इधर-उधर की बातें छोड़ कर प्रभु का सिमरन कर।''

खेल खिलार बड़स सभ बीती,
मन चित भजन पिउ परतीती।

"हे जीव रूपी स्त्री! प्रभु को भुलाकर, तेरी आयु संसार के अन्य कार्यों खेल-तमाशे में व्यतीत हो रही है। तू मन व चित्त एक कर प्रभु पर विश्वास क्यों नहीं करती।"

मैं मैं जौ लौं गर्भ बौरानी,
तौ लों पियारा मनु नहिं आनी।। 1।।

"जितनी देर यह जीव रूपी स्त्री अहंकार के कारण बावरी बनी रहती हैं उतनी देर प्रिय पति के मन को नहीं भाती।"

आपा मेटि मैं मेरी खोही,
गरब तियागी अरपिहि निज देही।

"मैंने अपने आप को मिटाकर व अर्थात् मैं, मेरी के अहंकार को त्यागकर प्रभु पति के आगे अपनी काया को समर्पित कर दिया है।"

पिउ कौ नारी उहि मन आई,
जिहि अभि अंतर अवरु नहिं काई।। 2।।

"प्रभु पति के मन को वही जीव रूपी स्त्री भाती है, जिसके भीतर प्रभु के अतिरिक्त अन्य किसी का विचार नहीं है।"

जौ लौं पियारा मन नहिं आई,
का सोरह शिंगार बनाई।।

"यदि यह जीव रूपी स्त्री पति प्रभु को नहीं भाती तो यह जितने मर्जी श्रृंगार कर ले, वे सब व्यर्थ हैं।"

सोइ सती रविदास बखानी,
तन मन सिऊं पिउ रंग समानी।। 3।।

सत्गुरु रविदास जी महाराज बखान करते हैं कि,"वही जीव रूपी स्त्री सती है। जो अपने पति प्रभु के समक्ष तन-मन अर्पित कर देती है और उसके रंग में रंग होकर उसी में विलीन हो जाती है।"

शब्द - 118

रे मन मांछला संसार समुंदे, तूँ चित्र बिचित्र बिचार रे।
जिहिं गाले गलियाही मरीये, सो संग दूरि निवारि रे।। टेक।।
यम है डिगणि डोरि है कंकण, पर तिय गालौ जाणि रे।
ह्वै रस लुबुध रमे यौं मूरख, मन पछितावे नियांणि रे।। 1।।

पाप गुनियो छै धरम निबौली, तूँ देखि देखि फल चाखि रे।
परतिरिया संग भलौ जौं होवै, तो राणौ रावन देखि रे।। 2 ॥
कहै रविदास रतन फल कारनि, गोबिंद कै गुन गाइ रे।
कांचौ कुंभ भरियो जल जैसे, दिन दिन घटतौ जाइ रे।। 3 ।।

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरु रविदास जी महाराज, मन रूपी मछली को, प्रभु का सिमरन कर, संसार रूपी समुद्र से, पार होने का पावन उपदेश देते हैं।

रे मन मांछला संसार समुंदे, तूँ चित्र बिचित्र बिचार रे।
जिहिं गाले गलियाहीं मरीये, सो संग दूरि निवारि रे।। टेक ।।

"हे मन! तू मछली के समान है, संसार समुद्र के समान है तथा कई प्रकार के रंगों से भरा हुआ है। तू इसकी विचार कर। इन संसार के झूठे बंधनों में फंसकर, भाई तुम गल कर मर रहे हो। इन बंधनों को तू दूर कर।"

यम है डिगणि डोरि है कंकण, पर तिय गालौ जाणि रे।
ह्वै रस लुबुध रमे यौं मूरख, मन पछितावे नियांणि रे।। 1 ।।

"यमदूतों की मृत्यु रूपी गाज किसी भी समय तुम पर गिर सकती है और तू संसार के विकारों रूपी बंधन (कंगल) में बंधा हुआ है तथा पराई स्त्री का साथ तुम्हें गलाने वाला है। हे मूर्ख पुरुष, तू संसार के रस-कस से लुभान्वित है, बाद में तुझे अन्जानों की भांति पछताना पड़ेगा।"

पाप गुनियो छै धरम निबौली, तूँ देखि देखि फल चाखि रे।
परतिरिया संग भलौ जौं होवै, तो राणौ रावन देखि रे।। 2 ।।

"पाप करने वाले मनुष्य के लिए पाप देखने में मीठा लगता है पर असल में दुखदाई है। धर्म कौड़ी निमोली (नीम की गुठली) समान हैं, पर उसका फल बहुत अच्छा है। तू इनकी ओर देख-देखकर अच्छे और बुरे कर्म की विचार कर। पराई स्त्री के साथ से यदि कल्याण होता, तो तू राजा रावण की दशा देख।"

कहै रविदास रतन फल कारनि, गोबिंद के गुन गाइ रे।।
कांचौ कुंभ भरियो जल जैसे, दिन दिन घटतौ जाइ रे।। 3 ।।

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,"हे भाई! तू प्रभु के अमूल्य नाम रूपी रत्न की, फल प्राप्ति के लिए उसका गुणगान कर। प्रभु के नाम बिना जिस प्रकार कच्चा घड़ा यदि पानी से भरा हुआ, तो वह दिन प्रतिदिन खरता रहता है, इसी प्रकार तेरी पल-पल में दिन प्रतिदिन आयु घटती जा रही है। प्रभु के नाम के बिना तेरा जीवन व्यर्थ जा रहा है।"

शब्द – 119

रथ को चतुर चलावनहारो।
खिन हाँकै खिन ऊभौ राखै नहीं आन को सारो॥ टेक॥
जब रथ रहे सारथी थाकै तबको रथहि चलावै।
नाद बिंद सबै ही थाकै मन मंगल नहि गावै॥ 1॥
पाँच तत्त को यहू रथ साज्यो अरधै उरध निवासा।
चरन कमल लियो लाइ रह्यो है गुन गावै रविदासा॥ 2॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज पाँच तत्वों के बने हुए शरीर रूपी रथ को चलाने वाले मन रूपी रथवान को प्रभु की तरफ लगाने का उपदेश देते हैं। उस प्रभु से लगन लगा कर यह जीव उस में लीन हो जाता है।

रथ को चतुर चलावनहारो।
खिन हाँकै खिन ऊभौ राखै नहीं आन को सारो॥ टेक॥

''पाँच तत्वों से बने हुए मनुष्य शरीर रूपी रथ को चलाने वाला मन रूपी चालक बहुत चतुर है। क्षणभर में ही यह शरीर को दौड़ाने लग जाता है और क्षणभर में ही मार्ग के इधर-उधर होने से बचा लेता है। इस बात का और किसी को पता नहीं चलता।''

जब रथ रहे सारथी थाकै तबको रथहि चलावै।
नाद बिंद सबै ही थाकै मन मंगल नहि गावै॥ 1॥

''जिस समय शरीर रूपी रथ तो होता है परन्तु मन रूपी सारथी थक जाता है तो रथ को कौन चलाएगा? भाव इन्द्रीयां थक जाती हैं, उस समय मन मंगलमय और विनोद भरपूर गीत नहीं गा सकेगा। भाव यह जीव प्रभु को भुलाकर परमानंद को अनुभव नहीं कर सकता। जीव का मन प्रभु के गुण नहीं गा सकता।''

पाँच तत्त को यहू रथ साज्यो अरधै उरध निवासा।
चरन कमल लियो लाइ रह्यो है गुन गावै रविदासा॥ 2॥

''प्रभु ने पाँच तत्वों जल, वायु, मिटी, अग्नि एवं आकाश से शरीर रूपी रथ बनाया है, जिसका लोक परलोक में निवास है।'' सतगुरु रविदास जी महाराज प्रभु के गुण गाते हुए उच्चारण करते हैं कि,''प्रभु जी मैं आप जी के चरण कमलों में ध्यान लगा कर आप में लीन हो गया हूँ।''

शब्द – 120

जो तुम तोरो राम मै नहिं तोरौ।।
तुम सों तोरि कवन सौ जोरौ॥ टेक॥
तीरथ बरत न करौ अंदेसा।
तुम्हरे चरन कमल का भरोसा॥ 1॥
जहँ जहँ जाओं तुम्हारी पूजा।
तुम सा देव अवर नहिं दूजा॥ 2॥
मैं अपनो मन हरि सो जोरियो।
हरि सो जोरि सबन से तोरियो॥ 3॥
सब पर हरि तुमारी आसा।
मन क्रम बचन कहै रविदासा॥ 4॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को आडम्बर मुक्त होकर, प्रभु से सच्ची प्रीति करने का उपदेश देते हैं।

जो तुम तोरो राम मै नहिं तोरौं।
तुम सों तोरि कवन सौ जोरौ।। टेक॥

''हे प्रभु जी! मेरी आप जी से सच्ची प्रीति है, यदि आप मुझ से प्रीति तोड़ोगे भी, मैं नहीं तोडूंगा। क्योंकि आप जी से प्रीति तोड़ कर, मैं और किससे जोड़ूँगा?''

तीरथ बरत न करौ अंदेसा।
तुम्हरे चरन कमल का भरोसा॥ 1॥

''तीर्थों पर स्नान करना और व्रत रखना, इन बाह्य कर्मों को करने की मुझे कोई चिंता नहीं क्योंकि मेरा सच्चा भरोसा तो केवल आप जी के चरण कंवलों में है।''

जहँ जहँ जाओं तुम्हारी पूजा।
तुम सा देव अवर नहिं दूजा॥ 2॥

''प्रभु जी! मैं जहाँ भी जाता हूँ, केवल आप की ही पूजा करता हूँ। आप जैसा महान् देव और कोई दूसरा नहीं है।''

मैं अपनो मन हरि सो जोरियो।
हरि सो जोरि सबन से तोरियो॥ 3॥

"हे प्रभु जी! मैंने अपने मन को आप जी से जोड़ा है और आप जी से जोड़ कर सबसे तोड़ लिया है।"

सब पर हरि तुमारी आसा।
मन क्रम बचन कहै रविदासा॥ 4॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज निवेदन करते हैं कि, "प्रभु जी! हर समय मेरे मन में आप जी से मिलने की इच्छा होती है, मैं, मन, कर्म और वचन से आप जी के साथ प्रीति करता हूं"

शब्द – 121

केहि बिधि अब सुमिरौ रे अति दुलभ दीन दयाल॥
मैं महा विषई अधिक आतुर कामना की झाल॥ टेक॥
कहां डिंब बाहर कीये हरि कनक कसौटी हार॥
बाहर भीतर साखि तूँ हौ कीयो सु सौ अंधियार॥ 1॥
कहा भयो बहुत पाखंड कीये हरि हिरदै सपने न जान॥
जो दारा बिभिचारिनी मुखि पतिबरता जिय आन॥ 2॥
मैं हिरदै हारि बैठयो हरि मो पै सरयो न एको काज॥
भाव भगति रविदास दे प्रतिपाल करो मोहि आज॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, "आडम्बरों से, प्रभु की प्राप्ति नहीं होती। इस लिए आडम्बरों और कर्म-काण्डों से मुक्त होने के लिए, जीव को प्रभु का सिमरन करना चाहिए।"

केहि बिधि अब सुमिरौ रे अति दुलभ दीन दयाल॥
मैं महा विषई अधिक आतुर कामना की झाल।। टेक॥

"हे प्रभु जी! जीव किस ढंग से आपका सिमरन करे? हे दीन दयाल प्रभु जी, आप जी की प्राप्ति बहुत कठिन है क्योंकि जीव विकारों में व्याकुल होकर, महा विषयी बना हुआ है। वासनाओं की लपटें इसके भीतर चलती रहती हैं।"

कहां डिंब बाहर कीये हरि कनक कसौटी हार॥
बाहर भीतर साखि तूँ हौ कीयो सु सौ अंधियार॥ 1॥

"जीव प्रभु की प्राप्ति के लिए आडम्बर करता है परन्तु प्रभु की कसौटी पर वही जीव शुद्ध पाया जाता है, जो स्वर्ण की तरह शुद्ध होता है। हरि जी आप जीव के भीतर और बाहर की सब जानने वाले साक्षी हो, परन्तु आप जी को भूले हुए जीव का ध्यान अज्ञानता रूपी अंधकार में है।"

कहा भयो बहुत पाखंड कीये हरि हिरदै सपने न जान॥
जो दारा बिभिचारिनी मुखि पतिबरता जिय आन॥ 2॥

''यह जीव बहुत आडम्बर करता है पर कभी सपने में भी प्रभु को याद नहीं करता, ऐसा करने से क्या होगा? जैसे कोई दुराचारी स्त्री बातें तो पतिव्रता होने की करती है, पर उसका ध्यान किसी और पुरुष में होता है। ऐसी स्त्री को पति की प्राप्ति नहीं होती। इस तरह ही यदि जीव रूपी स्त्री बातें तो पति अर्थात् प्रभु की प्राप्ति करती है, पर मन में प्रभु से सच्ची प्रीति नहीं है तो उस जीव रूपी स्त्री को, पति रूपी प्रभु की प्राप्ति नहीं होती।''

मैं हिरदै हारि बैठयो हरि मो पै सरयो न एको काज॥
भाव भगति रविदास दे प्रतिपाल करो मोहि आज॥ 3॥

हे प्रभु जी! आप जी के नाम के बिना मैं संसार की बाज़ी हार कर बैठ हरि गया हूँ, मेरा एक भी कार्य पूरा नहीं हुआ। सतगुरु रविदास जी कथन करते हैं कि हे प्रभु जी! अपनी प्रेमा-भक्ति की कृपा कर आज ही मुझे प्रतिपाल करो जी।

शब्द - 122

अब कैसे छूटै नाम रट लागी॥ टेक॥
प्रभु जी तुम चंदन हम पानी॥
जाकी अंग अंग बास समानी॥ 1॥
प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा॥
जैसे चितवत चंद चकोरा॥ 2॥
प्रभु जी तुम दीपक हम बाती॥
जा की जोति बरै दिन राती॥ 3॥
प्रभु जी तुम मोती हम धागा॥
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा॥ 4॥
प्रभु जी तुम सुआमी हम दासा॥
ऐसी भगति करै रविदासा॥ 5॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज प्रभु से अपनी सच्ची प्रीति को व्यक्त करते हैं।''

अब कैसे छूटै नाम रट लागी॥ टेक॥

''हे प्रभु जी! मेरे हृदय में आप की प्रेम-भक्ति है अब आप ही

बताओ कि राम-नाम की रट कैसे हट सकती है? भाव अब यह रट छूट नहीं सकती।''

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी॥
जाकी अंग अंग बास समानी॥ 1॥

''हे प्रभु जी! आप चंदन हो और मैं पानी के समान हूँ। जैसे पानी चंदन से मिल कर चंदनयुक्त हो जाता है, ठीक वैसे ही मेरे अंग-अंग में नाम की सुगंध बस रही हैं। प्रभु जी! मैं भी आप के साथ मिलकर आप का ही रूप हो गया हूँ।''

प्रभु जी तुम घन बन हम मोरा॥
जैसे चितवत चंद चकोरा॥ 2॥

''प्रभु जी! आप बादलों की तरह हो और मैं जंगली मोर के समान हूँ। जैसे बादलों को देखकर, मोर आंन्दित जो जाता है, वैसे ही मैं आप जी के दर्शन कर आंन्दित हो जाता हूँ। जिस प्रकार चकोर और चन्द्रमा की प्रीति है, ऐसी ही प्रीति मेरी आप जी से है। जिस तरह चकोर चन्द्रमा की ओर निरंतर एक टक देखता रहता है, इस प्रकार प्रभु जी मैं भी सदैव आपके दर्शनों से आनंदत्त रहता हूँ।''

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती॥
जा की जोति बरै दिन राती॥ 3॥

''प्रभु जी ! मेरी आप से प्रीति दीये और बाती की तरह है। आप दीये की तरह हो और मैं दीये में जलने वाली बाती के समान हूँ, पर प्रभु जी आप के नाम की ज्योति पूरी सृष्टि में दिन-रात जल रही है।''

प्रभु जी तुम मोती हम धागा॥
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा॥ 4॥

'हे प्रभु जी! आप मोती हो और मैं धागे के समान हूँ। मेरी प्रीति आप से मोती और धागे की प्रीति की तरह है। जैसे सोने से सुहागे का मिलाप होता है ठीक वैसे ही मैं आप जी से मिला हुआ हूँ।''

प्रभु जी तुम सुआमी हम दासा॥
ऐसी भगति करै रविदासा॥ 5॥

''हे प्रभु जी! आप सारे संसार के स्वामी हो। मैं आप का दास हूँ। स्वामी के बिना दास का और दास के बिना स्वामी का कोई महत्त्व नहीं। दास का सदैव अपने स्वामी से स्नेह होता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''मैं सदैव ही आप जी की ऐसी सच्ची भक्ति करता हूँ।''

शब्द – 123

माधो भ्रम कैसे न बिलाई॥ ताथैं दुती दरसै आई॥ टेक॥
कनक कुटक सूत पट जुदा रजु भुअंग भ्रम जैसा॥
जल तरंग पाहन प्रतिमा ज्यों, ब्रह्म जीव दुति ऐसा॥ 1॥
बिमल एक रस उपजै न बिनसै, उदय अस्त दोऊ नाहीं॥
बिगता बिगत घटै नहिं कबहुँ, बसत बसै सभ माहीं॥ 2॥
निस्चल निराकार अज अनुपम, निरभय गति गोबिन्दा॥
अगम अगोचर अच्छर अतरक निर्गुण अंत अनंदा॥ 3॥
सदा अतीत गियान घन बरजित निरबिकार अबिनासी॥
कहै रविदास सहज सुन्न सत, जीवन मुक्ति निधि कासी॥ 4॥

इस पावन शब्द द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु की कृपा से जीव के भ्रम का नाश हो जाता है और जीव परम-पद को प्राप्त कर लेता है।''

माधो भ्रम कैसे न बिलाई॥ ताथै दुती दरसै आई॥ टेक॥

''हे प्रभु जी! जीव का भ्रम क्यों समाप्त नहीं होता? क्योंकि जीव के अंदर द्वैत भावना है।''

कनक कुटक सूत पट जुदा रजु भुअंग भ्रम जैसा॥
जल तरंग पाहन प्रतिमा ज्यों, ब्रह्म जीव दुति ऐसा॥ 1॥

''जैसे भ्रम के कारण सोने और सोने से बने आभूषण, सूत और सूत से बने कपड़े भिन्न लगते हैं, ऐसे ही अज्ञानता रूपी भ्रम के कारण अंधेरे में रस्सी भी साँप प्रतीत होती है। जल और जल से पैदा हुई तरंगें, पत्थर और पत्थर से बनी मूर्ति भिन्न लगती है। पर वास्तव में सोना और सोने से बने आभूषण, सूत और सूत से बने कपड़े एक ही हैं। रस्सी साँप नहीं, वास्तव में रस्सी है। जल और जल से पैदा हुई तरंग जल ही है। पत्थर और पत्थर से बनी हुई मूर्ति एक ही है। इसी प्रकार ही द्वैत भाव होने के कारण जीव प्रभु से भिन्न लगता है। द्वैत रूपी भ्रम के नष्ट होने से जीव प्रभु में अभेद हो जाता है।''

बिमल एक रस उपजै न बिनसै, उदय अस्त दोऊ नाहीं॥
बिगता बिगत घटै नहिं कबहुँ, बसत बसै सभ माहीं॥ 2॥

''निर्मल प्रभु निरंतर संसार में विद्यमान् है। वह प्रभु न तो जन्म लेता है

और न ही मरता है न ही उदय होता है और न ही अस्त होता है। अंतर्यामी प्रभु न घटता है न बढ़ता है। प्रभु सब में विद्यमान् है।''

निस्चल निराकार अज अनुपम, निरभय गति गोबिन्दा॥
अगम अगोचर अच्छर अतरक निर्गुण अंत अनंदा॥ 3॥

''प्रभु सदैव अटल निश्चल, अकार-रहित निराकार, निरंकार, अजन्मा, उपमा रहित अनुपम, निर्भय मुक्ति प्रदान करने वाले गोबिंद, गम से रहित, अदृष्टि अगोचर, अविनाशी, तर्कहीन, निर्गुण और बेअंत आनंद स्वरूप है।''

सदा अतीत गियान घन बरजित निरबिकार अबिनासी॥
कहै रविदास सहज सुन्न सत, जीवन मुक्त निधि कासी॥ 4॥

''प्रभु सदैव रहने वाला निरलेप है और उसको बाह्य ज्ञान द्वारा नहीं जाना जा सकता। वह प्रभु विकारों और नाश से मुक्त है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''उस प्रभु की सहज सुन्न अवस्था सत है। यह सहजावस्था रूप सत्य जीवों को जीवन में ही मुक्ति रूपी श्रेष्ठ खज़ाना प्रदान करती है।''

शब्द - 124

मन मेरो सत सरूप बिचारं॥
आदि अंत अनंत परम पद संसा सकल निवारं॥ टेक॥
जस हरि कहीये तस हरि नांही है अस जस कछु तैसा॥
जानत जानत जान रह्यो मन मरम कहो निज कैसा॥ 1॥
कहियत आन अनुभवत आन रस मिलै न बिगर होई॥
बाहर भीतर प्रगट गुप्त घट घट प्रति अवर न कोई॥ 2॥
आदहु एक अंत फुनि सोई मध्य उपाधि सु कैसे॥
अहै एक पै भ्रम से दूजो कनक अंलकृत जैसे॥ 3॥
कहै रविदास प्रकाश परम पद का जप तप ब्रत पूजा॥
एक अनेक अनेक एक हरि कहौ कौण बिधि दूजा॥ 4॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को प्रभु के सत्य-स्वरूप की विचार करने का उपदेश देते हैं कि,''वह प्रभु संसार का हमेशा रहने वाला आधार है। उसका सिमरन करने से जीव के अंदर उसके नाम का प्रकाश होने पर वह प्रभु को संसार के कण कण में व्यापक अनुभव करता है।''

मन मेरो सत सरूप बिचारं॥
आदि अंत अनंत परम पद संसा सकल निवारं॥ टेक॥

"हे मेरे मन! तू सत्य-स्वरूप हरि की विचार कर। वह हरि आदि से लेकर अंत तक रहने वाला अनंत है और जीवों को परम पद मुक्ति प्रदान करने वाला है। हरि का सिमरन करने से जीव के सभी भ्रम दूर हो जाते हैं।"

जस हरि कहीये तस हरि नांही है अस जस कछु तैसा॥
जानत जानत जान रह्यो मन मरम कहो निज कैसा॥ 1॥

"यह सांसारिक लोग हरि को जैसा कहते हैं, हरि उस तरह का नहीं है। प्रभु के स्वरूप के बारे में क्या कहा जाए? सांसारिक जीव प्रभु को जानकर भी नहीं जान सके और उसके सत्य स्वरूप के भेद को नहीं पा सके।"

कहियत आन अनुभवत आन रस मिलै न बिगर होई॥
बाहर भीतर प्रगट गुप्त घट घट प्रति अवर न कोई॥ 2॥

"जीव प्रभु के बारे में कहता कुछ और है पर उसका अनुभव करना कुछ और है। जीव को प्रभु के नाम का रस मिलता है, फिर वह जीव उस हरि में विलीन हो जाता है और दोबारा उस प्रभु से अलग नहीं होता। अंदर बाहर भाव संसार के कण-कण में प्रभु व्यापक है। प्रत्येक प्राणी के भीतर और बाहर प्रगट है, उस प्रभु के बिना कोई और नहीं है।"

आदहु एक अंत फुनि सोई मध्य उपाधि सु कैसे॥
अहै एक पै भ्रम से दूजो कनक अंलकृत जैसे॥ 3॥

"प्रभु सृष्टि के आदि में भी एक था अब भी है, और भविष्य में भी रहेगा। प्रभु केवल एक है, पर भ्रम के कारण जीव उस प्रभु को ऐसे भिन्न जानता है, जैसे भ्रम के कारण सोने और उससे बने हुए आभूषणों को भिन्न-भिन्न समझता है, पर वास्तव मे वह सोना ही होते हैं। इस लिए जीव भ्रम के कारण प्रभु से अलग है, पर जब भ्रम का नाश हो जाता है तो जीव उस प्रभु में विलीन हो जाता है।"

कहै रविदास प्रकाश परम पद का जप तप ब्रत पूजा॥
एक अनेक अनेक एक हरि कहौ कौण बिधि दूजा॥ 4॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं,"जिस समय जीव के हृदय में प्रभु का प्रकाश हो जाता है, तो जीव परम पद को प्राप्त कर लेता है। तब जीव को जप, तप, व्रत और पूजा विधियों को करने की आवश्यकता नहीं रहती। प्रभु एक से अनेक रूप धारण कर संसार में व्यापक है। प्रभु के समान कोई दूसरा नहीं है।"

शब्द - 125

थोथो जनि सोई पछोरो रे कोई।
पछोरो जा मे निज कन होई॥ टेक॥
थोथी काया थोथी माया।
थोथा हरि बिन जनम गंवाया॥ 1॥
थोथा पंडित थोथी बानी।
थोथी हरि बिन सबै कहानी॥ 2॥
थोथा मंदिर भोग बिलासा।
थोथी आन देव की आसा॥ 3॥
साचा सुमिरन नाम बिसासा।
मन बच करम कहै रविदासा॥ 4॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज इस शब्द में जीवों को हरि का सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं,''उस प्रभु के नाम के बिना सब कुछ झूठा है।''

थोथो जनि सोई पछोरो रे कोई।
पछोरो जा मे निज कन होई ।। टेक॥

''हे भाई! प्रभु का नाम सत्य है उसे झूठा समझ कर कोई न भुलाओ। उस प्रभु को क्यों भुलाओगे, जिसके आत्मसुख के कण सारे संसार में समाए हुए हैं।''

थोथी काया थोथी माया।।
थोथा हरि बिन जनम गंवाया॥ 1॥

''हरि के नाम के बिना यह शरीर भी झूठा है और माया भी झूठी है। प्रभु के नाम के बिना यह जीव झूठा जन्म गँवा रहा है।''

थोथा पंडित थोथी बानी।
थोथी हरि बिन सबै कहानी॥ 2॥

''हरि के नाम के बिना पंडित भी झूठा है और पंडित की वाणी भी झूठी है। प्रभु के नाम के बिना सभी कहानियां भी झूठी हैं।''

थोथा मंदिर भोग बिलासा।
थोथी आन देव की आसा॥ 3॥

''महलों में रह कर विषय-विकारों में समय व्यतीत करना भी झूठ है प्रभु के बिना और किसी देवी देवता की आशा रखना भी झूठ है।''

साचा सुमिरन नाम बिसासा।
मन बच करम कहै रविदासा॥ 4॥

"हरि का सच्चा सिमरन करना ही हरि के नाम में सच्चा विश्वास रखना है।" सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमान करते हैं कि,"हे भाई! मन, वचन और कर्म से हरि के सच्चे नाम का सिमरन करो।"

शब्द - 126

माधौ ! मोहि एकु सहारौ तोरा।। टेक।।
तुमहि मात पिता प्रभ मेरो, हौं मसकीन अति भोरा।
तुम जउ तजो कवन मोहि राखे, सहिहै कौनु निहोरा।। 1।।
बाहाडंबर हौं कबहुं न जान्यौ, तुम चरनन चित मोरा।
अगुन सगुन दौ समकरि आन्यौ, चहुँ दिस दरसन तोरा।। 2॥
पारस मनि मुहि रतु नहिं, जग जंजार न थोरा।
कहि रविदास तजि सभ तृष्णा, इकु राम चरन चित मोरा।। 3।।

इस शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को प्रभु का आश्रम ग्रहण कर जीवन सफल करने का पावन उपदेश देते हैं।

माधौ ! मोहि एक सहारौ तोरा ।। टेक।।

"हे प्रभु जी! मुझे एक आप जी का ही आश्रय है।"

तुमहि मात पिता प्रभ मेरो, हौं मसकीन अति भोरा।
तुम जउ तजो कवन मोहि राखे, सहिहै कौनु निहोरा।। 1॥

"प्रभु जी! आप मेरे माता-पिता हो, मैं दीन आप जी के चरण कमलों का भंवरा हूँ। यदि प्रभु जी आप जी ने मेरा परित्याग कर दिया, फिर मुझे कौन संभालेगा? आप के बिना किसके समक्ष अपनी बेनती करूंगा?"

बाहाडंबर हौं कबहुं न जान्यौ, तुम चरनन चित मोरा।
अगुन सगुन दौ समकरि आन्यौ, चहुँ दिस दरसन तोरा।। 2।।

"मैं कभी भी बाह्य आडंबरों को करना नहीं जानता, मेरा मन तो केवल आप जी के चरण कंवलों में रहता है। आप मेरे अवगुणों व गुणों को एक समान कर देखिए। मैं चारों दिशाओं में अर्थात् हर ओर आप जी के दर्शन दीदार करता हूँ।"

पारस मनि मुहि रतु नहिं, जग जंजार न थोरा।
कहि रविदास तजि सभ तृष्णा, इकु राम चरन चित मोरा।। 3।।

''मुझे पारस मणि की रत्ती भी आवश्यकता नहीं है। संसार के जंजाल मुझे थोड़ा भी नहीं भाये क्योंकि सभी जंजाल प्रभु के नाम के समक्ष झूठ है।'' सतगुरु रविदास महाराज जी उच्चारण करते हैं कि,''जीव को सभी तृष्णाएं त्याग कर प्रभु के चरण कंवलों के साथ चित्त लगाना चाहिए।''

राग टोडी

शब्द - 127

पावन जस माधो तोरा।
तुम दारुन अघमोचन मोरा॥ टेक॥
कीरति तेरी पाप बिनासे लोक बेद यों गावै।
जौं हम पाप करत नहिं भूधर तौ तूँ कहा नसावै॥ 1॥
जब लग अंग पंक नहिं परसै तौं जल कहा पखालै।
मन मलीन विषया रस लंपट तौं हरि नाम संभालै॥ 2॥
जो हम बिमल हिरदै चित अंतरि दोस कौन पर धरिहौ।
कहि रविदास प्रभु तुम दयाल हौ अबंध मुक्ति का करिहौ॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज, जीवों को पवित्र करने वाले, प्रभु के नाम सिमरन का पावन उपदेश देते हैं,''प्रभु का हृदय में सिमरन करने से, जीव, प्रभु में विलीन हो जाता है।''

पावन जस माधो तोरा।
तुम दारुन अघमोचन मोरा।। टेक॥

''हे प्रभु जी! आप की महिमा पावन है। आप मेरे कठिन पापों का नाश करने वाले हो।''

कीरति तेरी पाप बिनासे लोक बेद यों गावै।
जौं हम पाप करत नहिं भूधर तौ तूँ कहा नसावै॥ 1॥

''प्रभु जी! आप का यश पापों का नाश करने वाला है, परन्तु अज्ञानता कारण लोग केवल वेदों का ज्ञान ही उत्तम मानते हैं। हे प्रभु जी! अगर हम सांसारिक लोग बड़े पाप न करते, तो आप किसके पापों को नाश करते?''

जब लग अंग पंक नहिं परसै तौं जल कहा पखालै।
मन मलीन विषया रस लंपट तौं हरि नाम संभालै॥ 2॥

"जब तक शारीरिक अंगों को पाप रूपी कीचड़ नहीं छूता, तब तक प्रभु के नाम रूपी जल में उनको धोने की क्या आवश्यकता है? ऐसे ही, जब तक, जीव का मन, विषय विकारों के कारण मैला होता है, तब तक ही मन को हरि का नाम सिमरन कर शुद्ध किया जाता है।"

जो हम बिमल हिरदै चित अंतरि दोस कौन पर धरिहौ।
कहि रविदास प्रभु तुम दयाल हौ अबंध मुक्ति का करिहौ॥ 3॥

"हे प्रभु जी! अगर हमारा हृदय पवित्र होता, तो तुम किसके दोष दूर करते?" सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं,"हे प्रभु जी, आप दयालु हो। मुझे आपकी प्राप्ति हो गई है इस लिए मुझे किसी और बंधन रहित मुक्ति की आवश्यकता नहीं।"

राग सारंग

शब्द - 128

जग में वेद बैद मनीजै।
इन में अवर अगम कछु औरे कहौ कवन परि कीजै॥ टेक॥
भौजल बियाधि असाधि प्रबल अति परम पंथ न गहीजै॥ 1॥
पढ़े सुणै कछु समुझि न परई अनुभै पद न लहीजै॥ 2॥
चख बिहुन कतार चलतु है तिनहु अंस भुज दीजै॥ 3॥
कहै रविदास बमेक तत बिनु सब मिलि गरत परीजै॥ 4॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,"केवल प्रभु का नाम ही, संसार रूपी भवसागर से, सब दुखों का नाश कर, पार लगाने वाला है। इस लिए जीवों को, प्रभु के नाम रूपी परम तत्व को जान कर, अपना जीवन सफल करना चाहिए।"

जग में वेद बैद मनीजै।
इन में अवर अगम कछु औरे कहौ कवन परि कीजै।। टेक॥

"संसार में, वेदों को, रोगों की निवृति करने वाला वैद्य माना जाता है, परन्तु इन वेदों में कुछ और कहा गया है तथा प्रभु का अकथनीय परम तत्व कुछ और है। इनमें से किस पर भरोसा किया जाए?"

भौजल बियाधि असाधि प्रबल अति परम पंथ न गहीजै॥ 1॥

''संसार रूपी भवसागर न साध्य जाने वाली शक्तिशाली, कठिनाईयों से भरा पड़ा है। पर जीव अज्ञानता के कारण सब रोगों और कष्टों की निवृत्ति करने वाले प्रभु के नाम रूपी परम पंथ को ग्रहण नहीं करता।''

पढ़े सुणै कछु समुझि न परई, अनुभै पद न लहीजै॥ 2॥

''वेदों को केवल पढ़ने और सुनने से, जीव को प्रभु के बारे में कोई ज्ञान प्राप्त नहीं होता, जिस कारण जीव भय रहित प्रभु के अनुभव रूपी परम-पद की प्राप्ति नहीं करता।''

चख बिहुन कतार चलतु है तिनहु अंस भुज दीजै॥ 3॥

''ज्ञान रूपी आँखों के बिना, जीव प्रभु को भूलकर कुमार्ग पर चला रहा है। जैसे अन्धे जीव को मंजिल पर पहुंचने के लिए दृष्टिमान जीव के कन्धे या हाथ का सहारा लेना पड़ता है। इस प्रकार जीव को संसार समुद्र से पार होने के लिए प्रभु का सहारा लेना पड़ता है।''

कहै रविदास बमेक तत बिनु सब मिलि गरत परीजै॥ 4॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''संसार के जीव परम तत्व को नहीं जानते, जिस कारण वे नरक में जाते हैं।''

शब्द - 129

तुम करहु कृपा मोहि साांई।। टेक।।
स्वास स्वास तुझ नाम संभारूँ, तुमहि भेंटि ममु मन हरसाई।
तुमहु दयाल कृपाल करुणानिध तुम्हहि दीनबंध रघुराई।। 1।।
तुम्हारी सरन रहों निसवासर, भरमत फिरौं न हौं हरि राई।
तुम्हारी अनुकमप मान मदु छुटै राम रसायन अमृत पाई।। 2।।
ऐसो बधु जाचिहुं करुनामैं, तुझ चरन तजि कितहु न जाई।
चरण सरण रविदास राबरी अपनो जान लेहु उर लाई।। 3।।

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को प्रभु का श्वास-श्वास सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं।

तुम करहु कृपा मोहि साांई।। टेक।।

''हे मालक प्रभु जी! आप मुझ पर कृपा करो।''

स्वास स्वास तुझ नाम संभारूँ, तुमहि भेंटि ममु मन हरसाई।

तुमहु दयाल कृपाल करुणानिध तुम्हहि दीनबंध रघुराई।। 1।।

''मैं श्वास-श्वास आप जी के नाम का सिमरन करता हूँ, आप जी के दर्शन करने से मेरा मन आंन्दित हो जाता है। प्रभु जी आप दयालु, कृपालु, दयावान, गरीब निवाज हो।''

तुम्हारी सरन रहों निसवासर, भरमत फिरौं न हौं हरि राई।
तुम्हारी अनुकमप मान मदु छुटै, राम रसायन अमृत पाई।। 2।।

''प्रभु जी! मैं सदैव आप की शरण में रहता हूँ। मैं हरि को छोड़ कर भ्रम में नहीं भटकता संसार में आप जी का ही सिमरन करता हूँ। आप जी की कृपा से मान-अहंकार का नाश हो गया है और आप जी का नाम रूपी श्रेष्ठ अमृत मैंने प्राप्त कर लिया है।''

ऐसो बधु जाचिहुं करुनामैं, तुझ चरन तजि कितहु न जाई।
चरण सरण रविदास राबरी, अपनो जान लेहु उर लाई॥ 3॥

''हे दयावान प्रभु जी! मैने केवल आप जी के चरण कंवलों की ही याचना की है, इन्हें छोड़कर,मैं अन्य किसी ओर नहीं जा सकता।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''प्रभु जी, मैं आप जी के चरणों की शरण में आया हूँ, आप मुझे अपना जान कर हृदय से लगा लें।''

शब्द - 130

चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ॥ टेक॥
गुर की साटि ज्ञान का अच्छर बिसरै तो सहज समाधि लगाऊँ॥ 1॥
प्रेम पाटी सुरति लेखनि करिहौ ररा ममा लिखि आंक दिखाऊँ॥ 2॥
येह बिधि मुक्त भये सनकादिक रिदै बिदारि प्रकाश दिखाऊँ॥ 3॥
कागद कँवल मति मसि करि निर्मल बिन रसना निस दिन गुण गाऊँ॥ 4॥
कहै रविदास राम जपि भाई संत साखि दे बहुरि न आऊँ॥ 5॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरू रविदास जी महाराज जीवों को हरि नाम जपने की पाठशाला में पढ़कर हरि से मिल कर मुक्त होने का उपदेश देते हैं।

चलि मन हरि चटसाल पढ़ाऊँ।। टेक॥

''हे मेरे मन! चल मैं तुम्हें हरि नाम जपने वाली पाठशाला में पढ़ाऊँ।''

गुर की साटि ज्ञान का अच्छर बिसरै तो सहज समाधि लगाऊँ॥ 1॥

''इस पाठशाला में, श्रेष्ठ मार्ग की भटकन से रोकने वाली, गुरु की

उपदेश रूपी छड़ी है और हरि से मिलाने वाले, ज्ञान का अक्षर, पढ़ाया जाता है। यदि जीव ज्ञान का अक्षर भूल भी जाए, तो गुरु की कृपा से, जीव की सहज समाधि लग जाती है।''

प्रेम पाटी सुरति लेखनि करिहौ ररा ममा लिखि आंक दिखाऊ॥ 2 ॥

''हरि की इस पाठशाला में पढ़ने के लिए प्रेम की तख्ती है और सुरति की कलम है, जिससे र और म सर्वव्यापी राम, प्रभु का नाम रूपी अंक लिखा जाता है।''

येह बिधि मुक्त भये सनकादिक रिदै बिदारि प्रकाश दिखाऊँ॥ 3 ॥

''प्रभु की पाठशाला में, ऐसी विधि से पढ़कर, सनक इत्यादि चारों भाई, मुक्त हुए हैं, जिन के हृदय में प्रभु की विचार करने से, प्रकाश हुआ देखा जाता है।''

कागद कँवल मति मसि करि निर्मल बिन रसना निस दिन गुण गाऊँ।।4 ॥

''हृदय रूपी कमल की कागज बनाकर और बुद्धि को निर्मल स्याही बनाकर, उस पर प्रभु के गुण लिखता हूँ और जिह्वा के बिना, दिन रात, हरि के गुण गाए जाते हैं।''

कहै रविदास राम जपि भाई संत साखि दे बहुरि न आऊँ॥ 5 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''हे भाई! संत इसके प्रमाण हैं कि प्रभु का सिमरन करने से, जीव मुक्त हो जाता है और पुनः जन्म-मरण के चक्र में नहीं आता।

शब्द - 131

हरि सिमरै सोई संत बिचारौ।
अवरु जनम बेकाम राम बिन, कोटि जनम सौं उपरि बारौ।। टेक।।
हरि पद बिमुख कुटिल मायारत, राम चरण चितहु न सानै।
जिन मन मानु हउमैं बसहि, तिह जन संत कहौ किम मानै।। 1 ॥
कपट डंभ पर निंदा बूडौ, संत जनम भौ किलविष कारी।
ज्यों बरिया रुत बूंद उदधि मंहि आई, मिलै सोई जल खारौ।। 2 ॥
ता परसंगि सीप स्वाति नछत्र, मोती निपजत नीर तै न्यारौ।
कहि रविदास मोह मद त्यागो, राम चरण मन संत बिचारौ॥ 3 ॥

इस पावन शब्द में जगत्गुरु रविदास जी महाराज, सभी जीवों को, संतों की संगत करने का, पावन उपदेश बख्शिश करते हैं।

हरि सिमरै सोई संत बिचारौ।

अवरु जनम बेकाम राम बिन, कोटि जनम सौं उपरि बारौ।। टेक।।

''जो संत हरि का सिमरन करते हैं, वही श्रेष्ठ विचार वाले हैं क्योंकि हरि के नाम के बिना, जीव का जन्म निष्फल जाता है, अतः हमें करोड़ों जन्म, संतों पर न्यौछावर करने चाहिए।''

हरि पद बिमुख कुटिल मायारत, राम चरण चितहु न सानै।।

जिन मन मानु हउमैं बसहि, तिह जन संत कहौ किम मानै।। 1।।

''हरि के सर्वोच्च पद को छोड़कर, जीव प्रभु से बेमुख, कामी एवं मायाधारी हो जाता है तथा प्रभु के चरण कंवलों में मन नहीं लगाता। जिस जीव के मन में, गर्व अहंकार बसता है, वह जीव संतों को कैसे सम्मान दे सकता है?''

कपट डंभ पर निंदा बूड़ौ, संत जनम भौ किलविष कारी।

''कपट करना, पाखंड करना तथा पराई निन्दा करना, बहुत बड़े पाप है। संतों की संगत कर, यह जीव कठिन पापों से मुक्ति पा लेता है।''

ज्यों बरिया रुत बूंद उदधि मंहि आई, मिलै सोई जल खारौ।। 2।।

''जब वर्षा ऋतु आती है तो सारा पानी खारे समुद्र में समा जाता है।''

ता परसंगि सीप स्वाति नछत्र, मोती निपजत नीर तै न्यारौ।

''जब स्वाति नक्षत्र के समय बारिश की बूंद सीप में गिरती है, तो उसी जल से मोती पैदा हो जाता है।''

कहि रविदास मोह मद त्यागो, राम चरण मन संत बिचारौ।। 3।।

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हे भाई! मोह अहंकार त्यागकर, संतों की संगत में जा कर, अपने मन को प्रभु के चरणों में लगा अर्थात् संतजनों की संगत कर।''

राग जैश्री

शब्द - 132

सब कुछ करत न कहौं कुछ कैसे।
गुन निधि बहुत रहत सम जैसे॥ टेक॥
दरपन गगन अनील अलेप जस।
गंग जलधि प्रतिबिंब देखि तस॥ 1॥
सब आरंभ अकाम अनेहा।

बिधी निखेध कीयो अनेकेहा॥ 2॥
इहे पद कहत सुनत नहीं आवै।
कहै रविदास सुकृति कै पावै॥ 3॥

जगत्‌गुरु रविदास जी महाराज इस शब्द में, जीवों को नाम सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं।

सब कुछ करत न कहौं कुछ कैसे।
गुन निधि बहुत रहत सम जैसे।। टेक॥

''हे प्रभु जी! आप संसार में सब कुछ करने वाले हो, मैं आप की उपमा में कुछ नहीं कह सकता। प्रभु जी आप बेअंत गुणों की खान हो और सारे संसार में व्याप्त होकर सारे संसार को चलाते हुए भी, संसार से निष्पक्ष रहते हो।''

दरपन गगन अनील अलेप जस।
गंग जलधि प्रतिबिंब देखि तस॥ 1॥

जैसे दर्पण, आकाश, वायु जल निष्पक्ष है भाव दर्पण में जीव जैसा देखता है, वैसा ही नज़र आता है। आकाश के नीचे सभी प्राणी रहते हैं, आकाश किसी से भेद भाव नहीं करता। वायु सब जीवों को एक समान मिलती है, ऐसे ही प्रभु सब जीवों में विद्यमान् है। प्रभु का नाम सिमरन करने का, सभी प्राणियों को समान अधिकार है। जैसे गंगा के जल में, जैसी परछाई होगी, वैसी ही दिखाई देगी, ऐसे ही श्रद्धा भाव वाले जीवों को वह प्रभु सर्व-व्याप्क अनुभव होता है।''

सब आरंभ अकाम अनेहा।
बिधी निखेध कीयो अनेकेहा॥ 2॥

''प्रभु संसार का आरम्भ कर्ता है, इच्छा और मोह से मुक्त है और अनेक विधियों द्वारा विभिन्न रूपों में व्यक्त नहीं किया जाता है, पर वह प्रभु ही अंत में वास्तविक सच्चाई है।''

इहे पद कहत सुनत नहीं आवै।
कहै रविदास सुकृति कै पावै॥ 3॥

मुक्ति की अवस्था कहने और सुनने में नहीं आती जो प्रभु की कृपा से ही, प्राप्त होती है। सत्‌गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''जीव इस संसार में सुकृति भाव प्रभु का ऐसा श्रेष्ठ कर्म नाम सिमरन करके ही ऐसे अटल पद को प्राप्त करता है।''

राग कानडा (दोपाद)

शब्द – 133

जा कै राम जी धनी ता कै काहि की कमी है।
मनसा को नाथ मनोरथ पुरबै सुख निधान की काहा गनी है ॥ 1 ॥
कवन काज किरपन की माया करत फिरत अपनी अपनी है॥
खायी न साकै खरच नहि जावै, ज्यों भुयंग सिर रहत मनी है॥ 2 ॥
जा की रासि थावर नहि आवै, राहा केतकी मुक्त अनी है॥
रखवारे को चक्र सुदर्शन, विघन न ब्यापै रोक छिनी है॥ 3 ॥
सिव सनकादिक पार न पावै,मैं बपुरै की कौन गिनी है॥
जा की प्रीत निरंतरि हरि सो, कहै रविदास ताकी सदा बनी है॥ 4 ॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,''जिस जीव के पास प्रभु का नाम रूपी श्रेष्ठ धन है, उसको किसी वस्तु की कोई कमी नहीं रहती। बड़ा धनी प्रभु सुखों का खज़ाना है। वह जीव की सभी इच्छाएं पूरी करता है। इस लिए जीव को उस प्रभु से सच्ची प्रीति करनी चाहिए।''

जा कै राम जी धनी ता कै काहि की कमी है।
मनसा को नाथ मनोरथ पुरबै सुख निधान की काहा गनी है॥ 1 ॥

''जिस जीव के पास प्रभु का नाम रूपी धन है, उसको अन्य किसी वस्तु की कमी नहीं रहती। वह नाथ जीव की सभी इच्छाएँ और मनोरथ पूरे करता है और उसके सुख रूपी खज़ाने की गिनती नहीं की जा सकती।''

कवन काज किरपन की माया करत फिरत अपनी अपनी है॥
खायी न साकै खरच नहि जावै, ज्यों भुयंग सिर रहत मनी है॥ 2 ॥

''कंजूस आदमी को माया का क्या लाभ है, जिसको वह दिन रात अपनी अपनी कह कर खुश होता है। साँप जैसे मणि को संभालता है, ऐसे ही कंजूस आदमी माया को संभालता है, परन्तु वह बेचारा उस माया को न तो खा सकता है और न ही खर्च सकता है। जैसे साँप के सिर पर मणि होने पर भी, साँप को उसका कोई लाभ नहीं, ऐसे ही प्रभु के नाम के बिना जीव द्वारा एकत्र की गई, माया का, जीव को कोई लाभ नहीं।''

जा की रासि थावर नहि आवै, राहा केतकी मुक्त अनी है॥
रखवारे को चक्र सुदर्शन, विघन न ब्यापै रोक छिनी है॥ 3 ॥

"जिसकी पूँजी प्रभु के नाम पर खर्च नहीं होती, उसकी पूँजी को विकार रूपी गिरोह ठग लेते हैं, परन्तु उस प्रभु के भक्तों की नाम रूपी अटल पूँजी को, कोई नुक्सान नहीं पहुँचा सकता। प्रभु अपने भक्तों की सदैव रक्षा करते हैं और कोई भी प्रभु प्रेमियों के मार्ग में रुकावट नहीं बन सकता।"

सिव सनकादिक पार न पावै, मैं बपुरै की कौन गिनी है॥
जा की प्रीत निरंतरि हरि सो, कहै रविदास ताकी सदा बनी है॥ 4॥

"शिव जी और सनकादिक चारों भाई उस प्रभु की महिमा नहीं जान सकते, तो मैं गरीब बेचारा प्रभु के गुणों को कैसे जान सकता हूँ?" सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"जिस जीव की हरि के साथ निरंतर प्रीति है, उस जीव की सदैव प्रभु के साथ लगन लगी रहती है।"

शब्द - 134

भगति न होय रे न होई, जब लग तन सुध न होय।। टेक।।
भगति नहीं नांचै अरु गावै, भगति न बहु तप कीन्हा।
भगति नहीं स्वामी अरु सेबग, जब लग परम तत्त नहीं चीन्हा।। 1।।
भगति न ज्ञान जोग बैरागै, भगति न कहै कहावै।
भगति न सुनि मण्डल घर सोधै, भगति न कछु दिखावै।। 2।।
जहां जहां जायि तहां तहां बंधन,त्रिविध ताप न जाई।
कहै रविदास तबै सचु पावै, आपा उलटि समाई।। 3।।

जगत्गुरु रविदास जी महाराज सभी जीवों को आडम्बरों को त्यागकर प्रभु की सच्ची भक्ति करने का पावन उपदेश देते हैं।

भगति न होय रे न होई, जब लग तन सुध न होय ।। टेक।।

"जब तक शरीर और मन शुद्ध नहीं होता, तब तक प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती।"

भगति नहीं नांचै अरु गावै, भगति न बहु तप कीन्हा।
भगति नहीं स्वामी अरु सेबग, जब लग परम तत्त नहीं चीन्हा।। 1।।

"जितनी देर जीव परमतत्व को नहीं समझता, वे चाहे नाचे, चाहे गाए, चाहे विभिन्न प्रकार से तप करे और स्वामी-सेवक भक्ति करे, इसका कोई लाभ नहीं है।"

भगति न ज्ञान जोग बैरागै, भगति न कहै कहावै।
भगति न सुनि मण्डल घर सोधै, भगति न कछु दिखावै।। 2 ।।

''प्रभु प्रेम के बिना ज्ञान, योग, वैराग्य धारण करना भक्ति नहीं कहलाती। शून्य मंडल की आशा रखना तथा दिखावा करना भक्ति नहीं है।''

जहां जहां जायि तहां तहां बंधन, त्रिविध ताप न जाई।
कहै रविदास तबै सचु पावै, आपा उलटि समाई।। 3 ।।

''प्रभु प्रेम के बिना जीव जहाँ-जहाँ जाता है वहाँ-वहाँ बंधन में फस जाता है भाव जो कुछ भी करता है, सब बंधन है और जीव तीनों प्रकार के ताप (आधि, व्याधि, उपाधि) से मुक्त नहीं होता।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जब सच्च को प्राप्त करता है तब जीव संसार की ओर से अपना ध्यान हटा कर प्रभु की सच्ची भक्ति करता है, तो प्रभु में लीन हो जाता है।''

शब्द - 135

रे पायो रे राम आमी रस॥ टेक॥
रस जिनि मगन ह्वै रहिया, ररंकार राषे नित रसना।
इहु रस पीब राम रस बूड़ौ, आपु मगन रहि ह्वै दिन रैना॥ 1॥
लोक रस लागि विषै विष देही, भणों राम भौजल नहीं बहना।
अभि अंतर भजौ निज अविगत, ऐह उपाइ अतिर भौ तरना॥ 2॥
चिन्तामणि लाल हाथै जै चढ़िय हुवौ उजाम तिमिर नहीं रहना।
भजै रविदास राम नित रसना, दुलभ जनम बिरथ नहीं गवना॥ 3॥

इस पावन शब्द में जगत्‌गुरु रविदास जी महाराज सांसारिक जीवों को प्रभु का नाम सिमरन करके, श्रेष्ठ नाम रूपी रस में मग्न होकर दुर्लभ जन्म सफल करने का उपदेश देते हैं।

रे पायो रे राम आमी रस॥ टेक॥

''हे भाई! मैंने सर्वव्यापक राम का श्रेष्ठ अमृत प्राप्त कर लिया है।''

रस जिनि मगन ह्वै रहिया, ररंकार राषे नित रसना।
इहु रस पीब राम रस बूड़ौ, आपु मगन रहि है दिन रैना॥ 1॥

''जो जीव प्रभु के नाम रूपी श्रेष्ठ रस में मग्न हो जाता है, उस जीव की रसना पर नित्य-प्रति रंग रूप रहित प्रभु बसता है। इस रस में मग्न होने से नित्य-प्रति यह रस बढ़ता ही जाता है, जिस में जीव दिन रात मग्न रहता है।''

लोक रस लागि विषै विष देही, भणों राम भौजल नहीं बहना।
अभि अंतर भजौ निज अविगत, ऐह उपाइ अतिर भौ तरना॥ 2॥

''संसार के लोग प्रभु के नाम रूपी रस को भूल कर, अपने शरीर को विषय विकारों के जहर में लगा रहे हैं, जिस से जीव संसार रूपी भवसागर से पार नहीं हो सकता। जीव को बाहरी रसों का त्याग करके, अविनाशी प्रभु का अपने भीतर स्मरण करना चाहिए। इस प्रकार अपने अंदर प्रभु के स्मरण का उपाय करके, जीव संसार के भवसागर से पार हो जाता है।''

चिन्तामणि लाल हाथै जै चढ़िय हुवौ उजाम तिमिर नहीं रहना।
भजै रविदास राम नित रसना, दुलभ जनम बिरथ नहीं गवना॥ 3॥

''जिस जीव के हाथ में प्रभु के नाम रूपी मन इच्छित फल देने वाला चिंतामणि अनमोल हीरा है, जिसके ज्ञान से प्रकाश में अज्ञानता रूपी अंधेरा दूर हो जाता है। वह संसार के भव सागर से पार हो जाता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज संबोधन करते हैं कि,''हे जीव! नित्य-प्रति अपनी रसना से प्रभु का सिमरन कर, जिस से अमूल्य जन्म व्यर्थ नहीं जाएगा।''

शब्द - 136

देखि मूरखता यह मन की।
राम नाम कू छाडि अधारौ, गहि ओट छुद त्रिन की।। टेक।।
अभि अंतर रामु नहिं जान्यौ, छानहु धूरि बन बन की।
जा दिन ऐह हंसा उरि जाये है, छोरि ठठरिया तन की।। 1।।
धनु दारा महि रहहु लपटानो, आपहु नहिं सुधि वा छन की॥
जन रविदास तियागी जग आसा, लहहु ओट हरि चरनन की।॥ 2॥

जगत्गुरु रविदास जी महाराज इस पावन शब्द में सांसारिक जीवों को प्रभु का आश्रय लेकर संसार रूपी भवसागर पार करने का पावन उपदेश देते हैं।

देखि मूरखता यहु मन की।
राम नाम कू छाडि अधारौ, गहि ओट छुद त्रिन की।। टेक।।

''हे भाई! तू इस मन की मूर्खता देख कि यह प्रभु का नाम का आश्रय छोड़कर, अन्य तिल मात्र छोटे आश्रय ढूँढता है।''

अभि अंतर रामु नहिं जान्यौ, छानहु धूरि बन बन की।

''अपने भीतर बैठे प्रभु को तो इसने जाना नहीं और वन-वन में भटकता फिरता है।''

जा दिन ऐह हंसा उरि जाये है, छोरि ठठरिया तन की।। 1।।

''एक दिन इस आत्मा रूपी हंस ने शरीर रूपी घोंसले को छोड़कर उड़ जाना है।''

धनु दारा महि रहहु लपटानो, आपहु नहिं सुधि वा छन की।।

''धन, स्त्री और सांसारिक पदार्थों में जीव लिप्त है और उसे अपना जीवन संवारने का होश नहीं है।''

जन रविदास तियागी जग आसा, लहहु ओट हरि चरनन की।। 2।।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे जीव! तू संसार की झूठी आशा छोड़कर हरि के चरण कंवलों का आश्रय लेकर अपना जीवन सफल कर।''

आरती

शब्द – 137

आरती कहाँ लैं कर जोवै। सेवक दास अचंभो होवै॥ टेक॥
बावन कंचन दीप धरावै। जड़ बैराग रे दृस्टि न आवै॥ 1॥
कोटि भानु जा की सोभा रोमै । कहा आरती अगनी होमै॥ 2॥
पाँच तत यह तिरगुनी माया। जो देखै सो सकल उपाया॥ 3॥
कहै रविदास देखा हम माहीं। सकल जोति रोम सम नाहीं॥4॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज, प्रभु की सच्ची आरती का गुणगान करते हैं कि उस प्रभु की ज्योति के प्रकाश की समानता, करोड़ों सूर्यों का प्रकाश भी नहीं कर सकता।

आरती कहाँ लैं कर जोवै।
सेवक दास अचंभो होवै॥ टेक॥

''हे प्रभु जी! आप के नाम सिमरन रूपी आरती के बिना, मैंने संसार में और कोई सच्ची आरती नहीं देखी। आप के नाम के बिना, मेरे, आप के दास के लिए, सभी आडम्बर आश्चर्यजनक हैं।''

बावन कंचन दीप धरावै।
जड़ बैराग रे दृस्टि न आवै॥ 1॥

''चाहे कोई जीव आरती के लिए, स्वर्ण के बावन (बवंजा) दीये बनाए, परन्तु सच्चे वैराग्य के बिना, उस प्रभु के दर्शन नहीं होते।''

कोटि भानु जा की सोभा रोमै।
कहा आरती अगनी होमै॥ 2॥

''जिस प्रभु की आरती की शोभा, करोड़ों सूर्यों से भी अधिक, प्रकाश बढ़ा रही है, तो ऐसी सच्ची आरती के लिए, अग्नि जलाकर यज्ञ करने की क्या आवश्यकता है? भाव कोई आवश्यकता नहीं।''

पाँच तत यह तिरगुनी माया।
जो देखै सो सकल उपाया॥ 3॥

''यह संसार पाँच तत्वों-आकाश, धरती, अग्नि, जल, वायु और माया के तीन गुण सतो-रजो-तमो से बना है। जो भी दिखाई दे रहा है, उन सब को प्रभु ने उत्पन्न किया है।''

कहै रविदास देखा हम माहीं।
सकल जोति रोम सम नाहीं॥ 4॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''मैंने प्रभु को, अपने भीतर से अनुभव किया है। उस प्रभु की ज्योति के एक रोम के प्रकाश के समान, संसार का सारा प्रकाश भी नहीं हो सकता।''

शब्द - 138

संत उतारै आरती देव सिरोमनीये॥
उर अंतर तहाँ पैसि बिन रसना भणिये॥ टेक॥
मनसा मंदिर माहिं धूप धुपइये॥
प्रेम प्रीति की माल राम चढ़इये॥ 1॥
चहु दिसि दिबला बालि जगमग ह्वै रहियो रे॥
जोति जोति सम जोति जोति मिल रहियो रे॥ 2॥
तन मन आतम बारि सदा हरि गाइये॥
भनत जन रविदास तुम सरना आइये॥ 3॥

जगत्गुरू रविदास जी महाराज, जीवों को प्रभु का सिमरन करने का पावन उपदेश देते हैं,''प्रभु की नाम सिमरन रूपी आरती संत-जन गाते हैं।''

संत उतारै आरती देव सिरोमनीये॥
उर अंतर तहाँ पैसि बिन रसना भणिये॥ टेक॥

''हे सर्व श्रेष्ठ प्रभु जी! संत, आप की नाम सिमरन रूपी, श्रेष्ठ आरती

करते हैं। हृदय में बस रहे, प्रभु का नाम संत-जन, रसना के बिना ही, अपने हृदय में उच्चारण करते हैं।''

मनसा मंदिर माहिं धूप धुपइये ॥
प्रेम प्रीति की माल राम चढ़इये ॥ 1 ॥

''अपने सुंदर मन रूपी मंदिर में, प्रभु को मिलने की आशा का ही धूप जगाते हैं और प्रभु से सच्ची प्रीति करना ही, प्रभु के आगे सच्ची माला चढ़ाना है।''

चहु दिसि दिबला बालि जगमग ह्वै रहियो रे ॥
जोति जोति सम जोति जोति मिल रहियो रे ॥ 2 ॥

''चारों दिशायें भाव हर जगह प्रभु के नाम रूपी दीपक से सारा संसार जगमगा रहा है। उस प्रभु की नाम रूपी ज्योति, अपने अंदर जगाकर, उस प्रभु की ज्योति से मिलकर (जीव रूपी ज्योति, प्रभु रूपी ज्योति का अंश है) उसका ही रूप हो जाती है।''

तन मन आतम बारि सदा हरि गाइये ॥
भनत जन रविदास तुम सरना आइये ॥ 3 ॥

'' ''अपना तन-मन, हरि के समक्ष अर्पण कर, सदैव उसके गुण गाने चाहिएं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''हे हरि! मैं आपका दास, आप जी की शरण में आया हूँ।''

शब्द - 139

गगन मंडल में आरती कीजै,नाद बिंद इके मेक करीजै।
सुसमन इंदु अमृत कुंभ धरावै, मनसा माला फूल चढ़ावै ॥ 1 ॥ टेक ।।
घीव अखंडा सोहै बाती, त्रिकुटी जोत जलै दिन राती।
पवन साधना थाल सजीजै, तामें चौमुख मन धरि लीजै ॥ 2 ॥
रवि ससि हाथ गहौं सिंह माहीं, खिन दहिने खिन बामैं लाहीं।
सहस कंवल सिघासन राजै,अनहद झांजन नित ही बाजै ॥ 3 ॥
इंह बिध आरती सांची सेवा,परम पुरिख अलख अभेवा।
कहै रविदास गुरदेव बतावै, ऐसी आरती पार लंघावै ॥ 4 ॥

इस पावन शब्द द्वारा जगत्गुरू रविदास जी महाराज जीवों को गुरु के उपदेशानुसार, दशम द्वार में ध्यान लगा कर, अनहद नाद और प्रकाश के दर्शन करने रूपी सच्ची आरती करने का, पावन उपदेश देते हैं।

गगन मंडल में आरती कीजै, नाद बिंद इके मेक करीजै।
सुसमन इंदु अमृत कुंभ धरावै, मनसा माला फूल चढ़ावै ॥ 1 ॥ टेक ॥

हे मनुष्य "दशम द्वार रूपी गगन मंडल में, ध्यान लगा कर, प्रभु की सच्ची आरती करो, जहाँ प्रभु का अनहद नाद सुनाई देता है, जीव प्रभु से एक रूप हो जाता हैं। सुष्मना नाड़ी त्रिकुटी से ऊपर दशम द्वार में, प्रभु के अमृत का कुंभ भरा पड़ा है, जहाँ मन से प्रभु मिलाप रूपी फूलों की माला चढ़ाई जाती है।"

घीव अखंडा सोहै बाती, त्रिकुटी जोत जलै दिन राती।
पवन साधना थाल सजीजै, तामें चौमुख मन धरि लीजै ॥ 2 ॥

"जहाँ प्रभु के नाम का दीया बनाकर, प्रभु के नाम का अखंड घी डाल कर, बाती दीया में डाली जाती है और त्रिकुटी में, प्रभु नाम रूपी अखंड घी से स्थिर अवस्था में प्रभु के नाम की ज्योति निरंतर जगमगा रही है। ध्यान को टिकाने रूपी साधना के लिए थाल सजाया जाता है। जहां चारो तरफ भाव सभी ओर से ध्यान हटा कर, प्रभु में लगाया जाता है।"

रवि ससि हाथ गहौं तिंह माहीं, खिन दहिने खिन बामैं लाहीं।
सहस कंवल सिघासन राजै, अनहद झांजन नित ही बाजै ॥ 3 ॥

"स्थिर अवस्था में सूर्य और चंद्रमा हजारों दीपों के समान लगते हैं। जिनको आरती के लिए क्षण भर में दांए एवं बांए हाथ में सजाया जाता है। मन में हजारों पत्तियों वाला कमल पुष्प खिल जाता है। सहसदल कंवलों में प्रभु पातिशाह का सिंहासन है। जहाँ प्रभु के अनहद नाद के बाजे बज रहे हैं। अनहद धुन निरंतर सुनाई देती है।"

इंह बिध आरती सांची सेवा, परम पुरिख अलख अभेवा।
कहै रविदास गुरदेव बतावै, ऐसी आरती पार लंघावै ॥ 4 ॥

"इस प्रकार प्रभु की आरती करना ही, परम पुरुष अलख और भेद रहित प्रभु की सच्ची सेवा है।" सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"प्रभु की ऐसी आरती करने का ज्ञान गुरदेव बताता है। ऐसी आरती करने से, जीव संसार के भव-सागर से पार हो जाता है।"

शब्द – 140

आरती करत हरषै मन मेरो, आवत चित तुव रुप घनेरो ॥ टेक ॥
अजर अमर अडोल अभेस, निरगुन रहित रुप नहिं रेखा।
चेतन सत चित घन आनन्दा, निरविकार तेज अमित अभेदा ॥ 1 ॥

अनुभ अजन्मा सरबग्य अनन्ता, अभेद अदैश अबिगत सुछंदा।
नाम की बाती घीव अखंडा, इक ही जोत जलै ब्रहमंडा॥ 2॥
अनत बार तोहि धियान लगावा, मुनि जनि पै पार नहिं पावा।
मन बच क्रम रविदास धियावा, घंटा झालर मनहि बजावा॥ 3॥

इस पावन शब्द में, जगत्गुरू रविदास जी महाराज, सांसारिक जीवों को, नाम जपने रूपी सच्ची आरती करने का पावन उपदेश देते हैं।

आरती करत हरषै मन मेरो, आवत चित तुव रुप घनेरो॥ टेक॥

''हे प्रभु जी! आप जी का नाम जपने रूपी सच्ची आरती करके, मेरा मन आनन्द से परिपूर्ण हो रहा है, जिससे मेरे हृदय में, आप जी के अनेकों रूप अनुभव हो रहे हैं।''

अजर अमर अडोल अभेस, निरगुन रहित रुप नहिं रेखा।

''प्रभु कभी बूढ़ा नहीं होता, हमेशा अमर है, कभी डोलता नहीं और भ्रम रहित है। वह प्रभु निर्गुण है, जिसका कोई रूप, रंग और सीमा नहीं है।''

चेतन सत चित घन आनन्दा, निरविकार तेज अमित अभेदा॥ 1॥

''हे प्रभु जी! आप चेतन, सत स्वरूप, चेतन, आनन्द से भरपूर, विकार रहित, प्रकाश रूप अमिट और भेद रहित हैं।''

अनुभ अजन्मा सरबग्य अनन्ता, अभेद अदैश अबिगत सुछंदा।

''हे प्रभु जी! आप अनूप, जन्म रहित, सब कुछ करने योग्य, अनंत, भेद रहित, अदृश्य, अविनाशी और निर्मल स्वरुप हो।''

नाम की बाती घीव अखंडा, इक ही जोत जलै ब्रहमंडा॥ 2॥

''हे प्रभु जी! आपकी सच्ची आरती के लिए, आप के नाम की बाती और आपके नाम का आखंड घी दीये में डाला है और आपके नाम की ज्योति जगाई है, जो सारे ब्रह्माण्ड को रोशन (प्रकाशित) कर रही है।''

अनत बार तोहि धियान लगावा, मुनि जनि पै पार नहिं पावा।

''ऋषि-मुनियों ने अनेकों बार ध्यान लगाया, परन्तु आप के आदि-अन्त को नहीं पा सके।''

मन बच क्रम रविदास धियावा, घंटा झालर मनहि बजावा॥ 3॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज प्रार्थना करते हैं कि,''हे प्रभु जी! मन, वचन और कर्म करके, आपका ध्यान लगाने रूपी सच्ची आरती करता हूँ। जिस से मुझे अपने अन्दर ही, घंटा अनहद नाद सुनाई देता है।''

पदे

1.

सोहं ओंकार निरविकार आनादि, आखंड धयान सारूप॥
अजर अमर आदि करना, पुरष अटल अनूप॥
कृपा करते दयाल जी, काटे बंधन करूप॥
साहिब बखशीश सत सुण, दास कर निज रूप॥
सच नाम को सिमर कर, जीव भये तत रूप॥
रविदास कहे भज नाम को, पावे शुद्ध सवरूप॥

''सोहं प्रभु एक है, वह सभी विकारों से रहित है, वह संसार के आदि से है और सम्पूर्ण है। उसके स्वरूप का ध्यान करना चाहिए। वह प्रभु कभी बूढ़ा नहीं होता सदैव रहने वाला, अमर, अटल व अदभुत पुरुष है। प्रभु दयालु है, वह कृपा करके जीव के सभी बुरे कर्म के बंधन काट देता है। हे जीव! तू सुन, जिस जीव पर उस प्रभु की कृपा हो जाती है, वह उसे अपना निज रूप बना लेता है। प्रभु के सत्य नाम का सिमरण करके जीव उसी का रूप हो जाता है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जो जीव उस प्रभु का सिमरन करते हैं, वे प्रभु के पवित्र स्वरूप को प्राप्त कर लेते हैं।''

2.

गुर की मूरति मन विखे, धरो सो हर दम धयान॥
नाम दान इश्नान कर, दवारे पावे मान॥
मंतर जप गुर हिरदे में, मिले सो निश्चल ज्ञान॥
भूख प्यास ना उतरे, नाम बिना भगवान॥
सतगुर सो नहीं पावई, जो दिल मांहे सुआन॥
मन सच्चा कित बिध भयो, कर है किया बियान॥
झूठा पालन पालते, कहो कैसे कल्याण॥
आज्ञा गुर की चित्त धर, कहे रविदास बिखान।।

गुरू जी की मूर्ति का मन में सदैव ध्यान करना चाहिए। जो जीव प्रभु का मन में सिमरन करता श्रेष्ठ मार्ग पर लगाने रुपी दान करता है और नाम के सरोवर में स्नान करता है, उसे प्रभु के दरबार में सम्मान मिलता है। जो जीव गुरू के मंत्र को हृदय में जपता है, उसे अटल ज्ञान की प्राप्ति होती है। प्रभु के नाम के बिना जीव

की भूख प्यास शांत नहीं होती। जो जीव सत्गुरू को प्राप्त नहीं करता, उसके मन में लोभ रूपी कुत्ता बसा रहता है। प्रभु के नाम के बिना मन सच्चा कैसे हो? इसका ब्यान कैसे करें? मन में झूठ को बसाने से कल्याण कैसे हो सकता है? भाव नहीं हो सकता। सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि जो जीव गुरू की आज्ञा मन में धारण कर, नाम जपता है, उसका सदैव कल्याण होता है।

3.

कर एकागर बरित को, सिमरे नित करतार॥
साहिब की सब रीति का, कौण कथे विसतार॥
तिस की कुदरत अति बड़ी, जाणै कौण विचार॥
सदगुण नित हिरदे बसे, मिलसी ठौर आपार॥
गुर की लखो दिआलत, सतगुर कीयो पसार॥
कहे रविदास भगवान ने, दास दीये जग तार।।

''हे भाई! तुम अपनी बिरती को आंखों के ऊपर एकाग्र करके नित्य-प्रतिदिन ईश्वर का सिमरन करो। साहिब, प्रभु की महिमा को कौन वर्णन कर सकता है? भाव कोई नहीं कर सकता। उस प्रभु की प्रकृति बहुत विशाल है, उसे कौन विचार सकता है? जिस जीव के मन में प्रभु का सिमरन रूपी श्रेष्ठ गुण बसता है, उसको बेअंत प्रभु के दरबार में अटल स्थान प्राप्त होता है। जब गुरू जी की दया होती है तब जीव सतगुरु की कृपा से प्रभु को सृष्टि में व्याप्त अनुभव करता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''प्रभु अपने भक्तों को भवसागर से पार कर देते हैं।''

4.

प्रथमें सत सवरूप था, वहि अबिनाशी आप॥
मदय विआपक हो रहा, तिस को तूं मन जाप॥
अन्त समय भी रहोगे, निरंकार परताप॥
मन बाणी कर के भजे, मुंचित किल विष पाप॥
दाता करता आप है, धरति आकाश वियाप॥
महिमा बहुत बेअंत है, सतगुर ते होऐ थाप॥
सोहं नाम की धुन लगी, दिल के अन्दर आप॥
कहे रविदास विचार के, जानो गुर प्रताप॥

"सबसे पूर्व प्रभु सत्य स्वरूप था जो स्वयं नाश रहित है, अविनाश है। संसार के मध्य में भी वह प्रभु सर्वव्यापक है। हे जीव! तुम अपने मन में जाप करो। अंत समय में भी निरंकार प्रभु का प्रताप रहेगा। जो जीव अपने मन में प्रभु का गुणगान करते हैं, उनके सभी कठिन विकारों और पापों का नाश हो जाता है। सभी दातें देने वाला करतार प्रभु है और जो पृथ्वी और आकाश भाव सृष्टि के कण-कण में विद्यमान है। प्रभु की महिमा असीम है और सत्गुरू की कृपा से प्रभु की प्राप्ति होती है। जब जीव के मन में प्रभु के सोहं नाम की धुन, अपने आप लगती है तो फिर प्रभु स्वयं मन में प्रकट होता है।" सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, "जीव अपने भीतर सत्य का विचार कर गुरू जी के प्रताप व कृपा से प्रभु की प्राप्ति होती है।"

5.

जाप जपो तुम नाम का, कर सतगुर की सेव॥
गावत हिरदे नाम के, बूझत निज गुरदेव॥
नाम सत्य संसार में, पदारथ झूठ स नेव॥
दुबधा अन्तर की तजे, नित सतसंग करेव॥
आचार धरो गुर रीत के, मंगल नितय वधेव॥
कहे रविदास विचार के, साहिब देवन देव॥

"हे जीव! तुम प्रभु का नाम जपो, यह सत्गुरू की सेवा हैं। तुम अपने हृदय में प्रभु के नाम का गुणगान करो और फिर तुम्हें अपने मन के भीतर सदैव गुरूदेव का अनुभव रहेगा। संसार में प्रभु का नाम सत्य हैं, बाकी सब पदार्थ असत्य हैं। जो जीव प्रभु का प्रतिदिन सत्संग करता है, उसके भीतर से द्वैतभाव का नाश हो जाता है। जो जीव गुरू के सदगुण रूपी उच्च रीति को मन में धारण करता है, उसके मन में आनंद की वृद्धि होती जाती है।" सत्गुरु रविदास महाराज जी विचार के उच्चारण करते हैं कि,"प्रभु मालिक दाता दाते भाव सब कुछ प्रदान करने वाला है।"

6.

अंतर कर गावे सदा, हृदय कर भरपूर॥
खोटे कर्म तिआगसी, पाप भय सब दूर॥
काग रूप तज हंस हो, विकार ना करहो भूर॥

देव देह तुझ को दई, प्रतखश जान जरूर॥
कथना कथे ना हरि मिले, पावे खोजन नूर॥
कहे रविदास विचार के, रहो भगवान हजूर॥

''हे जीव! तुम अपने हृदय को प्रभु के गुण गाकर सदैव अनंद भरपूर रखो, जिससे झूठे कुकर्म समाप्त हो जाते हैं और सारे पाप दूर हो जाते हैं। हे जीव! तुम कौआ स्वभाव छोड़कर मानसरोवर में रहने वाला हंस बन जा, तेरे सभी पापों का अंत हो जाऐगा। ईश्वर ने तुम्हें दुर्लभ शरीर दिया है, इसलिए तुम प्रभु को अपने शरीर के भीतर अनुभव करो। केवल कथन करने से प्रभु की, उस हरि की प्राप्ति नहीं होती, अपने भीतर खोज करने से उस प्रभु के सत्य स्वरूप प्रकाश के दर्शन होते हैं।'' सत्गुरु रविदास महाराज जी विचार कर उच्चारण करतें हैं कि, ''हे भाई! तुम प्रभु को सदैव अपने पास समझो भाव प्रभु को प्रत्यक्ष अनुभव कर अनमोल जीवन सफल कर।''

7.

देवनवाला देत है, तिस की कर मन आस॥
सर्व युगी प्रतिपालीया, तेरी मिटी ना खवास॥
अंतरयामी जानता, लेखे सास गरास॥
आज्ञा गुर की चित धर, साधन को रख पास॥
बखशणहारा बखशसी, प्रभु का होऐ दास॥
भाषण कर गुर नाम को, अंतर रख प्यास॥
अमृत वेला नाम सत, चार युगों में भास॥
सत संतोष धारण धरो, कहत भये रविदास॥

''प्रभु दाता सभी खजाने भाव सब कुछ प्रदान करने वाला है, इसलिए जीव तुम केवल उस प्रभु की प्राप्ती की मन में इच्छा रखो। प्रभु सभी युगों में जीवों की पालना करने वाला है, परन्तु जीव प्रभु को भुला कर अपनी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति में लगा रहता है। उसकी इच्छाएं समाप्त नहीं होतीं। अर्न्तयामी प्रभु सब कुछ जानने वाला है। श्वास लेते हुए और भोजन करते समय उसे स्मरण करो। गुरू की आज्ञा को मन में धारण करके नाम रूपी साधन को अपने हृदय में बसा लो। प्रभु दाता दयालु सभी खजाने प्रदान करने वाला है। इसलिए जीव को प्रभु का दास बन कर रहना चाहिए। हे जीव प्रभु के नाम को जपो और हृदय में उसके पवित्र दर्शनों की प्यास रखो। अमृत समय जीव को प्रभु के सत्य नाम की चारों युगों में

भाल करनी, प्रभु का सिमरन करना चाहिए।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हे जीव! तुम अपने मन में सदैव सत्य और संतुष्टि को धारण करो।''

8.

तन मन धन अर्पण करो, बाणी जप हरि मीत॥
सतसंगति कर संत की, दुष्ट त्यागो रीत॥
सवास सवास सिमरन करो, जनम आमोलक जीत॥
सोहं नाम के भजन से, दूर होए भ्रम भीत॥
तूंही तूंही रटता रहे, और ना लावे चीत॥
मान पाए जिन सेविया, प्रभ सो पाए प्रीत॥
नाम निशान प्राप्ते, जो गावत हरि के गीत॥
रविदास कहे सतसंग में, अवय पद सतगुर दीत॥

''हे जीव! तुम गुरू के समक्ष अपना तन मन और धन अर्पित करके हरि सहायक का नाम जपो। संतों की सतसंगति करके जीव का दुःस्वभाव समाप्त हो जाता है। श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करने से अमूल्य जीवन सफल हो जाता है। प्रभु सोहं के नाम का भजन करने से जीव के भीतर से सभी भ्रम दूर हो जाते हैं। जीव प्रभु को ही सब कुछ मान कर, उसका पवित्र नाम हृदय में जपता रहे और किसी दूसरी ओर अपना ध्यान न करे। प्रभु से प्रेम करके सिमरन करके जीव को सम्मान मिलता है। प्रभु की महिमा गाने से जीवों को प्रभु नाम रूपी निशान प्राप्त होता है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''सत्संग करने से जीव को सत्‌गुरु भय-रहित अटल पद देते हैं।''

9.

गुरमुख सेती प्रीत रख, कुकरम से मन बंद॥
सत गोविन्द गोपाल गुर, और आवन जान सन्बंध॥
अन्धेर मचयो सरब जगत में, परकाश न बिन गुर चंद॥
नितय पड़न गुरमुख सत, जानत भय सरब संद॥
गुर ही धारे रूप सब, खेले खेल आनन्द॥
जन रविदास पुकारते, जपो ओअं कर बंद॥

''गुरूमुखों से प्रीति करने से, जीव के मन में से बुरे विचार व कुकर्म

समाप्त हो जाते हैं। सदैव रहने वाला प्रभु संसार का पालक, जीवो का उदार करने वाला है। संसार में आना जाना सबंधो के कारण है। गुरू जी की कृपा से मनुष्य संसार के आवागमन से मुक्त हो जाता है। पूरे संसार में अज्ञानता रूपी अंधेरा है, गुरू रूपी चंद्रमा के बिना प्रकाश नहीं होता। नित्य-प्रतिदिन गुरमुख उस प्रभु की महिमा करते हैं और सभी ओर उस प्रभु को अनुभव करते हैं। गुरू सभी रूपों को धारण करके भीतर आनंद के खेल की बख्शिश करता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज पुकार कर उच्चारण करते हैं कि, ''तुम सभी ओर भटकना छोड़कर एक प्रभु का जाप एकाग्रचित होकर करो।''

10.

सरब ही साहिब एक है, दूसर कौन कहाए॥
मुक्ति ना पावे भजन बिन, जो उत्तम आप सदाए॥
ठाकर नदर ना आवही, कबहूं ना लेखै लाए॥
जो चाहे कल्याण को, सतगुर लए मनाए॥
गुण वंतिआं संग गुण वसे, जो तूं ध्यान लगाए॥
रविदास कहे संसार में, बहुरि ना जन्में धाए॥

''सभी ओर एक ही प्रभु विद्यमान् है, अन्य कोई दूसरा उस प्रभु के समान नहीं कहला सकता। प्रभु के भजन के बिना जीव मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता, भले ही वह स्वयं को कितना भी श्रेष्ठ समझे। जीव को प्रभु का अनुभव नहीं होता, जब तक जीव अपना जीवन प्रभु को समर्पित नहीं करता। यदि जीव अपना कल्याण चाहता है तो वह सत्गुरु की कृपा प्राप्त करे।'' जीव संतजन गुणवानों की संगती करके और प्रभु के नाम सिमरन में ध्यान लगाकर गुणवान बन जाता है। सत्गुरु रविदास जी महाराज कहते हैं कि, ''जीव संसार में दुबारा जन्म धारण नहीं करता भाव जीव जन्म-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है।''

11.

नाम धियावे देव मुनि, करता पुरष आगंम॥
सीस दान कर हरि मिले, तूं ना जान सहंम॥
ठाकर सदा समीप है, तिस बिन निहफल और॥
गुर गोपाल धियय तूं, मन आपणा कर भौर॥
बन्धन कौन छुड़ावसी, कीए बिना मन धर्म ॥

काटे गोबिन्द जन्म मरन, दूर होए सभ भरम॥
साहिब दीन दियाल सदा, सोई मनो पुकार॥
कहे रविदास प्रीति हरि, मन में राख विचार॥

''प्रभु के नाम का देवतागण व ऋषि-मुनि ध्यान करते हैं। वह प्रभु संसार का कर्त्तापुरख व गम से रहित है। सिर दान करने से हरि की प्राप्ति होती है, उस प्रभु को शीश भेंट करने से न डर। प्रभु ठाकुर सदैव जीव के नजदीक भाव भीतर है। प्रभु के नाम के बिना सब निष्फल है। हे जीव! तुम गुरू की शिक्षा के अनुसार अपने मन को प्रभु चरणों में भंवरा बना कर उसका ध्यान करो, मन में धर्म धारण किए बिना जीव बंधन मुक्त नहीं हो सकता। प्रभु का सिमरन करने से जीव के सभी जन्म-मरण रूपी दुख व भ्रम समाप्त हो जाते हैं। प्रभु साहिब सदैव गरीबों पर दयालु हैं। हे जीव! तुम मन में प्रभु को पुकारो भाव ध्यान करो।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जीव तुम अपने मन में श्रेष्ठ विचार करके हरि संग सच्ची प्रीत करो।''

12.

तिस जेवड दाता नांहि को, गुर आपरंपर सोए॥
गुर बिन सुरत ना सतय है, भरम थक्के सब लोए॥
देव नाथ और सिद्ध सर्ब गुर माने ते होए॥
धरती वयोम विचारिया, तिस ते भिन्न ना कोए॥
पाताल पुरी जयकार धुन, कच्छ मच्छ भी जोए॥
दाना दाता शीलवन्त, उपकारी जग होए॥
इंद्र ब्रहमा महेश गण, पवन बसंतर तोए॥
यह सब बपुरे कीट सम, लखे ना साहिब जोए॥
कहे रविदास पुकार कर, भरम भीत मन खोए॥

''प्रभु दाता के समान दानी अन्य कोई नहीं है। गुरू की कृपा से उस अपरम्पार प्रभु की प्राप्ति होती है। गुरू के बिना सत्य स्वरूप प्रभु के संग ध्यान नहीं जुड़ता और सभी लोग भ्रम में भटक कर थक हार जाते हैं। देवता, नाथ व सिद्ध सभी गुरू को मानने से महान हुए हैं। पृथ्वी और सम्पूर्ण प्रकृति में प्रभु विद्यमान् है। उस प्रभु के बिना कोई जगह नहीं है, पातालपुरी व सारी सृष्टि में प्रभु विद्यमान् है। कछ-मछ सभी उसके आदेश में हैं। प्रभु का सिमरन करने से जीव श्रेष्ठ मति वाला, दानी, शीलवान व संसार में उपकार करने वाला बन जाता है। इंद्र, ब्रह्मा, शिव-

गण, पवन, वायु, अग्नि यह सभी प्रभु के आदेश में हैं। प्रभु के नाम के बिना सभी चींटियों के समान हैं, वे प्रभु की महिमा नहीं जान सकते।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज पुकार के उच्चारण करते हैं कि,''प्रभु का सिमरण करने से जीव के मन के सभी भ्रम समाप्त हो जाते हैं।''

13.

अठ सठ तीर्थ पुन्न फल, होवत जो सच जाग॥
ध्यान धरो प्रभू भजन में, तो होवे बड भाग॥
मन का मणका फेर लए, विरती का कर ताग॥
शरवण कर के ही भयो, ऐ जग सगरो बाग॥
साहिब के सतसंग में , रहो मन सद ही लाग॥
जन रविदास सोहं गुण भज, मन मत अपनी त्याग॥

''जो जीव अज्ञानता रूपी निद्रा से जाग कर, सत्य के साथ जुड़ जाता है, उसे अठसठ तीर्थ का पुण्य व फल प्राप्त होता है। जिस जीव के भाग्य धन्य होते हैं, वही प्रभु के नाम का भजन करता है और उसका ध्यान करता है। जीव मन रूपी माला के मणके को फेरता है भाव जीव मन को प्रभु के नाम के साथ जोड़ना और बिरती रूपी धागा प्रभु के संग जोड़ता है। प्रभु की महिमा श्रवण करके जीव सारे संसार को बगिया समझता है। जीव को सदैव प्रभु के सतसंग में अपना मन लगाना चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हे भाई तुम अपने मन और मति में से अहंकार को त्याग कर प्रभु के सोहं नाम का सिमरन करो।''

14.

गुणों का होवे सागरा, ध्याय निरंजन नाम॥
नाम गुर का वोहिथा, तेरे आवै काम॥
करता चित ना आवही, भूल गया तूं नाम॥
प्रभू का सिमरन छोड के, खोटे करता काम॥
औगुण तेरे दूर हो, पर तूं गुर की शाम॥
आठ पहिर भगवान भज, निकट ना आवे जाम॥
सवास सवास मन भजन करो, सिमरो श्री गुर नाम॥
रविदास कहे गुर शरण में, पावे सुख विश्राम॥

"हे जीव! यदि तुम गुणों का समुद्र बनना चाहते हो तो माया रहित प्रभु का ध्यान धरो, गुरू का नाम संसार सागर से पार होने का जहाज है, जो जीव का सहायक बनता है भाव संसार सागर से पार करता है। हे भाई! तू कर्ता पुरख को मन में नहीं बसाता और उसके नाम को भुला बैठे हो और खोटे कर्मों को करने में भाव कुकर्मों में व्यस्त हो, परन्तु गुरू की शरण में जाने से तुम्हारे सभी अवगुण व दोष समाप्त हो जाएंगे। आठों पहर प्रभु का सिमरन करने से यमदूत पास नहीं फटकते। गुरू से नाम प्राप्त करके उसका श्वास-श्वास मन में भजन करो और गुरु के नाम का सिमरन करो।" सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,"गुरू की शरण में जाने से अटल सुख व आनंद की अनुभूति होती है।"

15.

गुरदेव दोवारे तेरा मान हो, निधआसन करे निहाल॥
जहां बैठे तहां सोभ हो, कबहूं ना होए बिहाल॥
गुरमुख की रीति धरो, गुरमुख की चलो चाल॥
एक ध्याना एक में, कर तूं यह संभाल॥
कारण करते अंत ना, तिस की प्रीति निहाल॥
पूरा सतगुर मिलत है, प्राप्त होवे घाल॥
वसतु नाम प्राप्ते, ह्रदय कर लै थाल॥
शोभा पावे देह में, कहे रविदास विशाल॥

"गुरूदेव के बताये हुए मार्ग पर चल कर जीव को हर तरफ सम्मान मिलता है और गुरूदेव की कृपा से जीव प्रभु से ध्यान लगाकर निहाल हो जाता है, फिर जीव जहां भी बैठता है, जीव की शोभा बढ़ती है व उसका कभी भी अहित नहीं होता। हे जीव! तुम गुरूमखों की नाम जपने वाली प्रवृत्ति मन में धारण करो और गुरूमुखों वाली श्रेष्ठ चाल चलो। जीव तू एकाग्र मन से प्रभु का ध्यान करो और प्रभु के नाम की संभाल करो। संसार की उत्पत्ति व पालना करने वाले संसार के कारण प्रभु का भेद नहीं पाया जा सकता। प्रभु के संग प्रीति करने से जीव निहाल हो जाता है। पूर्ण सत्गुरू की प्राप्ति से जीव की नाम रूपी कमाई सम्पूर्ण होती है। हे जीव! तु अपने मन रूपी थाली में प्रभु के नाम रूपी वस्तु धारण करो।" सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, "जीव प्रभु को अपनी देहि में से प्राप्त करके शोभायमान हो और जीव का मन विशाल हो जाता है।"

16.

कुदरत कौन विचार है, कोई ना जाने भेत॥
सर्व ही शक्तिमान गुर, भूले मन लए चेत॥
गुर बिन आदि वियादि में, तीनों ताप जरेत॥
गुरु गोबिन्द प्रताप से, होत जात सर्व सेत॥
नाम लीए अघ जाएंगे, पापा मूल हरेत॥
जन रविदास अधीन हो, करो स्वामी हेत॥

''प्रभु की प्रकृत्ति का कौन विचार कर सकता है? कोई भी उसके भेद को नहीं जान सकता। गुरू सर्वशक्तिमान है और भूले-भटके जीव प्रभु को याद करते हैं। गुरू के बिना जीव को तीनों रोग (आदि, व्यादि व उपाधि) लग जाते हैं। गुरू व प्रभु की कृपा से जीव के सभी बंधन समाप्त हो जाते हैं। नाम जपने से कठिन पाप व पापों का मूल समाप्त हो जाते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जीव को सब के स्वामी प्रभु को समर्पित हो कर प्रेम करना चाहिए।''

17.

तिस बिन दूसर अवर ना, निरंकार को देख॥
अमर अजर भरपूर गुर, घटि घटि मांहि सुलेख॥
निरंकार सद सदीव सोए, साहिब सर्व विशेष॥
शरधा से प्रीतम मिले, पावत सर्व ही भेख॥
ताप तपे मन मार के, होत जात है शीव॥
उदास रहे संसार में, बहु बिअंत ही जीव॥
आतम देव बसाया, हृदय में कर वास॥
जग में आया सुफल है, कहत भयो रविदास॥

''हे जीव! निराकार प्रभु के बिना अन्य कुछ सत्य नहीं है। उस प्रभु का सिमरन करो। प्रभु सदैव रहने वाला अमर, जो कभी बूढ़ा नहीं होता अजर व पूर्ण संसार के कण-कण में विराजमान है। निराकार प्रभु सदैव सर्वश्रेष्ठ स्वामी एवं अदभुत है। श्रद्धा से प्रभु-प्रीतम की प्राप्ती होती है और जीव प्रभु के सभी भेदों का अनुभव किया जा सकता है। मन को मारकर नाम जपन रूपी श्रेष्ठ तप करने से जीव का कल्याण होता है। जो जीव संसार से उपराम होकर प्रभु का सिमरन करता

है, उसे अंत रहित प्रभु की प्राप्ति होती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जो जीव अपने भीतर प्रभु को अनुभव कर लेता है, उसका संसार में आना सफल हो जाता।''

18.

नाम धनी का सत सदा, गुरदेव राख मन टेक॥
अन्तर धरीं ध्यान तूं, बिरति को कर एक॥
अंत करण सुधार के, सोहं मनि करो पाठ॥
सतगुर की दरगाह में, सुंदर होवे ठाठ॥
गुर की किया उपमा कथो, अदभुत लीला रीत॥
प्रेम बिछोरा ना जरे, मीन समान है प्रीति॥
ओअं ओअं ध्यान धर, सोहं भेद विचार॥
तत रूप होए जनमनां, कहे रविदास आचार॥

''हे मानव! सारे खजाने के स्वामी प्रभु का नाम सदैव सति रहने वाला है और गुरूदेव पर विश्वास रखो। अपनी विरती को एकाग्र करके अपने भीतर प्रभु का ध्यान करो। सोहं का सिमरन करने से जीव का अंत-कर्ण शुद्ध हो जाता है और प्रभु के दरबार में उसे सुंदर सम्मान मिलता है। गुरू की जीव क्या महिमा कर सकता है? उसकी लीला की रीति अद्भुत है। प्रभु प्रेमी जीव प्रभु से दूरी सहन नहीं कर सकता, जैसे मछली की जल के साथ प्रीति है, उसी प्रकार जीव को प्रभु के साथ प्रीति करनी चाहिए। हे जीव! तुम ओंकार का ध्यान करो और सोहं के भेद की विचार करके उसके साथ एक होने का विचार करो।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जीव अपने मन को तत्व रूपी प्रभु के साथ जोड़कर अपना जीवन सफल करना श्रेष्ठ कर्म है।

19.

दुरमति का त्यागन करो, लेहो गुरमत खोज॥
खोटन की संगत तजो, किऊं सिर पर उठाओ बोज॥
गुर शरण में मन लागे, छूटे माया बंध॥
आगे मुशकिल ना बणे, होए नाम सनबंध॥

झूठ बोल झूठा बणे, झूठ तियागो गैल॥
जन रविदास विचारिया, गली गली कर सैल॥

"हे जीव! तू कुमति का त्याग कर और गुरू की श्रेष्ठ मति की खोज कर। बुरे जीवों की संगति से जो बोझ तुमने अपने सिर पर उठाया है, उसका त्याग करो। गुरू की शरण में मन लगाने से माया के सभी बंधन समाप्त हो जाते हैं। जब प्रभु का नाम जीव का सहायक बन जाता है तो उसको आगे किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं होती। झूठ बोलने से जीव झूठा होता है। इसलिए झूठों को त्याग देना चाहिए।" सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार कर उच्चारण करते हैं कि, "जो जीव प्रभु का सिमरन करते हैं वे बेगमपुरा की गलियों की सैर करते हैं। भाव खण्डों ब्रह्मण्डों की सैर करते है।"

20.

भगवान आतम देव का, करो मन अपने जाप॥
नाम बडाई मनन कर, सब तापन सिर ताप॥
गति रीति ना कहि सको, जो माने गुर वाक॥
कागज़ मिले ना प्रेम को, कलम लिखे नहीं साख॥
बैठ विचारो मन विखे,सतगुर ध्यान लगाए॥
संगत का फल पाव है, पाप नरंचक लाए॥
बाणी रटो गुर गुर सदा, अंतर लए सुख भास॥
मार्ग पावत लाभ हो, कहत सतय रविदास ॥

"हे जीव! तुम अपने भीतर बैठे प्रभु का अपने मन में जाप करो, नाम की महिमा प्रभु की उस्तत सभी तपों से श्रेष्ट तप है। जो जीव गुरू के वचनों पर चलता है उसकी महिमा और आत्मिक आवस्था ब्यान नहीं की जा सकती। प्रेम को कागज पर कलम से अक्षरों से लिख कर व्यक्त नहीं किया जा सकता। समाधि में बैठकर मन में सत्गुरू का ध्यान करना चाहिए। सत्गुरू की संगति करने से मन वांछित फल की प्राप्ति होती है व पापों का नाश होता है। गुरू के बताए मार्ग पर चलकर नाम का रटन करने से सदैव भीतर सुख की प्राप्ति होती है।" सत्गुरु रविदास जी महाराज सच्च उच्चारण करते हैं कि,"प्रभु की प्राप्ति का मार्ग प्राप्त करके जीव को सदैव रहने वाला लाभ प्राप्त होता है।"

21.

जीभा कांती मन करो, सान चड़ावो तेज॥
सचखंड में जा मिले, सतगुर देवे भेज॥
धर्म साथ संबंध जो, कुल तारन की चाल॥
प्रात कमाई अपणी, पाए मुशक्कत घाल॥
मुक्ति दवारा पाव है, चिंतन नाम हमेश॥
गुर सेवक की रीति लख, सतगुर जान नरेश॥
जोन जोन भरमत नहीं, मनन के संग साथ॥
जन रविदास पुकारते, साहिब कीनी दात॥

''जीभ को कैंची बनाकर प्रभु का सिमरन करके, सारे बंधन काट कर, मन को प्रभु के साथ जोड़ने से जीव की शान व वर्चस्व बढ़ता है। सत्‌गुरू कृपा करके जीव को सचखंड में भेज देते हैं। जो जीव धर्म से संबंध जोड़ता है, वह अपने वंश के उद्धार की रीति पर चलता है और अपनी की हुई कमाई को सफल करता है। नाम का चिंतन करने से जीव को सदैव मुक्ति का द्वार प्राप्त होता है। गुरू के सेवक की यही रीति होती है कि वह अपने सत्‌गुरू को सच्चा पातशाह समझता है। प्रभु का नाम मन में संभालने से जीव योनियो के चक्र में नहीं भटकता।''सत्‌गुरु रविदास जी महाराज पुकार करते हुए उच्चारण करते हैं कि, ''प्रभु साहिब सब खज़ाने और मुक्ति का दान देने वाले दानी हैं।''

22.

वेराग विवेक ततीखशा, सम दम आदि ले खोज॥
मोमोखश बन सतसंग में, लेह परमातम मौज॥
तत तवं साधन भने, मुनिवर मति सुधीर॥
कथने मातर ना मिले, सोधन करो सरीर॥
मन इंद्रिय मलकर भरे, ततव मसी कहे आप॥
अंतशकरण भी शुद्ध नहीं, लागत सर्व ही पाप॥
पापी कर्म कमावना, सो सतसंग में नास॥
कलि के दोष सब दूर हो, कथन करे रविदास॥

''वैराग्य, सोचने समझने की शक्ति विनम्र स्वभाव और प्रभु को मिलने की इच्छा से, अपने भीतर प्रभु की खोज करके, सत्संग में जाने से मुक्ति की प्राप्ति

होती है और जीव प्रभु के मिलन का आनंद अनुभव करता है। मुनिवर अपनी मत को श्रेष्ठ दिशा में लगाकर, अपने भीतर की खोज करते हैं, केवल कथन करने से प्रभु की प्राप्ति नहीं होती, शरीर को नियंत्रित व शुद्ध करना चाहिए। मन व इंद्रियां वासना में ग्रस्त होने के कारण जीव स्वयं को उत्तम समझता है। जिस कारण जीव का अंतःकरण अशुद्ध होता है और उसे सभी पाप लगते हैं। सत्संग में जाने से जीव पाप करने से रूक जाता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि परमात्मा का सिमरन करने से जीव के सभी प्रकार के दोष समाप्त हो जाते हैं।''

23.

आपणा बीज तूं आप ही, खावत है बहु बार॥
तेरा ही तुझे सौंपता, वह दाता करतार॥
जो गुर शरणी परत है, तिल भर भी बेअंत॥
शोभा पावे लोक में, कहित मुनी जन संत॥
नरकन के अधिकार को, शीघर मन दे त्याग॥
भजन करो भगवान का, मिले रविदास बेराग॥

''जीव अपने किये हुए कर्मों को बार बार भोगता है, अर्थात अपना बोया हुआ स्वयं ही खाता है। जीव द्वारा किये गए कर्मों का फल ही सभी खजाने प्रदान करने वाला करतार उसे देता है, परन्तु जो जीव गुरू की शरण ग्रहण करता है और अनंत प्रभु उस पर तनिक भर भी कृपा कर दें तो जीव संसार में प्रंशसा पाता है। यह मुनिजन और संतों का कथन है। हे जीव! तुम नर्क के ख्याल को शीघ्र ही मन में से त्याग दो।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जो जीव वैराग्य धारण कर सिमरन करता है, उसका प्रभु संग मिलन हो जाता है।''

24.

गुण आवे गुण उचारे, गुण में रहे समाए॥
गोविंद गुरू गोपाल गुरू, करता पुरष बसाय॥
भगवान भजन में सुख सदा, होर है सुख ना काए॥
कर विश्वास मन आपणो, सतगुर चरनी धाऐ॥
सत सुन्दर अति, अगंम अपारा॥
खेल साहिब का, सभ से नियारा॥

निरमल आतम सवरूप, लखि सरीर होऐ पवीत ॥
सचखंड में जा बसे, कहे रविदास तूं मीत ॥

"जब जीव में प्रभु के गुण आते हैं, तो वह प्रभु महिमा उच्चारण करता है, फिर जीव प्रभु में समा जाता है। गोविंद ही गुरू है, गोपाल ही गुरू है। कर्ता पुरख पूरे संसार में समाया हुआ है। प्रभु का भजन करने से सदैव सुख का अनुभव होता है। अन्य किसी ओर भी सुख नहीं है। हे जीव! तुम अपने मन में दृढ़ विश्वास रखकर सत्गुरू के चरणों में लग जाओ। प्रभु सब से सुंदर व गम से रहित अपार है। प्रभु का खेल सबसे न्यारा है। प्रभु निर्मल है, प्रभु के निर्मल आत्म स्वरूप का अनुभव करने से असंख्य जीव पुनीत हुए हैं।" सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, "वे मेरे मित्र हैं जो प्रभु को सदैव प्रत्येक क्षण अपने भीतर बसाए रखते हैं। वह सचखंड में जाकर रहते हैं।"

25.

नारायण रंग करे जग,धारे रूप अजैब॥
दीन दिआल कृपाल प्रभू, धन सिरजनहार सुसाहिब॥
सुण सुण के उपमा भने, कवी ग्रंथ कुरान॥
काजी मुल्ला कहित है, अप अपणी सभ मान॥
भेष पंथ योगी यती, लखे ना सो अनजाण॥
आप हो उतपत प्रपंच कर, आप करत भय हानि॥
घड़ी महूरत जाणते, वह अपरंपर देव॥
देव दनुज मानुष सभी, लागे तिस की सेव॥
अमर पहिचाने गुरू का, सो दास जाने निज भेव॥
जन रविदास विचारिया, सुख पावत नित सेव॥

"निरंकार ने अनेक प्रकार के रंगों से संसार बनाया है और अदभुत् रूप धारण किए हैं। जीवों पर दया करने वाला व कृपा करने वाला सृजनहार प्रभु सारे संसार का स्वामी है। धार्मिक ग्रंथ व कुरान में उस प्रभु की महिमा सुन-सुन कर उच्चारण की गई है। काजी व मुल्ला अपने-अपने ढंग से उसकी महिमा का गुणगान करते हैं। वेश धारण करने वाले पंथक-जोगी, जती उसकी महिमा नहीं करते वह अनजान हैं। प्रभु स्वयं सारे जीवों की उत्पति करने वाला है और स्वयं ही जीवों का नाश करने वाला है। संसार को पैदा करने वाली घड़ी व मुहूर्त को अपरम्पार प्रभु स्वयं ही जानता है। देव, दानव व मानव सभी प्रभु की सेवा में लगे

हैं। जो जीव अमर गुरू की पहचान कर निज भेद को जान जाता है, वह संसार सागर से पार हो जाता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जीव प्रभु का प्रतिदिन सेवा सिमरन करने से चिर सदीव सुख का आनंद लेता है।''

26.

नाम ध्यावे सिद्ध भये, जपन जपो बहु बार॥
सतगुर के संग लाग कर, लोहा होवे पार॥
गुरू गोपाल जहाज युग, गुर मनसा पूरन हार॥
साहिब की उपमा भनो, मुख से लख लख वार॥
मित्तर तेरा और नहीं को, तूं देखी नदर पसार॥
नदरी नदर सुधार मन, कहे रविदास विचार॥

''प्रभु का नाम सिमरन करने से सभी कार्य पूर्ण हो जाते हैं और मुक्ति की प्राप्ति होती है। इस लिए प्रभु के नाम का जाप बार-बार करना चाहिए। सत्गुरू की संगति करने से लोहा रूपी जीव शुद्ध सोना रूपी श्रेष्ठ बनकर पार हो जाता है। युग-युगांतर से गुरू जीवो के पालनहार प्रभु के नाम रूपी जहाज में बैठा कर जीव को पार लगाता है व सर्व इच्छाओं की पूर्ति करता है। जीव को प्रभु मालक की महिमा मुख से लाखों बार करनी चाहिए। हे भाई! चारों ओर अपनी नजर दौड़ा कर देखो कि गुरू के बिना तुम्हारा कोई सच्चा मित्र नहीं है। ''सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार कर उच्चारण करते हैं कि'' प्रभु की कृपा से जीव का मन शुद्ध हो जाता है और उसका प्रभु के संग मिलन हो जाता है।

27.

वरनण कर के को कहे, जग पालक परशंस॥
अंतर करो मिलाप गुरू, सुभ गुण की बसे बंस॥
सतगुर के उपदेश कर, निर्मल होवे हंस॥
सतिगुरू दाता अति बड़ा, ब्रहम जानीए अंस॥
ऐसा नाम निरंजनी, अंतर लए बसाए॥
हाथ जोड़ उसतति करो, गुर राखे सत भाए॥
ब्रहंम वकता, ब्रहंम सोत्री, ब्रहंम निसठा गुरू असंस॥
सतगुर संग प्यार कर, कहे रविदास बडहंस॥

''हे जीव! संसार की पालना करने वाले प्रभु की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है। गुरू जीव का प्रभु से मिलाप करा देता है और उस जीव के सभी शुभ गुण रूप खजाना आ जाता है। सत्गुरू के उपदेश श्रवन करके यह जीव रूपी हंस निर्मल हो जाता है। सत्गुरू सबसे बड़ा दाता है, जिसकी कृपा से जीव ब्रह्म की अंश को अनुभव करता है। जीव को प्रभु के निरंजन नाम को अपने भीतर बसाना चाहिए। गुरू जीव को प्रभु से जोड़ता है इसलिए हाथ जोडकर गुरू की महिमा करनी चाहिए। गुरु जीव को सत्य से जोड़ता है। गुरू की ब्रह्म वक्ता (ब्रहम का विचार रखने वाला) ब्रह्म स्रोत (ब्रह्म महिमा सुनने वाला)और ब्रह्म निष्ठा (ब्रह्म से प्रेम उत्पन्न करने वाला) और भ्रम दूर करने वाला है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि ''सत्गुरू से प्रेम करने से जीव ब्रह्मानंद का अनुभव करने वाला परमहंस बन जाता है।''

28.

दाता सब गुण बड़ा है, किरत ना मेटे कोए॥
समुंदर सागर से जी तरे, किरपा करता सोए॥
वेद कथे शास्तर कथे, तिस बिन अवर ना कोए॥
ना हूआ, ना होएगा, जानत है जग लोए॥
नाम जपो तिस धनी का, मात गर्भ नहि पोहि॥
सतगुर की कर बंदगी, संशय सकल मिटोए॥
गिर पृथ्वी चंद सूर सभ, धारत है भगवंत॥
रविदास कहे अलपग यह, जानत है किआ जंत॥

''दाता सबसे बड़ा गुणी है, उसके किये को कोई मिटा नहीं सकता। जिस जीव पर प्रभु की कृपा होती है, वह जीव संसार रूपी समुद्र से पार हो जाता है। भले ही जीव कितने भी वेदों और शास्त्रों के कंठस्थ कर ले परन्तु प्रभु के नाम के बिना उसका उद्धार नहीं हो सकता। जीव प्रभु के नाम के बिना ना उद्धार संभव नहीं है, इस बात को कुल संसार भली-भांति जानता है। सबसे बड़े धनी प्रभु का सिमरन करने से जीव माता के गर्भ में नहीं जाता। सत्गुरू की बंदगी करने से सभी भ्रम दूर हो जाते हैं। पर्वत, पृथ्वी, चंद्रमा, सूर्य व पूर्ण प्रकृति अपरम्पार प्रभु की रचना है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''कम बुद्धि वाला जीव उस प्रभु की उस्तत क्या कर सकता है? भाव प्रभु की महिमा को नहीं जान सकता।''

29.

गुरमुख दवारा नाद सुण हृदय मांह ले बूझ॥
सुरत धरो मत उपजै, नेतरीं होवे सूझ॥
मिले ना सतगुर शब्द तोहि, अंतर भरी है दूज॥
अमर होवे सतसंग में, मन अपने से झूज॥
श्रेष्ठ पुरूष का संग कर, मान करो सभ चूर॥
मन हसती सकल जरो, पापन को जो मूर॥
साहिब सेती प्रेम कर, रसातल से जा बच॥
गुर गुर मन में रटन कर, मुख से बोल तूं सच॥
संतन के दवारे परो, होवे परम आनन्द॥
कहे रविदास भगवान के, गावो मन में छंद॥

''गुरमुख के बताए हुए मार्ग पर चलकर जीव अनहद नाम श्रवण करता है और हृदय में प्रभु का विचार करता है। सुरति शब्द के साथ जोड़ने से बुद्धि श्रेष्ठ व उच्च होती है व नेत्रों से प्रभु के दर्शन करने से समझ आती है। जब तक जीव के मन में द्वैत भावना है, उतनी देर उसे सतगुरू का शब्द सुनाई नहीं देता। सतसंग करके अपने मन को काबू कर प्रभु के नाम के साथ अमर हो जाता है। श्रेष्ठ जनों की संगति करने से अहंकार समाप्त हो जाता है। अपने मन की हस्ती को समाप्त करने से, जो सभी पापों की जड़ है। जीव प्रभु मालक से प्रेम करके रसातल (नर्क) से बच जाता है। हे जीव! तुम गुरू के नाम का मन में रटन करो और मुख से सत्य बोलो। संतों के द्वारे जाकर इनकी शरण में जाने से परमानंद की प्राप्ति होती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''भगवान की मन में महिमा शब्द गायन करो।''

30.

पताल रसातल आनन्त है, खोजन हारे लोक॥
प्रभु माया को अंत ना, ढूंडत करते शोक॥
जीव वितल है जीव में, जीव सुतल सो जीव॥
जीव तलातल महातल, साहिब लख लै सीव॥
अतल सात पाताल यह, जीव ईश लखि लेव॥
इस बिधि अंत ना आवे है, खै पताला भेव॥

बुद्धि कितने बल धारे, लागत ना कोई ताण॥
गुरमुख मन बसाईए, मानक नाम निशाण॥
चींटी के सम बल नहीं, चाले तेरा जोर॥
नाम बिना भगवान के, लाख मचावे शोर॥
उतरे आवरण दिले का, मन आपणा ले साध॥
कहे रविदास पुकार के, दूर करो सब वयाध॥

''ब्रहमंड में, पाताल व पृथ्वी अनंत हैं। प्रभु की खोज कर-कर के जीव हार गए हैं, प्रभु की माया का अंत नहीं है। सच्चे प्रेम के बिना जीव प्रभु की खोज करते हुए निराश हो जाते हैं। जीव सप्त पाताल और संज्ञा पाताल में रहते हैं। जीव भले ही तलातल, पाताल और चाहे निचले छठे महातल पाताल में हो, सदैव प्रभु की सेवा करने से ही उद्धार हो सकता है। जीव किसी भी पाताल में रहकर प्रभु का अंत नहीं पा सकता। जीव बुद्धि में कितना भी बलवान हो परन्तु प्रभु के नाम के बिना वह बुद्धि व्यर्थ है। गुरमुख नाम को मन में बसाते हैं, जिस से उन्हें नाम रूपी खजाना प्राप्त होता है। जीव में चींटी के समान बल नहीं है, चारों ओर बस प्रभु का ही बल चलता है। प्रभु के नाम के बिना जीव जितना चाहे शोर मचाये, परन्तु वह किसी काम नहीं आता। अपने मन को प्रभु के नाम में लगाने से सभी विकार समाप्त हो जाते हैं।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज पुकार के उच्चारण करते हैं कि,''प्रभु का सिमरन करने से सभी पापों और दोष का अंत होता है।''

31.

नदियां लहिरीं बस रहा, सागर अति गंभीर॥
चौदह रतन उपाया, सतगुरू गुणी गहीर॥
ऊठत बैठत नाम भज, सो पावत सत सीर॥
मन अपणे गुरू गुरू रटो, कभी ना होवे भीर॥
मुख पवित्तर होत है, गुण गावत दीन दिआल॥
सरब घटा भरपूर है, अंतरयामी पाल॥
तुझे भरोसा ना पड़े, इस कारण कंगाल॥
रविदास कहे संसार में, अब भी कर तूं भाल॥

''नदिया पानी वाली लहरों से भरी हो व समुद्र अति गंभीर हों, जहां चौदह रत्न उत्पन्न हुए हों परन्तु सत्‌गुरू गुणों का खजाना हैं। उठते बैठते नाम जपने से श्रेष्ठ अमृत प्राप्त होता है। जो जीव अपने गुरू के नाम को रटता है, उस पर कभी

कोई विपत्ति नहीं आती। गरीबों पर दया करने वाले प्रभु के गुण गाने से मुख पवित्र होता है। सारे जीवो में सबकी पालना करने वाला प्रभु अंतरयामी भरपूर है। यदि जीव प्रभु पर विश्वास नहीं करता, तो वह कंगाल है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''हे जीव! तुम इस संसार में रहकर प्रभु की अपने भीतर से खोज कर लो।''

32.

एक घड़ी सिमरन करो, नहीं लागे कलू कलेश॥
प्रभू के दरबार में, होवे उज्जल भेष॥
पतित उधारण पारब्रहम, गुरू अविनाशी आप॥
श्रेष्ठ पुरष का संग करो, शुभ गुण मन में थाप॥
अथाह प्रभू हर धनी है, गुर का नाम अतोल॥
सवास आमोलक सुफल कर, जिस का ना कोई मोल॥
रविदास कहे आश्चर्य वह, हरि मिलने की रीति॥
सवासा बिरथा न तजो, मन कर करो प्रीति॥

एक घड़ी सिमरन करने से कल्युग के विकार व कलेश पास नहीं फटकते। प्रभु के दरबार में जीव का मुख उज्जवल होता है। पारब्रह्म पापों का विनाश करने वाला है और स्वयं अविनाशी गुरु है। श्रेष्ठ जनों की संगति करने से मन में सदगुण बसते हैं। अनंत प्रभु सबसे बड़ा धनवान है, गुरू का नाम अमूल्य है। जीव के अमूल्य श्वास सिमरन करने से सफल होते हैं, जिनका कोई मूल्य नहीं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हरि को मिलने का मार्ग प्राप्त करके जीव अदभुत आनंददायक अवस्था में पहुंच जाता है। श्वासों को कभी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए। एकाग्र चित हो प्रभु के संग सच्ची प्रीति करनी चाहिए।''

33.

निहाल निहाल निहाल है, वह करतार निहाल॥
कल्याण तेरा कल्याण हो, चरणी परो विसाल॥
ऐसी मनो प्रीति कर, जैसी चकवी सूर॥
जन रविदास ब्रहम रंग राता, औगुण हो सभ दूर॥

''करतार निहाल का सिमरन करने से पहले ही जीव निहाल हो जाता है। अब भी निहाल हो रहे हैं और आगे भी आनंदित होंगे। जब जीव अनंत प्रभु के

चरणों में जाता है, उसका कल्याण हो जाता है। हे जीव! तुम प्रभु के संग ऐसी प्रीति करो जैसी चकवी की सूर्य से होती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जो जीव प्रभु के मजीठी रंग में रंगा जाता है, उसके सभी प्रकार के अवगुण समाप्त हो जाते हैं।''

34.

साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना परे आकार॥
साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना सिफत शुमार॥
साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना कहे उचार॥
साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना करे विचार॥
साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं कछु लेस॥
साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं कछु भेस॥
साहिब सच्चा बेअंत है, अंत नहीं करतार॥
साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना पारावार ॥
साहिब सच्चा बेअंत है, अंत ना सतगुर धाम॥
कहे रविदास पुकार के, सिध भये सभ काम॥

''प्रभु साहिब सदैव सत्य अनंत हैं, उसके आकार का अंत नहीं पाया जा सकता। प्रभु साहिब सदैव सत्य अनंत हैं, उसकी महिमा का अंत नहीं पाया जा सकता। प्रभु साहिब सदैव सत्य अनंत हैं, उसके उच्चारन का भी कोई अंत नहीं है। प्रभु साहिब सच्चा अनंत है, उसका विचार करने वालों का अंत नहीं है। प्रभु सच्चा बेअंत है। उसकी कृपा का कोई अंत नहीं है। प्रभु सच्चा बेअंत है। उसके स्वरूप का कोई अंत नहीं है। प्रभु साहिब सदैव सत्य अनंत हैं, उस करतार की कृपा का भी कोई अंत नहीं पाया जा सकता। प्रभु साहिब सदैव सत्य अनंत हैं, उसके पारावार का भी कोई अंत नहीं पाया जा सकता। प्रभु साहिब सदैव सत्य अनंत हैं, सत्गुरू के धाम निज घर का भी कोई अंत नहीं पाया जा सकता।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''प्रभु के सिमरन से सब कार्य सफल हो जाते हैं।''

35.

सतगुरु उंचा अत बड़ा, सत उंचा वड नांओ॥
नाम निरंजन गुर सदा, मन माना फल पाओ॥
कितने ही योधे भय, शूर हुए आपार॥

सोहं नाम का मेल हो, नौका बने आधार॥
काम क्रोध ठग ठगत है, राखो चित संभाल॥
सत परमातम वेधिया, सभी करे प्रतिपाल॥
कितने प्रभू के भगत भये, कितने हुए अवतार॥
कितने पंडित ज्योतिषी, वेदां करे विचार॥
कितने ही ब्रहिमंड हैं, करता गुरू समरथ॥
कितने ही उसतति करे, दीन दयाल अकथ॥
कितने मूरख जगत में, रूप भय विकराल॥
कितने देवी देवते, कितने काल कराल॥
यह सभ खेल गोविंद के, अंत ना आवे कोए॥
कहे रविदास विचार के, प्रभु में रहो समोए॥

''सत्गुरू सर्वोच्च व बड़ा है और उसका नाम सदैव ऊंचा रहने वाला है। गुरू जीव को सदैव प्रभु के माया रहित नाम के साथ जोड़ता है और जीव को मन वांछित फल प्राप्त होता है। संसार में कितने ही योद्धा और असंख्य शूरवीर हुए हैं। जीव संसार सागर को पार करने के लिए सोहं नाम रूपी कश्ती को आधार बना कर पार हो जाता है। काम, क्रोध व लोभ रूपी ठग जीव को ठग लेते हैं परन्तु जीव को इन से अपने मन की रक्षा करनी चाहिए। प्रभु पूरे संसार में समाया हुआ है और सब की पालना करता है। प्रभु के बहुत से भक्त व अवतार हुए हैं। कितने ही पंडित, ज्योतिष व वेदों की विचार करने वाले हुए हैं। कितने ही ब्रह्माण्ड हैं परन्तु जीव को कर्ता रूपी समर्थ गुरू का सिमरन करना चाहिए। कितने ही प्रभु की महिमा करने वाले हुए हों परन्तु दीन दयाल प्रभु की महिमा कथन रहित है। कितने ही संसार में मूर्ख व डरावने रूप धारण करने वाले हुए हैं, कितने ही देवी-देवता व भयानक रूप धारण करने वाले काल-कराल हुए हैं। ये सभी प्रभु के खेल हैं, इसका कोई अंत नहीं पा सकता।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार के उच्चारण करते हैं कि,''जीव को प्रभु का सिमरन करके उसमें समा जाना चाहिए।''

36.

सतगुर का धर ध्यान तूं, सतगुर संग निवास॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, गुर का नाम प्यास॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, गुरू निरंजन लाल॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, लिखत लेख सो भाल॥

सतगुर का धर ध्यान तूं, साधू मत विचार॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, अंतर कर लै सार॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, लोभ विकार तियाग॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, कर्त्तव्य नीच विहाग॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, गर्भ ना आवे मूल॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, विषय रस जा भूल॥
सतगुर का धर ध्यान तूं, केवल होवे मुक्ति॥
कहे रविदास विचारिया, ऐहो सार है युक्त॥

''सत्गुरू का ध्यान करने से जीव का सत्गुरू के पास निवास हो जाता है। सत्गुरू का ध्यान करने से जीव के मन में गुरू के नाम की प्यास आरंम्भ हो जाती है। सत्गुरू का ध्यान करने से गुरू के नाम माया रहित खजाने की प्राप्ति होती है। सत्गुरू का ध्यान करके लिखे कर्मों के अनुसार जीव को प्रभु के नाम की खोज करनी चाहिए। सत्गुरू का ध्यान करके जीव साधुओं संग बैठ कर श्रेष्ठ ज्ञान की विचार करनी चाहिए। सत्गुरू का ध्यान करके जीव को अंतर प्रभु की संभाल करनी चाहिए। सत्गुरू का ध्यान करके जीव लोभ व विकारों का त्याग कर देता है। सत्गुरू का ध्यान करके जीव कुकर्मों को त्याग देता है। सतगुर का ध्यान करके जीव को दोबारा गर्भ में नहीं आना पड़ता। सत्गुरू का ध्यान करके जीव विषय-विकारों में नहीं फंसता। सत्गुरू का ध्यान करके जीव केवल मुक्त होता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार के उच्चारण करते हैं कि, ''यह श्रेष्ठ प्रक्रिया है।''

37.

सोहं सोहं उचारीये, श्रेष्ठ पुरष संग प्यार॥
सोहं सोहं उचारीये, कबहू न आवे हार॥
सोहं सोहं उचारीये, गुर का नाम गहीर॥
सोहं सोहं उचारीये, खोजे मत सुधीर॥
सोहं सोहं उचारीये, भजन करो गुरदेव॥
सोहं सोहं उचारीये, ता जाने निज भेव॥
सोहं सोहं उचारीये, संध्या समय ध्यान॥
सोहं सोहं उचारीये, अमृत वेला गयान॥

सोहं सोहं उचारीये, साकत संग न होय॥
सोहं सोहं उचारीये, निर्मल होवे सोय॥
सोहं सोहं उचारीये, करन कारन अलेख॥
कहे रविदास पुकार के, मन नीवां कर देख॥

''सोहं सोहं का सिमरन करने से श्रेष्ठ पुर्षोभाव संतजनों से प्रेम होता है। सोहं सोहं सिमरन करने से कभी पराजय नहीं होती। सोहं सोहं का सिमरन करने से गुरू का नाम रूपी खजाना प्राप्त होता है। सोहं सोहं का सिमरन करने से जीव अपने भीतर की खोज करके बुद्धि को श्रेष्ठ करता है। सोहं सोहं का सिमरन करके जीव को गुरूदेव का भजन करना चाहिए। सोहं सोहं का सिमरन करने से जीव प्रभु के निजभेद को समझता है। सोहं सोहं का सिमरन करने से संध्या समय अर्थात हर क्षण प्रभु का ध्यान लगाना चाहिए। सोहं सोहं का सिमरन करने से अमृत समय में ज्ञान प्राप्त होता है। सोहं सोहं का सिमरन करने से दुर्जनों की संगति नहीं मिलती। सोहं सोहं उचारने से जीव की माया-रहित निर्मल शोभा संसार में होती है। सोहं सोहं का सिमरन करने से जीव संसार के कारण प्रभु की लिखी न जाने वाली महिमा का आनंद लेता है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज पुकार कर समझाते हैं कि, ''जीव तुम मन में विनम्रता धारण करके प्रभु को अपने भीतर अनुभव करो।''

38.

सतगुर साहिब अति बड़ा, पावत ना कोई पार॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, जानत विरला सार॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, अंधयारे में दीप॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, सुंदर मोती सीप॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, अवर ना जाने भेत॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, भूले मन तूं चेत॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, नाम जपो मन मांहे॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, दास उधारे तांहे॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, रोम रोम में वास॥
सतगुर साहिब अति बड़ा, निसचे कहे रविदास॥

''सत्‌गुरू साहिब सबसे बड़ा है जिसका कोई आदि अंत नहीं पा सकता।

सत्‌गुरू साहिब सबसे बड़ा है, उसकी सार कोई महीन ही जानता है। सत्‌गुरू साहिब सबसे बड़ा है, जो अज्ञानता रूपी अंधेरे को दूर करने के लिए दीपक समान है। सत्‌गुरू साहिब सबसे बड़ा है, जिसका ज्ञान रूपी मोती शुद्ध शरीर रूपी सीपी में पनपता है। सत्‌गुरू साहिब सबसे बड़ा है, जिसके भेद को कोई नहीं जान सकता। सत्‌गुरू साहिब सबसे बड़ा है, हे भूले हुए जीव उसे याद करो। सत्‌गुरू साहिब सबसे बड़ा है, अपने मन में उसका नाम जपो। सत्‌गुरू साहिब सबसे बड़ा है, जो अपने दासों का उद्धार करने वाला है, सतगुरु साहिब सबसे बड़ा है। जिसका कण-कण में निवास है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हे जीव! तुम दृढ़ निश्चय करके उसका सिमरन करो।''

39.

निरंजन निरंकार प्रताप, मन कर जपे गुरू गुरू आप॥
निरंजन निरंकार सभ दात, गुणी विचारो मन सभ भात॥
निरंजन निरंकार भगवान, आठ पहिर धर तांका ध्यान॥
निरंजन निरंकार अविनासी, जनम मरण की काटे फांसी॥
निरंजन निरंकार करतार, सर्व दुःखों का उतरे भार॥
निरंजन निरंकार भवज्योती, दुरमत दुबिधा अंतर ना होती॥
निरंजन निरंकार नारायण भज, सर्व सुखों का होए आयण॥
निरंजन निरंकार गोपाल, जीव जंत की करे प्रतिपाल॥
निरंजन निरंकार नर नाथ, सर्व पदार्थ तिस के हाथ॥
निरंजन निरंकार प्रकाश, भज हृदय कहो रविदास॥

''प्रभु माया रहित, आकार रहित और बड़े तेज, प्रताप वाला है। हे जीव! तुम गुरू की शिक्षा पर चल कर उस प्रभु का सिमरन करो। निरंजन-निरंकार प्रभू सबसे बड़ा दानी है और गुणों का खजाना है। हे जीव! तुम मन में उस प्रभु के नाम की विचार करो। निरंजन-निरंकार प्रभु का आठों पहर ध्यान करो भाव हर क्षण ध्यान करो। निरंजन-निरंकार नाश रहित जन्म-मरण की फांस काटने वाला है। निरंजन-निरंकार करतार सभी दुखों के भार को समाप्त करने वाला है। निरंजन-निरकार ज्योति स्वरूप कुमति व द्वेष दूर करने वाला है। निरंकार-निरंजन नारायण का सिमरन करने से सभी सुखों की प्राप्ति होती है। निरंजन-निरंकार गोपाल सारे जीव-जन्तुओं की पालना करने वाला है। निरंजन-निरंकार जिसके हाथ में सब

पदार्थ हैं, जो नर, नाथ व सारे जीव उसका सिमरन करते हैं, उनके हाथ में सब पदार्थ आ जाते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कहते हैं कि,''निरंजन-निरंकार प्रकाश रूप प्रभु का अपने हृदय में सिमरन करना चाहिए।''

40.

ओअं ओअं ओअं नीत, मन धर सच भगवान प्रीत॥
ओअं ओअं ओअं ध्यान, सच सच सभ सच ही मान॥
ओअं ओअं ओअं पूजा, देवी देवा तिस बिन दूजा॥
ओअं ओअं ओअं सतसंग, नाम ध्याये मन कर रंग॥
ओअं ओअं ओअं जप लीजे, मुगध पत्थर भव नरि तरीजे॥
ओअं ओअं अमर कल्याण, अंतर हृदय चड़े हर भान॥
ओअं ओअं गुण विखयान, पवित्तर गुणों की होवे कान॥
ओअं ओअं तेरा अधिकार, पाप रोग सभ उतरे भार॥
ओअं ओअं ओअं दिन रैन, सोहं भज मन होवे चैन॥
कहे रविदास लख गुर की करनी, सवास सवास पर हरि की चरणी॥

''हे जीव! तुम नित्य प्रति ओंकार निरंतर व्यापक प्रभु का सिमरन करो और मन में प्रभु की सच्ची प्रीति करो। ओंकार का सिमरन पहले भी सच्चा था, अब भी सच्च है और आगे भी सच्चा रहेगा भाव सदैव सच्चा रहेगा। हे भाई! केवल एक सर्व व्यापक प्रभु की पूजा करो। देवी-देवते उस से अलग हैं भाव देवी-देवते प्रभु नहीं हैं। ओंकार, ओंकार, ओंकार का सत्संग करने से मन प्रभु के रंग में रंगा जाता है। ओंकार, ओंकार, ओंकार नाम जपने से मूर्ख पत्थर समान जीव भी पार लग जाते हैं। ओंकार, ओंकार, ओंकार का सिमरन जीवों को अमर करने वाला व उद्धार करने वाला है। प्रभु ओंकार अमर करतार का सिमरन करने से हृदय में हरि नाम का प्रकाश हो जाता है। ओंकार के गुणों की व्याख्या करने से जीव को पवित्र गुणों का खजाना प्राप्त होता है। ओंकार का सिमरन करना जीव का अधिकार है, जिससे पापों और रोगों का सब भार उतर जाता है। ओंकार, ओंकार, ओंकार दिन रात अर्थात् हर क्षण जपने से सदीव सुख की अनुभूति होती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''गुरू की शिक्षा पर चल कर, जीव को श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करके प्रभु के चरणों से जुड़ना चाहिए।

* * *

पैंतीस अक्षरी

उ- ***उसत्त करो इक ओंकारा।***
तीन लोक जिन कीया पसारा।

''उस एक प्रभु की उस्तति करो, जो तीनों लोकों, खण्ड-ब्रह्मण्डों भाव संसार के कण-कण में समाया हुआ है।''

अ- ***अलख को लखे जो भाई।***
देहें ढंढोरा संत सिपाही।

''अलख प्रभु, जिसकी महिमा लिखी नहीं जा सकती, हे भाई संत सिपाही ढिंढोरा देकर कह रहे हैं, कि उसका सिमरन करो।''

इ- ***ईश्वर काया घट में।***
आकाश रमइयो जैसे सब मट में।

''ईश्वर सभी शरीरों में और कण-कण में बसता है, जैसे घड़े के पानी में आकाश नज़र आता है।''

स- ***सीश महल में स्वामि दर्शे।***
जहां प्रेम अमी रस बरसे।

''दशम द्वार रूपी शीश महल में, मालिक प्रभु के दर्शन होते हैं, जहाँ प्रेम से अमृत रस बरस रहा है।''

ह- ***हरि का सिमरण कीजै।***
कहे रविदास अमी रस पीजै।

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हरि का सिमरन कर, जीव श्रेष्ट अमृत रस पीता है।''

क- ***काया कोटि में रम रहयो प्यारा।***
सीस महल में दे दीदारा।

''करोड़ों ही भाव अनंत शरीरों में प्रभु प्यारा रमा हुआ है, जिसके दर्शन दशम द्वार रूपी शीश महल में होते हैं।''

ख- ***ख्याल से करो विचारा ।***
सर्वव्यापी सब से न्यारा।

''जब जीव ध्यान कर प्रभु का विचार करता है, फिर उसे सर्वव्यापक प्रभु, सब से न्यारा अनुभव होता है।''

ग- गोबिन्द ऐसे ज्ञानी।
न कुछ भूले न कुछ जानी।

''प्रभु रुपी ज्ञान की प्राप्ति कर जीव को न कुछ भूलने की और न कुछ जानने की आवश्यकता रहती है।''

घ- घन नहीं अहरण सहे चोटां।
सतगुरु शब्द घड़या है अनोठा।

''जीव सत्गुरु जी के शब्द रूपी हथोड़े की चोटें खा कर सुरति रूपी अहरण के ऊपर, अनोखी परमगति अवस्था में पहुँच जाता है।''

ङ- ङ्यानत सोई सार ।
कहे रविदास बात विचार।

सत्गुरु रविदास महाराज विचार कर उच्चारण करते हैं कि,''अज्ञानता को त्याग कर प्रभु महिमा की विचार करो भाव प्रभु का सिमरन करके जीवन सफल होना सारांश है।''

च- चाम का चोला भाई।
नाम बिना कुछ काम न आई।

''हे भाई! चमड़े का शरीर रूपी चोला, प्रभु नाम के बिना किसी भी काम नहीं आता।''

छ- छिन में भया ममोला।
अमी सरोवर दिया झकोला।

''हे ममोले पंछी की तरह चंचल जीव! तुमने क्षणभर में चंचल हो जाना है, इसलिए प्रभु नाम रूपी सरोवर में डुबकी लगा ले।''

ज- जीव है, जनेऊ जाति का।
दया की धोती तिलक सत्य का।

''हे जीव! तुम श्रेष्ठ स्वभाव का जनेऊ, दया की धोती और सत्य का तिलक धारण करो।''

झ- झिलमिल जोत जगाई।
अलख पुरुष तहां पहुंचे आई।

''हे जीव! तुम अपने अंदर के प्रभु की जगमगाती ज्योति को जगाओ, ताकि तुम्हें वहाँ पहुँच कर, अलख पुरुष के दर्शन हों।''

ञ- ञयानत सोई ध्यानी।

दास रविदास कहे ब्रह्म ज्ञानी।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,"जो प्रभु को पहचान लेता है, वही सच्चा ध्यानी और ब्रह्मज्ञानी है।"

ट- ***टेक का एक राखो।***

एक बिना दूजा मत आखो।

"हे जीव! एक प्रभु पर आशा रखो, उसके बिना और किसी से आशा मत रखो।"

ठ- ***ठाकुर शीला तर गए भाई।***

पंडित बैठे मन मुरझाई।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,"प्रभु कृपा से, पत्थर के ठाकुर तैर गए। पर पंडितों के झूठे ठाकुर डूबने के कारण, उनके मन मुरझा गए।"

ड- ***डर नहीं हरि संग प्रीत।***

भगत जन बैठे मन को जीत।

"जो जीव हरि से प्रीति करता है, उसको कोई डर नहीं रहता। हरि के भक्तों ने विषय-विकारों से दूर होकर, अपना मन जीत लिया है।"

ढ़ - ***ढा दीनी बुर्जीपापन।***

सिमरण कीना अजपा जपन।

"अजपा जाप सिमरन करने से, जीव के भीतर स्थित पापों का किला गिर जाता है।"

ण- ***णाम की लाई डोरी।***

कहे रविदास लगी लिव मोरी।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,"मेरी प्रभु से डोर बंध गई है, मेरी उस ईश्वर से लिव लग गई है।"

त- ***त्रिगुण माया रचदी भाई।***

ऋषि मुनि लीने भरमाई।

"सतो, रजो, तमो, माया की रचना प्रभु ने की है, जिसने ऋषियों-मुनियों को भरमा लिया है।"

थ- ***थिर नहीं यह संसारा।***

राव रंक सब काल नगारा।

"यह संसार सदैव रहने वाला नहीं है, राजा और गरीब सभी काल रूपी नगाड़ा (मौत) बजने पर संसार से चले जाते हैं।"

द- *दो इक दिन यहां मन्दिर सारा,*
फिर ठाठ छोड़ लद जाये बंजारा।

"प्रभु ने एक-दो दिन भाव निश्चित समय के लिए शरीर रूपी मंदिर की रचना की है। इस जीव रूपी बंजारे ने शरीर रूपी मंदिर की ठाठ-बाठ को छोड़कर चले जाना है।"

ध- *धनी जिन ध्यान लगाइओ।*
काल फांस के बीच न आइओ।

"हे भाई, असली धनी वह है, जिसने प्रभु भक्ति में ध्यान लगाया है और वह जीव काल-फांस के चक्र में नहीं आता।"

न- *नाम की नाव बनाई।*
कहे रविदास चढ़ो रे भाई।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,"हे भाई, प्रभु ने नाम की नाव बनाई है, जिसमें जीव सवार होकर पार हो जाता है।"

प- *पार ब्रह्म परमेश्वर स्वामी ।*
सब घट घट के अन्तरयामि।

"पार ब्रह्म परमेश्वर सबका मालिक है और वह सब के मन को जानने वाला अंतरयामी है।"

फ- *फिकर कर छोड़ जगसंसा।*
जा मिल बैठे अविनाशी पासा।

"हे जीव! संसार की चिंता त्याग कर प्रभु के सिमरन की फ़िक्र कर। अपने भीतर विराजमान अविनाशी प्रभु को प्राप्त कर ले।"

ब- *ब्रह्म सो ब्रह्म का वेता।*
गगन मंडल में राखो चेता।

"ब्रह्मज्ञानी वह है, जिसने ब्रह्म को जान लिया है। दशम् द्वार रूपी गगन मंडल में प्रभु को याद करो। आकाश के सारे मंडलों में उसको याद रखा है।"

भ- *भ्रम मिटे जो पंचम सीजे,*
जाये त्रिवैणी मजन कीजे।

"जिस जीव ने पाँचों विकारों को जीत लिया है, उसका भ्रम मिट जाता है। फिर वह जीव त्रिकुटी, त्रिवेणी में पहुँच कर प्रभु के नाम में स्नान कर लेता है।"

म- मन को गगन समाओ।

कहे रविदास परम पद पाओ।

''जो जीव अपने मन को ज्ञान रूपी आकाश में समा लेता है, वह परम-पद को प्राप्त कर लेता है।

य- याद करो, वाह के गुण गाओ।

पार ब्रह्म के दर्शन पाओ।

हे भाई! प्रभु को याद कर, उसके गुण गाकर उस परमब्रह्म के दर्शन कर लो।''

र- राम रमे सो राम प्यारा।

फिर न देखया जम का द्वारा।

''जो राम प्रेमी जीव उसके गुण गाकर उसमें समा जाता है, उस जीव को यमों का द्वार नहीं देखना पड़ता।''

ल- लिव लगा ले भाई।

जम का त्रास निकट न आई।

''हे भाई! तुम उस प्रभु से लिव लगाओ। फिर यमों का भय तुम्हारे पास नहीं आयेगा।''

व- विधीवध सिमरन कीजै।

सोंह नाम अमी रस पीजै।

''जो जीव गुरु जी की बताई हुई विधि के अनुसार सोहं नाम का सिमरन करता है, वही जीव प्रभु के नाम का श्रेष्ठ रस पीता है।''

ड़- ड़ाड़ मिटि जब हुआ नबेड़ा,

कहे रविदास किया अमर घर डेरा

''प्रभु का नाम रूपी श्रेष्ठ रस पीकर, जीव सारे बंधनों से मुक्त हो जाता है और उसका प्रभु के अमर घर में निवास हो जाता है।''

सोहं शब्द मन कीया बसेरा।

मेट दिया चौरासी का फेरा।

''जिस जीव के मन में सोहं शब्द का बसेरा हो जाता है, उसका चौरासी का फेर मिट जाता है।''

ओंकार बावन का पैंतीस में जपयो है सार।

सर्व देव संतन को करें हैं नमस्कार।

''उस सर्व-व्यापक प्रभु की हिन्दी के बवंजा अक्षरों की और पंजाबी के

पैंतीस अक्षरों में उस्तति की गई है। सभी देवता संतों के चरणों में नमस्कार करते हैं।''

पैंतीस मात्रा प्रेम से सिमरें हैं निज दास।
जिन सिमरियो सो मुक्त हैं कहे सद रविदास।

सत्गुरु रविदास जी महाराज पुकार के उच्चारण करते हैं,''जो जीव प्रेम सहित पैंतीस अक्षरों का पाठ करता है और प्रभु का दास बन सिमरन करता है, वह मुक्त हो जाता है।''

ओंकार पैंतीस मात्रा प्रेम से निसवासर कर जाप।
रविदास कहे जो सिमरते, मिट गये तीनों ताप।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,''जो जीव प्रभु को याद कर प्रतिदिन प्रेम सहित पैंतीस मात्रा का जाप करता है और प्रभु के नाम का सिमरन करता है उसके तीनों तापों (आदि, वियाध, उपाध) का नाश हो जाता है।''

ओंकार पैंती मात्रा प्रेम से सिमरण कीयो मन वैराग।
रविदास कहे जो सिमरते, तिन के पूरण भाग।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''प्रभु की प्रशंसा में लिखे गए पैंतीस मात्रा के पाठ करने से, जिस जीव का मन वैरागमयी हो जाता है, वह श्रेष्ठ भाग्यवान है।''

पैंतीस मात्रा प्रेम से सिमरते रवि प्रकाश।
रविदास कहे जो सिमरते, मिट गये जम के त्रास।

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''प्रभु की पैंतीस मात्रा का प्रेम से सिमरन करने से जीव के मन में, सूर्य प्रकाश की तरह ज्ञान का प्रकाश होने से यमों के दुख से मुक्ति मिलती है।''

रविदास सिमरत रमते राम में, सत शब्द प्रतीत।
अमर लोक जाये वसियो, काल कष्ट को जीत।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं, ''जो जीव प्रभु में समा जाते और सत्य शब्द को खोज कर, वह अमर लोक का निवासी बन जाता है, वह काल के सारे कष्टों को जीत लेता है।''

ओंकार सप्त सलोकी मात्रा, सत कीयो जगदीश।
अमर लोक वासा कीया, काल नमावें शीश।

''जो जीव प्रभु के सप्त श्लोक मात्रा का जाप कर प्रभु को सत्य जानकर, अमरलोक का निवासी बन जाता है, उसके समक्ष फिर काल भी शीश झुकाता है।''

॥ बाणी हफ़तावार ॥

सोहं सतिनाम धियाओ ॥
ऐतवार अमृत दा भरिआ बोले अमृत बैन ॥
गुरु का शब्द जपो दिन राती ता आवे सुख चैन ॥
ऐतवार वी सफल है हरि का सिमरन सार ॥
रविदास जो नाम उचारिए पाया मुख दुआर ॥ 1 ॥ टेक ॥

''रविवार भाव हर दिन प्रभु का सिमरन करने से अमृत से भरा प्रतीत होता है और अमृतमयी शब्द बोले जाते हैं। गुरु के शब्द का दिन-रात्रि जाप करने से, सुखों की प्राप्ति और सदीवी आत्मिक आनंद प्राप्त होता है। रविवार भाव अनमोल जीवन उन जीवों का सफल है जिन्होंने हरि के सिमरन को हृदय में संभाल कर रखा है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''जो जीव हरि प्रभु के नाम का उच्चारण करते हैं, उनको मुक्ति का द्वार प्राप्त हो जाता है।''

सोमवार सभ ठोर में जले थले भगवान ॥
महिमा प्रभु गाईए तब होवे कलियाण ॥
गोबिन्द गोबिन्द जाप से आवै सदा अनंद ॥
सोमवार सुख दा जपो जपो रविदास मुकंद ॥ 2 ॥ टेक ॥

''सोमवार प्रभु का सिमरन करने से पानी, धरती सारी सृष्टी अर्थात् सभी स्थानों पर प्रभु का अनुभव होता है और प्रभु की महिमा करने से जीव का कल्याण होता है। गोबिंद का सिमरन करने से जीव को सदा आनंद की प्राप्ति होती है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''सोमवार भाव अनमोल जीव में वही जीव सुखी है, जो जीव मुकंद का जाप करते हैं।''

मंगलवार आवै सदा होवे मंगलचार ॥
रल मिल सखीआं सिमरलो हरि हरि नाम अधार ॥
प्रीतम चरनी लागिया कभी न आवै हार ॥
मंगलवार सुलखणा कहि रविदास विचार ॥ 3 ॥ टेक ॥

''मंगलवार को प्रभु का सिमरन करने से जीव के अंदर हमेशा मंगलचार होता है। हे सखियों ! हरि हरि नाम जीवन का आधार है, उसका सिमरन करो। प्रभु-प्रीतम के चरणों में लगने से, जीव की कभी हार नहीं होती।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज विचारकर फ़रमाते हैं कि,''प्रभु का सिमरन करने से मंगलवार भाव हर बार हर समय सुहावना बन जाता है।''

बुधवार बोध सदा होवै ज्ञान प्रकाश॥
गुरु प्रेम पूरे जो मिलै टूटे जम की फास॥
अंत सहाई प्रभू भये करम कमाए सोइ॥
बुधवार बुध सफल है रविदास जो भगत होय॥ 4॥ टेक॥

''बुधवार प्रभु का सिमरन करने से सदा ही जीव के अंदर ज्ञान का प्रकाश होता है, पूर्ण गुरु से प्रेम करने से यमों का चक्र टूट जाता है। अंत समय में प्रभु जीवों पर कृपा करता है। सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''उस जीव की बुद्धि विवेक सफल है जो प्रभु का सिमरन करता है।''

वीरवार विदिया बड़े पुन पुना अभियास॥
सतिगुर पूरे मिलन से होवे आतम प्रकाश ॥
गुरु ज्ञान का मूल है धरम मूल का हितकार॥
वीरवार बिचारीए नसै पाप हजार॥ 5॥ टेक॥

''गुरुवार विद्या पढ़ने का लगातार अभ्यास करने से, ज्ञान में बढ़ौतरी होती है, पूर्ण सत्‌गुरु के मिलने से, जीव के अंदर, ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। सत्‌गुरु ज्ञान का आधार है। धर्म का मूल दया है। गुरुवार को प्रभु के नाम का विचार करने से, हज़ारों पापों का नाश हो जाता है।''

शुकरवार सुहावना छिन छिन भजे करतार ॥
विछै बाशना झूठीयां देवै नरकां डार॥
गति करमां अनुसरा है जैसा जैसा होवै॥
शुकरवार सुहावणा रविदासी नाम जपेवै॥ 6॥ टेक॥

शुक्रवार को श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करने से सुहावना बन जाता है। प्रभु के सिमरन के बिना झूठी विषय-वासनाएं, जीव को नरक में धकेल देती हैं। मुक्ति प्रभु का सिमरन और श्रेष्ठ कर्म करने से प्राप्त होती है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''हरि का सिमरन करने से शुक्रवार भाव हर दिन सुहावना बन जाता है।''

शनीवार भजन श्रृष्ट सत सत सभ वार॥
शुभ करमां से सफल है आवण जाण संसार॥
बिन भजन बिरथा सभ जानते जो जो आवतवार॥
बारम वार हरि सिमरीए कहि रविदास बिचार॥ 7॥ टेक॥

''शनिवार प्रभु का भजन करने से, मात के सात दिन भाव हर दिन श्रेष्ट,

सत्य का अनुभव और शुभ लगता है। अच्छे कर्म करने से संसार में आना-जाना सफल हो जाता है। प्रभु के नाम बिना आने जाने वाला हर दिन व्यर्थ मानना चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज विचारकर कहते हैं कि,''लगातार हरि का सिमरन करने से जीवन सफल हो जाता है।''

बाणी पन्दरां तिथी

सोहं सतिनाम धियाओ॥
अमावस जो है भाखिया जानो मीत॥
श्रृष्ट मुनी सभ गावदे गीत॥
अमावस है छूत सदा बसै है जग जीत॥
बिरलै बिरलै पीवगे सोहं रस सुरजीत॥ 1॥
भगता सेती गोष्टी जाए सभी बिहाय॥
आउना उसका सफल है जो जाते लाभ उठाय॥
अमावस है जो आंउदिआ आवन जावन रीत॥
कहि रविदास विचारके राखो हरि से प्रीति॥ 2॥ 1॥ टेक॥

''हे जीव! अमावस्या तिथि को प्रभु का सिमरन कर, हे मेरे सज्जन, जो गुरु जी ने उच्चारण किया है, उस पर चल। इस सृष्टि के सारे श्रेष्ट मुनि उस प्रभु के गुणों के गीत गाते हैं। अमावस्या में, जीव के अंदर सदैव बस रहे प्रभु को प्राप्त कर संसार को जीत लेता है। बहुत कम जीव ही प्रभु के नाम रूपी सोहं रस को पीकर अमर हो जाते हैं। जो जीव प्रभु के भगतों से गोष्ठि करते है, उनके दोष दूर हो जाते हैं। उनका आना सफल हो जाता है और प्रभु सिमरन करके लाभ प्राप्त करते हैं। अमावस्या के आने जाने की रीत चलती रहती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार के उच्चारण करते हैं कि, ''हरि से हमेशा प्रीति करनी चाहिए।''

एकम एक परमात्मा संसारै है प्रकाश॥
सवास सवास तू सिमरलै तोड़े जम की फास॥ 1॥
दीन बंधू दिआल जो सोय है सिमरन सार॥
जगत सदा जो सुख देवे अंतर होय आधार॥ 2॥
हसती चीटी आदि लै जीवन हुकम अनुसार॥
भजन करो जन पालका होना जेकर पार॥ 3॥

एकम एक परमात्मा रखणी उसकी आस॥
सति सति प्रभू सिमरते सच कहै रविदास॥ 4॥ 2॥ टेक॥

''एकम् तिथि में प्रभु का सिमरन करने से सारे संसार में उसका प्रकाश अनुभव होता है। श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करने से यमों का चक्र टूट जाता है। गरीबों का सहायक और दयालु प्रभु का सिमरन करना ही श्रेष्ठ है। जगत में प्रभु सदा सुख देने वाला और जीव को उसका सहारा लेना चाहिए। हाथी से लेकर चींटी तक सारे जीवों का जीवन उसके आदेश अधीन है। यदि जीव को संसार सागर से पार होना है, तो जगत पालक प्रभु का सिमरन कर एकम् तिथि में प्रभु पर आशा रखनी चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज सच्च उच्चारण करते हैं कि, ''सदैव रहने वाले सच्चे प्रभु का हर पल सिमरन करना चाहिए।''

दूजी दुरमति दूर कर रखणा गुरु से नेऊ॥
सफल करम तब होणगे गती पावै इह देहू॥ 1॥
दूजी दुरमति दूर कर दया धरम किरपाल॥
सति से कर गोष्ठी हिरदिया बसै गोपाल॥ 2॥
सुभ करमा फल सुभ है करमां संदणा खेत॥
पाप करम दे कीतिक सदा हार नहीं जीत॥ 3॥
दूजी दुरमति त्याग कर लीला अजब पहिचान॥
कहि रविदास बिचारके भगत भजन कलियाण॥ 4॥ 3॥ टेक॥

''दूसरी तिथि में जीव को दुर्मति त्याग कर गुरु से प्रेम करना चाहिए। जिससे जीव के सारे कार्य सफल होंगे और उसको जीवन में मुक्ति प्राप्त होगी। दूसरों के प्रति दोष मति को त्याग कर, जीव को दयावान, धर्मी और कृपालु बनना चाहिए। प्रभु के संतों से सत्य का विचार भाव गोष्ठ करने से, प्रभु हृदय में बसा हुआ अनुभव होता है। अच्छे कर्मों का फल श्रेष्ठ है। संसार कर्मों रूपी खेत है। पाप कर्म करने से हमेशा हार होती है, जीत नहीं। हे जीव, द्वैत भाव और दुर्मत को त्याग कर प्रभु की अद्‌भुत लीला की पहचान कर।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार कर फरमाते हैं कि,''प्रभु के भजन करने से भगतों का कल्याण होता है।''

संसारी तृष्णा त्याग के तन मन धन गुरुदेव॥
मथिया सभ को जानके रख नाम सनेह॥ 1॥
करमी भगती करन से होवै जगत अधार॥

वहि सोभा अति घनी अगे मिलै भंडार॥ 2॥
तीरथ फल ना बरत फल नहीं जग कोई पाय॥
मन महि हऊमै अहंकार जोय बिरथा सभही जाय॥ 3॥
तृतीय त्यागीये मान को खोटे करम हंकार॥
हरि हरि नाम उचारीए कहि रविदास पुकार॥ 4॥ 4॥ टेक॥

''हे जीव! इस संसार की तृष्णा को त्यागकर अपना तन-मन-धन अर्थात् अपना सर्वस्व गुरदेव को समर्पित कर दे। संसार को मिथ्या जानकर प्रभु नाम के साथ प्रेम करे। प्रभु की भक्ति करने से ही संसार का उद्धार होता है। इसी से जीव को महान शोभा मिलती है तथा आगे प्रभु का नाम रूपी अमूल्य खजाना प्राप्त होता है। परन्तु मन में अहंकार होने से, संसार में जीव को तीर्थ स्नान करना एवं व्रत रखने और यज्ञ करने से किसी भी फल की प्राप्ति नहीं होती, बल्कि सब कुछ व्यर्थ ही चला जाता है। तीसरी तिथि में प्रतिष्ठा बुरे कर्म एवं अहंकार का परित्याग करना चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज पुकार कर समझाते हुए उच्चारण करते हैं कि,''जीव को सदैव हरि-हरि नाम का जाप करते रहना चाहिए।''

चौथ चारो तरफ महि दसों दिसा चोगिरद॥
जलै थलै प्रभू आप है राखो नाम की विरद॥ 1॥
चमन जो तुझै दिख रहा रहिना नहीं हमेश॥
छण भंगूर शरीर है बदन रहित ना केस॥ 2॥
सहायता कोई ना कर सके जिन सो लाया हेत॥
अंत समें छड जाइगे मुख सेवन प्रेत॥ 3॥
चौथ चोरी ना करो त्यागो विषै बिकार॥
गोबिन्द सिमरनि सार है कहि रविदास विचार॥ 4॥ 5॥ टेक॥

''चौथी तिथि में चारों ओर दसों दिशाओं में हर तरफ प्रभु विराजमान है। जल, पृथ्वी सारी सृष्टी में प्रभु व्याप्त है। अपने नाम की लाज रखता है। संसार रूपी बाग जो रहा है, हमेशा रहने वाला नहीं है। शरीर क्षण भर में नष्ट होने वाला है। शरीर और सुन्दर बाल हमेशा नहीं रहेंगे। प्रभु के बिना जिन्होंने जीवों को प्रेम किया, कोई भी उन जीवों की सहायता नहीं करता। अंत समय में, उसके सभी प्रियजन, उसका साथ छोड़ जाते हैं और उसे प्रेत कह कर पुकारते हैं।'' चौथी तिथि भाव कभी भी, जीव को चोरी नहीं करनी चाहिए अत: विषय विकारों को त्यागना

चाहिए। सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार कर उच्चारण करते हैं कि, ''जीवों के पालनहार प्रभु का सिमरन ही श्रेष्ठ है।''

पंचमी प्रीतम जान लउ सभना है भगवंत ॥
ब्राह्मण आदिक सिमरते कोई ना पाया अंत॥ 1॥
पंच ततव की रचना है जो दिखै आकार॥
तिसमे होवै लीन सभ लीला प्रभ अपार॥ 2॥
विषै वाशना झूठ है राह भला बीच नीत॥
बिना भजन संगी नहीं सरब सुखा का मीत॥ 3॥
पंचमे पती परमातमा सरब सृष्टि जान॥
गुर की सरनी धियावते होवै रविदास ज्ञान॥ 4॥ 6॥ टेक॥

''पाँचवी तिथि द्वारा प्रभु प्रियतम को हर तरफ और सब जीवों में अनुभव करना चाहिए। ब्रह्मण आदि कोई भी सिमरन कर उसका अंत नहीं पा सके। संसार अकार दिखाई देता है उसकी रचना (आकाश, वायु, अग्नि, जल और धरती) पाँच तत्वों से हुई है। उस में सभी लीन हो जायेंगे। यह प्रभु का बेअंत कौतुक है। विषय वासनाओं का झूठ है। इनसे किनारा करके नेकी के राह पर चल। प्रभु भजन के बिना और कोई साथी नहीं है। प्रभु सभी सुख देने वाला सच्चा मित्र है। पाँचवी तिथि में, पति प्रभु को सारी सृष्टि में अनुभव करना चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जीव को गुरु की शरण में जाकर प्रभु का ध्यान करने से ज्ञान प्राप्त होता है।''

शिष्टमी बित विखीयानीए षट रस भोजन आदि॥
जिसने सभ पैदा कीए कर तूं उसकी याद॥ 1॥
जो देखत सभ बिनसता बापर शाही आदि॥
सिमरन कर तूं प्रभू का जो है आदि जुगादि॥ 2॥
उलटे निजमां कीतिया आवत तुझको हार॥
सुभ करम के करन से पावै सति दरबार॥ 3॥
शिष्टमी शुद करम करावै जोवै॥
गुरू मिल जीवन मुकत है सखा रविदासी होवै॥ 4॥ 7॥ टेक॥

''छठी तिथि द्वारा सतिगुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''छः प्रकार के रस और भोजन प्रभु ने पैदा किए हैं, हे जीव तू उसको याद कर। तुम यह सब देख रहे हो कि बड़े-बड़े राजा-महाराजा और सारे गरीब नष्ट होने

वाले है। आदि-जुगादि सृष्टि के आदि युगों से प्रभु है। हे जीव! तू उसका सिमरन कर। प्रभु को भूल कर और उल्टे-बुरे कर्मों में पड़कर, हे जीव! तुम्हें पराजय मिलेगी। अच्छे कर्मों से हे जीव तुम्हें सच्चे दरबार की प्राप्ति होगी। छठी तिथि तभी श्रेष्ठ है यदि जीव अच्छे कर्म करे।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''सच्चा सहायक गुरू है जिससे मिल कर जीव को जीवन में मुक्ति प्राप्त हो जाती है।''

सतमी सारे रम रहा आप हरी सिरजनहार॥
तूं ना भूले पराणीयां सिमरन बारमबार॥ 1॥
हरि पूरन परमातमा निरधन अधार॥
सरब वियापी प्रभू है तूं ना कभी बिसार॥ 2॥
दुखीयां के दुख दूर कर कष्ट निवारो आप॥
सदा सहाई प्रभू है करै जो उसका जाप॥ 3॥
निंद का हंकारी पाठ का भगत है तास॥
हरि भजन संग मुकती पावै जन रविदास॥ 4॥ 8॥ टेक॥

''सातवीं तिथि में सर्वव्याप्क हरि सृजनहार खुद सारे संसार में समाया हुआ है। हे प्राणियों तुम उस प्रभु को मत भूलो, उसका बार-बार सिमरन करो। हरि पूर्ण प्रभु गरीबों का आधार है। सर्व-व्यापक प्रभु को कभी भी न भुलाओ। प्रभु स्वयं दुखियों के दुख दूर करता है और कष्टों का निवारण करता है। जो प्रभु का जाप करता है, प्रभु उसका सदैव सहायक है। प्रभु भक्त हमेशा निंदा और अहंकार त्यागने का पाठ पढ़ाते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''हरि के दास हरि का भजन करने से मुक्ति प्राप्त करते हैं।''

अठमी आठो आम जो सिमरन कर हरिनाम॥
सुध तेरा प्रलोक जो होवै अंत कलियाण॥ 1॥
होवै ज्ञान की रोशनी गुरु ज्ञान का मूल॥
गुरु सेवा बहि संत की करम कमाय असलू॥ 2॥
भूलन अंदर सभ को अभुल्ल प्रभू है आप॥
भुल्ला रहे जो पाप से मिटत सकल संताप॥ 3॥
अठमी अटक ना होवसी जिस का रिदा सुफाय॥
रविदास अटक है उसको पाप पोटरी उठाय॥ 4॥ 9॥ टेक॥

''आठवीं तिथि द्वारा सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''हे

जीव तू आठो पहर भाव हर समय हरि का सिमरन कर, जिससे तुम्हारा परलोक सुखी होगा और तुझे मुक्ति प्राप्त होगी। जब जीव के अंदर गुरु ज्ञान का प्रकाश होता है, तो गुरु ज्ञान का आधार है। गुरू की सेवा में बैठकर और संतों की संगत में जीव प्रभु का नाम जपने का वास्तविक कर्म बनाता है। एक प्रभु ही अभूल है बाकी सब जीव भूल करते हैं। जो जीव पापों को भुला देता है, उसके सारे संताप समाप्त हो जाते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''उस जीव को प्रभु मिलने में कोई रूकावट नहीं पड़ती, जिसका मन निर्मल है। परन्तु उस जीव को रूकावट है, जिसने सिर पर पापों की गठड़ी उठाई है।''

नौमी नौध भगत जो है भगता मनजूर॥
पुरष भला जो करेगे सभना पूरन पूर॥ 1॥
पद सेवन कीरतन जस चोथै अरपण जान॥
दास सखा ने अरपना आठो बंदना मान॥ 2॥
नौमी डंडाउत कही जो कहे कराए जाय॥
रविदास भजन अमोल है बिरला पाए कोय॥ 3॥ 10॥ टेक॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,''नौ प्रकार की भक्ति, प्रभु के भक्तों को मान्य है। भला पुरुष वही है, जो प्रभु को हर ओर पूर्ण जानता है। चरण सेवा, भक्ति कीर्तन, भक्ति यश करना, चौथी अर्पण भक्ति को जान। दास भक्ति, सखा भक्ति, अर्पण भक्ति, आठवीं वन्दना माना तथा नौवीं भक्ति दंडवत् कही है, जो जीव को करनी चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कहते हैं कि, ''प्रभु का भजन अमूल्य है जो किसी विशेष जीव को प्राप्त होता है।''

दसमी दरद निवार लै सचे सतिगुर संग॥
समां विअरथ जाइगा हंकारी दुष्ट भुजंग॥ 1॥
मैं मेरी नूं मार लै मन महि शांत होवै॥
क्रोध बुरा है काल से इसको लेउ समावै॥ 2॥
श्रृष्ट मुनी सभ समझते करदे नाम अधार॥
सरब ठोर में बस रहा सच्चा सिरजणहार॥ 3॥
दसमी दिशो दिश बस रहा सारे है करतार॥
हरि हरि तुल ना प्रानीआं कहि रविदास बिचार॥ 4॥ 11॥ टेक॥

दसवीं तिथि द्वारा गुरू जी फ़रमाते हैं कि, ''जीव तू सच्चे सत्गुरु की संगति में जाकर दुखों को समाप्त कर ले। उन जीवों का समय व्यर्थ जाएगा जो

अहंकारी, दुष्ट और जुल्म करते हैं। मैं, मेरी अहंकार को मारकर, मन को शांति मिलती है। क्रोध काल से भी बुरा है। तू इसको समाप्त कर। उत्तम मुनि नाम को आधार मानते हैं। वह सच्चा सृजणहार प्रभु सब जगह व्यापक है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज दसवीं तिथि द्वारा विचार कर फरमाते हैं कि, ''दस दिशाओं भाव हर ओर करतार प्रभु बस रहा है। उस हरि का सिमरन करना चाहिए, जिस हरि के नाम के तुलनीय और कोई वस्तु नहीं।''

एकादसी एक दा दास रह फूरने तजो अनेक॥
भगत होत तर जावगे सदा मानीए टेक॥ 1॥
अंबा गुवाही निंदा बास ऐह जान॥
ऐह सब जोहर सुमन है छाडो इनका ध्यान॥ 2॥
जूआ मास मधर बेषिया हिंसा चोरी कार॥
जिह खोटे करम है डोबन नरक मझार॥ 3॥
मनुख जून सुलखणी गत करमां अनुसार॥
बिना भजन बिरथा जनम जाय कहि रविदास बिचार॥ 4॥ 12॥ टेक॥

ग्याहरवीं तिथि द्वारा सत्गुरु जी फ़रमाते हैं कि,''एक प्रभु का दास बनकर अन्य सभी विचारों को त्याग देना चाहिए। उस प्रभु की भक्ति करने से जीव संसार रूपी भवसागर से तर जाते हैं। इसलिए हमेशा उस पर विश्वास रखना चाहिए। झूठी गवाही, निंदा, वासनाएँ यह झूठी हैं, जहर समान समझकर इनका ध्यान छोड़ना चाहिए। जुआ खेलना, मांस खाना, शराब पीना, वेसवा (वेश्या) संग, हिंसा और चोरी यह सब खोटे कर्म जीव को डुबोने वाले हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार कर फरमाते हैं कि, ''मानव योनि/जीवन सब से श्रेष्ठ है, जो अच्छे कर्मों के अनुसार प्राप्त होती है और मुक्ति प्रभु सिमरन रूपी श्रेष्ट कर्मों के करने से मिलती है। पर प्रभु के नाम के बिना अमूल्य जन्म व्यर्थ जा रहा है।''

दुरादसी दे दरबार डिठा अजब अंध॥
बड़े क्रोध से पाप है बास खिमा मुकंद॥ 1॥
सतिसंगति महि धरम है बड़े नाम का रंग॥
बैकुंठ भी उसे आखदे जहा होते संत संग॥ 2॥
धन के भागी चार है धरम चोर नरप आग॥
धरम हेत जो लाएगा तिन कहे बडभाग॥ 3॥

धरम हेत ना लामदे लैदे तीनो नाय॥
चोर नरप ओर आग जो कहि रविदास बताय॥ 4 ॥ 13 ॥ टेक॥

बाहरवीं तिथि के द्वारा सत्‌गुरू जी फ़रमाते हैं कि,''प्रभु का सिमरन कर, जीव ने, प्रभु के सच्चे दरबार में जाकर अजब आनंद देखा। क्रोध करने से पाप बढ़ते हैं और क्षमा करने से प्रभु मुकंद की प्राप्ति होती है। सत्संगति में सच्चा धर्म है, जहाँ नाम का पक्का रंग चढ़ता है। जिस जगह संतों का संग प्राप्त हो, उसको बैकुण्ठ कहा जाता है। धन के चार हिस्सेदार हैं धर्म, चोर, राजा और आग, जो जीव धन धर्म में लगाएगा उसके बड़े भाग्य है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''जो जीव धन धर्म के लिए नहीं लगाते, वह धन चोर, राजा और आग के हिस्से आता है।''

तरैदसी तारनहार है सदा सदा तूं ध्याय॥
लख चुरासी जून से उतम दीया बनाय॥ 1 ॥
बंदे बुरज बना दीयां ऐसा अजब बनाय॥
ऐसा बने ना ओर से मन तन सीस लगाय॥ 2 ॥
उस को ना तूं भूलणा पिआ पट के भाय॥
तूझै अहार पहुँचावता उदर मात के जाय॥ 3 ॥
तेरस तेरा कलपना झूठा दिखता भास॥
झूठा सच्चे पेट का सच कहे रविदास॥ 4 ॥ 14 ॥ टेक॥

तेहरवीं तिथि द्वारा सत्‌गुरु रविदास जी महाराज जीवों को हमेशा तारनहार प्रभु को हमेशा के लिए जपने का उपेदश देते हैं। ''इस मानस जीव को चौरासी लाख योनियों में सब से श्रेष्ठ बनाया है। प्रभु ने ऐसा मानव का अजीब शरीर रुपी बुरज बनाया है। जिस शरीर में प्रभु ने मन और शीश (दिमाग) लगाया है। ऐसा शरीर प्रभु के बिना और कोई नहीं बना सकता। उस प्रभु को तुम भुला कर अपना अमूल्य जीवन न गंवाओ, वह प्रभु तुम्हें माता के पेट में भी आहार पहुँचाता है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''हे जीव प्रभु को भुला कर, तेरी कल्पनाएँ झूठी है। इस लिए हे जीव झूठ का त्याग कर और सत्य पर चल कर अपने जीवन को सफल कर।''

चांद चौदा भए जब दिखता सरब अकार॥
सरब बियापी प्रभू है सूरज चंद अते तार॥ 1 ॥
हरि से प्रीत करो मन मेरे जैसे चंद चकोर॥

बालक प्रीति खीर से बादल घटा से मोर॥ 2॥
छिछ बिन सूनी रैन जो हिरदै ज्ञान बिन मान॥
गुरु ज्ञान अमुल है उतम भगत हरि जान॥ 3॥
चौदा चौदा रतन सम इच्छा पूरन होवै॥
रविदास संसै सभ मिटै प्रभू प्रेम बस होवै॥ 4॥ 15॥ टेक॥

''जैसे चौदहवीं के चाँद का पूरा आकार हर ओर दिखाई देता है। इस तरह सर्व-व्याप्क प्रभु, सूर्य, चाँद और तारों से सर्वव्याप्त हैं। हे जीव, हरि से इस तरह की प्रीति कर जैसे चकोर की चाँद के साथ, बालक की खीर के साथ, मोर की बादल घटा से है। जैसे चंद्रमा बिना रात अधूरी है, उसी प्रकार हृदय ज्ञान के बिना अधूरा है। गुरू का ज्ञान अमूल्य है, यह हरि का उत्तम भक्त ही जानता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''प्रभु से प्रेम करने से प्रभु वश में हो जाता है, सभी भ्रम मिट जाते है और जीव की चौदह रत्न समान इच्छा पूर्ण हो जाती है।''

पुन्या पूरन चंदरमा सारे हा परकास॥
लोचन ज्ञानी तरैगे हिरदै नाम परकाश॥ 1॥
गुरमुख अमृत पीवगे मनमुख अंध गवार॥
प्रेम लाई लड़ फड़ैगे मिलत पदारथ चार॥ 2॥
रविदास जिह ग्रंथ है पडै सुणै मन लाय॥
सभ ही पदारथ मिलेगे इससे सभ बर पाय॥ 3॥
पंदरां तिथी संपूरन है पूरन पाठ कराय॥
सरब इछिआ संपूरन है सभना रविदास सहाय॥ 4॥ 16॥ टेक॥

''जैसे पूर्णिमा की रात पूर्ण चंद्रमा का प्रकाश होता है। इसी तरह आँखों में ज्ञान का काजल डालने से जीव के हृदय में, प्रभु के नाम का प्रकाश हो जाता है। और जीव मोक्ष प्राप्त कर लेता है। गुरमुख प्रभु के नाम का अमृत पीता है। पर मनमुख मनुष्य अज्ञानता में ही भटकता रहता है। जो जीव प्रेम से गुरू का दामन पकड़ लेगा, उस को चार पदार्थ काम, अर्थ, धर्म, मोक्ष प्राप्त होते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''यह ग्रंथ जो जीव मन लगाकर पढ़ेगा, सुनेगा और शिक्षायों पर चलेगा, उसको सारे पदार्थ और सारे वर प्राप्त होंगे। पंद्रह तिथि कथा संपूर्ण है जो जीव इसका संपूर्ण पाठ करता है और प्रभु का सिमरन करेगा। उसकी सारी इच्छाएँ पूर्ण होती है और सदैव प्रभु उसका सहाई होगा।''

बारह मास उपदेश

''चेत''

चढ़या चेत सुलखना, कर संतन संग प्रीत॥
गुर चरनन चित्त लाए कर, राम नाम जप नीत॥

''हे जीव! चैत्र का महीना भाव मानव जन्म उस समय भाग्यपूर्ण होता है, जब जीव संतों से प्रीत कर, प्रभु को याद करता है, इसलिए हे जीव, तू सदैव गुरू चरणों में प्रीत लगाकर प्रभु का नाम जप।''

गुर गोबिंद जहि गाईए, कर सरवण नित्त नीत॥
गुर के चरनन प्रेम कर, हिरदे धरो गुर मीत॥

''जिस समय गुरू और प्रभु महिमा गाई जाती है, उसको नित्य प्रति श्रवण करना चाहिए। हे मित्र ! गुरू के चरणों से प्रीत करके गुरू को अपने हृदय में धारण कर।''

बचन गुर के सुनत ही, मिटत भरम सभ भीत॥
मनमुख संग ना कीजीए, गुरमुख संगत याहर॥

''मनमुख गुरू जी के वचन श्रवण करने से, जीव के अंदर, से सारे भ्रम दूर हो जाते हैं। जीव को मनमुखों की संगत त्याग कर, गुरमुख की संगत करनी चाहिए।''

मनमुख संगत बिघन है, गुरमुख संगत सार॥
मनमुख संगत डूबणो, गुरमुख संगत पार॥

''मनमुख की संगत, प्रभु के रास्ते में विघ्न है और गुरमुख की संगत, प्रभु मिलाप के लिए सहायक है। मनमुख की संगत, जीव को डुबाती है और गुरमुख की संगत भव-सागर पार करती है।''

गुरमुख रिदै प्रगास है, मनमुख अंध गुवार॥
गुर के अमृत वचन सुण, शरधा हिरदे धार॥

''गुरमुख की संगत करने से, हृदय में, ज्ञान का प्रकाश होता है और मनमुख की संगत करने से, जीव, अज्ञानता रूपी अंधेरे में, फंस जाते हैं । हे जीव, तुम गुरू के अमृत रूपी वचन श्रवण करके प्रेम से हृदय में धारण करो।''

रविदास भगती एही है, हिरदे खूब विचार॥
चेत सुहाणां तिनां नूं, जिनां सोहं नाम प्यार॥

सतिगुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,''यही प्रभु की भक्ति है। तू अपने हृदय में अच्छी तरह विचार कर। चैत्र का महीना अथवा यह अमूल्य जन्म उनका ही सुहावना है, जिनका गुरू जी के सोहं शब्द से प्यार है।''

''वैसाख''

वैसाख सुहावा सर्व सुख,गुर के वचन विचार॥
अंतर ध्यान लगाए कर, समझो सार आसार॥

''बैसाख का महीना भाव अमूल्य जन्म उन जीवों के लिए सर्व सुखों वाला है, जो गुरू जी के वचन पर विचार करते हैं। इस लिए हे जीव अपने भीतर उस प्रभु का ध्यान लगाकर, जिस प्रभु का कोई पारावार नहीं है, उसकी शोभा को समझो।''

गुरदेव को ग्रहन कर, तज सब झूठ बिकार॥
हिरदे हरि हरि हरी को, सिमरो वारं वार॥

''गुरुदेव जी की शिक्षा को ग्रहण करके, सभी झूठे विकारों को त्याग दो, अपने हृदय में हरि-हरि प्रभु के नाम का बार-बार सिमरन करो।''

दुष्टा संग त्याग कर, संतां संग प्यार॥
दृड़ कर राम ध्याऐ तूं, भव निधि उतरे पार॥

''हे जीव, तू दुष्टों का संग त्याग कर, संतों से प्यार कर। हे जीव, तू पक्का निश्चय करके, प्रभु का नाम स्मरण कर भव सागर को पार कर ले।''

हरि हरि नाम जपंदिया, कदी ना आवे हार॥
भगत बिना गुरदेव की, होवत नहीं कल्याण॥

''हरि-हरि नाम जपने से ही जीव, तेरी कभी भी हार नहीं होगी। गुरुदेव जी की भक्ति के बिना जीव का कल्याण नहीं होता।''

गुरु बिना जन्म विअर्थ ऐह, जावत साची मान॥
गुर हरि भगत कहंदिया, निहचल मिल है ज्ञान॥

''गुरू की भक्ति के बिना, यह जीवन व्यर्थ है, इस बात को तू सच्ची मानकर और गुरु के मार्ग पर चल। हरि की भक्ति करने से, जीव को अटल ज्ञान प्राप्त होता है।

कहे रविदास लग चरन गुर, मन का हर अभिमान॥
वैसाख सुहावा तिनां है, हरि हरि जपे सुजान॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''गुरु के चरणों में जुड़ने से, मन में से अहंकार समाप्त हो जाता है। बैसाख का महीना भाव मनुष्य जन्म उनके लिए सुहावना है, जो हरि-हरि का नाम जप कर उत्तम दृष्टि वाले हो गए हैं।''

''जेठ''

जेठ तपत बहु घाम कर, शांत ना होवत मीत॥
क्रोध अगनि कर तपत, मन लोभी लोभ परीत॥

''ज्येष्ठ का महीना भाव मानव जन्म प्रभु के नाम बिना बहुत तपिश वाला है, हे सज्जन प्रभु के नाम के बिना शांति प्राप्त नहीं होती। क्रोध की अग्नि में जीव तपता है, लोभी मन लोभ से प्रीति करता है।''

सोहं नाम मुख जपत, जन कीरत करैह नीत॥
संतां संग निवास कर, शांत भयो तिन चीत॥

''प्रभु का सोहं नाम मुख से उच्चारने से, प्रभु के दास, उसकी कीर्ति का गुणगान करते हैं। संतों की संगत में रहने से, जीव का मन शांत रहता है।''

उतपत करे आप सभि, करे पालणा नीत॥
प्रभू बिन दूजा नांहि को, कर निहचे परतीत॥

''प्रभु स्वयं ही संसार की उत्पत्ति करता है और प्रति दिन उसकी पालना भी करता है, प्रभु के बिना अन्य दूसरा कोई नहीं है। इस बात पर निश्चय करके, तू उसका यशगान कर और उस पर विश्वास कर।''

तिस प्रभू को तूं जप सदा, होकर मनो नाचीत ॥
प्रभू सिमरन गुर दया ते, नष्ट होत जम भीत॥

''हे जीव! तू मन से निश्चिंत होकर उस प्रभु का हमेशा जाप कर। प्रभु के सिमरन और गुरू की दया से यमों का भय भीतर से नष्ट हो जाता है।''

सतगुर के प्रताप ते, गावहु प्रभू गुण वाद॥
सो किरपा नेतर रसना नाम का, करण दीए सुण नाद ॥

''सत्गुरू जी की कृपा से, जीव, प्रभु के गुणों को गाता है। प्रभु की कृपा से नेत्र गुरु के दर्शन करते हैं। जिह्वा गुरू का नाम जपती है और कान अनहद नाद श्रवण करते हैं।''

सुंदर साजिया जाहि प्रभ, राख सदा तिस याद॥
जो जन भगत बिहीन है, जनम जाए तिस बाद॥

"प्रभु ने इस शरीर को अत्यंत सुन्दर ढंग से सृजित किया है, जीव तू उसको याद रख, जो जीव प्रभु की भक्ति के बिना है, उनका जन्म व्यर्थ जा रहा है।"

गुर चरनी लग भगत कर, मिटह पाप अगाद॥
कीरतन भगती तीसरी, रखो इन को याद॥

"गुरू जी के चरणों से लगने और भक्ति करने से, जीव के सारे कठिन पाप मिट जाते हैं। हे जीव! जो तीसरी कीर्तन भक्ति है, इसको सदैव याद रखो।"

जन रविदास गुरू सिमरिया, जो जन सदा आनाद॥
जेठ तापंदा ना लगे, जिन चाखिया नाम सुआद॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,"जिन जीवों ने, गुरू के शब्द का स्मरण किया है, वे सदा आनंद में रहते हैं। ज्येष्ठ का महीना भाव मनुष्य जन्म उनको तपाता नहीं है, जिन्होंने प्रभु के नाम का स्वाद चखा है।"

"हाड़"

हाड़ अवध है घाम की, शांत अवध सुख जान॥
लोभ अवध है पाप की, कर भगत मिले हरि धाम॥

"आषाढ का महीना गर्मी वाला है, पर सच्चा सुख हरि के नाम में है। लोभ करना पाप है, हरि की भक्ति करने से, हरि का धाम प्राप्त होता है।

गुर के चरन सु कंवल की, करहि सेव सुजान॥
सगल सृष्टि जैसे मलत, चरण कंवल भगवान॥

"श्रेष्ठ जीव गुरू के चरण-कमल की सेवा करते हैं। सारी सृष्टि के जीव प्रभु के चरण-कमलों को धोकर सेवा प्राप्त करना चाहते हैं।"

आठ पहिर गुर चरन मल, दृढ़ कर निहचे ध्यान॥
अन्तश करण कर शुद्ध, तब होत पाप की हान॥

"आठो पहर भाव हर समय गुरू के चरण-कमल का एक मन एक चित होकर ध्यान धारण करने से, अंतः करण शुद्ध हो जाता है और पापों का नाश हो जाता है।"

पाप नष्ट गुर भगत ते, दर्शन करहो नीत॥
कारण भगत है मुकत का, कर निहचे प्रतीत॥

"गुरू की भक्ति करने से, पाप नष्ट हो जाते हैं, इसलिए हर समय गुरू

के दर्शन करने चाहिए, निश्चय कर प्रभु की भक्ति करनी चाहिए, जिससे मुक्ति मिलती है।''

चरन भगत कर लछ्मी, शक्ति भई सु मीत॥
जगत चरन की शक्त तिस, भई सु जानो मीत॥

''प्रभु के चरण-कमलों की भक्ति करके माया बलवान हो जाती है और उस में प्रभु की भक्ति करने से सारे संसार की शक्ति आ गई जाननी चाहिए।''

भगति सु गुर के चरन की, कर निहचे धर चीत॥
गुर बिन और ना ध्यान धर, ऐह रविदास की रीत॥
हाड़ शान्त सुख तिन जनां, जिन गुर भगत प्रीत॥

''इस लिए हे जीव! तू गुरु के चरण कमलों की एक-मन, एक चित होकर भक्ति हृदय में धारण कर। गुरु के बिना अन्य कोई ध्यान नहीं करना चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''यह भक्ति की रीति है। आषाढ़ का महीना भाव मानव जन्म उनका सुख भरा है, जिनका गुरू भक्ति से प्रेम है।''

''सावन''

सावण शान्त भई जगत में, बारश होए बशेस॥
घर घर मंगलाचार है, नासे सभी कलेश॥

''श्रावण के महीने सारे संसार में शांति हो जाती है क्योंकि इसमें विशेषतः बारिश होती है। इस प्रकार जीव के भीतर आनंद की बारिश होती है, घर-घर खुशी के गीत गाए जाते हैं और सारे दुख दूर हो जाते हैं।''

अन्न धन बहुता उपजिआ, गऊआं घास हमेश॥
सुहागणि सदा आनन्द है, दुहागणि मैला भेस॥

''अन्न-धन की बहुत उपज होती है और गायों को घास प्राप्त होती है। पतिव्रता औरत सदैव आनंद में रहती है और दुहागिन अंतःकरण रूपी कपड़ा मैला करती है।''

कर पूजन गुर चरन की, शरधा साथ हमेश॥
पान सुपारी पुष्पकर, पूजन करो हमेश॥

''हे जीव! तुम गुरु के चरणों की पूजा हमेशा श्रद्धा से करो, गुरू चरणों की सेवा-प्रेम रुपी पान, सुपारी, फूलों से हमेशा करो।''

अर्चना भगती पंचमी, गुर पूजा में ध्यान ॥
बिना इष्ट गुरदेव ते, पूजो देव ना आन॥

''प्रभु की अर्चना भक्ति पांचवी है जिसमें गुरु की पूजा में ध्यान लगाया जाता है। ईष्ट गुरुदेव के बिना और किसी देवी-देवता की पूजा नहीं करनी चाहिए।''

गुरू हरि में ना भेद कुझ, कहयो आप सुजान॥
निहचे कर गुर चरन भज, होवत है कल्यान॥

''गुरू और हरि में कोई अंतर नहीं है।'' श्रेष्ठ पुरषों ने कहा है कि,'' निश्चय कर गुरु के चरणों में जुड़ने से कल्याण होता है।''

गुर समान नहीं और जग, जानत संत सुजान॥
कहि रविदास गुर चरन को, करत सदा ही ध्यान॥

श्रेष्ठ संतजन यह जानते हैं कि,''गुरू के समान इस संसार में अन्य कोई नहीं है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज बखान करते हैं कि,''जीव को हमेशा ही गुरू के चरणों में ध्यान लगाना चाहिए।''

''भादरों''

भादरों भरम भुलाइया, माया संग प्यार॥
गुर बिन शांत ना पाए है, जनम मरन में बारंबार॥

''भादों (भाद्रपद) के महीने भाव मानव जन्म में जीव भ्रम में लगकर, प्रभु को भूल कर, माया से प्रेम करता है, गुरू के बिना जीव को शांति नहीं मिलती और जीव बार बार जन्म लेता और मरता है।''

जिन्हां विसारिया राम नाम, गुर चरनी नहीं प्यार॥
धृग तिनां का जीवणा, कांहू आए संसार॥

''जिन जीवों ने राम-नाम को भुलाकर, गुरु चरणों से प्यार नहीं, किया उनका जीवन धृग है। वे संसार में क्यों आए हैं?''

भवि जल मांहि भवंदियां, ना उरवार न पार॥
गुर चरनन का आसरा, जिन मन लीना धार॥

''संसार रूपी भव-सागर में तैरते हुए कोई किनारा नहीं मिलता भाव लोक-परलोक में सुख नहीं मिलता। जिन जीवों ने गुरु चरणों को मन में धारण

कर लिया वह गुरु चरणों का सहारा प्राप्त करके भव-सागर को पार कर जाते हैं।''

कर डंडोत गुर चरन में, भवनिध उतरे पार॥
गुरुदेव गुरु समझ के, करीं शुकर विचार॥

''जीव गुरू चरणों को डंडवत नमस्कार करके, भव-सागर से पार हो जाता है। गुरूदेव को गुरू समझकर श्रेष्ट विचार कर।

बन्दना भगती छठी ऐह, करे शिश वडभाग॥
अवर करम सभ त्याग कर, गुर की चरनी लाग॥

वन्दना भक्ति छठी है, प्रभु को डंडवत प्रणाम करना ही प्रभु भक्ति है। जिसको भाग्यवान् सेवक करता है। हे! जीव अन्य सभी कर्म त्याग कर गुरू के चरणों में लग।''

गुर के चरन बहु प्रेम कर, माया मोह त्याग॥
बिन गुर भगत न थिर कछू, जगत पसारा बाग॥

''गुरू के चरण-कमलों में सच्चा प्रेम कर और मोह माया का त्याग कर। गुरू की भक्ति के बिना और कुछ स्थिर नहीं है। यह सृष्टि फैला हुआ बाग है।''

पूरन पुन्न प्रताप ते, जागियो इसो बराग॥
सोएयो मोह की नींद में, गुर किरपा भयो सुजाग॥

''पिछले किए हुए पुण्यों के कारण, जीव के अंदर वैराग्य जागता है, जीव मोह की निद्रा में सोया है, पर गुरू की कृपा से जागता है।''

रविदास गुरु चरन को, तूं कभी नहीं त्याग॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,''हे जीव! तू गुरू चरणों को कभी भी न त्याग।''

''अस्सू''

अस्सू आसां पूरीयां, जब गुर भये दियाल॥
चरनी लावो दास को, करो प्रभू प्रतिपाल॥

''आश्विन के महीने भाव मनुष्य जन्म में जीव की सारी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं, जब गुरु दयाल होकर जीव को प्रभु के साथ जोड़ देते है। सारे संसार की पालना करने वाले हे प्रभु जी अपने दास को भी अपने चरणों से लगा लो।''

प्रेम तार गुरनाम मन, गल पावो माल॥
दर्शन कर गुर चरन को, तब ही भये निहाल॥

''हे जीव मन में प्रेम की तार में पिरोकर गुरू के नाम की माला गले में डाल। गुरू चरणों के दर्शन करने से जीव निहाल हो जाता है।''

गुर चरनी लग भगत कर, त्याग मोह का जाल॥
गुर भगती तब पाईए, जो होवे लिखिया भाग॥

''हे जीव! गुरू के चरणों से लग कर प्रभु की भक्ति करके, मोह का जाल त्याग दे। गुरू की भक्ति तब ही मिलती है, जब जीव के भाग में लिखा हो।''

दासा भगती ऐही है, सपतम जानो लाल॥
करो अभी पछताओगे, फिर हाथ ना आवै काल॥

''यही प्रभु की दास भक्ति सातवीं है, इसको सब से श्रेष्ट हीरा जानो। प्रभु की भक्ति करो, नहीं तो पछताओगे, फिर दोबारा मानव जन्म का अनमोल समय हाथ नहीं आएगा।''

ऐह दासा भगती कीनी विरले वीर॥
सवास सवास आज्ञा राखियो धीर॥

''यही दास भक्ति किसी विरले पुरुष ने की है। जो श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन कर, उसकी आज्ञा में रहता है।''

रहे सदा विच आज्ञा, एहो भगत महान॥
दासा भगती ऐही है, दासन दास बिखान॥

''प्रभु के हुक्म में रहना, यह भक्ति महान् है, यही दासा भक्ति है जो प्रभु के दासों का दास समझा जाता है।''

बुध सुध तब होए है, पावै निरमल ज्ञान॥
अस्सू पूरन आस सब, गुरूदेव विखियान॥

''जीव को विवेक, बुद्धि और सूझ उस समय होती है, जब प्रभु के निर्मल ज्ञान की प्राप्ति होती है।'' गुरूदेव जी फ़रमाते हैं कि, ''अश्विन के महीने भाव अनमोल मनुष्य जन्म में प्रभु का सिमरन करने से सारी इच्छाएँ पूर्ण होती है।''

रविदास गुरू चरनन का, सदा करत है ध्यान॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''जीव को हमेशा गुरू के चरणों का ध्यान करना चाहिए।''

''कतक''

कतक कर्म त्याग कर, भगत करो गुरदेव॥
सोहं सोहं जपंदिया, कर संतन की सेव॥

''कार्तिक का महीना भाव मानव जन्म में जीव को नीच कर्मों का त्याग कर, गुरूदेव की भक्ति करनी चाहिए। सोहं-सोहं का जाप करते हुए संतों की सेवा करनी चाहिए।''

मात तात और भ्रात ते, प्रिय जान गुरदेव॥
और सखा नहि जगत में, जैसे है गुरदेव॥

''माता-पिता और भाई सभी से प्यारा, गुरूदेव को जानना चाहिए। संसार में गुरूदेव जैसा कोई सहायक और नहीं है।''

सखा भगत ऐह अशटमी, कीती अर्जन देव॥
सखा जान गुर भगत कर, त्याग करो अहंमेव॥

''आठवीं सखा भक्ति है, जो अर्जुन ने की है। जीव को गुरू को सहायक मानते हुए, भक्ति कर, अहंकार का त्याग करना चाहिए।''

काम क्रोध हंकार तज, तब कछू पावै भेव॥
सखा भगत सुभाव यह, जिम जल दूध मलेव॥

''काम, क्रोध, अहंकार त्याग कर, भक्ति करके, जीव, प्रभु के कुछ भेद को पाता है। सखा भक्ति में, जीव को प्रभु से इस प्रकार एक होना चाहिए, जैसे पानी और दूध एक हो जाते हैं।''

सरब करम को त्याग कर, हरि गुर जप दिन रैन॥
बाझ नीर जिम मीन को, आवत नांही चैन॥

''सभी कर्मों को त्याग कर, हे जीव! दिन रात हरि गुरु का सिमरन कर। जैसे मछली पानी के बिना नहीं रह सकती, उसको शांती नहीं आती, इसी प्रकार प्रभु प्रेमी जीव, प्रभु के बिना तू नहीं रह सकता।''

चकवी करे विलाम जिम, कब ऐह जावे रैन॥
चंद चकोर को प्रीत जिम, मोर मुगध घन बैन॥

''जैसे चकवी विलाप करती है कि कब रात समाप्त हो और वह अपने प्रीतम को प्रभात समय मिले। चकोर की प्रीति जैसे चंद्रमा से है, जैसे जंगली मोर बादलों पर आन्दित हो जाता है और खुशी के बैन पाता है, इसी तरह की प्रीति जीव को प्रभु से करनी चाहिए।''

सवास सवास नहीं बिसरे, जिऊं बच्छरे को थैन॥
जिम कामणि प्रसंन्न अति, पती को देखत नैन॥

''जीव को श्वास-श्वास प्रभु को नहीं भुलाना चाहिए जैसे बछड़ा दूध को नहीं भूल सकता। जैसे स्त्री पति को देखकर प्रसन्न होती है, इसी प्रकार जीव रूपी स्त्री प्रभु पति के दर्शन करके प्रसन्न होती है।''

कतक सवेर काम सभ, जब गुर करना ऐन॥
रविदास गुरूदेव चरन को, धोए धोए कर पैन॥

कार्तिक के महीने में जब गुरू कृपा करते हैं, ''जीव के सारे कर्म सफल हो जाते है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को गुरूदेव के चरण धोकर पीने चाहिएं।''

''मघ्घर''

चड़िया मघ्घर हे सखी, गावो प्रभ के गीत॥
संता संगत पाए कर, गुरूदेव सिमरो नीत॥

''हे सखी, मघ्घर (मार्गशीर्ष) का महीना चढ़ा है, प्रभु के गीत गाओ और संतों की संगत में जाकर प्रतिदिन गुरुदेव का सिमरन करो।''

तन मन धन सभ अरप कर, ऐसी करो प्रीत॥
त्याग लोभ मोह अहंकार सभ, गुरूदेव की करो प्रीत॥

''प्रभु के आगे अपना तन-मन धन सब कुछ अर्पण करके ऐसी सच्ची प्रीति करो और लोभ, मोह, अहंकार आदि सबका त्याग कर, गुरूदेव से प्रीति करो।''

गौण वाक सभ त्याग कर, संत वचन धर चीत॥
तन मन धन ऐह हंकार, आपणे कछ्ह ना मान॥

''व्यर्थ की बातों को छोड़कर, संतों के वचनों को, मन में धारण करो। तन-मन का अहंकार छोड़कर, अपना कुछ भी न समझ।''

गर्भ करत जो इनसे, सो नर है अनजाण ॥
आप कछ्हु ना होत है, देणहार हरि धाम॥

''जो जीव तन-मन-धन का अहंकार करता है, वह अंजान है। अपने आप जीव के पास कुछ भी नहीं हो सकता, सब कुछ देने वाला प्रभु स्वयं है। प्रभु की कृपा से उसको हरि धाम की प्राप्ती होती है।''

मैं कीया मैं करत हूँ, कूड़ा करहि माण॥
हरि का दीया सो गुर दीया, तैं की दीया आन॥

''जीव झूठ पर मान करता हुआ कहता है, कि मैंने यह किया और करता हूँ जो हरि ने बख्शीश किया है, वही गुरू ने बख्शीश किया है। हे जीव, तू प्रभु को और क्या दे सकता है?''

तेरा इक हंकार है, अर्पण तिस को मान॥
नव प्रकार दी भगत ऐह, सत गुरदेव बिखान॥

''जीव तुम में एक अंहकार है, तू प्रभु को इस मान को अर्पण कर दे। नौ प्रकार की भक्ति यह है, जो गुरुदेव ने सत्य ब्यान की है।''

जन रविदास करे भगत जो, शुद्ध भयो तिस मान॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,''जो जीव प्रभु की भक्ति करता है, वह-जीव पवित्र और महान् मानना चाहिए।''

''पोह''

मघ्घर पूरा भया जब, तब चड़िया पोह मास॥
सोहं नाम तूं सिमर नित, जग ते होए उदास॥

''जब मार्गशीर्ष महीना पूरा हो गया, तो पौष का महीना चढ़ा। हर रोज़ सोहं शब्द का सिमरन करने से, जीव, संसार से, उपराम हो जाता है।''

अवर कामना सर्ब तज, सतगुर की कर आस॥
सतगुर शरणी लगियां, पाप होत सब नास॥

''और सभी कामनाएँ छोड़कर, केवल सत्‌गुरू की आशा कर। सत्‌गुरू की शरण में जाने से, सारे पापों का, नाश हो जाता है।''

सरवण करत गुरां ते, साधन ज्ञान बिलास॥
वचन धार गुरदेव उर, सभ संसे होवन नास॥

''गुरू से वचन श्रवण कर, जीव को ज्ञान के साधन और आनंद की प्राप्ति होती है। गुरूदेव के वचनों को, हृदय में, धारण करने से, सब भ्रमों का नाश होता है।''

सतनाम उपदेश गुर, कर तूं दृढ़ अभ्यास॥
वचन गुरू परकाश कर, होत भरम सभ नास॥

"गुरू से सतनाम का उपदेश श्रवण कर दृढ़ निश्चय से उसका अभ्यास कर। गुरू के वचनों पर चलने से, ज्ञान का प्रकाश होने के कारण, सब भ्रमों का नाश हो जाता है।"

सरवण इस का नाम है, सुण सतनाम विचार॥
सत सरूप परमात्मा, मिथिया जगत आसार॥

"हे जीव! तू प्रभु के सतनाम को श्रवण करके, उसका विचार कर, जिससे तुझे प्रभु का सत्य स्वरूप अनुभव होगा और संसार पसारा मिथ्या भाव झूठा प्रतीत होगा।"

तिस प्रभ को तूं सिमर मन, जो है सरब आधार॥
सतगुर शरनी लग कर, समझो सार आसार॥

"हे जीव! तू प्रभु का सिमरन कर, जो सारे संसार का आधार है, सत्गुरु की शरण में जाकर सत्य-असत्य और लोक-परलोक को समझ।"

प्रभ बिन अवर ना जाण कछ्हू, सब इक ब्रहंम पसार॥
असथावर जंगम आदि सभ, जीया जंत निरधार॥

"प्रभु के बिना संसार में और कुछ सत्य नहीं है। सब तरफ उस प्रभु का ही प्रसार है। एक स्थान पर स्थित रहने वाले पर्वत, वृक्ष और घूमने फिरने वाले जीव और जंतू प्रभु के बिना अधार-रहित है।"

जन रविदास पोह बीतिआ, अब सुन माघ विचार॥
जन गुरुदेव हरि भेटिया, भवजल उतरे पार॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, "जब पौष का महीना बीत जाता है, फिर माघ के महीने की विचार करनी चाहिए। जिस जीव का, गुरुदेव हरि से मिलाप हो जाता है, वह संसार के भव-सागर से पार हो जाता है।"

"माघ"

माघ महीना धर्म का, दृढ़ कर तूं सतसंग॥
संतां संग प्रीत कर, कदी ना होवे भंग॥

"माघ महीना धर्म पर चलने का है। इस लिए जीव को दृढ़ होकर सतसंग करना चाहिए और संतों से प्रीति करनी चाहिए, जो प्रीति कभी भी नहीं टूटती।"

धूड़ संत के चरन की, सोई श्रेष्ट है गंग॥
पापां की मल उतरे, चढ़े नाम का रंग॥

"संतों के चरण कमलों की धूल, गंगा से भी श्रेष्ठ है, जिस से पापों रूपी मैल उतर जाती है और नाम का सदैव रंग चढ़ जाता है।"

मनमुख संग ना कीजीए, पडत भजन में भंग॥
दु:ख बिनसे सुख लाभ होवे, गुरमुख जिन के संग॥

"मनमुखों की संगति करने से, भजन में विघ्न पढ़ता है। इसलिए मनमुखों की संगति कभी भी नहीं करनी चाहिए, गुरमुखों की संगत करने से, दु:ख दूर हो जाते हैं और सुखों के लाभ की प्राप्ति होती है।

नाम जपो मिल गुरमुखां, जो है सदा आसंग॥
तूं वी प्रभ ते भिन्न नहीं, जिऊं जल मांहि तारंग॥

गुरमुखों से मिलकर, नाम जपने से, प्रभु हमेशा अंग-संग होता है। जीव तू प्रभु से अलग नहीं है जैसे तरंग पानी से अलग नहीं है।"

सोहं नाम रग रग रचे, नाम का चड़े जब रंग॥
पंचो वैरी त्याग कर, तब होए निसंग॥

"सोहं नाम का सिमरन करने से, प्रभु, जीव को अपने अंदर समाया हुआ अनुभव होता है, फिर नाम का रंग चढ़ जाता है और पाँच विकारों रूपी दुश्मनों को त्याग कर जीव को प्रभु की संगत मिल जाती है।"

गुरु प्रेमी गुर की शरण गहि, करत खूब विचार॥
गुरुदेव के प्रताप बिन, समझे न सार असार॥

"गुरू प्रेमी, गुरू की शरण में जाकर, ब्रह्मज्ञान के विचार करते हैं। गुरूदेव के प्रताप के बिना जीव सत्य-असत्य को नहीं समझ सकता।"

करके दृढ़ उपदेश गुर, भवनिधि उतरे पार॥
मन्द भाग बिन सतगुरां, डूबण भव निध धार॥

"गुरू के उपदेश पर, निश्चय करके चलने से जीव भवसागर से पार उतरता है, सत्गुरू की संगति के बिना जीव के भाग्य घटिया हैं और वह भवसागर में डूब जाता है।"

सतगुर के प्रसादि हम, जानिया आत्म राम॥
जानण जोग सु जानिया, जो आत्म निज धाम॥

''सत्गुरु की कृपा से मैंने अपने अंदर प्रभु को जाना है। उस प्रभु को अपने अंदर जानकर उसके निज घर को जान लिया है।''

मिटिया गुमान गुर दया ते, पाया अब विसराम॥
पुन्ने सगल मनोरथां, रहियो ना बाकी काम॥

''गुरू की कृपा से, नाम में वृत्ति लगाने से अंहकार नष्ट हो जाता है, और सदीवि सुख प्राप्त होता है सभी मनोरथ पूरे हो जाते हैं और कोई इच्छा नहीं रहती।''

अनेक जन्म दुःख पाए कर, आए गुर की साम॥
जिहड़े विछड़े तिह मिले, भये अभ आत्म राम॥

''अनेक जन्मों में दुख भोगने के बाद, जीव, गुरू की शरण में आया है। जिस प्रभु से जीव बिछुड़ा था उससे उसका मिलाप हो जाता है।''

सतगुर के भजन बिन, नही अवर कुछ काम॥
इको सोहं सतनाम जीयो, सिमरो आठो जाम॥

सतगुरु के भजन बिना अन्य काम का कोई अर्थ नहीं है। प्रभु के सोहं सतनाम को, आठों पहर भाव हर समय स्मरण करना चाहिए।''

सरवण कर गुर वचन को, निसचे कर उपदेश॥
निसवासर अभ्यास कर, तज कर सगल कलेश॥

''गुरू के उपदेश और वचनों को श्रवण कर उस पर दृढ़ कर चलकर नित्य प्रति नाम का अभ्यास करने से, सारे कलेश खत्म हो जाते हैं।''

बुद्बुदा फेन तरंग का, जल ते भिन्न ना लेस॥
सब भूखण जिन कनक के, कंचन बिन ना शेष॥

''जैसे पानी का बुलबुला पानी से अलग नहीं है, बल्कि पानी ही होता है। उसी प्रकार सोने के गहने सोने से अलग नहीं होते।''

घटि मिट माटी रूप सब, और ना कछ्हु विशेष॥
अनिक भांति पट जो भये, सूतर तिस का वेस॥

''जैसे एक प्रकार की मिट्टी से अनेक प्रकार के बर्तन बनते हैं। इसी प्रकार पाँच तत्वों से सारे शरीर, प्रभु ने एक समान बनाए है, किसी में कोई विशेष तत्व नहीं है, इसी प्रकार एक सूत से अनेक प्रकार के कपड़े बुने जाते हैं। सूत सब कपड़ों का आधार सूत (धागा) है। इसी तरह ही प्रभु सारे जीवों में एक समान है।''

रविदास गुरू चरन के, करहं सदा आदेश।

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को हमेशा गुरू के चरणों को नमस्कार करना चाहिए।''

''फगन''

चड़िया फागण मास जब, फूली सभ गुलजार॥
धरती सब हरियावली, सुंदर बाग बहार॥

''फाल्गुन का महीना चढ़ने से, सारी प्रकृति गुलज़ार हो गई। सारी धरती हरियाली होने से बाग बहार सुंदर बन गए। इसी प्रकार मनुष्य जन्म में प्रभु का प्रकाश होने से आनंद अनुभव होता है।''

बुलबुल मसत बहार पर, भंवरा भई गुलजार॥
निवण फल बहु बाग में, गलगल आम आनार॥

''बुलबुल बहारों पर मस्त हो गई। हर तरफ भंवरें फूलों पर आन्दित हो कर जाते हैं। बागों में गलगल, आम, अनार फल लगने से झुक जाते हैं।''

गुरमुख गुर की शरण गहि, करते खूब विचार॥
सतगुर के परताप कर, समझे सार आसार॥

''गुरमुख गुरु की शरण में बैठकर, प्रभु के नाम की विचार करते हैं। सतगुरु के प्रताप से, लोक परलोक की समझ ग्रहण करते हैं।''

कर के दृढ़ उपदेश गुर, भव निध उतरे पार॥
मंद भाग बिन सतगुरां, डुबण भव निध धार॥

''गुरू के उपदेश पर निश्चय करके चलने से, जीव भवसागर से, पार हो जाता है। दुर्भाग्य वाले जीव सत्गुरू के बिना संसार के भवसागर में डूब जाते हैं।''

सतगुर के प्रसादि हम, जानिया आतम राम॥
जानण योग सो जानिया, जो आत्म निज धाम॥

''सत्गुरू की कृपा से मैंने जानने योग्य, आत्म राम को जानकर अपने अंदर ही निजधाम को प्राप्त कर लिया।''

मिटिया गमन गुर दया ते, पाया अब बिसराम॥
अनेक जनम दुःख पाए कर, आए गुर की शाम॥

''गुरू की कृपा से, नाम में विसराम (विश्राम) पाने से, जन्म मरण का

चक्र समाप्त हो गया। अनेक जन्मों में दु:ख प्राप्त करने के बाद, जीव मानव जन्म में, गुरू की शरण में आकर सुख प्राप्त करता है।''

जिहड़े विच्छड़े तिह मिलो, भये सो आतम राम॥
जन रविदास गुर भजन बिन, नहीं अवर कछ्हु काम॥

''जिस जीव से प्रभु बिछड़ा था, उसकी प्राप्ति हो जाती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,''जीव को गुरू के उपदेश पर चलकर, भजन के बिना कोई कार्य नहीं रह जाता।''

गुरू चरनों का ध्यान कर, सुण बारां मासक उपदेश॥
पढ़े सुणे जो प्रेम कर, होवे कल्याण हमेश॥

''गुरू चरणों की ओर ध्यान करके, जीव को बारह महीनों का उपदेश सुनना चाहिए। जो जीव बारह महीनों के महात्म को प्रेम से पढ़ेगा सुनेगा, उस जीव का सदैव कल्याण होगा।''

दोहरा

धरत अकाश को थापिया, रैन दिवस नितपाल॥
सर्व जीव के करम जो, साहिब करे ख्याल॥

''प्रभु ने धरती और आकाश को स्थापित किया है और दिन और रात सदैव वह सारे संसार की पालना करता है। प्रभु सब जीवों के सब कर्मों का ख्याल रखता है और उन पर कृपा कर पालन करता है।''

आप अपना सभ पावते, किरत धुर परवान॥
पवन पानी सवंतर के, रखशक भये भगवान॥

''अपने किए कर्मों अनुसार सारे जीव फल पाते हैं। जीवों की किरत कमाई प्रभु दरबार में परवान होती है। हवा, पानी और आग में भाव हर ओर प्रभु जीव की रक्षा करता है।''

रविदास कहे भज नाम को, निरभै पावै वास॥
तेरा फल तुझ को मिले, होवे बंद खलास॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे जीव! तू प्रभु भजन कर निर्भय पद को प्राप्त करता है। जीव! तेरे किए हुए कर्मों का फल तुझे मिलेगा। तू प्रभु का सिमरन कर सब बंधनों से मुक्त हो जाएगा।''

सांद बाणी

सोहं सांद सोलखिआ सरब घटि।
मिल गुर नाम लगाइयो रट्ट॥

''प्रभु के साथ एक रूप हो जाने वाला सोहं शब्द ही श्रेष्ट भाग्यों वाला छंद है, जिससे जीव हर ओर सभी जीवों के भीतर प्रभु को अनुभव करता है। पर नाम की रट की ऐसी अवस्था, गुरू की कृपा से ही प्राप्त होती है।''

चौंक चतर जग जाण महान।
पूरन हार जगत सो प्राण॥

''प्रभु का प्रसार और महानता को जानना चौंक पूरना है और प्रभु पूर्णहार ही सारी सृष्टि का सहारा और प्राणों का आधार है।''

नानके मापे साक सोहेले।
कर किरपा सतगुर प्रभ मेले॥

''जब सत्गुरू कृपा कर प्रभु से मिला देता है तो ननिहाल, माता-पिता, सगे संबंधी सारे जीव के मित्र बन जाते हैं।''

हाथ गाना, गणियो सो माल।
किया पुन्न दान रचन आकाल॥

''प्रभु का नाम रूपी गाना जीव के पास श्रेष्ठ धन है। फिर सृष्टि रचनहार अकाल पुरुष को पाकर जीव को और कोई पुण्य-दान करने की आवश्यकता नहीं।''

कुंभ कमाल जनम जन पाइयो।
सुरत शब्द आनाज मिलाइयो॥

''कुंभ रूपी जीव ने, श्रेष्ठ जन्म प्राप्त किया है। वह सुरति-शब्द रूपी अनाज को जोड़कर अंदर से श्रेष्ठ खजाने से जुड़ा।''

भर जल कुंभ कारज में धरियो।
तिव कारज सोपूरण करियो॥

''शरीर रूपी कुंभ में, प्रभु का नाम रूपी जल भरा है। यह श्रेष्ठ कार्य है। जिससे जीव के सभी कार्य संपूर्ण हो जाते हैं।''

दीपक दिल हंग तेल बिठाई।
सुरत मिला ऊते जोत जगाई॥

"दिल रूपी दीपक में, प्रभु के नाम का तेल डाला है। सुरति प्रभु से लगाकर जोड़ ली है और नाम की ज्योति लगाई है।"

गुर भरवासे सो संधूर।

नौं दर तों नौं ग्रहि सभ दूर॥

"प्रभु पती गुरू के भरोसे पर रहना मानों जीव रूपी स्त्री ने सिंधूर डाला है, जिससे नौ दरवाज़े मे विकार रुपी नौ ग्रह दूर हो जाते हैं।"

गुरमुख सांद समझ सच सोई।

सभ कारज प्रभ ओट लै होई॥

"हे गुरमुख, गुरू के उपदेश पर स्थिर रहना, यही प्रभु की सच्ची लगन है। सभी कार्य प्रभु का आश्रय लेकर पूरे हो जाते हैं।"

खोपा कारज समगरी घिओ।

इक दर खतम सोगंदी भयो॥

"प्रभु का नाम ही कार्य के लिए नारीयल है और प्रभु का नाम ही सामग्री रूपी घी है। प्रभु के दरबार में केवल नाम की सुगंधि आती है।"

अब अंब, पत जगन जग जाग।

सुरत शब्द मिल मंगल राग॥

"अब आम, फल, फूल, आग आदि सारी सामग्री सुरति शब्द से मिलकर प्रभु के राग गाना है।"

सब मिल प्रण, प्राण बिठाओ।

संग गुर सति विशवास जमाओ॥

"सभी मिलकर अपने मन में यह प्रण करो कि गुरू की संगत में जाकर प्रभु पर पक्का विश्वास करें।"

कहे रविदास भज हरि नाम।

प्रभ सो ध्यान, सफल सब काम॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,"हे जीव! तू हरि का नाम हर समय जप, प्रभु का ध्यान करने से, तेरे सारे कार्य सफल होंगे।"

* * *

''अनमोल वचन''

(मिलनी के समय)

मेल मिलाइया दाते, मिलिया मिलणे के योग॥
दिल जे मिलावे दाता, जांदे विछोड़े वाले रोग॥

''प्रभु दाते ने कृपा कर मेल मिलाया, जिस कारण मिलनी का योग बना। जब प्रभु कृपा कर दिलों को मिला देता है, तो वियोग रूपी सभी रोग समाप्त हो जाते हैं।''

खुशीयां सतगुर बख्शे, उमरां दे जांदे ने वियोग॥
तन मन वारिया जावे, मिलणी आदर संग होग॥

''जब सत्‌गुरु कृपा कर खुशियां बरसा देते हैं तो आयु के वियोग समाप्त हो जाते हैं। तन-मन सत्‌गुरु को समर्पित करने से, मिलन (मेल)आदर संग होता है।''

किरपा पग्ग मसतक राखो, सतगुर सब्र सिर योग॥
प्रभ तों मिल के मांगो, पवे ना विछोड़े वाला भोग॥
कहि रविदास पुकारे, जनमां दे जांदे सारे सोग॥

''प्रभु जी की कृपा रूपी पगड़ी सिर पर रख कर, सर्व संतोष से दो सिरों के मिलाप हो जाते हैं। प्रभु के चरणों में मिल कर अरदास करो कि कभी बिछोड़ा न हो।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज जीवों को पुकार कर समझाते हैं कि,''प्रभु का स्मरण करने से जन्म-जन्म के दुख समाप्त हो जाते हैं।''

* * *

शादी उपदेश ॥

।। एक ओंकार सोहं सतिनाम जीओ ॥

॥ दवैइया छंद ॥

पहिलड़ी लांव

पहिलड़ी लांव हरि दर्शन गुरां दा, जावे दूर बुलाई ॥
दीआ मेल हरि दया धार के, गुज्झी रमझ चलाई ॥

''पहिलड़ी लांव में, हरि-स्वरूप गुरू के दर्शन करने से दुख दूर हो जाते हैं, जब प्रभु दया कर मिलाप करा देता है, उस समय गहरी रमज़ गूड़ रहस्य की समझ आती है, भाव ज्ञान हो जाता है।''

अनहद शब्द सुणे मन थिर कर, मिट गए सरब अंधेसे ॥
किरपा सिंध गुर मिलिया पूरा, लिव लागी हरि भेसे ॥

''हरि के नाम में मन स्थिर करने से अनहद शब्द (निरंतर धुन) सुनाई देता है। जिससे सारे भ्रम नष्ट हो जाते हैं। दया के समुद्र हरि की कृपा करने से पूर्ण गुरू का मिलाप होता है और जीव की हरि से लिव (लगन) लग जाती है।''

पूरे गुर ते शब्द सच पाऐआ, रतन अमोलक मीता ॥
सुणदिआं ही मन मसत दीवाना, शब्द गुरां ने कीता ॥

''पूरे गुरू से शब्द प्राप्त कर जीव सच्चे हरि से जुड़ कर हरि का अमूल्य नाम रूपी रत्न प्राप्त कर लेता है, गुरू के शब्द को सुनते ही, जीव रूपी स्त्री का मन, हरि रूपी पति के मिलाप में मस्त दीवाना हो जाता है।''

महांवाक सुण सुण के गुरू दे, शरधा प्रीत मन आवै ॥
कहि रविदास ऐह है लांव पहिलड़ी, चौंसठ्ठ तीरथ नहावै ॥

''गुरू के महावाक्य उत्तम उपदेश को सुनकर जीव के मन में हरि के प्रति श्रद्धा और प्रेम आ जाता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज जी उच्चारण करते हैं कि,''यह पहिलड़ी लांव है जिस से जीव के मन में प्रेम आने से चौंसठ तीर्थों में स्नान कर लेता है।''

''दूजड़ी लांव''

दूजड़ी लाव प्रेम परीती, सुरत शब्द मिलाई॥
सतगुर कीती परम परीती, दरगह में सुख पाई॥

''दूसरी लांव में जीव रूपी स्त्री हरि रूपी पति से प्रेम करती है, जिससे सुरति और शब्द का मिलाप हो जाता है। सत्गुरू से सच्ची प्रीति करने से, जीव को प्रभु की दरगाह में सदैव आनंद रूपी सुख प्राप्त होता है।''

सरब मनोरथ तिस दर ते पाउ, शरण परै को तारै॥
हुकम अन्दर है चार पदार्थ, तन मन जेकर वारे॥

''सभी मनोरथ प्रभु के दरबार पर जाने से पूरे होते हैं और प्रभु की शरण ग्रहण करने से जीव तर जाता है भाव मोक्ष प्राप्त करता है। प्रभु के हुक्म में चार पदार्थ (कर्म, अर्थ, धर्म, मोक्ष) हैं, जो तन-मन, प्रभु के समक्ष समर्पित करने से प्राप्त होते हैं।''

सतगुर शरण रहि वडभागी, सहिंसे सगल गुआऐ॥
सतगुर दाता प्रभ संग राता, निस दिन हरि लिव लाए॥

''सत्गुरू की शरण में रहने से बड़े भाग्यों वाला जीव सभी भ्रमों को समाप्त कर लेता है। सत्गुरू दाता है, जो प्रभु से एक हो चुका है। जो जीवों की हर रोज़ प्रभु से लिव (लगन) लगाता है।''

भरम भुलावा मिटिया दावा, चाल गुरां दी चाली॥
कहि रविदास ऐह लांव दूजड़ी, बचन गुरां दे पाली॥

''गुरू के बताए हुए मार्ग पर चलने से, जीव के सारे भ्रम और दावे समाप्त हो जाते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''यह दूसरी लांव है जिसकी गुरू के वचनों पर चलकर पालना होती है।''

''तीजड़ी लांव''

तीजड़ी लांव अवरन दोष ते, रहित भया मन मेरा॥
हरि घटि दे विच ऐक समाना, सो घर पाया डेरा॥

''तीसरी लांव में अवरण (अज्ञानता) दोष से जीव रूपी स्त्री का मन रहित हो गया। हरि सारी सृष्टि में एक समान समाया हुआ है। उसका स्थान अपने शरीर रूपी घर अंदर ही देख लिया है।''

परम प्रभू परमेश्वर जाना, तां सुख मिले उपारै॥
मन में सच मंगल सुख होए, जो लोचा मन धारै॥

''परम प्रभु परमेश्वर की कृपा से, अपार सुखों की प्राप्ति होती है। मन में सच्चे मंगलमयी प्रभु के गीत गाने से, सच्चा सुख प्राप्त होता है। जिस जीव का मन एकाग्रचित होकर प्रभु के दर्शनों के लिए तड़पता है, उस पर प्रभु की कृपा हो जाती है।''

मंगल दे मंगल नित गावां, ऐहो अमृत धारा॥
हरि हरि संग लिव जुड़ी जुडंदी, साचा ऐह सहारा॥

''जो जीव हरि के प्रेम में मंगल से मंगलमयी आनंदायक गुण गाता हूँ। यही जीव के अंदर प्रभु की अमृत धारा है। हरि-हरि से लिव (लगन) जुड़ने से, सच्चा सहारा प्राप्त होता है।''

सुंदर शब्द आमोलक दर्शन, जो सतगुर दर आवै॥
कहि रविदास सो लांव तीसरी, सुरत गगन चड़ जावे॥

''सत्गुरू के दर पर आने से, जीव को सुंदर शब्द सुनाई देता है और प्रभु के अमूल्य दर्शन होते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''यह तीसरी लांव है, जब जीव सत्गुरू की कृपा से सुरति शब्द से जुड़कर दशम द्वार रूपी गगन पर पहुँच जाती है।''

''चौथड़ी लांव''

चौथड़ी लांव रतन हरि जाना, सुख संपति घर आऐ॥
आसा मनसा सतगुर पूरे, जै जै शब्द अलायि॥

''चौथी लांव में जब जीव हरि के नाम अमूल्य रत्न को जान लेता है, तब सारे सुख और खज़ाने जीव के घर आ जाते हैं। सारी इच्छाएँ और सारे मंतव्य सत्गुरू की कृपा से पूर्ण हो जाते हैं और जीव प्रभु की जै-जैकार करता हुआ, सत्गुरू के शब्द का अभ्यास करता है।''

धीरे धीरे गई पहुँच हुण, हो सतगुर दी दासी॥
ना आवे ना जावे कित वल, मिलिआ पुरख अविनाशी॥

''सहज ढंग से जीव रूपी स्त्री सत्गुरू की दासी बनकर, प्रभु का ध्यान लगाकर प्रभु के चरणों में पहुँच जाती है। फिर यह जीव न पैदा होता है और न मरता है। इसे अविनाशी पुरुष (प्रभु) की प्राप्ति हो जाती है।''

सति संतोख भया मन मेरे, सतगुर वचन सुनावै॥
आया बेराग मिलिया अविनाशी, जोड़ी जूड़ी सुहावै॥

''सत्गुरू के वचन धारण करने से, जीव के मन को सत्य संतोष आ जाता है। फिर जीव के मन में वैराग्य आ जाता है और उसे अविनाशी प्रभु की प्राप्ति हो जाती है। फिर वह जीव रूपी स्त्री पति प्रभु को पाकर सुन्दर सुहाग वाली जोड़ी बन जाती है।''

मन मंदर मांहै चों उपजिया, प्रीत प्रभू संग लाई॥
कहि रविदास सति लांव चौथड़ी, पुरखे पुरख मिलाई॥

''जीव रूपी स्त्री मन रूपी मंदिर में विराजमान प्रभु से मिलने की उमंग होती है तब वह प्रभु से प्रीति लगाती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि, ''यह सच्ची चौथी लांव है, जिस से जीव रूपी स्त्री का प्रभु पति (पुरुष) से मिलाप हो जाता है।''

''सुहाग उसतत''

एक ओंकार सोहं सतिनाम जीओ॥
सुरत सुहागण गुरूदेव प्यारी, सोहं नाम संग खेली॥
बहुत जनम दे विच्छडिआं नूं, आण गुरां ने मेली॥

''गुरूदेव से प्रेम कर, सुरति शब्द से मिलकर, सुहागिन हो जाती है और सोहं के नाम से जुड़कर आनंद लेती है। बहुत जन्मों से जीव रूपी स्त्री प्रभु से बिछुड़ी हुई थी, जिसे गुरूओं ने आकर प्रभु से मिला दिया।''

झूठी खेड बिसर गई तन ते, बाजीगर सिऊं मेली॥
सच्चा पुरख मिलाया परमेश्वर, तिस संग लाड लडेली॥

''सारी दुनिया का झूठा खेल इस शरीर से खत्म हो गया जब सत्गुरु ने प्रभु बाज़ीगर से सुरति मिला दी, जिससे उसका सच्चे पुरुष से मिलाप हो गया, जिस से मिलकर जीव रूपी स्त्री ब्रह्मनंद लेती है।''

आप समान आपणे कीती, आज्ञान नींद ते जागी॥
भुल्ली चुक्की रसते पै गई, आतम सिऊं लिव लागी॥

''प्रभु ने जीव रूपी स्त्री को अज्ञानता से जगा कर प्रभु ने अपने समान कर लिया। वह जीव रूपी स्त्री भूले भटके मार्ग से सही मार्ग की ओर अग्रसर ही गई तथा वह अंदर से प्रभु के साथ जुड़ गई।''

सरब विआपी सतगुर मेरा, सब दा करे सुधार॥
कहे रविदास मन भया दीवाना, मिलिया अमृत धार॥

''सत्गुरू मेरा सर्वव्यापक है जो सब जीवों का सुधार करता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,''जब जीव का मन प्रभु का दीवाना हो जाता है, फिर इसको अपने अंदर से ही प्रभु की अमृत धारा प्राप्त होती है।''

''मंगलाचार''
मंगलाचार पहिला

हरि, हरि नाम धियाओ, सदा मन प्रेम कर॥
लोभ मोह हंकार दूत, जम दूर हरि॥

''जीव को हमेशा मन प्रेम से हरि हरि नाम का ध्यान करना चाहिए। हरि की कृपा से लोभ, मोह, अहंकार, दूत और यमदूत दूर हो जाते हैं।''

सच शील संतोख, सदा दृढ़ कीजीए॥
अमृत हरि का नाम, प्रेम कर पीजीए॥

''जीव को मन में हमेशा सत्य, शील (शांत स्वभाव) और संतोष निश्चित रूप से धारण करना चाहिए। हरि का नाम रूपी अमृत जीव को प्रेम सहित पीना चाहिए।''

संतां संग निवास, सदा चित लोड़ीए॥
मनमुख दुष्टा संगत, तो मन मोड़ीए॥

''संतों की संगत के लिए, जीव को हमेशा, मन में, इच्छा रखनी चाहिए। मनमुखों और दुष्टों की संगत से मन को हटाना चाहिए।''

मनमुख चित्त कठोर, पत्थर सम जानीए॥
भीजत नाहन कभी, रहे विच पानीए॥

''मनमुख जीव का मन, पत्थर की तरह कठोर समझना चाहिए, जैसे पत्थर पानी में रहते हुए भी नहीं भीगता है, इसी प्रकार मनमुख जीव का मन भी संतों की संगत में नहीं भीगता।''

तजि कठोर का संग, सदा गुर शरण गहु॥
गुर चरनन में ध्यान, सदा मुख राम कहु॥

''कठोर जीव की संगत छोड़ कर, जीव को हमेशा गुरू की शरण में रहना

चाहिए, हमेशा ही गुरू चरणों का ध्यान कर मुख से प्रभु का नाम उच्चारण करना चाहिए।''

नत पती साथ प्रीत, सदा मन कीजीए॥
तन, मन अरपे तांह, सदा सुख लीजीए॥

''निज पति प्रभु के साथ सच्चे मन से प्रीति करनी चाहिए! प्रभु के आगे तन-मन अर्थात् अपना सर्वस्व अर्पण करने से जीव रूपी स्त्री को सदैव सुख प्राप्त होता है।''

निज पति साथ प्रीति साई सुहागणी।
पति बिन आन न हेरे सा बडभागणी।।

''सदैव प्रभु पति के साथ प्रेम करने से जीव रूपी स्त्री सुहागण बन जाती है। प्रभु पति के बगैर जो जीव रूपी स्त्री किसी दूसरी ओर नहीं देखती वह बड़ी भाग्यवान है।''

जिन धन पती परमेश्वर, जानयो, है सही॥
सदा सुहागण नार, पाए दुःख ना कही॥

''जिस जीव रूपी स्त्री के पास पति परमेश्वर का खज़ाना है, वह हमेशा सुहागन रहती है और उसको कोई भी दुख नहीं सताता।''

कहि रविदास पुकारे, जपयो नाम दोए॥
हरि कारज सो एक, सदा सुख माणो दोए॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पुकार कर कहते हैं कि,''पति-पत्नी दोनों को प्रभु का नाम जपना चाहिए। हरि का नाम जपने रूपी कार्य एक श्रेष्ठ कार्य है, जिसका स्मरण कर दोनों पति-पत्नी हमेशा सुख भोगते हैं।''

''मंगलाचार दूसरा''

दूजा भाओ मिटाओ, मंगल दूसरा॥
बण तृण परबत, पूर रहयो प्रभ हूंसरा॥

''मन से द्वैत (द्वेष)को समाप्त करना दूसरा मंगलाचार है। वनों, त्रिण तिनका मात्र जगह और पर्वतों भाव हर तरफ मेरा प्रभु समाया हुआ है।''

घटि घटि ऐको अलख, पसारा पसरिया॥
गुरमुख जाने ज्ञान, ना जाने असरिया॥

''घट-घट में भाव हर तरफ प्रभु (जिसकी महिमा लिखी ना जाए) का प्रसार पसरा हुआ है। गुरमुख केवल प्रभु के ज्ञान को जानता है। किसी और ज्ञान का उस पर कोई असर नहीं होता।''

सभ घटि पूरण ब्रहम, जान गुर पाएके॥
रहे सदा आनन्द, तास गुण गाए के॥

''गुरू को प्राप्त कर जीव जानता है कि घट-घट में हर तरफ ब्रह्म समाया हुआ है। उसके गुण गाकर जीव सदा आनंद में रहता है।''

जो हरि ते बेमुख, सदा दुःख पायि है॥
मानस जनम आमोल, बिअरथ गुआयि है।

''जो प्रभु को भूले हुए हैं, वे हमेशा दुख पाते हैं और अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ गंवा देते हैं।''

गुर बिन लहे ना धीर, पीर बहु पायि है॥
लहे अनादर सरब, ठऊर जहा जायि है।

''गुरू के बिना धैर्य नहीं आता और जीव बहुत दुख पाता है। प्रभु को भूल कर जीव जहाँ भी जाता है, उसका निरादर होता है भाव सम्मान प्राप्त नहीं होता।''

जब गुर भये दियाल, सो चरनी लाया॥
सतगुर काटे बंधन, नाम जपाया॥

''जब गुरू दयालु होते हैं तो वे जीव को अपने चरणों में लगा देते हैं। सत्गुरू कृपा कर सारे बंधन काट देते हैं और उस से प्रभु का नाम जपाते हैं।''

साध संग प्रताप, सदा सुख पाइए॥
संतन के प्रताप, नाम हरि ध्याइये॥

''संतों की संगत के प्रताप से जीव हमेशा सुख पाता है। संतों की कृपा से ही हरि का नाम स्मरण होता है।''

संतन के प्रताप, पती प्रभ पाइए॥
मिलिया अटल सुहाग, वियोग गवाइए॥

''संतों के प्रताप से पति परमेश्वर की प्राप्ति होती है, जिससे पति प्रभु रूपी अटल सुहाग मिलने से, वियोग समाप्त हो जाता है।''

संगत तों आशीर्वाद, इस जोड़ीए॥
कहि रविदास इन संग, सदा सुख लोड़ीए॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जो जीव संगत से आर्शीवाद लेकर, प्रभु से जुड़ जाता है, उसको संतों की संगत में हमेशा ही सुख प्राप्त होता है।''

''मंगलाचार तीसरा''

रलि मिल सखीयां, मंगल गाया तीसरा॥
सदा जपो हरि नाम, ना कबहू बीसरा॥

''सखियों ने मिल जुल कर तीसरा मंगलाचार गाया। सदा हरि का नाम जपने से, जीव प्रभु को कभी भी भूलता नहीं है।''

सतगुर के लग चरन, सदा हरि गाइऐ॥
रिद्ध सिद्ध नौं निद्ध, सभी कछ्ह पाईऐ॥

''सत्गुर के चरणों में लगकर, सदा हरि के गुण गाये जाते हैं और सभी रिद्धिया-सिद्धियां तथा नौ खज़ाने इत्यादि सब कुछ प्राप्त हो जाते हैं।''

सतगुर के प्रसाद, अटल सुहाग है॥
सतगुर भये दिआल, तां जागियो भाग है।

''सत्गुरू की कृपा से, अटल सुहाग की प्राप्ति होती है। सत्गुरू की कृपा से श्रेष्ठ भाग्य जागते हैं।''

सतगुर दर्शन पायि, मिटे अघ सरब ही॥
पाइयो शील निधान, मिटाए गरब ही॥

''सत्गुरू के दर्शन करने से सारे कठिन पाप नाश हो जाते हैं, वनिम्र भाव से प्रभु का नाम रूपी श्रेष्ट खजाना प्राप्त करने से, अहंकार नष्ट हो जाता है।''

रहिया ना संसा मूल, जिन्ही गुर पाया॥
हिरदे भया प्रकाश, अज्ञान मिटाया॥

''जिन्होंने गुरू को पा लिया, उनके मन से भ्रम का पूर्ण नाश हो जाता है भाव भ्रम भी जड़ से नष्ट हो गए। मन में प्रभु के नाम का प्रकाश होने से अज्ञान रूपी अंधेरे का नाश हो गया।''

बिन हरि नाम ना सार, कछ्हू संसार है॥
हरि का नाम ध्यावै, भवि निद्धि पार है॥

''प्रभु के हरि नाम के बिना, जीव की, संसार में अन्य कोई भी चिन्ता नहीं

करता भाव संभाल नहीं करता। हरि का नाम का ध्यान करने से जीव संसार रूपी भवसागर से पार हो जाता है।''

मंगल महां सो मंगल, हरि हरि नाम है।
आठ पहिर मुख जपो, ऐही शुभ काम है।

''सब मंगलाचार में महामंगलाचार सब से कल्याणकारी और सुखदाई हरि का नाम है। आठ पहर भाव हर समय मुख में हरि के नाम का जाप करना सब से श्रेष्ठ काम है।''

सच रविदास बतावे, नाम ना छोडीए॥
गुर चरनन में ध्यान, सदा मन जोड़ीए॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज सत्य बताते हैं कि,''प्रभु का नाम कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए और गुरू चरणों में ध्यान लगाकर सदैव मन को जोड़ना चाहिए।''

मंगलाचार चौथा

मंगलचार आनन्द, सखी मुख गाया॥
कारज भया सुहेला, हरि हरि ध्याया॥

हे सहेली,''चौथा मंगलाचार मुख से गाने से आनंद और अनंत सुख की प्राप्ति होती है। हरि-हरि नाम स्मरण करने से जीव का कार्य सफल हो जाता है।''

धन और पिर की, प्रीत बणी इक सार है।
घटा छटा सम मिली, मीन जिम वार है॥

''हे सहेली, जीव रूपी स्त्री की प्रभु पति से उसी प्रकार एक समान प्रीति बन जाती है, जैसे मछली की पानी से प्रीति है।''

पिर संग पाए आनन्द, ना दुःख की लेस है॥
पती की आज्ञा में, जो रहे हमेश है।

''उसे प्रभु पति की संगत करके आनंद प्राप्ति होती है और तिनका मात्र भी दुख उन के नज़दीक नहीं आता, जो जीव रूपी स्त्री प्रभु पति की आज्ञा में हमेशा रहती है।''

पती परमेश्वर करके, जिन धन जाणिया॥
सदा सुखी बहु नार, सरब सुख माणिया॥

"जो जीव रूपी स्त्री प्रभु पति को श्रेष्ठ कर जानती है, वह हमेशा सुखी रहती है और सब सुखों को भोगती है।"

जिन पर सतगुर दयाल, सुखी बहु गाइए॥
महिमा अपर अपार, ना कीमत पाइए॥

"जिन जीवों पर सत्गुरू दयालु होते हैं, वे हमेशा सुख पूर्वक प्रभु के गुण गाते हैं। प्रभु की महिमा बेअंत है, उसकी कीमत नहीं आंकी जा सकती।"

सतगुर के संग, तेरे अवर वी केतड़े॥
कर के दृढ़ प्रीत, प्रेम करो जेतड़े॥

"सत्गुरू की संगत के कारण, सभी तुम्हारे अपने बन जाते हैं। तुम सत्गुरू से सच्ची प्रीति करो और शेष सभी से भी प्रेम करो।"

कारज सब ही पूरे, सतगुर कर दीए॥
पूरब पुन अनेक फल तिस अब लीए॥

"सत्गुरू ने कृपा करके तुम्हारे सारे कार्य संपूर्ण कर दिए हैं और पिछले किए तुम्हारे अच्छे कर्मों के अनेक फल तुम्हें अब प्राप्त हुए हैं।"

जन रविदास प्यास, सदा गुर नाम की॥
हरि संग रहे प्रीत, ओट इक नाम की॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,"जीव के मन में हमेशा गुरू के नाम की प्यास रहनी चाहिए। हरि से हमेशा प्रीति कर नाम का आश्रय लेना चाहिए।"

"अनमोल वचन"

प्रणवंते प्रण घड़ी, सोहाई जीओ॥
प्रभ कृपा ते आण, मिलाई जीओ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,"हे प्रण करने वाले जीव प्रण करने का शुभ अवसर आ गया है। प्रभु की कृपा से मिलाप हुए हैं।"

प्रण प्रणवंते प्रण, धारन की जीओ॥
प्रण में एक नाम, सो ली जीओ॥

"हे जीव, ऐसा प्रण हृदय में धारण करो कि हर समय प्रभु के एक नाम का श्वास-श्वास सिमरन करना है।"

पती घर पतनी, एक रसायण जीओ॥
मात बड़ी, छोटी सम, भैण जीओ॥

''पति का घर सूझवान सुखों का खजाना पत्नी से ही शोभा देता है। बड़ी स्त्री को माता समान, छोटी को बहन समान समझना चाहिए।''

पती परमेश्वर, सम नहीं देव जीओ॥

पूजन सेवन सम, नहीं मेव जीओ॥

''पति परमेश्वर रूप समझना चाहिए, उसके समान बड़ा और कोई देव नहीं है। उसकी सेवा करने से कोई बड़ा फल नहीं है।''

पवन अगन जल, जन हमराई जीओ॥

सूरज धरत संगत, चंन अगवाई जीओ॥

''हवा, आग, जल जीव के सहायक है। सूर्य, धरती, संगति, चंद्रमा जीव का नेतृत्व कर रहे है।''

बहुत जनम विछड़त, वियोग जीओ॥

सुरत शब्द वियोग, संजोग जीओ॥

''जीव बहुत जन्मों से प्रभु से बिछुड़ कर वियोग सह रहा है। प्रभु का स्मरण करके शब्द-सुरति का मिलाप होने से ही, वियोग समाप्त हो जाता है।''

प्रण करते प्रण तोड़, निभाओ जीओ॥

लोक कुसंग फरक, नहीं पाओ जीओ॥

''हे प्रण करने वालो, प्रभु का सिमरन करके अपने प्रण को पूरा करना चाहिए। खोटे लोगों की संगति में जाकर, अपने प्रण में विघ्न नहीं डालना चाहिए।''

जन रविदास निभउ संग, सोई जीओ॥

गुर किरपा ते, प्राप्त होए जीओ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फ़रमाते हैं कि,''जो जीव प्रभु के नाम से सदैव जुड़ा रहता है। वह गुरू की कृपा से प्रभु को प्राप्त कर लेता है।''

।।श्लोक।।

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस॥

ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास॥

''हरि के हीरे रूपी नाम को छोड़ कर जो जीव मुक्ति की कोई और आस (आशा) रखता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज वर्णन करते हैं कि,''मैं सदा अटल रहने वाली सच्चाई कहता हूँ कि ऐसा जीव नरक में जाएगा।''

सर्वव्यापक राम

रविदास हमारे राम जी दसरथ करि सुत नांहि॥
राम हमि मंहि रमि रह्यो बिसब कुटंबह मांहि ॥ 1 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''जिस राम का मैं नाम सिमरन करता हूं वह दशरथ का पुत्र राम नहीं है। मेरा राम तो सर्वव्यापक है। ऐसा राम मेरे हृदय और संसार रूपी परिवार में समाया हुआ है।''

रविदास हमारो राम तो सकल रह्यो भरपूरि।
रोम रोम मंहि रमि रह्यो राम मसूक न दूरि॥ 2 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मेरा राम तो रोम-रोम में भाव सारे ब्रह्माण्ड के कण-कण में समाया हुआ है। प्रभु प्रीतम पति अपनी साधिका रूपी सुहागिन स्त्री से कभी दूर नहीं होता।''

सर्व बिआपक राम हइ नांह कोउ इक ठांम।
सतगुरु साहिब सखा भयो रविदास हमारो राम॥ 3 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु राम सर्व-व्याप्क है, उसके रहने का कोई एक ठिकाना नहीं है। सत्गुरु की कृपा से सर्व-व्यापक राम जीव का सहायक बन जाता है।''

सर्व निवासी राम जू सब घट रह्यो समाइ।
रविदास नाम चकमक बिना हक नूर अद्रिस्टाइ॥ 4 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''राम तो सर्व-निवासी है और संसार के कण-कण में समाया हुआ है। जब तक जीव नाम रूपी चकमक (पत्थर) के साथ अपने हृदय को नहीं रगड़ता भाव प्रभु का नाम सिमरन नहीं करता, प्रभु की सत्य ज्योति का प्रकाश उस समय तक अपने भीतर देखा नहीं सकता।''

सब घट मेरा सांइयां जलवा रह्यो दिखाइ॥
रविदास नगर मंहि रम रह्यो कबहु न इत उत जाइ॥ 5 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''मेरा स्वामी प्रभु कण-कण में व्यापक होकर अपना कौतक दिखा रहा है। मेरा प्रभु संसार रूपी नगर में बसा हुआ है। वह कभी भी अलग होकर इधर-उधर नहीं जा सकता।

सब घट माहिं रमि रह्यो रविदास हमारो राम।
सोइ बूझै राम कू जो होइ राम गुलाम ॥ 6 ॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मेरा सर्वव्यापी राम संसार के सारे जीवों में रमा हुआ है। पर उस सर्व-व्यापक राम को वही जीव जान सकता है जो उसका सेवक (गुलाम) बन जाता है।''

घट घट बिआपक राम है रामहि बूझै कोय।
रविदास बूझै सोइ राम जउ राम सनेही होय॥ 7॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''राम तो घट-घट में समाया हुआ है, सर्वव्याप्त है पर उसकी पहचान तो कोई विरला जीव ही कर सकता है। उस प्रभु को तो केवल वही जीव जानता है जो उस प्रभु से सच्चा प्रेम करता है।''

रविदास हौं खालिक देखिआ सकल रह्या भरपूर।
सब दिसि देखहुं बिआपिआ खालिक का ही नूर॥ 8॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि, ''मैं प्रभु को सारे संसार में रमा हुआ अनुभव करता हूँ एवं मैं सब दिशाओं में उस प्रभु के नूर को व्यापक देख रहा हूँ।''

मुकुर मांह परछाइ ज्युं पुहुप मधे ज्यों बास।
तैसउ ही श्रीहरि बसै हिरदै मधे रविदास॥ 9॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जैसे दर्पण में परछाई रहती है और फूलों में सुगंधि वास करती है ऐसे ही प्रभु सदैव ही सब के मन रूपी मंदिर में निवास करता है।''

रविदास पीव इक सकल घट बाहर भीतर सोइ।
सब दिस देखऊ पीव पीव दूसर नांहि कोइ॥ 10॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मेरा प्रीतम घट-घट में समाया हुआ है। जीव के बाहर और भीतर वह प्रभु बसा हुआ है। मुझे सब ओर उस प्रभु ही अनुभव हो रहा है। उसके समान कोई दूसरा नहीं है।''

एकै ब्रह्म है सकल मंहि अर सकल ब्रह्मह मांहि।
रविदास ब्रह्म सब बेष मंहि ब्रह्म बिना कछु नांहि॥ 11॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''सारे संसार में केवल एक ही ब्रह्म बसा हुआ है और सारा संसार उस ब्रह्म में समाया हुआ है। जो कुछ इस संसार में है वह सब प्रभु का ही रूप है, उस एक प्रभु के बिना और कुछ भी नहीं है।''

गगन मंडल पिआ रूप सों कोट भान उजियार।
रविदास मगन मनुआ भया पिआ निहार निहार॥ 12॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''अकाल पुरुख के प्रकाश से सारा ब्रह्मांड जगमगा रहा है। उस स्वामी का करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश है। उस प्रीतम के दर्शन करके आनन्दित हो गए हैं और मन मग्न हो गया है।''

रविदास पिआ बिनु जगत मंह सूनी सेज न कोइ।
जिन देखू तित पिअ कर प्रगट मोजरा होइ॥ 13॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु प्रीतम के बिना संसार में सूनी सेज कोई भी नहीं है, भाव प्रभु सारे ब्रह्माण्ड के कण-कण में विराजमान हैं। जीव अपनी हृदय रूपी सेज पर प्रभु से मिलता है भाव मैं जहाँ भी देखता हूँ वहीं प्रभु के प्रत्यक्ष दर्शन होते हैं।''

सभ नूरन कर नूर जउ सब तेजन मंह तेज।
रविदास हमारे पीव करि सब सों अदभुत सेज॥ 14॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''मेरा प्रभु प्यारा सारे नूरों का नूर है, सभी ज्योतियों से उसकी ज्योति है। सभी तेजों में उसका तेज है और महान तेजस्वी है। मेरे प्रीतम के मिलने का स्थान भाव प्रकाशमयी रूपी सेज संसार की सभी सेजों से अद्भुत और आनन्दमय है।''

रविदास जगत मंह राम सम कोउ नांहि उदार।
गनी गरीब नवाज प्रभु दीनन के रखवार॥ 15॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''मेरे प्रभु के समान सब का भला करने वाला संसार में कोई दूसरा कृपालु नहीं है। वह बड़ा दयालु और धनी है, गरीबों को निवाजने (मान-देने) वाला और रक्षक है।''

मन मन्दिर में पी बसै

काबे अरु कैलास मांहि जिह कूं ढूढण जांह।
रविदास पिआरा राम तउ बैठ रहा मन मांह॥ 16॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,''हे जीव! जिस प्रभु को तू काबे और कैलाश पर ढूंढने के लिए जाता है, वह प्रभु प्यारा तेरे मन में विद्यमान् है। तुम उसकी खोज बाहर भटकने की बजाए अपने भीतर ही करो।''

बाहर खोजत का फिरइ घट भीतर ही खोज।
रविदास उनमनि साधिकर देखहु पिआ कूं ओज॥ 17॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे जीव! तू प्रभु को बाहर क्यों खोज रहा है? वह तो तेरे मन रूपी मंदिर में विद्यमान् है। इस लिए उस प्रभु की तू अपने भीतर ही खोज कर। जिस समय समाधि लगा कर उस प्रभु की खोज करेगा तो तू आत्मिक स्थिर अवस्था में पहुँच कर उस प्रभु के प्रकाश का दर्शन कर लेगा।''

बन खोजइ पिआ न मिलहिं बन मंह प्रीतम नांहि।
रविदास पिआ है बसि रह्यो मानव प्रेमहि मांहि॥ 18॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''जंगल में ढूँढने से प्रभु की प्राप्ति नहीं होती क्योंकि वह प्रभु जंगलों में नहीं मिलता वह प्रभु तो हर जीव में बस रहा है। इस लिए मानव से प्रेम करके ही उसकी प्राप्ति होती है।''

बन खोजन का जाइ रे राम अलोपा नांहि।
सर्व बिआपी राम तौ रविदास सभन कै मांहि॥ 19॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे जीव! जंगल में प्रभु को ढूँढने के लिए क्यों जाते हो, वह प्रभु केवल जंगल में अलोप नहीं हुआ। प्रभु तो सर्वव्यापक है और वह सब में भाव कण-कण में विद्यमान है।''

राघो क्रिसन करीम हरि राम रहीम खुदाय।
रविदास मेरे मन बसहिं का खोजहूँ बन जाय॥ 20॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु को राघव, कृष्ण, हरि, करीम, राम, रहीम, खुदा आदि अनेक नामों से पुकारा जाता है। पर सर्वव्यापी प्रभु मेरे मन में ही बसता है। प्रभु को जंगलों में जाकर खोजने की आवश्यकता नहीं है। उस प्रभु की खोज अपने भीतर ही करनी चाहिए।''

ओंकार सत्तनाम

ओंकार है सत्तनाम आदि जुगादि सभ सति।
रविदास सत्त कहि सामुंहे टिकवै नांहि असति॥ 21॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि,''एक ओंकार का नाम ही सत्य नाम है जो कि आदि से और युगों-युगान्तरों से सत्य है। उस सत्य प्रभु के सामने असत्य टिक नहीं सकता भाव उस सत्य प्रभु के नाम के आगे असत्य रूपी माया का नाश हो जाता है।''

जौ लौ घट मंहि परान हैं तौलों जपउ सत्तनाम।
रविदास परम पद पाइहिं जिन्ह घटि बसियो राम॥ 22॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हे जीव! जब तक तेरे शरीर में प्राण है तब तक तू सतनाम का जाप कर। सतनाम का जाप करने से तुम्हारे भीतर जो प्रभु निवास करता है उसकी प्राप्ति कर तू परम पद को प्राप्त कर ले।''

सति ईश कहुं रूप है मति सकति अत अपार।
रविदास सत्त धारणा देइहिं पाप निबार॥ 23॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''सत्य तो प्रभु का ही रूप है और सत्य की शक्ति अनंत है। सत्य को धारण करने से ही सब पापों का नाश हो जाता है।''

सत्त सक्ति सों होत है सभ पापन का नास।
बधिरा सत्त सों बोध लेइ सत्त भाषै रविदास॥ 24॥

''सत्य एक महान् शक्ति है जो पापों का नाश कर देती है। हे प्रभु को भूले हुए बहरे जीव! तू सत्य की पहचान कर उस प्रभु से जुड़ कर ज्ञान प्राप्त कर ले।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मैं यह सत्य कहता हूँ।''

रविदास सत्त इक नाम है आदि अंत सचु नाम।
हनन करेइ सब पाप ताप सत्त सुखन करि खान॥ 25॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं, ''सत्य प्रभु का एक नाम है। आदि से लेकर अंत तक सत्‌नाम है। यह जीवों के सारे पापों और तीन तापों को नष्ट कर देता है और सुखों की खान है।''

जिन्ह नर सत्त तिआगिया तिन्ह जीवन मिरत समान।
रविदास सोई जीवन भला जहं सभ सत्त परधान॥ 26॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जिस जीव ने सत्य को त्याग दिया है वह जीते जी ही मरे हुए के समान है। उस जीव का जीवन ही श्रेष्ठ है जो सभी तरह सत्य को प्रमुख मानता हुआ प्रभु का सिमरन करता है।''

रविदास सत्त मति तिआगिए जौ लौं घट मंहि प्रान।
सत्त भ्रिस्ट करि जगत मंहि सदा होत अपमान॥ 27॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हे जीव! जब तक तेरे

शरीर में प्राण है तब तक सत्य को नहीं त्यागना चाहिए। सत्य को त्याग करने वाले जीव का संसार में सदा अपमान होता है।''

कायम दायम राम इक दोयम सत्त इमान।
रविदास राम अरु सत्त बिन बिरथा सभ कछु जान॥ 28॥

''एक प्रभु ही सदैव रहने वाला है और दूसरा सच्चाई और ईमान।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''प्रभु और सच्चाई के बिना सब कुछ व्यर्थ है।''

रविदास सत्त करि आसरे सदा सत्त सुख पाय ।
सत्त इमान नहिं छांडिए जग जाय तउ जाय॥ 29॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''सच्चे प्रभु के सहारे जीव हमेशा सच्चा सुख पाता है। जीव को सच्चा ईमान नहीं छोड़ना चाहिए चाहे संसार के सभी प्राणी नाराज़ क्यों न हो जाए भाव चाहे सारा संसार नाराज़ हो जाए जीव को सच्चाई का रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए।''

रविदास सत्त मत छाडिए जौ लौं घट में प्रान ।
दूसर कोउ धरम नांहि जग मंहि सत्त समान॥ 30॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को कभी भी सच का त्याग नहीं करना चाहिए, जब तक जीव के अंदर प्राण है। सत्य के बिना संसार में कोई दूसरा धर्म नहीं जो सच के समान हो।''

अंतकरन अनभउ करहि तउ मानहु सब सत्त ।
रविदास निज अनुभउ मंहि सत्त मंहि जानिहं सत्त॥ 31॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जब जीव अपने अंत:करण में प्रभु को अनुभव करता है तो जीव को परम-सत्य का ज्ञान होता है। जीव उस प्रभु के अनुभव से ही सत्य में जो परम-शक्ति है उसे जान लेता है।''

जहं अंध विश्वास है सत् पुरख तंह नाहिं।
रविदास सत् सोई जानिहै जौ अनभउ होइ मन मांहि॥ 32॥

''जिस जीव के मन में अंधविश्वास होता है वह सत्य पुरख को नहीं मिल सकता।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''सत्य पुरख प्रभु की प्राप्ति तो मन में सत्य का अनुभव करने से ही होती है।''

जो नर सत्य न भाषहिं करहिं बिश्वासघात।
तिन्हहुं सो कबहुं भुलिहि रविदास न कीजहि बात॥ 33॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"जो जीव सच नहीं बोलते और दूसरों के साथ विश्वासघात करते हैं ऐसे जीवों के साथ कभी भूलकर भी नहीं बोलना चाहिए।"

जउ नाहीं था सरिस्टि मांहि सोउ होइहि नांह।
रविदास इस्ट सर्वत्त है रहइ सरिस्टिहिं मांह॥ 34॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"अगर प्रभु सृष्टि के आरम्भ में नहीं था तो उसकी उपस्थिति अब भी नहीं होनी चाहिए पर वह सब का ईष्ट प्रभु सृष्टि के आदि में भी था, अब भी है, और आगे भी रहेगा भाव वह सृष्टि में सदैव विद्यमान् है।"

रविदास मदुरा का पीजियै जो चढ़े चढे उतराय।
नाम महारस पीजियै जौ चढ़े नांहि उतराय॥ 35॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज जीवों को झूठे नशे मदिरा इत्यादि का त्याग करने का उपदेश देते हैं कि,"हे जीवों! मदिरा का क्या पीना? जिसके बार-बार पीने से नशा चढ़ कर उतर जाता है। प्रभु के नाम रुपी महा-रस भाव श्रेष्ठ रस को पीना चाहिए जो एक बार चढ़ जाता है तो उतरना ही नहीं।"

अंतर्मुखी भइ जउ करहिं सत्तनाम करि जाप।
रविदास तिन्ह सौं भजहुहिं भागहि तीन्हहु ताप॥ 36॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"जो जीव अंतर्मुखी होकर अपने मन में सत्य नाम का जाप करता है, उससे संसार के तीन ताप आधि, व्याध और उपाधि दूर चले जाते हैं।"

इडा पिंगला सुखम्णा बिध चक्र प्रणायाम।
रविदास हौं सबहि छांड़ियों जबहि पाइहु सत्तनाम॥ 37॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"जो जीव इड़ा, पिंगला, सुष्मना नसों और प्राणायाम द्वारा विधि चक्रों के घेरे को छोड़ कर सत्य नाम का सिमरन करता है उसको प्रभु की प्राप्ति हो जाती है।"

इक चिंता सत्त नाम की दरसाइहु परम तत्त।
सहज परम भगति भई रविदास पाइहि ब्रह्म सत्त॥ 38॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,"मुझे चिंता केवल सत्य नाम के सिमरन करने की है जो परम तत्व प्रभु से मिलाता है। ऐसी सहज अवस्था रूपी भक्ति को प्राप्त कर मुझे पारब्रह्म की प्राप्ति हो गई है।"

रविदास अराधहु देवकू इकमन हुइ धरि ध्यान।
आजपा जाप जपत रहहु सत्तनाम सत्तनाम॥ 39॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे जीव! प्रभु की आराधना करो। एक चित्त होकर उसका ध्यान धरो। उस प्रभु के सतनाम का सिमरन करने से तुम में अजपा भाव सतनाम का जाप करने की धुन हर समय चलती रहेगी।''

जा देख्या घिन ऊपजै नरक कुंड मंहि बास।
प्रभु भगति सों ऊधरै प्रगटत जन रविदास॥ 40॥

''जिस जीव के खोटे कर्मों को केवल देखने से ही घृणा पैदा होती है। उस जीव का नरक कुण्ड में निवास होता है। पर प्रभु की प्रेम-भक्ति करने से बुरे कर्मों का नाश होता है और जीव का कल्याण होता है।'' सतगुरु रविदास महाराज जी फरमाते हैं कि, ''प्रभु के प्रेमी संसार में उजागर हो जाते हैं।''

हरि सो हीरा छांडि कै करै आन की आस।
ते नर जमपुर जांहिगे सत भाषै रविदास॥ 41॥

''जो जीव संसार में सबसे अमूल्य हीरे से भी श्रेष्ठ प्रभु के नाम रूपी हीरे को छोड़कर कोई और इच्छा रखता है तो वह जीव नरक में जाता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''मैं यह सत्य कहता हूँ।''

रविदास मानुष जन्म मह हौं चितंउ गुरु एक।
आदि अंत जो सतगुरु राखै सभन की टेक॥ 42॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि,''मैं मनुष्य जन्म में एक प्रभु (गुरु) का ही सिमरन करता हूँ। सृष्टि के आदि से लेकर अंत तक सदैव रहने वाला प्रभु ही मेरा सत्गुरु है और वह सभी का रक्षक है।''

ब्रह्म बूंद

रविदास लोरै जिस बूंद कूं सो बूंद समुंद समान।
अंतर खोजी कूं मिलइ ब्रह्म बूंद को ग्यान॥ 43॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज जीवों को पावन उपदेश देते हैं कि, ''हे जीव। जिस प्रभु के नाम रूपी अमृत बूंद के लिए तू खोज करता है उस प्रभु के नाम की एक बूंद समुद्र के तुल्य है। जिसकी कोई सीमा नहीं है, अपने अंदर प्रभु की खोज करने से ब्रह्मानन्द रूपी अमृत बूंद का ज्ञान होता है।''

इक बूंद सौं बुझ गई जनम जनम की प्यास।
जनम मरन बंधन टूटई बये रविदास खलास॥ 44॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''ब्रह्म आनन्द रूपी अमृत की एक बूंद से ही जीव के जन्म जन्मांतरों की प्यास बुझ जाती है, जिस से जीव के जन्म-मरण रूपी बँधन टूट जाते हैं और जीव मुक्त हो जाता है।''

अमरित रस इक बूंद कू तलफत हौं दिन रैन।
रविदास अमीरस बिन पियै जियरा न पावै चैन॥ 45॥

''प्रभु के ब्रह्म आनन्द रूपी अमृत के रस की एक बूंद के लिए मेरा मन दिन-रात व्याकुल रहता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जब तक वह अमृत रस की बूंद मुझे प्राप्त नहीं हो जाती तब तक मेरे मन को सुख नहीं मिलेगा। भाव मेरा मन बेचैन रहता है।''

एकै माटी के सब भांडे

एकै माटी के सभ भाडे एकौ सिरजनहारा।
रविदास ब्यापै एकौ घट भीतर एकै घडै कुम्हारा॥ 46॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जैसे एक कुम्हार एक ही मिट्टी से अनेक तरह के बर्तन तैयार करता है, ऐसे ही संसार के सब जीवों को एक ही मिट्टी भाव पाँच तत्वों आकाश, वायु, अग्नि, जल और धरती से एक सिरजनहार प्रभु ने पैदा किया है। सब जीवों में प्रभु विद्यमान् है। सब जीवों को बनाने वाला एक ही प्रभु है, इस लिए संसार के सभी जीव एक समान है।''

रविदास उपिजेइ इक बूंद ते का ब्राह्मन का सूद।
मूरिख जन न जानइ सभ मंहि राम मजूद॥ 47॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि,''सारे संसार के जीव प्रभु की एक बूंद से पैदा हुए हैं चाहे वह ब्राह्मण है या शूद्र, पर मूर्ख जीव इस बात को नहीं जानते कि संसार के सब जीवों में प्रभु विद्यमान् है। इस लिए सब जीव समान हैं।''

रविदास इक ही बूंद सों सब ही भयो वित्थार।
मूरिख है जो करत हैं बरन अबरन बिचार॥ 48॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''एक ही ब्रह्म बूंद से सारे संसार की रचना हुई है। सारा ब्रह्माण्ड उस प्रभु का विस्तार है। इस लिए संसार के सभी जीव समान हैं, पर वह जीव मूर्ख हैं जो वर्ण-अवर्ण, इत्यादि भेद-भाव और ऊँच-नीच की विचार करते हैं।''

इक जोति से जउ सभ उपजैं तउ ऊंच नीच किस मान।
रविदास नाम कत धरै कहुं को नाद बिंद है समान॥ 49॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु की एक ज्योति से संसार के सब जीव पैदा हुए हैं तो जीवों को ऊँचा-नीचा क्यों समझा जाए? जीव से ऊँच-नीच का भेद-भाव क्यों किया जाता है? जबकि सभी जीवों के अंग एक समान है।''

रविदास एकै ब्रह्म का होइ रहो सगल पसार।
एकै माटी सब घट सृजै एकै सभ कू सरजनहार॥ 50॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''एक ब्रह्म का सारे संसार में विस्तार हो रहा है। एक ही मिट्टी से सब बर्तन बने हैं भाव संसार के सभी जीव पाँच तत्वों से बने हैं। सब जीवों की रचना करने वाला एक ही सृजक अर्थात् प्रभु है।''

रविदास एक ही नूर ते जिमि उपज्यो संसार।
ऊंच नीच किह बिध भये बाह्मन अरु चमार॥ 51॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''प्रभु के एक ही नूर से सारे संसार की उत्पत्ति हुई है और सभी प्राणियों में उस प्रभु की ज्योति है तो किस प्रकार से ब्राह्मण और चमार में ऊच नीच का भेद हो सकता है? भाव ब्राह्मण और चमार अर्थात् सभी जीव एक समान हैं।''

रविदास ऐक ब्रह्म बूंद सों सगल पसारा जान।
सभ उपज्यो इक बूंद सों सब ही एक समान॥ 52॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''हे जीव! एक प्रभु की बूंद से सारे संसार के पासारे को जान क्योंकि सब जीव प्रभु की एक ज्योति से पैदा हुए हैं और सब जीव एक समान हैं।''

ब्राह्मन अरु चंडाल मंहि रविदास न अंतर जान।
सभ मेहि एक ही जोति है सभ घट एक भगवान॥ 53॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''ब्राह्मण और चण्डाल में कोई भेद नहीं है। सब जीवों में एक ही प्रभु की ज्योति समाई हुई है और सभी में उसका वास है।''

इक नजिर सों सभकू देखे सरिस्टि का सिरजनहारा।
सब घट ब्यापक अलख निरंजन कहि रविदास चमारा॥ 54॥

''सृष्टि का सृजक प्रभु सब जीवों को समान दृष्टि से देखता है, भाव सब को एक समान देखता है। वह प्रभु अलिख है जो लिखा नहीं जा सकता, निरंजन-माया से मुक्त कण-कण में व्यापक है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''मैं चमार यह कथन करता हूँ।''

सब में नूर है एक प्रभु का

सभ मंहि एकु रामह जोति एकहि सिरजनहारा॥
रविदास रामहि सभन मंहि बाह्मन हुई क चमारा॥ 55॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''सब जीवों में एक प्रभु की ज्योति है और सभी की सृजना करने वाला भी एक प्रभु ही है। वह प्रभु सब जीवों में बसा हुआ है चाहे कोई ब्राह्मण हो या चमार भाव सभी मानव समान है।''

रविदास जो करता सरिस्टि का वह तो करता एक।
सभ मंहि जोति सरुप एक काहे कहूं अनेक॥ 56॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''सारी सृष्टि की रचना करने वाला प्रभु एक ही है और केवल उसी की ज्योति का स्वरूप ही सभी में विद्यमान् है। फिर उसको अनेक कैसे कहा जा सकता है भाव प्रभु एक से अनेक रूप धारण कर सारे संसार में समाया हुआ है।''

रविदास हौं देख्या सोधि कर साहिब भेष अनंत।
एकै आतम घट घट रमै सब दिसि एकउ भगवंत॥ 57॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते है कि, ''मैंने पूरी तरह जाँच-परख कर देखा है कि उस साहिब के रूप अनंत है और वह एक प्रभु अनेक रूप धारण कर घट-घट में रमा हुआ है। सब दिशाएं भाव हर तरफ वह एक प्रभु ही विराजमान है।''

एक प्रभु के नाम अनेक

आद अंत जिह कर नहीं जिह कर नाम अनंत।
सभ करि पालनहार है रविदास अबिगत भगवंत॥ 58॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''उस प्रभु का आदि और अंत नहीं जाना जा सकता। उसके अनेकों नाम हैं। सब की पालना करने वाला अविनाशी प्रभु है।''

रविदास एक जगदीस कर धरै अनंतह नाम।
मोरे मन में बसि रह्यो अधिमन पावन राम॥ 59॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं, ''एक जगदीश प्रभु को अनेक नामों से याद किया जाता है। मेरे मन में पापों को पवित्र करने वाले ऐसे प्रभु का नाम बस रहा है।''

रविदास हमारो सांइयां राघव राम रहीम।
सभ ही राम को रुप हैं केसो क्रिसन करीम॥ 60॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वह प्रभु हमारा स्वामी है जिस को राघव, राम और रहीम भी कहा जाता है। संसार के सभी जीवों में प्रभु के रूप विद्यमान् हैं ऐसे प्रभु को केश्व, कृष्ण, करीम इत्यादि अनेक नामों से याद किया जाता है।''

रविदास कोउ अल्लह कहइ कोउ पुकारइ राम।
केसउ क्रिसन करीम सभ माधउ मुकंदहु नाम॥ 61॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''उस प्रभु को कोई अल्लाह और कोई राम कह कर पुकारता है और उसको कृष्ण, करीम, माधो, मुकुंद इत्यादि सभी नामों से स्मरण किया जाता है।''

सामी सिरजनहार है राम रहीम खुदाय।
रविदास हमारो मोहना पावन केसो राय॥ 62॥

''प्रभु ही सारे संसार का सृजक है। उसको राम, रहीम, खुदाय इत्यादि नामों से स्मरण किया जाता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि, ''हमारा सुंदर प्रभु सब को मोहने वाला पापियों को पवित्र करने वाला पावन है।''

अलख अलह खालिक खुदा क्रिस्न करीम करतार।
रामह नांउ अनेक हैं कहै रविदास बिचार॥ 63॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार के फरमाते हैं कि, ''मैंने विचार करके यह जाना है कि उस प्रभु को अलख, अल्लाह, कृष्ण, करीम, करतार और राम इत्यादि अनेक नामों से याद किया जाता है। उस प्रभु के नाम अनेक हैं।''

संकट में सहारा प्रभु

जब जब फैलेइ जगत मंहि कुड़ पाप अंधिकार
तब तब राखै हत्थ देई रविदास इक राम हमार॥ 64॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जब-जब भी संसार में झूठ, पाप और अंधकार फैल जाता है, तब-तब ही झूठ, कपट, पाप और अंधकार को दूर करने के लिए मेरा सर्वव्यापक प्रभु संसार की हाथ दे कर रक्षा करता है।''

रविदास आस इक राम की अरु न करहु कोउ आस।
राम छोड़ि औरन रमिहँइ रहंइ सदा निरास॥ 65॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मेरा भरोसा तो केवल एक प्रभु पर ही है और उसके अलावा और किसी पर भी मुझे भरोसा नहीं है। जो जीव प्रभु को छोड़कर किसी दूसरे देवी-देवता की उपासना करते हैं वे सदा निराश रहते हैं।''

प्रभु मिलन की जुगती

माथै तिलक हाथ जप माला जग ठकने कूं स्वांग बनाया।
मारग छांडि कुमारग डहिकै सांची प्रीत बिन राम न पाया॥ 66॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज आडम्बरों का विरोध करते हुए पावन उपदेश देते हैं कि, ''अगर कोई जीव माथे ऊपर तिलक लगाकर और हाथ में माला पकड़ कर संसार के लोगों को ठगने का ढोंग रचाये तो वह जीव प्रभु के सच्चे मार्ग को छोड़ कर कुमार्ग पर चल कर भटकता रहता है। उसको सच्ची प्रीति के बिना आडम्बरों से प्रभु की प्राप्ति नहीं होती।''

देहरा अरु मसीत मंहि रविदास न सीस निवाय।
जिह लौं सीस निवावना सो ठाकुर सभ थाय॥ 67॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''देहुरा और मस्जिद में जाकर शीश नहीं झुकाना। जिस प्रभु, ठाकुर या अल्लाह को देहुरा या मस्जिद में विद्यमान् समझ कर शीश झुकाया जाता है वह प्रभु या खुदा तो सब जगह सर्व-व्यापक है, भाव कण-कण में विराजमान है।''

रविदास न पुजइ देहरा और न मसजिद जाय।
जंह तंह इस का बास है तंह तंह सीस निवाय॥ 68॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मैं न देहरा में बैठ कर पूजा

करता हूँ और न ही मस्जिद में जाकर शीश झुकाता हूँ। जहाँ-जहाँ प्रभु या अल्लाह का वास है वहाँ-वहाँ मैं शीश झुकाता हूँ वह प्रभु सर्व-व्यापक है भाव प्रभु का वास हर तरफ है, मैं उसके हर तरफ दर्शन करता हूँ।''

हिंदू पूजइ देहरा मुसलमान मसीति।
रविदास पूजइ राम कू जिह निरंतर प्रीति॥ 69॥

''हिन्दू देहुरा में जाकर पूजा करते हैं और मुसलमान मस्जिद में जाकर निमाज़ गुज़ारते हैं।'' लेकिन सत्गुरु रविदास जी महाराज कहते हैं कि, ''मैं उस प्रभु की पूजा करता हूं जो सब जगह व्यापक है। उसके साथ मेरा निरन्तर प्रेम है। उस प्रभु को केवल मन्दिर और मस्जिद तक सीमित नहीं किया जा सकता।''

प्रेम पंथ की पालकी रविदास बैठियो आय।
सांचे सामी मिलन कू आनंद कह्यो न जाय॥ 70॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि, ''मैं प्रभु की प्रेम रूपी मार्ग की पालकी में आकर बैठ गया हूँ और उस सच्चे मालिक प्रभु से मिलन का आनंद ब्यान नहीं कर सकता।''

रविदास मेरो मन लागियो राम प्रेम को तीर।
राम रसायन जउ मिलहिं तउ हरै हमारी पीर॥ 71॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मेरे मन में प्रभु का प्रेम रूप तीक्ष्ण तीर लगा हुआ है भाव मेरे मन में प्रभु को मिलने की तीव्र इच्छा है। जब मुझे राम रसायन भाव प्रभु की नाम रूपी दवाई मिल गई तो उस से मेरी वियोग रूपी पीड़ा खत्म हो गई।''

का मथुरा का द्वारिका का कासी हरिद्वार।
रविदास खोजा दिल आपना तउ मिलिया दिलदार॥ 72॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''सच्चे प्रेम के बिना चाहे जीव क्या मथुरा, क्या द्वारिका, क्या काशी, क्या हरिद्वार चाहे सभी तीर्थों का भ्रमण कर ले पर प्रभु की प्राप्ति नहीं होती। जब जीव श्वास-श्वास प्रभु का सिमरन करता हुआ अपने हृदय में प्रभु की खोज करता है तब इसे दिलदार प्रभु की प्राप्ति हो जाती है।''

तुरुक मसीति अल्लह ढूंढइ हिंदु देहरे गुसांई।
रविदास ढूंढिया राम कू जंह मसीत देहरा नाही॥ 73॥

''मुसलमान अपने अल्लाह की तलाश मस्जिद में करते हैं और हिन्दू

अपने राम की तलाश देहुरे में करते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मैंने उस राम-रहीम प्रभु को अपने मन में ही खोजा है जहां केवल देहुरा और मस्जिद नहीं है भाव हर तरफ व्याप्त है।''

देता रहे हज्जार बरस मुल्ला चाहे अजान।
रविदास खुदा नंह मिल सकइ जौ लौं मन शैतान॥ 74॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''खुदा से सच्ची प्रीत के बिना चाहे मुल्ला हज़ारों साल बांग देता रहे वह अज्ञानी ही है। जब तक उसके मन में शैतान है तब तक उसको खुदा की प्राप्ति नहीं हो सकती।''

जउ अल्लाह बसहिं मसीत मंह मंदिर मंह भगवान।
रविदास खोजियो दिल आपनो तिन्ह पायो रहमान॥ 75॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''यदि खुदा मस्जिद में बसता है तो फिर मन्दिर में भगवान् क्यों नहीं? भाव अल्लाह एक है और सर्वव्यापक है। वह हर जीव के भीतर है। जब जीव प्रभु की खोज अपने भीतर से करता है, तब उसको जीवों पर रहम करने वाले रहमान की प्राप्ति हो जाती है।''

जौ खुदा पच्छिम बसै तो पूरब बसत है राम।
रविदास सेवौं जिह ठाकुरो तिह का ठांव न नाम॥ 76॥

''अगर मुस्लिम का खुदा पश्चिम दिशा भाव काबा में है तो हिन्दुओं का राम पूर्व में बसता है। परन्तु सतगुरु रविदास महाराज जी जिस ठाकुर की पूजा करते हैं उसका न कोई विशेष स्थान और न कोई विशेष नाम है। वह प्रभु हर जगह विद्यमान् है और सर्व-व्यापक है। उसके अनेकों नाम हैं।''

शब्द - सुरत जब मिल गये

सुरत शब्द जउ एक हों तउ पाइहिं परमानंद।
रविदास अंतर दीपक जरई घट उपजई ब्रह्मनंद॥ 77॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जब दसवें द्वार पर ध्यान टिका कर प्रभु के नाम भाव शब्द का सिमरन किया जाता है तो शब्द और सुरति का मिलन हो जाता है, तब जीव को परम आनंद की प्राप्ति होती है। जिस जीव के अंदर ब्रह्म ज्ञान का दीपक जल उठता है तो उसको अपने अंदर में से ही ब्रह्मानन्द की प्राप्ति हो जाती है।''

रविदास सब्दह सह जबहि सुखिहु इकमिक होई।
अनुभूति सत्तनाम स्वयं देतहिं लोई॥ 78॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जब प्रभु के नाम में सुरित शब्द एक हो जाते हैं तब उस ध्यान में लीन अवस्था में सत्नाम का अनुभव होने लगता है। फिर जीव के अंदर प्रभु की ज्योति अपने आप जल पड़ती है।''

ओंकार को ध्यान मंहि जौ लौ सुरति न होय।
तौ लौं सांचे ब्रह्म कूं रविदास न बूझइ कोय॥ 79॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जब तक ओंकार के ध्यान में जीव की सुरति नहीं जुड़ती तब तक वह उस सच्चे बह्म को जान नहीं सकता भाव उस प्रभु की प्राप्ति सुरति-शब्द के मेल से होती है। जब जीव की सुरति प्रभु से जुड़ जाती है तब जीव को उसकी प्राप्ति हो जाती है।''

रविदास दिआ जगमग जरई बिन बाती बिन तेल।
सुरत साधि कर हिय मंहि देख पिया के खेल॥ 80॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''प्रभु का नाम रुपी दीया बाती और तेल के बिना सारी सृष्टि में जगमगा रहा है। सुरति को सोध कर प्रभु के नाम से जोड़ कर अपने अंदर ही उस प्रभु के अद्भुत खेल को देख भाव उस प्रभु की ज्योति के दर्शन कर।''

रविदास सुरत कूं साधि कर मोहन सों कर पिआर।
भौ जल कर संकट कटंहि छुटंहि बिघन बिकार॥ 81॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हे जीव! तू अपनी सुरति को सोध कर उस प्रभु से जोड़ कर उस प्यारे प्रभु से सच्चा प्यार कर। संसार रूपी भवसागर में तेरा जन्म मरण रूपी संकट कट जाएगा और रास्ते में आने वाले विघ्नों और विकारों का नाश हो जाएगा।''

जीवन-मरन

जीवन जोति कैसे जगि कैसे होइ अंत।
रविदास मनुष न जानंहि जानत हैं भगवंत॥ 82॥

''जीवन रूपी ज्योति किस प्रकार जगी है और किस प्रकार यह बुझेगी भाव किस प्रकार जीव को जीवन मिला है और किस तरह इसका अंत होगा? सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि इस रहस्य के बारे में मनुष्य नहीं जानता, केवल प्रभु ही इस रहस्य को जानता है।''

रविदास जन्मे कउ हरस का मरने कउ का सोक।
बाजीगर के खेल कूं समझत नाही लोक॥ 83॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''किसी के जन्म की क्या खुशी और किसी के मरने का शोक क्या? जन्म और मृत्यु तो उस बाज़ीगर अर्थात् प्रभु का खेल है, पर अज्ञानी लोग इस बात को नहीं जानते।''

सोइ साधु भलो

रविदास सोइ साधु भलो जउ जग मंहि लिपत न होय।
गोबिंद सों रांचा रहइ अरु जानंहि नंहि कोय॥ 84॥

सतगुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''वह साधु उत्तम है जो संसार में रहता हुआ भी संसार में लिप्त नहीं होता। प्रभु के नाम में लीन रहता है और उस प्रभु के बिना और किसी को भी संसार में नहीं जानता भाव सब प्राणियों में प्रभु को अनुभव करता है। किसी और देवी-देवता की पूजा नहीं करता।''

रविदास सोइ साधु भलो जउ मन अभिमान न लाय।
औगुन छांडहि गुन गहइ सिमरइ गोविंद राय॥ 85॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वही साधु उत्तम है जो मन में अहंकार नहीं करता। जो अवगुणों को छोड़कर गुणों को ग्रहण करता हुआ केवल प्रभु का स्मरण करता है।''

रविदास सोइ साधु भलो जउ रहइ सदा निरवैर।
सुखदाई समता गहइ सभनह मांगहि खैर॥ 86॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''साधु तो वही उत्तम है जो हमेशा वैर-रहित रहता है। सब के लिए सुख और समानता चाहता है और प्रभु से सभी का सुख माँगता है।''

रविदास सोइ साधु भलो जउ अपन न जताय।
सत्तवादी सांचा रहइ मन हरि चरनन मंह लाय॥ 87॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वह साधु उत्तम और सत्यवादी है जो अपनी प्रशंसा न कर प्रभु की प्रशंसा करता है। सदैव सत्य पर चलकर अपने मन को हरि के चरणों से जोड़कर रखता है।''

रविदास सोइ साधु भलो जिह मन निर्मल होय।
राम भजहि विषया तजहि मिथ भाषी न होय॥ 88॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "वही साधु श्रेष्ठ है जिसका मन माया से मुक्त है। वो साधु विकारों को त्याग कर हर समय प्रभु के सिमरन में लीन रहता हुआ झूठे संसार में लिप्त नहीं होता और झूठ नहीं बोलता।"

रविदास सोइ साधु भलो जउ जानहि पर पीर।
पर पीरा कहुं पेखि के रहवे सदहि अधीर॥ 89॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "वह साधु उत्तम है जो दूसरों की पीड़ा को अनुभव करता है, दूसरों की पीड़ा को देख कर बेचैन हो जाता है और उस पीड़ा को दूर करने के लिए व्याकुल रहता है।"

रविदास सोइ साधु भलो जो पर उपकार कमाय।
जइसोइ कहहि वइसोइ करहि आपा नांहि जताय॥ 90॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "वह साधु उत्तम है जो हमेशा दूसरों पर उपकार करता है, जो जैसा कहता है वैसा ही करता है भाव जिसकी कथनी और करनी में कोई अंतर न हो और जो स्वयं को प्रदर्शित न करे कि मैं साधु हूँ।"

रविदास सोइ साधु भलो जो निहकपट निरपच्छ।
छमासील अरु सरल मनह बाहर भीतर स्वच्छ॥ 91॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "वही साधु उत्तम है जो अपने मन में कपट और पक्षपात् की भावना न रखता हो। जो क्षमा करने वाला और सरल स्वभाव का हो, जो बाहर और भीतर से निर्मल हो।"

रविदास सोइ साधु भलो निर्मल जाके बैन।
जिह करि दरस औ परस सों मन उपजहि सुख चैन॥ 92॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "वह साधु ही उत्तम है जिसके वचन निर्मल हैं। जिसके दर्शन और चरण स्पर्श करने से ही जीव को मन में सच्चा सुख और आनंद प्राप्त हो।"

रविदास सोइ साधु भलो जउ हंसा गति होय।
काम करम सभ छांड़ि कर राम भजन में खोय॥ 93॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "वह साधु उत्तम है जिसका व्यवहार हंस जैसा हो। जैसे हंस मानसरोवर में से मोती चुन कर खाता है और पानी

एवं दूध में अंतर करना जानता है, वैसे ही साधु प्रभु के आनन्द रुप सच्चे मोती को ग्रहण करता है। काम आदि कर्मों को छोड़कर सदैव प्रभु में लीन रहता है।''

रविदास सोइ साधु भलो जिह मन बसइ जगदीस।
रहइ ओट ओंकार की बुरो भलो सहइ सीस॥ 94॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वही साधु उत्तम है जिसके हृदय में प्रभु मालक रहता है और सदैव प्रभु के सहारे रहता है। वह संसार की अच्छाई और बुराई को प्रसन्न हो कर सहता है। उसका ध्यान प्रभु के नाम में लीन रहता है।''

रविदास सोइ साधु भलो जौ मनह दोष मिटाय।
उर मंह आप न थापइ तृसना आस जलाय॥ 95॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वह साधु ही उत्तम है जो अपने मन में से विकार रुपी दोष को मिटा देता है और अपने मन से मैं भाव को खत्म कर देता है और तृष्णाओं को खत्म कर प्रभु में लीन रहता है।''

रविदास सोइ साधु भलो जौ साहिब हाथ बिकाय।
साहिब भेंट चढ़ान कउ अपनह सीस कटाय॥ 96॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वही साधु उत्तम है जिसने प्रभु मालिक को सब कुछ सौंप दिया है। जिसने प्रभु के आगे सर्वस्व अर्पण कर अपना शीश प्रभु के चरणों में अर्पण कर दिया है।''

रविदास सोइ साधु भलो जिह मन नांहि अभिमान।
हरस सोक जानइ नहिं सुख दुख एक समान॥ 97॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वही साधु उत्तम है जिसके मन में अहंकार नहीं है। वह खुशी और गम को अनुभव ही नहीं करता भाव दुख और सुख को एक समान समझता हुआ हर समय प्रभु में लीन रहता है।''

रविदास कहै जाके रिदै रहै रैन दिन राम।
सो भगता भगवंत सम क्रोध न ब्यापै काम॥ 98॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जिस जीव के हृदय में रात-दिन भाव हर पल प्रभु बसता है, वह प्रभु का भक्त प्रभु के समान है और उसको क्रोध और संसार की झूठी इच्छाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।''

किरत कमाइ करते हुए प्रभु का सिमरन करना

जिहवा सों ओंकार जप हत्थन सों कर कार।
राम मिलंहि घर आइ कर कहि रविदास बिचार॥ 99॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज सुकृत करने का पावन उपदेश देते हैं कि, ''हे जीव! तू रसना से प्रभु का जाप करते हुए हाथों से किरत कमाई कर ताकि तुझे इस शरीर रूपी घर में ही प्रभु आकर मिले। यह बात मैं विचार कर करता हूँ।''

नेक कमाइ जउ करहि ग्रह तजि बन नंहि जाय।
रविदास हमारो राम राय ग्रह महि मिलिह आय॥ 100॥

''जो जीव घर छोड़ कर, प्रभु की खोज के लिए जंगल में नहीं जाता बल्कि सच्ची किरत कमाई करता हुआ अपने भीतर से ही प्रभु की खोज करता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''उसको मेरा प्रभु घर में आकर ही मिल जाता है।''

ग्रहहिं रहहु सति करम करहु हरदम चिंतहु ओंकार।
रविदास हमारो बांधला हइ केवल नाम अधार॥ 101॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव घर में रहते हुए नेक कर्म करता है और हर समय प्रभु को याद करता है, उसको प्रभु के साथ जोड़ने वाला केवल नाम रूपी आश्रय प्राप्त हो जाता है।''

एक भरोसो राम को अरु भरोसो सत्त कार।
सफल होइहु जीवना कहि रविदास बिचार॥ 102॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मुझे एक भरोसा प्रभु पर है और दूसरा सच्ची किरत करने का है। इस से मेरा जीवन सफल हो गया है। यह बात मैं विचार करके कहता हूं।''

निष्काम कर्म भावना

करम बंधन मंह रमि रह्यो फल कौ तज्यो आस।
करम मनुष को धरम है सत भाषै रविदास॥ 103॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव कर्मों के बंधन में बधा रहता है और फल की आशा त्यागता है भाव निष्काम कर्म करता। श्रेष्ठ कर्म करना ही मनुष्य का धर्म है। मैं यह सच उच्चारण करता हूँ।''

सौ बरस लौं जगत मंहि जीवत रहि करु काम।
रविदास करम ही धरम है करम करौ निहकाम॥ 104॥

''यदि सौ वर्ष की आयु भी जीव को संसार में रहने के लिए मिल जाए तो जीव को संसार में रहकर श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''कर्म ही जीव का धर्म है, इस लिए जीव को निष्काम कर्म करने चाहिए।''

धरम हेतहिं कीजिये सौ बरस लौं कार।
रविदास करमहि धरम है फल मंहि नहि अधिकार॥ 105॥

''सौ वर्ष के जीवन में भी जीव को धर्म के श्रेष्ठ कर्म करने चाहिए।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''कर्म ही श्रेष्ठ धर्म है और ऐसे कर्म जीव का कर्म के फल पर अधिकार नहीं रहता भाव जीव को निष्काम कर्म करने चाहिए।''

धरम समुझि जो कार होइ उह कर फल होइ इस्ट।
रविदास कोउ भी करम फल होहि नांहि अनिस्ट॥ 106॥

''जो जीव अपना धर्म समझ कर निष्काम कर्म करता है उस को मन इच्छुक फल की प्राप्ति होती है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''निष्काम भावना से किया गया कर्म निष्फल नहीं जाता।''

रविदास मनुष कर धरम है करम करहि दिन रात।
करमनहि फल पावना नहीं काहु के हाथ॥ 107॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''दिन-रात जीव शुभ कर्म करता रहे, यही उसका धर्म है। कर्म करने वाले जीव को यह अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि कर्म के फल की प्राप्ति किसी भी जीव के अपने हाथों में नहीं है बल्कि प्रभु के हाथ में है।''

परकिरती परभाउ बस मानुष करत है कार।
मानुष तउ है निमित रुप कहि रविदास बिचार॥ 108॥

''कुदरत के स्वभाव के अनुसार ही जीव कर्म करता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार के फरमाते हैं कि, ''जीव का संसार में आना ही कर्म के निमित्त है। मनुष्य कर्म करने का एक साधन मात्र रूप है।''

करमन ही परभाउ तजि निहकरमी होइ कर काम।
रविदास निहकरमी करम ही मेल कराए राम॥ 109॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को बुरे कर्मों के प्रभाव को छोड़कर निष्काम भाव से कर्म करने चाहिए। निष्काम भाव से किये हुए कर्म ही जीव को प्रभु से मिला देते हैं।''

सुख दुख हानि लाभ कउ जउ समझहि इक समान।
रविदास तिन्हहिं जानिए जोगी पुरुष सुजान॥ 110॥

''जो जीव सुख-दुख, लाभ-हानि सब को एक समान समझता हुआ प्रभु का सिमरन करता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''उस जीव को ही सच्चा संत और सच्चा ज्ञानवान मानना चाहिए।''

करम जोग की साध सों आतम राम सुध होय।
रविदास बिजेता सो भया करम करै जउ कोय॥ 111॥

''जो जीव शुभ कर्म निष्काम भावना से करता हुआ प्रभु का सिमरन करता है उसको शरीर के भीतर बैठे हुए प्रभु का ज्ञान हो जाता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''ऐसा जीव ही संसार में विजय प्राप्त करता है जो शुभ कर्म करता हुआ प्रभु को प्राप्त कर लेता है।''

साधक भांति जोग जुगत करम करहु रविदास।
धरम बोधि कीजहु करम फल की त्यागहु आस॥ 112॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को सच्चे साधक की तरह श्रेष्ठ कर्मों को अपना धर्म समझकर करना चाहिए और धर्म के ज्ञान द्वारा श्रेष्ठ कर्म करते हुए फल की इच्छा त्याग देनी चाहिए।''

राग द्वेष कू छोड़ि कर निहकरम करहु रे मीत।
सुख दुख सभ मंहि थिर रहिं रविदास सदा मन मीत॥ 113॥

''हे मित्र जीव! तू लगाव और द्वेष भावना को छोड़कर निष्काम कर्म करता हुआ दुःख और सुख दोनों अवस्थाओं में अपने मन को स्थिर रखता हुआ प्रभु का सिमरन करेगा तो मेरा मन हमेशा तेरा मित्र बनकर रहेगा।''

जिहवा भजै हरि नाम नित हत्थ करंहि नित काम।
रविदास भए निहचिंत हम मम चिंत करेंगे राम॥ 114॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव नित्य प्रति जिह्वा से हरि नाम सिमरन करता हुआ हाथों से सदा कमाई सुकृत करता है वह जीव निश्चिन्त (चिन्ता-मुक्त) हो जाता है और उसकी चिंता प्रभु स्वयं करते हैं।''

श्रम साधना (नेक कमाई)

रविदास श्रम करि खाइहि जौ लौं पार बसाय।
नेक कमाई जउ करइ कबहुं न निहफल जाय॥ 115॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को मेहनत करके जीवन का गुजारा करना चाहिए, जो सफल होता है। जो जीव नेक कमाई करता है उसकी नेक कमाई कभी भी निष्फल नहीं जाती।''

श्रम कउ ईसर जानि कै जउ पूजहि दिन रैन।
रविदास तिन्हहि संसार मंह सदा मिलहि सुख चैन॥ 116॥

''जो जीव सच्ची किरत कमाई को, प्रभु की पूजा जानकर दिन रात करता है और प्रभु का सिमरन करता है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''उस जीव को हमेशा संसार में सुख और शांति प्राप्त होती है।''

रविदास हौं निज हत्थहिं राखौं रांबी आर।
सुकिरित ही मम धरम है तारैगा भव पार॥ 117॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''मैं सच्ची किरत कमाई करने के लिए हर समय अपने हाथों में रम्बी और आर रखता हूँ और हर समय उस प्रभु का सिमरन करता हूँ क्योंकि नेक कमाई करना ही मेरा धर्म है। इससे ही मैं भवसागर से पार हो गया हूँ।''

प्रभ भगति श्रम साधना जग मंह जिन्हहिं पास।
तिन्हहिं जीवन सफल भयो सत्त भाषै रविदास॥ 118॥

''संसार में जिस जीव के पास प्रभु भक्ति और मेहनत रूपी साधना है उसका जीवन सफल हो जाता है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''मैं यह सच कह रहा हूँ।''

धरम करम दुइ एक हैं समुझि लेहु मन मांहि।
धरम बिना जौ करम है रविदास न सुख तिस मांहि॥ 119॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हे जीव! तू अपने मन में यह समझ ले धर्म और धर्म के अनुसार किये गए कर्म दोनों एक समान हैं, परन्तु जो कर्म धर्म के बिना है उन कर्मों को करने में कभी भी सुख की प्राप्ति नहीं होती। इस लिए जीव को शुभ कर्म करते हुए प्रभु का नाम सिमरन कर अपना जीवन सफल करना चाहिए।''

जात-पाति का खंडन

जन्म जात मत पूछिए का जात अरु पात।
रविदास पूत सभ प्रभ के कोउ नहिं जात कुजात॥ 120॥

''संसार के सभी जीव समान हैं इस लिए किसी भी जीव की जाति नहीं पूछनी चाहिए क्योंकि जीव का जाति-पाति से कोई सम्बन्ध नहीं है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''संसार में सभी जीव एक ही प्रभु के पुत्र है। इस लिए कोई भी जीव ऊँची नीची जाति का नहीं।''

जात पात के फेर मंहि उरझि रहइ सब लोग।
मानुषता कूं खात हइ रविदास जात कर रोग॥ 121॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''भ्रम के कारण लोग जाति-पाति के चक्र में फँसे हुए भटक रहे हैं। जाति-पाति का रोग मानवता को खा रहा है भाव जाति-पाति के भेद के कारण ही संसार के सभी लोग बँटे हुए हैं।''

जनम जात कू छाडि करि करनी जात प्रधान।
इहयौ साचा धर्म है कहै रविदास ब्खान॥ 122॥

''जन्म के आधार पर किसी की जाति को नियत करने के सिद्धांत को छोड़ देना चाहिए क्योंकि जीव के कर्म की ही प्रधानता है भाव जीव अच्छे कर्म करने से ही श्रेष्ठ बनता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज बताते हैं कि, ''यही सच्चा धर्म है कि जीव जन्म या जाति के कारण नहीं, बल्कि कर्म के कारण ऊँचा होता है।''

ब्राह्मन खत्तरी बैस सूद रविदास जनम ते नांहि।
जौ चाहइ सुबरन कउ पावई करमन मांहि॥ 123॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''कोई भी जीव जन्म के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र नहीं होता भाव सभी जीव समान हैं, पर जो जीव शुभ कर्म करता है वह श्रेष्ठ माना जाता है।''

बेद पढ़ई पंडित बन्यो गांठ पन्ही तउ चमार।
रविदास मानुष इक हइ नाम धरै हइं चार॥ 124॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''संसार में जो जीव वेद पढ़ता है, उसको पंडित कहा जाता है और जो जूते गांठता है, उसको चमार कहा जाता है। वास्तव में सारे मनुष्य एक समान हैं पर मानव-विरोधियों ने उनके चार

नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र रख दिये भाव जीवों को चार हिस्सों में बांट दिया है।''

नीच नीच कर मारहिं जानत नहीं नदान।
सभ का सिरजनहार है रविदास ऐके भगवान॥ 125॥

''अज्ञानी निम्न जीवन स्तर के जीवों को नीच-नीच कह कर मारते हैं और उनका अपमान करते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''ऐसे लोग अज्ञानी और नासमझ हैं जो यह नहीं जानते कि सब जीवों का सृजनहार एक ही प्रभु है।''

रविदास जनम के कारन होत न कोउ नीच।
नर कू नीच करि डारि है ओछे करम की कीच॥ 126॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''कोई जीव नीच समझी जाती श्रेणी में जन्म लेने से नीच नहीं होता बल्कि नीच कर्मों के कारण ही कोई नीच होता है। जीव नीच तब ही बनता है जब उस पर बुरे कर्मों का कीचड़ पड़ता है।''

रविदास जाति मत पूछइ का जात का पात।
ब्राह्मन खत्री बैस सूद सभन की इक जात॥ 127॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हे संसार के जीवों! तुम जीव की जाति पाति क्यों पूछते हो? क्योंकि जाति-पाति कुछ भी नहीं है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी की मानव जाती एक है, भाव सब एक समान है।''

जात जात में जात है ज्यों केलन में पात।
रविदास न मानुष जुड़ सकैं जौं लौं जात न जात॥ 128॥

''एक मानव जाति में अनेक जातियां ऐसे पाई जाती हैं जैसे केले के पत्तों के अंदर और पत्ते होते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जब तक जाति-पाति खत्म नहीं होती और भेद-भाव दूर नहीं होता तब तक सभी मानव एक समान नहीं हो सकते। इस लिए जाति-पाति को समाप्त करना चाहिए।''

रविदास ब्राह्मण मति पूजिये जउ होवै गुनहीन।
पूजिहि चरन चंडाल के जउ होवै गुन परवीन॥ 129॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''यदि ब्राह्मण गुणहीन है तो उसकी कभी भी पूजा नहीं करनी चाहिए। इसके विपरीत चंडाल समझे जाते जीव

में यदि अच्छे गुण हैं तो उसके चरण पूजने चाहिए भाव जो जीव संसार में श्रेष्ठ कर्म करता है वह पूज्य बन जाता है।''

ऊँच और नीच कौन?

रविदास सुकरमन करन सों नीच ऊँच हो जाय।
करइ कुकरम जौ ऊंच भी तौ महा नीच कहलाय॥ 130॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''संसार में जाति के कारण कोइ ऊँचा या नीचा नहीं है बल्कि कर्मों के कारण है। जिस जीव को सांसारिक लोग भ्रम के कारण नीच जाति में पैदा हुआ समझते हैं जब वह पवित्र कर्म करता है तो वह ऊँचा हो जाता है। अगर कोई ऊँची समझी जाति में जन्म लेकर बुरे कर्म करता है तो वह महानीच कहलाता है।''

दया धर्म जिन्ह में नहिं हिरदै पाप को कीच।
रविदास तिन्हहिं जानि हो महा पातकी नीच॥ 131॥

''जिन लोगों के मन में दया और धर्म नहीं है उनके मन में पाप का कीचड़ भरा पड़ा है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वह लोग महापापी और नीच समझे जाते है।''

जिन्ह करि हिरदै सत बसई पंच दोष बसि नांहि।
रविदास तौ नर ऊच भये समुझि लेहु मन मांहि॥ 132॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जिन जीवों के मन में सत्य निवास करता है और पांच विकार नहीं हैं, हे भाई! तू अपने मन में इस बात को समझ ले कि वो जीव ही इस संसार में श्रेष्ठ हैं।''

पंच दोष तजि जो रहई संत चरन लव लीन।
रविदास ते नर जानई ऊँचह अरु कुलीन॥ 133॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वही जीव इस संसार में ऊँचा और श्रेष्ठ कुल में पैदा हुआ समझा जाता है जो पाँच विकारों को त्याग कर संत महापुरुषों के चरण कंवलों ध्यान लगाकर रखता है भाव जो संतों से सच्ची प्रीति करता है।''

ब्राह्मण कौन?

ऊँचे कुल के कारणै ब्राह्मण कोय न होय।
जउ जानहि ब्रह्म आत्मा रविदास ब्राह्मण सोय॥ 134॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''इस संसार में कोई भी जीव जाति या जन्म के कारण ब्राह्मण नहीं है क्योंकि केवल ऊँची कुल में जन्म लेने के कारण कोई ब्राह्मण नहीं कहला सकता। वास्तविक ब्राह्मण तो वह है जो सभी जीवों में ब्रह्म की आत्मा को मानता है।''

काम क्रोध मद लोभ तजि जउ करइ धरम कर कार।
सोई बाह्मन जानिहि कहि रविदास बिचार॥ 135॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार के फरमाते हैं कि, ''जो जीव काम, क्रोध, लोभ और अहंकार को त्याग देता है और धर्म के अनुसार कर्म करता है उसको ही इस संसार में ब्राह्मण जाना जाता है।''

रविदास जी वेत्ता ब्रह्म का सोइ ब्राह्मण जान।
ब्रह्म न जउ जानिहि तउ न ब्राह्मन मान॥ 136॥

''वह जीव इस संसार में ब्राह्मण है जो ब्रह्म को जान लेता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव ब्रह्म को नहीं जानता वह ब्राह्मण नहीं है। इस लिए इस संसार में कोई भी जीव जाति या जन्म के कारण ब्राह्मण नहीं है।''

धरम करम जानै नहीं मन मंह जाति अभिमान।
ऐसउ ब्राह्मन सों भलो रविदास श्रमुक हुं जान॥ 137॥

''जो जीव धर्म के अनुसार श्रेष्ठ कर्म करने नहीं जानता और अपनी जाति का अहंकार करता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''ऐसे ब्राह्मण से तो किरत कमाई करके खाने वाले जीव को ही श्रेष्ठ समझना चाहिए।''

क्षत्रिय कौन?

दीन दुखी के हेत जउ बारै अपने प्रान।
रविदास उह नर सूर कौं सांचा छत्री जान॥ 138॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''कोई भी जीव जन्म और जाति के आधार पर क्षत्रिय नहीं है बल्कि कर्म करने से क्षत्रिय है। जो जीव दीन

दुखियों की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देता है उस शूरवीर को ही सच्चा क्षत्रिय जानना चाहिए।''

अंग अंग कटवाहि जउ दीनन करि हेत।
रविदास छत्री सोइ जानिए जौ छाडै नांहि खेत॥ 139॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव दुखियों और गरीबों के लिए अपना अंग-अंग कटवा देता है और मैदान को कभी नहीं छोड़ता ऐसे जीव को ही सच्चा क्षत्रिय समझना चाहिए।''

वैश्य कौन?

रविदास वैस सोइ जानिये जउ सत्त कार कमाय।
पुंन कमाई सदा लहै लोरै सर्वत्त सुखाय॥ 140॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''कोई भी जीव जन्म और जाति के कारण वैश्य नहीं बल्कि उस जीव को वैश्य समझना चाहिए जो सच्चाई के साथ व्यापार करता है, सदा नेक किरत कमाई करता है और सर्वस्व का भला चाहता है।''

सांची हाटी बैठि कर सौदा सांचा दे।
तकड़ी तोलै सांच की रविदास वैस है सोइ॥ 141॥

''जो जीव सच्चाई रूप दुकान पर बैठ कर सच का सौदा बेचता, सच के तराजू के साथ तोलता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''वही सच्चा वैश्य है।''

शूद्र कौन?

रविदास जउ अति पवित्त है सोई सूदर जान।
जउ कुकरमी असुध जन जिन्हें न सूदर मान॥ 142॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''जो जीव बहुत ही पवित्र जीवन व्यतीत करता है उसको शूद्र भाव शुद्ध जानना चाहिए। जिसके कर्म भी बुरे हों और जीव भी अपवित्र हो उसको शूद्र भाव शुद्ध नहीं जानना चाहिए।''

हरिजनन करि सेवा लागे मन अहंकार न राखै।
रविदास सूद सोइ धंन है जउ असत्त बचन न भाखै॥ 143॥

''हरि को जानने वाला जीव मानवता की सेवा करता है और मन में अहंकार नहीं रखता और असत्य वचन नहीं बोलता।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं, ''ऐसे शूद्र समझा जाने वाला जीव धन्य है।''

मन्दिर-मस्जिद एक

मंदिर मसजिद दोउ एक हैं इन मंह अंतर नांहि।
रविदास राम रहमान का झगड़ा कोउ नांहि॥ 144 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मन्दिर और मस्जिद दोनों एक ही हैं। इन में कोई भी अंतर नहीं है। इन में केवल नाम का ही भेद है। इस लिए राम और रहमान का कोई झगड़ा नहीं है, दोनों नाम एक ही प्रभु के हैं।''

रविदास हमारो राम जोई सोई है रहमान।
काबा काशी जानीयहि दोउ एक समान॥ 145 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो मेरा सर्व-व्याप्त राम है वही रहमान है। मुसलमानों के लिए काबा पवित्र स्थान है और हिन्दुओं के लिए काशी पवित्र स्थल है, दोनों ही एक समान जानना है इन दोनों में कोई भेद नहीं समझना चाहिए।''

मसजिद सों कछु घिन नहीं मंदिर सो नहीं पिआर।
दोउ मंह अल्लह राम नहीं कह रविदास चमार॥ 146 ॥

''मुझे न तो मस्जिद से घृणा है और न ही किसी मन्दिर से प्रेम भाव मेरे लिए दोनों ही समान हैं।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं मैं चमार कहता हूँ कि, ''केवल मन्दिर और मस्जिद में राम अल्लाह नहीं है भाव वह सर्व-व्यापक है।''

हिन्दू-मुसलमान एक

मुसलमान सों दोसती हिंदुअन सों कर प्रीत।
रविदास जोति सभ राम की सभ हैं अपने मीत॥ 147 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''सब जीव समान हैं इस लिए सब को आपस में मिल-जुल कर रहना चाहिए। मुसलमानों के साथ दोस्ती और हिन्दुओं के साथ प्रेम करना चाहिए भाव सभी को आपस में प्रेम प्यार के साथ रहना चाहिए क्योंकि सभी जीवों में एक ही प्रभु की ज्योति है और सभी जीव अपने मित्र है।''

जब सभ करि दोउ हाथ पग दोउ नैन दोउ कान।
रविदास पृथक कैसे भये हिंदू मुसलमान॥ 148॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हे भाई! सब जीवों के समान अंग हैं। सभी के दो हाथ, दो पैर, दो आँखें और दो कान हैं तो यह समान अंगों वाले जीव भिन्न-भिन्न कैसे हो सकते हैं? चाहे कोई हिन्दू हो चाहे मुसलमान सब एक समान हैं।''

रविदास पेखिया सोध करि आदम सभी समान।
हिंदु मुसलमान कउ स्रिष्टा एक भगवान॥ 149॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मैंने यह अच्छी तरह से परख लिया है कि सब मानव एक समान हैं क्योंकि सभी का सृजनहार प्रभु एक है, चाहे कोई हिन्दू है चाहे मुसलमान।''

कहन सुनन कूं दुइ करि खालिक कीयों तमासा।
हिंदु तुरक दोउ एक है सत्त भाषै रविदासा॥ 150॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज सत्य फरमाते हैं कि, ''कहने और सुनने को चाहे हिन्दू और मुसलमान दोनों भिन्न-भिन्न हैं पर सच तो यह है कि संसार की रचना खालिक प्रभु का अद्‌भुत लीला है। इस लिए सब जीव समान हैं चाहे हिन्दू है या मुसलमान।''

रविदास कंगन कनक मंहि जिमि अंतर कछु नांहि।
तैसउ ही अंतर नहीं हिंदुअन तुरकन मांहि॥ 151॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज सत्य फरमाते हैं कि, ''जिस प्रकार स्वर्ण और स्वर्ण से बने हुए आभूषणों में अंतर नहीं है ऐसे ही हिन्दुओं और मुसलमानों में कोई अंतर नहीं है।''

हिंदु तुरक मंहि भेद नाहीं सभ में रक्त अरु मास।
दोउ एकह दूजा को नाहीं पेख्यो सोध रविदास॥ 152॥

''हिन्दू और मुसलमान दोनों में कोई अंतर नहीं, दोनों में ही एक जैसा लहू और मांस है। दोनों एक समान हैं और दोनों में कोई भिन्नता नहीं है।,'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मैं यह देखकर और सोच विचार कर उच्चारण कर रहा हूँ।''

हिंदु तुरक मंहि नहीं भेद दुइ आयहु इक द्वार।
प्राण पिंड लोहु मांस एकइ कहि रविदास बिचार॥ 153॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज विचार के फरमाते हैं कि, ''हिन्दू और मुसलमान में कोई अंतर नहीं है, दोनों का जन्म एक ही द्वार माता के गर्भ से भाव एक ही ढंग से हुआ है, दोनों के प्राण, दोनों का शरीर, शरीर का लहू और मांस एक समान है।''

रविदास उपजइ इक नूर ते ब्राह्मण मुल्ला सेख।
सभ को करता एक है सभ कुं एक ही पेख॥ 154॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''सभी जीव प्रभु के नूर से पैदा हुए हैं, चाहे कोई ब्राह्मण है, चाहे मुल्ला और चाहे शेख़। सभी का सृजक एक प्रभु है। इसलिए सभी में एक ही प्रभु का वास देखना चाहिए।''

सच्चा शूरवीर

रविदास सोइ सूरा भला जउ लरै धरम के हेत।
अंग अंग कटि भुइं गिरै तउ न छाडै खेत॥ 155॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''सच्चा शूरवीर तो वह है जो धर्म की रक्षा के लिए रणभूमि में लड़ता है चाहे उसका अंग-अंग कट जाए और गिर पड़े तो भी वह सच्चा शूरवीर मैदान नहीं छोड़ता और अन्तिम श्वास तक लड़ता है।''

धरम हेत संग्राम महं जौ कटाए काटे सीस।
सो जीवन सफला भया रविदास मिलंहि जगदीस॥ 156॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि,''जो जीव धर्म की रक्षा के लिए संग्राम में लड़ता हुआ सिर काटता और अपना शीश कटवा देता है उसका जीवन सफल हो जाता है। उसको प्रभु की प्राप्ति हो जाती है।''

सत्य-वचन

बचन गयो नंह आत है सीस कटा फिर आय।
रविदास बचन कूं राखिए सिर जाइहि तउ जाय॥ 157॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''जीव को सत्य वचन बोलने चाहिए। किसी को दिया हुआ वचन दोबारा नहीं आता, जैसे यदि एक बार सिर कट जाए तो वह सिर दोबारा नहीं जुड़ता, ऐसे ही मुँह से निकला हुआ वचन कभी भी वापिस नहीं आता। इसलिए जीव को अपने वचन का पालन करना चाहिए चाहे सिर कट जाए।''

रविदास बचन जौ दे दियौ वह न जाने पाय।
बचन हरै को जगत मंहि कछु न सेस रहाय॥ 158॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''अगर एक बार जीव ने किसी को वचन दे दिया तो दिये हुए वचन का पालन करना चाहिए। परन्तु जो जीव दिये हुए वचन का पालन नहीं करता वह अपना मान-सम्मान सब कुछ गँवा लेता है और उसके पास कुछ भी बाकी नहीं रहता।''

वासनाओं का त्याग

सत्त संतोष अरु सदाचार जीवन को आधार।
रविदास भये नर देवते जिन तिआगो पंच बिकार॥ 159॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को हमेशा सच बोलना, संतोष धारण करना और सदाचार को अपने जीवन का आधार बनाना चाहिए। जो जीव इस आधार को धारण कर पाँच विकारों का त्याग कर देता है वह जीव श्रेष्ठ बन जाता है।''

जो बस राखे इंद्रियां सुख दुख समझि समान।
सोउ अमरित पद पाइगो कहि रविदास बखान॥ 160॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव अपनी इन्द्रियों को वश में कर संयम का जीवन व्यतीत करते हैं और सुख-दुख को एक समान समझते हैं ऐसे जीव प्रभु का नाम सिमरन कर परम पद को प्राप्त कर लेते हैं।''

बुद्धि अरु बिबेकहिं जउ राखन चाहौ पास।
इंदरियां संग निरत को तजि देहु रविदास॥ 161॥

''अगर जीव बुद्धिमान और विवेकशील बनना चाहता है तो उसको अपनी इन्द्रियों के इशारे पर नाचना छोड़ देना चाहिए। जो जीव इन्द्रियों के इशारे पर नाचता है भाव इन्द्रियों के अधीन हो जाता है वो अपना सब कुछ गंवा लेता है।''

रविदास इच्छाएं आपुनी भोगन से रख दूर।
मन बुद्धि रहंहि सांत नित घट मंहि रहिवै नूर॥ 162॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव अपनी इच्छाओं और वासनाओं पर काबू रखता हुआ अपनी इन्द्रियों को विकार रूप भोगों से दूर रखता है, उस जीव का मन और बुद्धि सदैव ही शांत रहते हैं और शारीरिक रूप से तेज़ बना रहता है।''

कुरमे भांति जउ रहहिं मन इंदिरिया रविदास।
सांत रहइ नित आतमा बढ़हि आत्म बिसास॥ 163॥

''जो जीव अपने मन और इन्द्रियों को बाह्यमुखी न कर कछुए की तरह समेट कर अंतर्मुखी करता है और अंतमुर्खी होकर प्रभु की खोज करता है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''उसकी आत्मा हमेशा शांत रहती है और उसका आत्मविश्वास हमेशा बढ़ता है।''

संतोष और त्याग

जो कोउ लोरै परम सुख तउ राखै मन संतोष।
रविदास जहां संतोष है तहां न लागै दोष॥ 164॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज जीवों को संतोष धारण कर परम सुख प्राप्त करने का पावन उपदेश देते हैं कि, ''जो जीव परम सुख की प्राप्ति चाहता है उसको अपने मन में संतोष धारण करना चाहिए। जिस जीव के मन में संतोष है, उसके मन में कोई दोष टिक नहीं सकता।''

धन संचय दुख देत है धन त्यागे सुख होय।
रविदास सीख गुरुदेव की धन मति जोरे कोय॥ 165॥

''जो जीव प्रभु को भूल कर केवल धन इक्ट्ठा करता है उस को दुख मिलता है। धन त्याग कर धन को भलाई के लिए लगा कर सुख मिलता है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''गुरुदेव परमेश्वर की यही शिक्षा है कि जीव को केवल धन ही नहीं एकत्र करना चाहिए।''

सच्चा सुख सत धरम मंहि धन संचय सुख नाहि।
धन संचय दुख खान है रविदास समुझि मन मांहि॥ 166॥

''जीव को यह समझ लेना चाहिए कि सच्चा सुख सच्चे धर्म की पालना करने में है पर केवल धन एकत्र करने में सुख नहीं है।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हे जीव! तू अपने मन में यह समझ ले कि केवल धन एकत्र करना दुखों की खान है।''

सुख-दुख

सुख सरिता मंह बूड़ि करि सूझ बूझ मति खोय।
दुख की बदरी पेखि कै रविदास नह दीजिये रोय॥ 167॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''सांसारिक सुख में उलझ कर जीव को प्रभु को नहीं भूलना चाहिए। सांसारिक सुख रूपी नदी में डूब कर जीव को अपनी सोच और समझ नहीं गंवानी चाहिए और दुखों के बादल सिर पर मंडराने से जीव को रोना नहीं चाहिए क्योंकि सुख-दुःख जीवन के अंग है।''

सुख दुख सम करि जानहु तउ दुखह सुख होय।
रविदास जो सुखहि दुख कहै तउ सुख भी दुख होय॥ 168॥

''जब जीव सुख और दुख को एक समान जानता है तो उसको दुख में भी सुख अनुभव होता है।'' सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव मंगलमय सुख जीवन के समय कहता है कि मैं बहुत दुखी हूँ तो उसके सुख भी दुख में बदल जाते हैं और वह सुख को भी दुख ही अनुभव करता है।''

सच्चा प्रेम

रविदास प्रेम नहि छिप सकई लाख छिपाए कोय।
प्रेम न मुख खोलै कभउं नैन देत हैं रोय॥ 169॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''सच्चा प्रेम कभी भी नहीं छिपता, जीव चाहे लाखों उपाय कर ले। सच्चे प्रेम का सुख कभी भी मुख से बोल कर ब्यान नहीं किया जा सकता। सच्चा प्रेम आँखों में से आँसू बनकर प्रकट हो जाता है।''

श्रेष्ठ मार्ग

रविदास सदा ही राखिए मन मंहि सहज सभाओ।
राखे नहीं कुपंथ पग जौ लोरौं सुख चाओ॥ 170॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज प्रभु के नाम सिमरन रूपी श्रेष्ठ मार्ग पर चलने का उपदेश देते हैं कि, ''जीव को सदा ही सहज स्वभाव अपने हृदय में प्रभु का नाम बसाना चाहिए। जिस जीव को परमानन्द की चाहत है उसको कभी भी बुरे मार्ग पर पांव नहीं रखना चाहिए।''

जो जन दुष्ट कुमारगी बइठहि नंहि तिंह पास।
जो जन संत सुमारगी तिन पाय लागो रविदास॥ 171॥

"जो प्राणी बुरे स्वभाव के हैं और बुरे मार्ग पर चलते हैं, कभी भी उनके पास नहीं बैठना चाहिए।" सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "जो प्रभु का सिमरन करते हैं और जीवों को भी प्रभु के सिमरन से जोड़ते हैं, ऐसे श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाले संत महापुरुषों के चरणों में जीव को हमेशा रहना चाहिए।"

बेगमपुरा वतन

रविदास जु है बेगमपुरा उह पूरन सुख धांम।
दुख अंदोह अरु द्वेष भाव नांहि बसहिं तिहिं ठांम॥ 172॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, "जब जीव प्रभु का सिमरन करके प्रभु से जहाँ मिल जाता है वह बेगमपुरा है, जहां पहुँचने से हर जीव ग़म से मुक्त हो जाता है। जहाँ प्रभु के परमानन्द रूपी सुख की प्राप्ति होती है और जहाँ कोई दुख, शोक एवं द्वेष भाव नहीं है।"

दूसरा अर्थः-सत्गुरु रविदास जी महाराज ने समस्त विश्व में बेगमपुरा वतन को स्थापित करने का पावन संकल्प दिया है। जिसमें रहने वाला हर जीव भेद-भाव रूपी गम से मुक्त हो और सब जीवों के लिए पूर्ण सुख का स्थान हो। जहां किसी को भेद-भाव का दुख, शोक और दूसरे दर्जे का नागरिक न समझा जाता हो।

रविदास मनुष करि बसन कूं सुख कर हैं दुइ ठांव।
इक सुख है स्वराज मंहि दूसर मरघट गांव॥ 173॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज जी ऐसे स्वराज्य की स्थापना पर जोर देते हैं, "जहां जीव को सब मानवीय अधिकार प्राप्त हों। इस संसार में मनुष्य के सुख प्राप्त करने के दो ही स्थान हैं पहला सुख स्वराज्य में है जहाँ जीव को समान अधिकार प्राप्त हों जिससे जीव इस संसार में रह कर प्रभु का सिमरन कर अपना जीवन सफल कर सकता है। दूसरा सुख जीव को प्रभु का सिमरन करके अपना जीवन सफल कर संसार में मरने के बाद प्राप्त होता है।"

ऐसा चाहूं राज मैं जहां मिलै सबन कौ अन्न।
छोट बढ़ो सभ सम बसैं रविदास रहे प्रसन्न॥ 174॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मैं ऐसा राज्य चाहता हूँ जहाँ सब जीवों को समान अधिकार प्राप्त हो और जीवन की सभी आवश्यकताएं पूरी हों। सभी को खाने के लिए अन्न प्राप्त हो भाव कोई भी जीव भूखा न रहे। छोटे और बड़े का कोई भेद-भाव न हो, सब जीव मानवीय स्तर पर बराबर हों। मैं ऐसे राज्य को देख कर प्रसन्न रहूँगा।''

सच्ची सेवा

मन मंहि सत्त संतोष रखहु सभ करि सेवा लाग।
सेवा सब कछु देत है रविदास सेवंहि मति त्याग॥ 175॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज मानवता की सच्ची सेवा करने का उपदेश देते हैं कि, ''जीव को मन में सत्य-संतोष रख कर सब की सेवा करनी चाहिए। सेवा से ही जीव को सब सुखों की प्राप्ति होती है। इस लिए जीव को कभी भी सेवा का त्याग नहीं करना चाहिए।''

दीन दुखी करि सेव मंहि लागि रह्यो रविदास।
निसि बासर की सेव सौं प्रभु मिलन की आस॥ 176॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को दीन दुखियों की सेवा में लगे रहना चाहिए। रात-दिन सच्ची सेवा के कारण ही जीव के मन में प्रभु मिलन की आशा होती है।''

धुआं तपन मंहि का धरा धूम तपन ही त्याग।
रविदास मिलि है मोष धाम सेवा ही तप आग॥ 177॥

''यदि जीव के हृदय में प्रभु और मानवता के लिए प्रेम नहीं है तो धूनी तपा कर तप करने का उसको कोई लाभ नहीं है, इस लिए ऐसे तप का त्याग कर देना चाहिए।'' सत्‌गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव को मानवता की सेवा करने रूपी श्रेष्ठ तप करने से ही मुक्ति प्राप्त होती है।''

सच्चा उपदेश

रविदास रात न सोइये दिवस न करिये स्वाद।
अह निसि हरि जी सुमिरिये छांडि सकल प्रतिवाद॥ 178॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज पावन उपदेश देते हैं कि, ''जीव को रात सो

कर नहीं व्यतीत करनी चाहिए और दिन संसार के स्वादों में नहीं व्यतीत करना चाहिए बल्कि रात-दिन प्रभु का सिमरन करते हुए वाद-विवाद के सारे झगड़ों को खत्म कर अपना मनुष्य जन्म सफल करना चाहिए।''

रविदास तूं कावच फली तुझे न छीवै कोय।
मैं निज नाम न जानियां भला कहां ते होय॥ 179॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हे जीव! अगर तू प्रभु का सिमरन नहीं करता तो तेरा जीवन कौंच फली के समान है। जैसे कौंच फली को छूने से शरीर में जलन पैदा होती है वैसे ही प्रभु को भूल कर जीव में दूषण पैदा हो जाता है और कौंच फली की भांति ही जीव को कोई छूना भी नहीं चाहेगा। हे जीव! तूने निज नाम को नहीं जाना तो फिर तेरा भला कैसे हो सकता है? भाव प्रभु के नाम के बिना जीव का जीवन व्यर्थ है।''

अंतर गति रांचै नहीं बाहर करै उजास।
ते नर जमपुर जांहिगे सत भाषै रविदास॥ 180॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज सत्य फरमाते हैं कि, ''मैं यह सत्य उच्चारण करता हूँ कि जो जीव अपने मन में प्रभु का सिमरन नहीं करता और बाहरी प्रभु प्रेम का दिखावा करता है वह जीव जरुर ही यमलोक जाएगा।''

सब सुख पावै जासु तें सो हरि जू को दास।
कोउ दुख पावै जासु तें सो न दास रविदास॥ 181॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''हरि का दास वह जीव है जिस से मिलने से सब को सुख प्राप्त होता है। जिसके मिलने से जीव को दुख प्राप्त होता है वह हरि का दास नहीं है।''

हरिगुर साध समान चित नित आगम तत मूल।
इन बिच अंतर जिन परौ करवत सहन कबूल॥ 182॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''प्रभु, गुरु और संतों में अंतर नहीं है, इन सब को एक समान समझना चाहिए। यह ही धार्मिक ग्रंथों का मूल तत्व है। इस मूल तत्व में जो अंतर करेगा उसको करवत आरे के समान दुख झेलना पड़ेगा।''

जीव हत्या का खंडन

रविदास जीव कूं मारि कर कैसो मिलंहि खुदाय।
पीर पैगंबर औलिया कोउ न कहइ समुझाय॥ 183 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज जीव हत्या का खंडन करते हुए पावन उपदेश देते हैं कि, ''मानव को कभी भी जीव हत्या नहीं करना चाहिए। जीवों को मार कर खुदा की प्राप्ति कैसे हो सकती है? किसी भी पीर, पैगम्बर और औलिए ने यह नहीं समझाया कि जीव हत्या करने से खुदा की प्राप्ति होती है।''

रविदास जो पोषण हेत गउ बकरी नित खाय।
पढ़ई नमाजै रात दिन तबहुं भिस्त न पाय॥ 184 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव अपने शरीर का पालन पोषण करने के लिए हर रोज गाय, बकरी इत्यादि खाते हैं वो चाहे अल्लाह की प्राप्ति के लिए दिन-रात नमाज गुज़ारे पर उनको कभी भी स्वर्ग की प्राप्ति नहीं होती।''

रविदास मूंडह काटि करि मूरख कहत हलाल॥
गला कटावहु आपना तउ का होइहि हाल॥ 185 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मूर्ख जीव! तुम धीरे-धीरे जानवर का गला काटने को हलाल कहते हैं, पर तुम ऐसे ही अपना गला काट कर देखो तो तुम्हें पता चलेगा कि ऐसा करने से क्या दशा होती है?''

रविदास जो आपन हेत ही पर कूं मारन जाई।
मालिक के दर जाइ करि भोगहि कड़ी सजाई॥ 186 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव अपने हित के लिए दूसरे को मारता है उसको ईश्वर के दरबार में जाकर बड़ी कठिन सजा मिलती है।''

प्रानी बध नहिं कीजियहि जीवह ब्रह्म समान।
रविदास पाप नंह छूटइ करोर गउन करि दान॥ 187 ॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''मनुष्य को कभी भी जीव हत्या नहीं करनी चाहिए क्योंकि सब जीवों में प्रभु ही समाया हुआ है। जीव हत्या करने वाले जीव के पापों की कभी भी निवृत्ति नहीं होती चाहे वह करोड़ों गाय दान कर दे।''

रविदास जिभ्या स्वाद बस जउ मांस मछरिया खाय।
नाहक जीव मारन बदल आपन सीस कटाय॥ 188॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज सत्य उपदेश सुनाते हैं कि, ''जो लोग अपनी जिह्वा के स्वाद के लिए मांस-मछली इत्यादि खाते हैं उन को निर्दोष जीव मारने के बदले सज़ा मिलेगी और उन का अपना सिर भी एक दिन काटा जाएगा।''

रविदास जीव मत मारहिं इक साहिब सभ मांहि।
सभ मांहि एकउ आतमा दूसरह कोउ नांहि॥ 189॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज समझाते हैं कि, ''मानव को कभी भी जीवों को मारना नहीं चाहिए क्योंकि सभी जीवों में प्रभु ही समाया हुआ है। इसलिए सभी जीवों में एक ही आत्मा है, दूसरी कोई नहीं।''

मांसाहारी-नरक अधिकारी

अपनह गीव कटाइहिं जौ मांस पराया खांय।
रविदास मांस जौ खात हैं ते नर नरकहिं जांय॥ 190॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज जीवों को शाकाहारी जीवन व्यतीत करने का उपदेश देते हैं कि, ''जो जीव मांस खाते हैं वह अपना ही गला कटवा लेते हैं। जो जीव दूसरों का मांस खाते हैं वह जीव नरक में जाते हैं।''

दया भाव हिरदै नहीं भखहिं पराया मास।
ते नर नरक मंह जाइहि सत्त भाषै रविदास॥ 191॥

''जिन जीवों के हृदय में दया नहीं वही जीव दूसरों का मांस खाते हैं, ऐसे जीव नरक को जाते हैं।'' सत्गुरु रविदास जी कथन करते हैं कि, ''यह मैं सत्य उच्चारण करता हूं।

जीवत कूं मुरदा करहिं अरु खाइहिं मुरदार।
मुरदा सम सभ होइहिं कहि रविदास बिचार॥ 192॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज कथन करते हैं कि, ''यह मैं विचार करके कहता हूं कि जो जीव, जीवों को मार कर मुरदा बना देते हैं और उनका मांस खाते हैं, वे सारे जीव मरे हुए जीवों के समान मुरदा बने हुए हैं।''

पराधीनता पाप है

पराधीनता पाप है जान लेहु रे मीत।
रविदास दास प्राधीन सों कौन करै है प्रीत॥ 193॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज मानवता को पावन उपदेश देते हैं कि, ''पराधीनता का जीवन पाप के समान है, इसलिए पराधीनता से मुक्त होकर जीव को स्वाधीनता वाला जीवन अर्थात् आजादी से जीना चाहिए। मेरे मित्रों! पराए के अधीन रह कर जुल्म सहन करना पाप है, तुम इस बात को अच्छी तरह से जान लो भाव गुलामी वाला जीवन पाप है। जो जीव गुलाम है उसको सब धिक्कारते हैं और उस से कोई भी प्रीति नहीं करता।''

पराधीन को दीन क्या पराधीन बेदीन।
रविदास दास प्राधीन को सबही समझै हीन॥ 194॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जो जीव पराए के अधीन है, उसका अपना धर्म क्या है? पराए के अधीन जीव का जीवन तो दीन धर्म से रहित है। ऐसे गुलाम जीव को सभी नीच समझकर उसका अपमान करते हैं।''

रविदास संसा जीव महिं, साखी सौं बिलगाय।
जीवन मरन रहिस कूं, साखी कहै समुझाय॥ 195॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज फरमाते हैं कि, ''जीव के मन में जो भ्रम है, वह साक्षी गुरु ही दूर कर सकता है तथा जन्म मरण के रहस्य को साक्षी गुरु ही समझाता है।''

रविदास रात न सोविये, दिवस न करिये सुआद।
अहि निसि हरि जी सिमरिए, छाडि सकल प्रतिवाद॥ 196॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जीव को रात्रि केवल सो कर नहीं व्यतीत करनी चाहिए और दिन पदार्थों के स्वाद लेते हुए व्यतीत नहीं करना चाहिए। हर समय प्रभु का सिमरण करना चाहिए तथा अन्य विवादों को त्याग देना चाहिए।''

साध संगति पूंजी भइ, हौं वस्त लई निरमोल।
सहिज बलदिया लादि करि, चलियो लहन पिव मोल॥ 197॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''संतों की संगत में प्रभु के नाम रूपी निर्मोल वस्तु, पूँजी पड़ी है। सहजावस्था में पहुँचकर इस पूँजी को अपने मन रूपी बैल पर लादकर, प्रभु प्यारे के प्रेम के मोल प्राप्त करना चाहिए।''

जैसा रंग सैंबल करि, तैसा यहि संसार।
हौं रंग रंगौ राम महिं, भणै रविदास बिचार॥ 198॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जिस प्रकार सैंबल का रंग कच्चा है, उसी प्रकार इस संसार का रंग है। परन्तु मैं प्रभु के रंग में रंगा गया हूँ। उसका रंग सदीवी और स्थिर है।''

भौ सागर रा तरन कू, एकौ नाम अधार।
रविदास कभउं नहिं छाडिये, राम नाम पतवार॥ 199॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''संसार रूपी भवसागर से पार जाने के लिए, केवल प्रभु का नाम ही आधार है। अतः जीव को कभी प्रभु के नाम रूपी नोका छोड़नी नहीं चाहिए।''

सुमिरन कोटि अघन की, होवै समन रविदास।
ज्यूं कि अघ निरमूलिये, परम जोत परगास॥ 200॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु का सिमरन करोड़ों पापों को जड़ से नाश करने वाला है। प्रभु की परम ज्योति के प्रकाश के समय, सारे अवगुण व दुःख नष्ट हो जाते हैं।

राम नाम जिह रम्यो, सोइ तनु आपु उजास।
अन्त छार ह्वै जाइये, वेगि चेतु रविदास॥ 201॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जो जीव प्रभु के नाम में रंग गया, उसके भीतर प्रभु की जोत का प्रकाश हो जाता है। हमने अंत समय में एक प्रभु के नाम के बिना सब कुछ छोड़ कर चले जाना है। अतः तू शीघ्र अति शीघ्र, प्रभु को याद कर।''

गुर ज्ञान दीपक दिया, बाती दइ जलायि।
रविदास हरि भगति कारनै, जनम मरन बिलमाये॥ 202॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि,''जब गुरु ने ज्ञान रूपी दीपक दिया तथा उसमें ज्ञान की बाती जला दी, तब उस प्रभु की भक्ति करके जन्म-मरण रूपी दुख खत्म हो जाता है।''

अंधला जौ गुरु पाइहि, तौ शिष भयौ निरंख।
रविदास ज्ञान चाषू बिना, किमि मिटयि भ्रम फंद॥ 203॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''अज्ञानी गुरु को प्राप्त

कर, शिष्य भी अज्ञानी बन जाता है। प्रभु के ज्ञान के दीपक के बगैर जीव का भ्रम दूर नहीं हो सकता।''

माया दीपकु पेखि करि, नर पतंग अंधियाये।
रविदास गुरु रा ज्ञान जिनु, बिरला को बचि जाय॥ 204॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''माया रूपी दीपक को देखकर जीव रूपी पतंगा अंधा हो कर उसकी ओर आकर्षित होकर मारा जाता है। कोई विरला जीव ही गुरु के ज्ञान के साथ माया के प्रभाव से बच पाता है।''

निहचल आनन्द निधि मिलि, बिलगौ आधि अपार।
रविदास सुमिरण सार सौं पायो दरस मुरार॥ 205॥

सतिगुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जो प्रभु निश्चल, आनन्दपूर्ण तथा सभी खजानों का स्वामी है, उसका सिमरण कर जीव उपाधियों से मुक्त हो जाता है और प्रभु के दर्शन कर लेता है।''

पलु पलु छिनु छिनु सिमरीये, जौ लौरे हरि दुआर।
हरि मजनु विन सिव नहीं, भणै रविदास चमार॥ 206॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''यदि कोई जीव हरि का निज घर प्राप्त करना चाहता है, तो वह हर पल हर क्षण हरि का सिमरन करे। हरि के नाम रूपी स्नान के बिना, किसी भी जीव का कल्याण नहीं होता।''

भौ सागर दुतर अति, किधुं मुरिख यहु जान।
रविदास गुरू पतवार है, नाम नाव करि जान॥ 207॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''हे मूर्ख जीव! प्रभु के नाम के बिना, संसार रुपी भवसागर बहुत कठिन है, केवल गुरू ही है, जो जीव को प्रभु के नाम रूपी नाव में बैठा कर पार लगाता है।''

रविदास तनु पियरौ पातरा, झरत न लागयि बार।
जरा मीचु ज्यौं आवयि, जात न लागहिं वार॥ 208॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु के नाम के बिना यह शरीर पतझड़ के समान है और इसको झड़ने में जरा भी देर नहीं लगती। बुढ़ापा आने पर संसार छोड़ने में देरी नहीं लगती।''

सोई तन कंचन जानइ, जिह तन नाम परगास।
रविदास राम चिंतामणि, चहुं दिस औज उजास॥ 209॥

सत्‌गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''वही शरीर सोने की

भांति शुद्ध है, जिसमें प्रभु के नाम का प्रकाश है। प्रभु का नाम मनवांछित फल देने वाली मणि है, जिसकी सिमरन करने से, जीव की हर ओर शोभा होती है।''

निस दिन हरि जु सिमरिये, त्यागि जगत करि धंद।
रविदास संत सहेलड़ा, विचरत होवै निरदंद॥ 210॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''हर समय प्रभु का सिमरन करना चाहिए तथा संसार के झूठे धंधों का त्याग करना चाहिए। संत जन इस संसार में जीव के सहायक हैं, जो उसे प्रभु के साथ मिलाप करवाते हैं और जीव के भीतर से द्वैतभाव समाप्त हो जाता है।''

जो लोहा पारस मणि, हिरन किरन दमकाये।
रविदास राम पारस मणि, ओह दरस मंहि बौराये॥ 211॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जैसे लोहा पारस को छूकर शुद्ध सोना बनकर किरणों की भांती चमकता है, उसी प्रकार यह जीव रूपी लोहा, प्रभु के नाम रूपी पारस के साथ लगकर मतवाला हो जाता है।''

समाधि थिति हवै संत जन, अपनहु आप मिटाहिं।
जिमि गंग समुंद मिलि,रविदास समुंदहिं बिलांहि॥ 212॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जो संत स्वयं को मिटा देते हैं, वे समाधि लगाकर प्रभु के साथ जुड़ जाते हैं। जिस प्रकार गंगा समुद्र में गिरकर उसी का ही रूप हो जाती है। उसी प्रकार वे संत भी प्रभु का रूप हो जाते हैं।''

अन भावत नियरा बसै, मन भावतां परदेस।
अन देखे उन दरस बिन, होवै दुख बढ़त घनेस॥ 213॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''अनहोनी सदैव ही जीव के समीप रहती है तथा मन की भावना जीव से दूर रहती है। प्रभु के दर्शनों के बिना जीव को सभी दु:ख-कष्ट सताते हैं।''

ज्यूं सुधि आबत पीव की, बिरह उठत तन आगि।
ज्यूं चूने की कांकरी, ज्यों छिरके त्यों आगि॥ 214॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जब जीव को प्रभु प्रीतम प्राप्ति की सुध आती है, तब इसके तन को वियोग रूपी आग उठती है। जिस प्रकार चूने की कंकरी में पानी डालने से शीघ्रता से आग लग जाती है, इसी प्रकार प्रभु प्रेमी जीव को सदैव वियोग की पीड़ा सताती है।''

जिह नित देखन चाहि हौं, तें नैनन ते दरि।
रविदास कहि अनभावते, रहहिं निकट भरपूरि॥ 215॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जो प्रभु नेत्रों से दूर है, यदि तुम नित्य-प्रति अपने भीतर देखना चाहता है, तो उसका सिमरन करो, तब वह भरपूर प्रभु तुम्हें अपने भीतर अनुभव होगा।''

कामधेनि पारस पोलि, कलप रूप रा बाड़ि।
रविदास हरि रा भगति बिन, ग्रिह तैं भलि उजाड़ि॥ 216॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''कामधेनु गाय तथा पारस की प्राप्ति प्रभु के नाम के बिना व्यर्थ है और जीव की कल्पनाएं प्रभु के मार्ग में रुकावटें हैं। प्रभु की भक्ति के बिना शरीर रूपी घर उजाड़ के समान है।''

तुहि मुहि हमु एक हैं, तुझ लौं मोरि दौर।
रविदास पंखी जिहाज कौ, नहिं आनत कोउ ठौर॥ 217॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''प्रभु जी आप और मैं दोनों एक हैं। आप के बिना मैं चाहे जहाँ दौड़ लूँ, मुझे आपके चरणों में ही वापिस लौटना है। जैसे समुद्री जहाज का पंछी, जहाज़ से उड़ जाता है, उसे अन्य कोई आश्रय नहीं मिलता। वह वापिस जहाज़ पर ही लौटता है।''

रविदास पीतम इक तुहि, तुमरे मित अनेक।
ससि कौ कमोद हैं बहु, कुमोद कौ ससि एक॥ 218॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''मेरे केवल आप एक प्रिय मित्र हो परन्तु आप के प्रिय अनेक हैं। जैसे चन्द्रमा से प्रेम करने वाले कमोद फूल अनेक हैं परन्तु प्रतेक कमोद फूलों के लिए चन्द्रमा केवल एक है। इसी प्रकार प्रभु जी आप मेरे एक प्रिय हो।''

कोटि कलप जीवन अलप, बिच हरि भगति बिलास।
हरि सिमरण सफल जनम, दुह फल लहि रविदास॥ 219॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''करोड़ों कल्पों में एक अमूल्य जीव का जीवन छोटा लगता है। प्रभु की भक्ति आने से यह जीवन सफल हो जाता है और दोनों फलों की प्राप्ती हो जाती है और लोक-परलोक सुखी हो जाता है।''

अनन्द मूरति मित्र की, रहइ सदा सदा चित पूरि।
नैनन ही समुहे रहत, रविदास नियरे का दूरि॥ 220॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''प्रभु रूपी सच्चे मित्र की आनन्दमूर्ति सदैव ही हृदय में रहती है। वह प्रभु सदैव ही आँखों के सामने रहता है, फिर वह कभी भी नज़दीक और दूर नहीं जाता।''

कोयल तरसै अंब को चात्रिक तरसत नीर।
रविदास लौचै दरस को, प्रान परत नहीं धीर॥ 221॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जैसे कोयल आम के लिए तरसती है, पपीहा स्वाति बूंद के लिए तरसता है। इसी प्रकार प्रभु जी, मेरा मन आप जी के दर्शनों के लिए तरसता है, आप जी के बिना मेरे मन को धैर्य नहीं मिलता।''

ससि चकोर सूरज कंवल, चात्रिक घन की रीति।
रविदास इवि मुहि राखियो, हित चित पूरण परीति॥ 222॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''जिस प्रकार चकोर की चन्द्रमा के साथ, कंवल फूल की सूर्य के साथ तथा पपीहे की स्वाति बूंद के साथ सच्ची प्रीति है, उसी प्रकार मेरे मन में, प्रभु जी, आपके साथ सच्ची प्रीति है।''

चलत हलत बैठत उठत, धरिहूं तुमरो ध्यान।
रविदास तू मुहि मन बसइ, चरण कंवल की आन॥ 223॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उच्चारण करते हैं कि, ''हे प्रभु जी मैं चलते-फिरते, बैठते-उठते केवल आप जी का ध्यान लगाता हूं। इस प्रकार प्रभु जी मेरे हृदय में आप जी के चरण कंवल बसते हैं।''

मूरखि मुख कमान है, कटुक वचन भयो तीर।
सांचरी मारे कान महिं, साले सगल सरीर॥ 224॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''मूर्ख का मुख कमान की भांति है और उसके वचन तीर की भांति चुभते हैं, जब वे कानों में लगते हैं, तो सुनने वाले का पूरा शरीर जलने लग जाता है।''

रविदास मूरिख समुझयि नहिं बिना बिचार।
हने परायि आतमा, जीभ लियां तरवार॥ 225॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''मूर्ख का जीवन विचारहीन है और वह कभी नहीं समझता, मूर्ख जीव जीहवा से तलवार की तरह कड़वे वचन बोल कर दूसरों को कष्ट देता है।''

राम प्रेम हौं बरजि किमि, अब बरजत नहिं काज।
रोम राम अमी रमि गयो, ताहि म होत इलाज॥ 226॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''मैं प्रभु के प्रेम के बिना कैसे रह सकता हूं क्योंकि उसके बिना मेरा कोई कार्य नहीं होता। प्रभु संसार के कण-कण में व्याप्त है। प्रभु का नाम सभी रोगों का उपचार है।''

नाम मूल है ज्ञान कौ, नाम मुक्ति कौ दबार।
जा हिरदै हरि बसै, परहिं न जग विउपार ॥ 227॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''प्रभु का नाम ज्ञान का मूल है और उसका नाम मुक्ति का द्वार है। जिसके हृदय में प्रभु का नाम बसता है, वह संसार के झूठे व्यापार में नहीं लगता।''

इहु जग दुख की खेतरी, इहु जानत सब कोय।
ज्ञानी काटहि हरि नाम सों, मूरिख काटहिं रोय ॥ 228॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''यह संसार दुःख की खेती है, जिसे हर कोई जानता है। जो ज्ञानी पुरुष है, प्रभु का नाम स्मरण कर, इस खेती को काटता है और मूर्ख इसे रोकर काटता है।''

कटुक बचन नहिं बोलिए, सब घट हरि को बास।
इहु ज्ञान को दवार है, कहै रविदास विचार॥ 229॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जीव को कभी भी कड़वे वचन नहीं बोलने चाहिएं, क्योंकि सभी में प्रभु का वास है, यही ज्ञान का द्वार है। जिससे ज्ञान के वचन निकलने चाहिए।''

सत विद्या को पढ़े प्राप्त करे सदा ज्ञान।
रविदास कहे बिन विद्या नर को जान अजान॥ 230॥

सत्गुरु रविदास जी महाराज उपदेश देते हैं कि, ''जीव को सदैव सत्य की विद्या पढ़नी चाहिए और ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।'' सदैव विद्या के बिना जीव अज्ञानी समझा जाना चाहिए।

*****

अरदास

॥ श्लोक ॥

हरि सो हीरा छाडि कै करहि आन की आस॥
ते नर दोजक जाहिगे सति भाखै रविदास॥
तोही मोही मोही तोही अंतरु कैसा॥
कनक कटिक जल तरंग जैसा॥ 1॥
जउ पै हम न पाप करंता अहे अनंता॥
पतित पावन नामु कैसे हुंता॥ 1॥ रहाउ॥
तुम्ह जु नाइक आछहु अंतरजामी॥
प्रभ ते जनु जानीजै जन ते सुआमी॥ 2॥
सरीरु आराधै मो कउ बीचारु देहू॥
रविदास सम दल समझावै कोऊ॥ 3॥

जपो जी सतिनाम
हरि हरि हरि हरि हरि हरि हरे॥
हरि सिमरत जन गए निसतरि तरे॥ 1॥ रहाउ॥
हरि के नाम कबीर उजागर॥
जनम जनम के काटे कागर॥ 1॥
निमत नामदेउ दूधु पीआइआ॥
तउ जग जनम संकट नही आइआ॥ 2॥
जन रविदास राम रंगि राता॥
इउ गुर परसादि नरक नही जाता॥ 3॥ 5॥
जपो जी सतिनाम

सुख सागरु सुरतर चिंतामनि कामधेनु बसि जा के॥
चारि पदारथ असट दसा सिधि नव निधि कर तल ता के॥ 1॥
हरि हरि हरि न जपहि रसना॥
अवर सभ तिआगि बचन रचना॥ 1॥ रहाउ॥

नाना खिआन पुरान बेद बिधि चउतीस अखर मांही ॥
बिआस बिचारि कहिओ परमारथु राम नाम सरि नाही ॥ 2 ॥
सहज समाधि उपाधि रहत फुनि बडै भागि लिव लागी ॥
कहि रविदास प्रगासु रिदै धरि जनम मरन भै भागी ॥ 3 ॥ 4 ॥
जपो जी सतिनाम

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ॥
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै छत्रु धरै ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढरै ॥
नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥ 1 ॥
नामदेव कबीरु तिलोचनु सधना सैनु तरै ॥
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ॥ 2 ॥1 ॥
जपो जी सतिनाम

दारिदु देखि सभ को हसै ऐसी दसा हमारी ॥
असट दसा सिधि कर तलै सभ क्रिपा तुमारी ॥ 1 ॥
तु जानत मै किछु नही भव खंडन राम ॥
सगल जीअ सरनागती प्रभ पूरन काम ॥ 1 ॥ रहाउ ॥
जो तेरी सरनागता तिन नाही भारु ॥
ऊच नीच तुम ते तरे आलजु संसारु ॥ 2 ॥
कहि रविदास अकथ कथा बहु काइ करीजै ॥
जैसा तू तैसा तुही किआ उपमा दीजै ॥ 3 ॥ 1 ॥
जपो जी सतिनाम

धन्य धन्य जगतगुरु रविदास जी महाराज, धन्य धन्य महार्षि भगवान वालमीक जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु नामदेव जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु कबीर जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु सैन जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु सधना जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु त्रलोचन जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु बाबा फरीद जी महाराज, धन्य धन्य बाबा श्री चन्द जी महाराज, धन्य धन्य सन्त मीरा बाई जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु रंका जी महाराज, धन्य धन्य सतगुरु बंका जी

महाराज, धन्य धन्य संत भील्णी जी महाराज, सारे संत–महांपुरुषों के चरणकमलों का और सेवा सिमरण की कमाई का ध्यान धर के
जपो जी सतिनाम

जगत्गुरु रविदास महाराज जी के जन्म अस्थान सीर गोवर्धनपुर वाराणसी, बेग़मपुरा हरिद्वार, डेरा सच्चखण्ड बल्लां सभी धर्म अस्थानों का ध्यान धर के जपो जी सतिनाम

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि अब पतीआरु किआ कीजै॥
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै॥ 1॥
हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने॥
कारन कवन अबोल॥ रहाउ॥
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे॥
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे॥ 2॥ 1॥
धन्य धन्य जगत्गुरु रविदास जी महाराज
आप जी के चरण कमलों में अरदास बेनती है जी...
आप जी की रसना के लिए प्रसाद हाज़िर है जी
कहै रविदासु नामु तेरो आरती, सतिनाम है हरि भोग तुहारे।।

आप जी के नाम का भोग लगे जी प्रसाद साध संगत में वरते जी

जगत्गुरु रविदास जी महाराज आप जी के नाम की चड़दी होए कला तेरे भाणे सरबत दा भला।।

श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी की तरफ से लिखित और अलग–अलग भाषाओं में रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर और अलग–अलग धार्मिक संस्थाओं की तरफ से प्रकाशित पुस्तकें :

हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें

* जगतगुरू रविदास अमृतबाणी (स्टीक तथा संक्षिप्त जीवन हिन्दी और मराठी)
* नितनेम अमृतबाणी जगतगुरू रविदास जी (स्टीक)
* जगतगुरू रविदास महाराज जी का संक्षिप्त जीवन
* जगतगुरू रविदास महाराज जी की कथाएं (हिन्दी और मराठी में)
* अमृतबाणी जगतगुरू रविदास महाराज जी (स्टीक)
* धरती उत्ते रब्ब सतिगुरू सरवण दास जी।
* अमृतबाणी जगतगुरू रविदास महाराज जी (सटीक) हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगाली भाषा में।
* सुखसागर गुटका।

* * *

Books Published in English

* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji (Steek)
* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji 40 Pade (Steek)
* Sacred Life of Jagat Guru Ravidass Maharaj Ji
* Nitnam Amritbani Satguru Ravidass maharaj Ji
* God on Earth Satguru Sarwan Dass Ji

Books Published in Dutch, Italian, French, Greek, Spanish, Gujrati, Marathi, Bangla

* Amritbani Jagatguru Ravidass Maharaj Ji (Steek)

Books Published in Italian

* Amritbani Satguru Raviass Maharaj Ji
  Vita Sacradi Jagatguru Ravidass Maharaj Ji

* * *

पंजाबी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें

* अमृतबाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी (40 शब्द स्टीक)
* अमृतबाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी (सम्पूर्ण स्टीक)
* श्री गुरू रविदास अमृतबाणी (स्टीक और संक्षेप जीवन)
* नितनेम अमृतबाणी जगतगुरू रविदास जी (स्टीक)
* सुखसागर स्टीक
* जगतगुरू रविदास महाराज जी का संक्षेप जीवन
* धरती उत्ते रब सतिगुरू सरवण दास जी (जीवन साखी)
* गुरू रविदास मिले मोहि पूरे (संत मीरां बाई जी)
* सुखसागर गुटका

अर्न्तराष्ट्रीय जगतगुरू रविदास साहित्य संस्था (रजि.) की ओर से प्रकाशित पुस्तक

* चमार जाति इतिहास धर्म ते सभ्याचार : राजेश कैंथ भबियाणवी

रविदासीया धर्म प्रचार अस्थान काहनपुर की ओर से प्रकाशित पुस्त्कें

* रविदासीया धर्म का अनमोल हीरा श्री 108 संत सुरिन्दर दास बावा जी: कांशी राम कलेर
* रविदासीया कौम के अमर शहीद संत रामानंद जी : कांशी राम कलेर जंडूसिंघा
* अमृतबाणी सतिगुरू रविदास महाराज जी – दर्पण (स्टीक) – टीकाकार सीता राम महे।

* * *

ऐतिहासिक दिवस 30 जनवरी 2010 को श्री गुरू रविदास जन्मस्थान मंदिर, सीर गोवर्धनपुर, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में जगतगुरू रविदास महाराज जी तथा सतगुरू सरवण दास महाराज जी की असीम कृपा एवं आशीर्वाद से, संत निरंजन दास जी महाराज के नेतृत्व में और संत समाज की ओर से लाखों संगत की उपस्थिति में ''रविदासीया धर्म'' का ऐलान करते हुए संत सुरिंदर दास बावा जी।

Ravidassia Dharam Parchar Asthan

Vill. Kahanpur, P.O. Raipur Rasulpur
Distt. Jalandhar
e-mail : ravidassiadharam@gmail.com
Website : www.ravidassiadharam.org
Facebook : ravidassiadharamparcharasthan

Sant Surinder Dass Bawa Ji